हेमचन्द्र-मोदी-पुस्तकमाला ★ ★ सप्तम पुष्प

धर्मके नामपर

[कर्नल इंगरसोलके व्याख्यान और निबन्ध]

अनुवादकर्त्ता
भदन्त आनन्द कौसल्यायन

सोल एजेण्ट

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई ४.

प्रकाशक—
नाथूराम प्रेमी,
प्रबन्धक—हेमचन्द्र-मोदी-पुस्तकमाला
हीराबाग, पो० गिरगाँव, बम्बई ४

पहली बार
अक्टूबर, १९५१

मूल्य डेढ़ रुपया

मुद्रक—
रघुनाथ दिपाजी देसाई,
न्यू भारत प्रिंटिंग प्रेस,
६, केलेवाड़ी, गिरगांव, बम्बई नं. ४

विषय-सूची

पृ० सं०

दो शब्द

'स्वतन्त्र चिन्तन' के बाद 'धर्मके नामपर'। दोनोंको दो भिन्न पुस्तकें न मानकर एक ही ग्रन्थके दो खण्ड मानना ही उपयुक्त है।

'स्वतंत्र चिन्तन' पाठकोंको रुचिकर लगी। 'धर्मके नामपर' भी रुचेगी ही। एक व्यक्तिको जो चीज़ अच्छी लगे, वही दूसरेको भी रुचे, यह नियम नहीं। 'धर्मके नामपर' कुछ पाठकोंको निश्चयसे चुभेगी।.

'स्वतन्त्र चिन्तन' के लिए निबन्धोंका चुनाव करते समय इंगरसोलके ऐसे निबन्धों और व्याख्यानोंको जिनमें ईसाई मतमतान्तरोंकी विशेष चर्चा थी, छोड़ दिया गया था। सम्प्रदाय-विशेषकी प्रतिकूल चर्चाको व्यर्थ आगे न बढ़ानेके उद्देश्यसे ही ऐसा किया गया। फिर हिन्दी पाठकोंमें इसाईधर्मावलम्बी अथवा ईसाई मतमतान्तरोंके ज्ञाता पाठकोंकी अधिकताकी सम्भावना न होना भी इसकी दूसरा कारण था। धर्म-विशेष अथवा मत-विशेषके पूर्व-पक्षकी जानकारीके विना उसकी आलोचना ही पढ़ना लिखना बहुत अच्छा नहीं; और पूर्व पक्षकी जानकारीके लिए धर्म-विशेष अथवा मत-विशेषका आलोचन ही सर्व-श्रेष्ठ मार्ग-दर्शक भी नहीं।

किन्तु, इस पुस्तकमें 'भगवान्का अभिशाप' शीर्षक सदृश एक दो ऐसे व्याख्यानों अथवा निबन्धोंको जान बूझकर शामिल कर लिया गया है, जिन्हें 'स्वतन्त्र चिन्तन' में नहीं ही लिया गया। विचार आया कि प्रथम तो हिन्दी-पाठकोंको ईसाइयतके इतिहासके बारेमें भी कुछ जानकारी मिलनी ही चाहिए। दूसरे, इंगरसोलने जहाँ और जब भी किसी धर्म-विशेष अथवा मत-विशेषकी आलोचना की है उसका उद्देश्य सम्प्रदाय-विशेषका खण्डन करके किसी दूसरे सम्प्रदायकी पक्षपातपूर्ण स्थापना नहीं रहा। उसकी सम्प्रदाय-विशेषकी आलोचना एक सामान्य सहज आलोचना है जो स्वाभाविक तौरपर उन्हीं सम्प्रदायोंमेंसे किसी एककी अथवा सबकी हो सकती जिनके बीच उसका जन्म हुआ और जिन सम्प्रदायोंका उसे अध्ययन करनेका अवसर मिला।

हमें इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि यदि इंगरसोलने भारतमें जन्म लिया होता, तो वह भारतीय धार्मिक सम्प्रदायोंकी भी वैसी ही निर्मम चीर-फाड़ करता जैसी उसने ईसाई-सम्प्रदायोंकी की है। उसका उद्देश्य सम्प्रदाय-विशेषका द्रोह नहीं रहा है। उसका उद्देश्य रहा है 'धर्मके नामपर' जिस मिथ्या-विश्वास, जिस दासता, जिस ढोंगने आदमीको आदमी नहीं रहने दिया, उससे उसे यथाशक्ति मुक्त करनेका प्रयत्न करना।

फिर, ईसाई नाम-रूपके आवरणमें जहाँ जहाँ जिस पूर्व-पक्षकी चर्चा आई है ठीक उससे मिलते जुलते पूर्व पक्ष अपने यहाँ भारतीय नाम-रूपमें भी स्पष्ट दिखाई देते हैं। इस लिए जहाँ कहीं भी किसी ईसाई-सम्प्रदायकी चर्चा हुई है, वहाँ वह ईसाई सम्प्रदायकी ही चर्चा नहीं रही; उसने सहज ही धार्मिक सम्प्रदायोंकी सामान्य चर्चाका रूप धारण कर लिया है।

इंगरसोलके व्याख्यानों और निबन्धोंमें जो ताज़गी है, वह आश्चर्यका विषय है कि आज भी ज्योंकी त्यों बनी है। किन्तु, हमें स्मरण रखना चाहिए कि इंगरसोलके व्याख्यान और निबन्ध लगभग पौन शताब्दि पूर्वके हैं। इस लिए उनका कोई कोई कथन यदि आज १९५१ में ठीक न जँचे तो इसे इंगरसोलकी प्रतिभाका अपराध नहीं माना जा सकता; यह यदि दोष है, तो उस 'काल' का है जो सभीके ज्ञानको सीमित करता है। इंगरसोलने न अपनेको त्रिकालज्ञ कहा है और न किसी दूसरेको त्रिकालज्ञ स्वीकार किया है। अनुवादकको स्वतन्त्र चिन्तनके अनुवाद-कार्यने जिस साहित्य-रसका रसास्वादन कराया, वैसा ही अनुभव 'धर्मके नामपर' का अनुवाद करते समय भी हुआ। कला और सदाचार सदृश निबन्धोंका अनुवाद करते समय तो और विशेष।

प्रेमीजीने हेमचन्द्र-मोदी-पुस्तकमालाके सातवें पुष्पके रूपमें इस पुस्तकको स्वीकार कर निश्चयसे उस उद्देश्यको आगे बढ़ाया है जिसके लिए इस पुस्तकमालाकी स्थापना हुई। पुस्तकका कागज, छपाई, मूल्य सभी कुछ इस बातका प्रमाण है कि प्रेमीजीकी यह पुस्तकमाला सामान्य पुस्तक-प्रकाशन-कार्य नहीं है। यह है एक पिताका वात्सल्य-भावनापूर्ण श्राद्धकार्य मात्र।

मेरे बम्बईसे दूर रहनेके कारण और पुस्तककी छपाईका कार्य बम्बईमें ही होनेके कारण प्रेमीजीने ही पुस्तकको इस रूपमें सजा-सँवारकर प्रकाशित करनेका जो कष्ट उठाया है, उसके लिए मैं उनका विशेष कृतज्ञ हूँ।

लेखक अथवा अनुवादकद्वारा एक भी प्रूफका प्रूफ न देखा गया होनेपर भी 'प्रेसके भूत' ने एकाध जगह जो कहीं कुछ करामात दिखाई है वह ऐसी ही है जिसे विज्ञ पाठक स्वयं सुधार लेंगे।

ये व्याख्यान और निबन्ध गत शताब्दिके होने पर भी आज भी हमारा कितना मार्ग-दर्शन करनेमें समर्थ हैं! सचमुच हम अभी समयमें बहुत पीछे हैं।

इंगरसोलकी दोनों पुस्तकें साथ साथ पढ़ी जाने और मनन किये जाने योग्य हैं। पाठकोंके इतने कर्तव्य-पालन मात्रसे अनुवादकका श्रम सफल होगा।

प्रयाग,
१-११-५१

आनन्द कौसल्यायन

धर्मके नामपर

धर्मकी कट्टरता

यह कल्पनासे परेकी बात है कि कोई आदमी ईसाइयतके सत्यमें विश्वास तो करता हो, किन्तु वह सार्वजनिक रूपसे उसे अस्वीकार करे। क्योंकि जो उस सत्यमें विश्वास करता है वह यह भी विश्वास करता है कि उस सत्यको सार्वजनिक रूपसे अस्वीकार कर देनेसे वह अपनी आत्माकी अनन्त मुक्तिको खतरेमें डाल देगा। बिना किसी विशेष मानसिक प्रयासके यह कल्पना की जा सकती है कि लाखों आदमी जो ईसाइयतमें विश्वास न करते हों कहें कि वे विश्वास करते हैं। एक ऐसे देशमें जहाँ धर्मके हाथमें ताकत है, जहाँ ढोंग पुरस्कृत होता है, जहाँ कमसे कम चुप बने रहनेसे भी लाभ होता है, यह आसानीसे कल्पना की जा सकती है कि करोड़ों आदमी उन बातोंको माननेका ढोंग करते हैं, जिनमें वास्तवमें उनका विश्वास नहीं।

कट्टर धर्म मरणोन्मुख है

मुझे यहाँ और इसी समय यह कहते बहुत ही प्रसन्नता होती है कि सभ्य संसारमेंसे कट्टर-धर्म मर रहा है। यह रोग-ग्रस्त हो गया है। इसे दो बीमारियाँ हो गई हैं—दिमागकी कमज़ोरीकी और दिलके पथरानेकी। यह इस देशके बुद्धिमानोंको अब और संतुष्ट नहीं कर सकता। अब प्रत्येक सभ्य स्त्री-पुरुष इसके विरुद्ध विद्रोहका झंडा लेकर उठ खड़ा हुआ

है। यह धर्म बहुत ही थोड़े लोगोंके मनमें आशाकी किरणका संचार करता है। यह जीवन और मरण दोनोंको अन्धकारग्रस्त बनाता है और बनाता है मानवताके भविष्यको भयपूर्ण। यह एक ऐसा धर्म है कि मैं जन्मभर इसे नष्ट करनेके लिये जो मुझसे बन पड़ेगा करता रहूँगा। उसके स्थानमें मैं चाहता हूँ मानवता, मैं चाहता अच्छी मैत्री, मैं चाहता हूँ मानसिक स्वतन्त्रता, स्वतन्त्र वाणी, प्रतिभाके आविष्कार, विज्ञानके तजर्बे—कला, संगीत और काव्यका धर्म—अच्छे घरों, अच्छे कपड़ों और अच्छे वेतनका धर्म, अर्थात् इस लोकका धर्म।

धर्मोंकी मृत्यु तथा जन्म

हमें यह न भूलना चाहिए कि संसार प्रगतिशील है, संसार निरन्तर परिवर्तनशील है—मृत्यु और उसके बाद जन्म। निरन्तर मृत्यु और निरन्तर जन्म। पुरातनकी इस समाधिपर सदासे यौवन और आनन्दका जन्म होता आया है; और जब भी एक पुरातन धर्म मरता है, एक नया श्रेष्ठ धर्म जन्म ग्रहण करता है। जब भी हमें पता लगता है कि किसीका कोई कथन मिथ्या है, तो एक सत्य उसका स्थान लेनेके लिए आगे बढ़ता है। हमें मिथ्यात्वके विनाशसे भयभीत होनेकी आवश्यकता नहीं। जितना ही मिथ्याका विनाश होगा, उतना ही सत्यका प्रकाश होगा।

एक समय था जब ज्योतिषी आकाशके नक्षत्रोंमें आदमियों और जातियोंके भाग्य पढ़ा करते थे। उनका स्थान संसारमें नहीं रहा। अब उनकी जगह गणितज्ञ ज्योतिषियोंने ले ली है।

एक समय था जब बूढ़ा कीमियागर किसी न किसी धातुसे सोना बनानेके रहस्यकी खोजमें भटकता रहता था। अब उसके लिये जगह ही नहीं रही। उसका स्थान रसायनशास्त्रीने ले लिया है। यद्यपि वह धातुओंको सोना नहीं बना सकता, किन्तु उसने ऐसी चीजोंका पता लगाया है जो सारी पृथ्वीको धनसे ढँक दें।

एक समय था जब भविष्यवक्ताओंके पौ-बारह थे। उनके बाद पादरी-पुरोहित आये। अब पादरी-पुरोहितोंको भी विदा होना चाहिए,

धर्मोपदेशकको विदा होना चाहिये, उसका स्थान ग्रहण करना चाहिये अध्यापकको—प्रकृतिके वास्तविक व्याख्याताको। हमें अब पराप्रकृतिसे कोई काम नहीं, हम अब चमत्कारों और असंभव घटनाओंसे ऊब गये।

एक समय था जब भविष्यवक्ता प्रकृतिकी पुस्तकको पढ़नेका झूठा बहाना बनाता था। उसका स्थान दार्शनिकने ले लिया है जो कार्य-कारणके नियमानुसार तर्क करता है। भविष्यवक्ता विदा हुआ, दार्शनिक विद्यमान् है।

एक समय था जब आदमी आकाशसे सहायताकी आशा लगाये बैठा रहता था और जब वह बहरे आकाशसे प्रार्थनाएँ करता रहता था। एक समय था जब सभी कुछ पराप्रकृतिपर निर्भर था। ईसाइयतका वह युग अब विदा हो रहा है। अब हम प्रकृतिपर निर्भर करते हैं, प्राचीन मिथ्या विश्वासोंके विश्वासीपर नहीं किन्तु नई बातोंके आविष्कारकपर। अब हम पक्की नींवपर अपना भवन बनाने लगे हैं। हमारी प्रगतिके साथ साथ पराप्रकृतिकी हत्या होती जा रही है। संसारके बुद्धिप्रधान नेता पराप्रकृतिके अस्तित्वको अस्वीकार करते हैं। वे मिथ्या विश्वासोंकी नींव ही हिला दे रहे हैं।

परस्परका धर्म

पराप्राकृतिक धर्मके लिये अब इस संसारमें कोई जगह नहीं रहेगी। अब उसका स्थान तर्क ग्रहण करेगा। 'अज्ञात'की पूजाकी जगह परस्पर प्रेम और एक दूसरेकी सहायताका धर्म स्थापित होगा। मिथ्या विश्वास विनष्ट होगा, विज्ञान रहेगा। साम्प्रदायिकता आसानीसे नहीं मरती। आदमीकी बुद्धिका अभी पूरा पूरा विकास नहीं हुआ है। शारीरिक रोगोंकी भाँति मानसिक रोग भी होते हैं—दिमागकी महामारियाँ और प्लेग।

जब भी नवीनका प्रादुर्भाव होता है, पुरातन विद्रोह करता है और वह अपने स्थानके लिये तब तक लड़ता रहता है जब तक उसमें कुछ भी दम बाकी रहता है। मिथ्या विश्वास और विज्ञानमें इस समय वही संघर्ष चालू है जो किसी समय घोड़ागाड़ी और रेलगाड़ीमें चालू था। लेकिन 'रथ'के दिन अब नहीं रहे। कोई समय था जब 'रथ'की अपनी शान थी, लेकिन अब वह नहीं रही। इसी प्रकार हम देखते हैं कि केवल दर्शनके भिन्न भिन्न संप्रदायों और मतोंमें ही संघर्ष नहीं है, किन्तु चिकित्सा-शास्त्रतकमें है।

याद रखिये, यथार्थ सत्यके अतिरिक्त सब कुछ मरणशील है। यही प्रकृतिका नियम है। शब्द मरते हैं। हर भाषाकी अपनी श्मशान-भूमि होती है। प्रायः हर समय कोई न कोई शब्द मरता है और उसकी समाधिपर लिखा जाता है—'अप्रयोज्य'। नये शब्द निरन्तर पैदा हो रहे हैं। हर शब्द एक पालनेमें जन्म ग्रहण करता है। विचार और उच्चारणका पाणि-ग्रहण शब्द-शिशुको जन्म देता है। एक समय आता है जब शब्द बूढ़ा हो जाता है, जब उसके मुँहपर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, जब वह अपना सामर्थ्य गवाँ बैठता है और जब उसका एकमात्र स्थान होता है कबरमें। यही चिकित्सा-शास्त्रमें भी होता आया है। मेरी तरह तुम भी यह याद कर सकते हो कि जब पुराने चिकित्सक और रक्त निकालनेवाले जर्राहोंकी प्रधानता रही है। जब भी किसी आदमीको किसी तरहकी कोई शिकायत होती वे उसका खून निकालनेका ही काम करते थे। अब यह कल्पना करना कठिन है कि कुछ ही वर्ष पहले एक जर्राहके आक्रमणसे बचनेके लिये आदमीकी काठीका कितना मजबूत होना आवश्यक था। जब यह जर्राही गलत सिद्ध हो गई, उसके बाद भी सैकड़ों और हजारों चिकित्सक इधर उधर भटकते रहे हैं और उन्हें इस बातका बड़ा खेद रहा है कि ऐसे श्रद्धालु रोगियोंका अभाव हो गया जो उन्हें अपने शरीर-पर तजर्बे करने देते हैं।

इसी प्रकार ये सम्प्रदाय—ये मत और ये धर्म—आसानीसे मरनेवाले नहीं हैं। और वे कर भी क्या सकते हैं? पुराने कलाकारोंके चित्रोंकी तरह उन्हें केवल इसलिये सुरक्षित रखा गया है क्योंकि उनपर पैसा खर्च हो चुका है। जरा कल्पना कीजिये कि मिथ्या विश्वासके प्रचार-कार्यमें कितनी पूँजी लगी हुई है। उन पाठशालाओंकी कल्पना कीजिये जो मात्र अनुपयोगी ज्ञानके प्रचारार्थ स्थापित की गई हैं। उन विद्यालयोंकी कल्पना कीजिये जहाँ विद्यार्थियोंको यह शिक्षा दी जाती है कि 'विचार करना' खतरनाक है और उन्हें श्रद्धा करनेके अतिरिक्त किसी भी दूसरे कार्यमें दिमागको काममें नहीं लाना चाहिये। जरा उस महान् धनराशिकी कल्पना कीजिये जो इन मन्दिरों, मस्जिदों और गिर्जोंकी रचनापर खर्च हुई है। जरा उन हजारों लाखों आदमियोंका विचार कीजिये जिनकी जीविका आदमियोंके अज्ञानपर ही निर्भर करती है। जरा उन लोगोंका

विचार कीजिये जो लोगोंके अन्ध-विश्वास और श्रद्धाके बलपर ही धनी बनते और मोटाते हैं। क्या आप समझते हैं कि ये सब लोग बिना संघर्ष किये मरनेवाले हैं? बेचारे क्या करें? उन पंडित-पादरी-पुरोहितोंके साथ मेरी हार्दिक सहानुभूति है जिनको शिक्षाद्वारा बुद्धिविहीन बना दिया गया है और अब जिन्हें श्रद्धाशून्य संसारके बीच जानेपर मजबूर होना पड़ रहा है। बेचारेकी कहीं कोई प्रार्थना सुनी नहीं जाती; आकाश उसकी सहायताके लिये हाथ आगे नहीं बढ़ाता और उसका धर्मोपदेश सुननेवाले ही उसकी आलोचना करने लग गये हैं। बेचारा गरीब क्या करे? यदि वह एकाएक बदलता है तो फिर कहींका नहीं रहता। यदि वह अपने वास्तविक विचारोंका प्रचार करना आरम्भ करता है तो उसे त्यागपत्र देकर चले जानेको कहा जाता है। इतना सब होनेपर भी यदि धर्मोपदेशक और उसके श्रोतागण इकट्ठे बैठें और सपूर्णरूपसे ईमानदारीकी बात करना चाहें, तो सब स्वीकार करेंगे कि न तो उनका विश्वास ही कुछ विशेष है और न ज्ञान ही।

थोड़ी ही देर पहले दो देवियाँ रातको एक तमाशा देखकर बड़ी देरसे घर लौट रही थीं। उनमेंसे एक बोली—" मैं एक ऐसी बात बताना चाहती हूँ, जिसे सुनकर तुम्हें अत्यन्त अचम्भा होगा। मैं हाथ जोड़ती हूँ, यह बात किसी औरसे न करना।"

" क्या है वह बात? " दूसरी बोली।

" मैं बाइबलमें विश्वास नहीं करती!"

" मैं भी तो नहीं करती!"

मैंने बहुत बार सोचा है कि यह कितना अच्छा होगा यदि सभी पंडित, पादरी, पुरोहित एक जगह इकट्ठे होकर कह सकें—" आओ, हम पूरी ईमानदारीके साथ जो कुछ हम सचमुच मानते हैं, वह एक दूसरेको बतायें।"

एक कथा है कि एक बार एक होटलमें लगभग बीस आदमी एक साथ ठहरे थे। उनमेंसे एक खड़ा हुआ और अपने हाथ पीछे करके बोला—" आओ, हम एक दूसरेको अपने वास्तविक नाम बतायें।"

यदि सब पंडित, पादरी, पुरोहित और उनके भक्त अपने वास्तविक विचार

कहने लगें तो वे देखेंगे कि वे उतने ही भले या बुरे हैं, जितना मैं हूँ और वे वैसे ही कुछ भी विश्वास नहीं करते हैं जैसे कि मैं।

धार्मिक कट्टरता आसानीसे नहीं मरती। इसके पक्षपाती इससे यह परिणाम भी निकालते हैं कि यह इलहामी है।

यहूदी धर्म भी आसानीसे नहीं मरता। यह ईसाइयतसे हजारों वर्ष अधिक जिया है।

> मुहम्मदका धर्म आसानीसे नहीं मरता।
> बुद्धका धर्म आसानीसे नहीं मरता।
> यह सभी धर्म आसानीसे क्यों नहीं मरते ?
> क्योंकि बुद्धिमें विकास धीरे धीरे होता है।

मुझे प्रोटैस्टेण्टके कानमें कह लेने दो—कैथोलिक धर्म आसानीसे नहीं मरता। इससे क्या सिद्ध होता है? इससे यही सिद्ध होता है कि लोग अज्ञानी हैं और पादरी ठग हैं।

मुझे कैथोलिकके कानमें कह लेने दो—प्रोटैस्टैण्ट धर्म आसानीसे नहीं मरता। इससे क्या सिद्ध होता है? इससे यही सिद्ध होता है कि लोग मिथ्या विश्वासी हैं और धर्मोपदेशक मूर्ख।

मैं आप सबको बता दूँ—नास्तिकता मर नहीं रही है। यह वृद्धि पर है। यह प्रति दिन अधिकाधिक होती जा रही है। इससे क्या सिद्ध होता है? इससे सिद्ध होता है कि लोग अधिकाधिक शिक्षित हो रहे हैं। वे प्रगति कर रहे हैं। बुद्धि स्वतंत्र हो रही है। संसार सभ्य बन रहा है।

पादरी-पुरोहित जानते हैं कि मैं जानता हूँ कि वे जानते हैं कि वे नहीं जानते।

मिथ्या विश्वासकी जड़ें कैसे हिलीं ?

क्रॉसके अनुयायियोंके हाथोंसे मुहम्मदने यूरोपके सुन्दरतम हिस्सोको छीन लिया। यह ज्ञात था कि वह वंचक था और एक इस बातने ईसाई-संसारमें नास्तिकता और अविश्वासका बीजारोपण कर दिया। ईसाइयोंने नास्तिकोंके

हाथसे ईसाकी खाली कबरको छुड़ानेका प्रयत्न किया। यह ग्यारहवीं शतीमें आरम्भ हुआ और तेरहवीं शतीकी समाप्तिपर समाप्त। सारा यूरोप लगभग वीरान हो गया। खेत बंजर हो गये। गाँव उजड़ गये। जातियाँ दरिद्र हो गईं। हर ऋणी आदमीको उसके ऋणसे मुक्त घोषित कर दिया गया, यदि वह अपनी छातीपर क्रॉस लटकाकर क्रॉसके सैनिकोंमें भर्ती होनेके लिये तैयार हो गया। उसने चाहे कितना ही बड़ेसे बड़ा अपराध किया हो उसे जेलसे मुक्त कर दिया गया, यदि वह क्रॉसके सैनिकोंमें भर्ती होनेके लिये तैयार हो गया। उनका विश्वास था कि ईश्वर उन्हें विजयी बनायेगा। १२९१ तक वह उस क़बरपर अधिकार करनेका प्रयत्न करते रहे। अन्तमें ईसाके सैनिकोंको बुरी तरह मुँहकी खानी पड़ी। उन्हें पीछे भागना पड़ा। इस एक बातने ईसाइयतके संसारमें अविश्वासका बीजारोपण कर दिया। तुम जानते हो कि उन दिनों लोग सत्यासत्यका निर्णय करनेके लिये युद्धको ही एकमात्र साधन समझते थे। उनका ख्याल था कि ईश्वर सदा सत्य-पक्ष ग्रहण करता है। ईसा और मुहम्मदके बीच युद्ध हो चुका था। मुहम्मद विजयी हुआ था। क्या ईश्वर उस समय संसारका शासक था? क्या वह उस समय मुहम्मदके धर्मका ही प्रचार चाहता था?

कलाका विनाश

आप जानते हैं कि जब ईसाइयतके हाथमें अधिकार आया तो उसने प्रायः हर मूर्तिको जिसपर इसका अज्ञानी हाथ पड़ा तोड़-फोड़ डाला। इसने प्रत्येक चित्रको या तो कुरूप बना दिया, या मिटा दिया। इसने प्रत्येक सुन्दर इमारतको नष्ट-भ्रष्ट कर डाला, इसने ग्रीक और लातीनी दोनों प्रकारकी पाण्डुलिपियोंको नष्ट-भ्रष्ट कर डाला, इसने तमाम इतिहास, तमाम कविता और तमाम दर्शन-शास्त्रको नष्ट कर डाला; इसने मशाल होकर हर पुस्तकालयको राख बना डाला। परिणाम यह हुआ कि मानवता अन्धकारपूर्ण रात्रिसे ढँक गई।

लेकिन कुछ ऐसा हुआ कि जैसे तैसे चन्द पाण्डुलिपियाँ मजहबी जोशकी आगमें जल कर राख होनेसे बच गईं। यही पाण्डुलिपियाँ उस वृक्षका बीज बनीं जिसका फल हमारी आधुनिक सभ्यता है। कुछ मूर्तियाँ जमीनमें गाड़ दी

गई थीं। उन सुन्दर रूपोंको उस जमीनमेंसे निकाला गया, जिसने उन्हें सुरक्षित रखा था।

यह इसीका परिणाम है कि आजका सभ्य संसार कलासे परिपूर्ण है, दीवारें चित्रोंसे सुसज्जित हैं, और मूर्तियाँ रखनेके ताक मूर्तियोंसे सुशोभित हैं। कुछ पाण्डुलिपियाँ खोज निकालीं गईं और उन्हें नये सिरेसे पढ़ा गया। पुरानी भाषायें सीखीं गईं और साहित्यने नया जन्म लिया। भावनाने नया प्रकाश देखा। मजहबने मानसिक विकासके प्रत्येक प्रयत्नका विरोध किया। यह सब होनेपर भी सामान्य विनाशसे बचा ली गई कुछ चीजोंने, कुछ कविताओंने, प्राचीन चिन्तकोंकी कुछ कृतियोंने, पत्थरकी कुछ मूर्तियोंने, एक नई सभ्यताको जन्म दिया जो निश्चयात्मक रूपसे मिथ्या विश्वासकी जड़ हिला देनेवाली थीं।

अमरीकाकी खोज

ईसाई मजहबको दूसरी बड़ी चोट किस बातसे लगी? अमरीकाकी खोजसे। पवित्र प्रेतको, जिसने बाइबल लिखनेकी प्रेरणा की, इस महान् द्वीपकी कुछ जानकारी न थी, उसे पश्चिमी गोलार्धका कभी ख्याल भी नहीं आया था। बाइबलमें आधे संसारका उल्लेख ही नहीं है। 'पवित्र आत्मा' को इस बातका ज्ञान नहीं था कि पृथ्वी गोल है। उसे इस बातका स्वप्न भी नहीं था कि पृथ्वी गोल है। यद्यपि उसने स्वयं उसकी रचना की थी तो भी उसका विश्वास था कि यह चपटी है। किन्तु अन्तमें यह पता लग गया कि पृथ्वी गोल है। मैगेलन समस्त पृथ्वीका चक्कर काट आया। १५१९ में उस वीर आत्माने अपनी यात्रा आरम्भ की। पादरी, पुरोहित बोले—'मित्र, पृथ्वी चपटी है, मत जाओ, कहीं तुम किनारेके आगे न गिर पड़ो!' मैगेलनका उत्तर था;—'मैंने चन्द्रमामें पृथ्वीकी छाया देखी है और मेरे लिये ईसाई मजहबकी अपेक्षा यह छाया अधिक विश्वसनीय है।' जहाज पृथ्वीके गिर्द घूम आया। समस्त पृथ्वीका चक्कर काट लिया गया। विज्ञानने पृथ्वीके ऊपर और नीचे अपना हाथ फेर कर देखा। कहाँ था वह स्वर्ग और कहाँ था वह नरक! स्वर्ग और नरक सदाके लिये विलीन हो गये। अब यदि कहीं उनके लिये जगह है तो केवल मिथ्या विश्वासियोंके मजहबमें।

कोपरनिकस और केपलर

अब महान् आदमियोंका युग आया। १४७३ में कोपरनिकस पैदा हुआ। १५४३ में उसका महान् ग्रन्थ (Revolutions of the Heavenly Bodies) लिखा गया। १६४३ में ईसाई मजहबने उसे निन्दनीय ठहराया। क्या आप कह सकते हैं कि ईसाई मजहबने कब तक कोपरनिकसके विरुद्ध युद्ध जारी रक्खा? कोपरनिकसकी मृत्युके दो सौ अठत्तर वर्ष बाद तक भी ईसाई मजहबका यही आग्रह था कि बाइबलमें ज्योतिषका जो उल्लेख है वही सच है और कोपरनिकसकी पद्धति झूठ। १६०९ में केपलर पैदा हुआ। आप केपलरके नियमोंके आविष्कारको विज्ञानका जन्म-दिन कह सकते हैं। इस आदमीने हमारे हाथमें आकाशकी चाभी दी और उस अनन्त पुस्तकको हमारे सामने खोलकर रख दिया।

मेरे पास समय नहीं है कि मैं गैलीलियोकी, ल्यूनार्दो द विन्सीकी, ब्रूनोकी और दूसरे सैकड़ों महान् पुरुषोंकी चर्चा कर सकूं जिन्होंने संसारके मानसिक विकासमें वृद्धि की।

विशेष कृपा

दूसरी चीज जिसने ईसाई मजहबपर कड़ी चोट की, वह थी सांख्यिकी। हमने हिसाब लगाकर देखा कि हम मानव-जीवनकी सामान्य आयु बता सकते हैं। मानव-जीवन यों ही किसीकी अनन्त इच्छाके अधीन नहीं है; यह परिस्थितियोंपर, नियमोंपर और खास तरहकी घटनाओंपर निर्भर करता है; और यह परिस्थितियाँ, नियम तथा घटनायें दीर्घ काल तक न्यूनाधिक समान ही रहती हैं। हम देखते हैं कि भगवानकी विशेष कृपामें विश्वास रखनेवाला आदमी इन्श्योरेन्स कम्पनीमें अपना जीवन इन्श्योर कराता है। उसे ईश्वर, आत्मा आदि सबमें मिलाकर उतना विश्वास नहीं है जितना इन कम्पनियोंमेंसे किसी एकमें है। हमने सांख्यिकीसे पता लगा लिया कि सामान्य तौर पर ठीक इतनी तरहके अपराध किये जाते हैं; ठीक इतने अपराध एक तरहके और ठीक इतने दूसरी तरहके; ठीक इतनी आत्महत्यायें, पानीमें डूब मरनेसे ठीक इतनी मौतें, इतने आदमी अपनेसे बड़ी औरतोंसे शादी करते हैं; एक खास तरहके इतने हत्यारे; गल्तियोंकी ठीक इतनी संख्या; और आज रात मैं यह कहने जा रहा हूँ कि सांख्यिकीने विशेष कृपाके सिद्धान्तको एकदम धराशायी कर दिया।

अभी उस दिन एक आदमी मुझे विशेष कृपाकी एक बात बता रहा था। कुछ ही वर्ष पहले वह जहाजसे कहीं जानेवाला था, किन्तु कारणवश वह नहीं गया। वह जहाज अपने सभी यात्रियोंके साथ पानीमें डूब गया। उसका कहना था कि वह भगवानकी 'विशेष कृपासे 'से बच गया। ज़रा इस प्रकारके सिद्धान्तकी अनन्त अहंमन्यताकी कल्पना तो करो। एक आदमी है जो उस जहाजपर नहीं जाता जिसपर पाँच सौ दूसरे यात्री चढ़ते हैं। वे सब समुद्रतलमें विलीन हो जाते हैं। यह एक तुच्छ अकेला प्राणी किसी कारण उस जहाजसे नहीं गया और सोचता है कि अनन्त परमात्माने इस निकम्मे तुच्छ आदमीकी तो रक्षा की और शेष सबको विनाशके मुँहमें जाने दिया! यह 'विशेष कृपा' है! यह विशेष कृपा इतने अपराध क्यों होने देती है? यदि हम सबके सिरपर परमात्माका हाथ है, तो अपनी स्त्रियोंको पीटनेवाले सुरक्षित क्यों रहते हैं? स्त्रियाँ और बच्चे अरक्षित क्यों रहते हैं? पागलोंकी देख-भाल कौन करता है? ईश्वर किसीको पागल होने ही क्यों देता है? ईसाई मजहब विशेष कृपाकी बातको नहीं छोड़ सकता। यदि कोई ऐसी चीज़ नहीं है, तो प्रार्थना, पूजा, गिर्जे और पादरी पुरोहित सब बेकार हैं।

आप जानते हैं कि हमारे यहाँ एक रिवाज है कि हम प्रतिवर्ष धन्यवादका एक घोषणा-पत्र प्रकाशित करते हैं। हम ईश्वरसे कहते हैं—"यद्यपि तूने तमाम दूसरे देशोंको पीड़ित किया है, यद्यपि तूने अन्य सभी देशोंके लिये युद्ध, विनाश और अकाल भेजा है, तो भी हम तेरी इतनी अच्छी सन्तान रहे हैं कि तू हमपर दयालु रहा है। हमें विश्वास है कि भविष्यमें भी ऐसा ही होगा।" समय अच्छा बीता हो अथवा बुरा, इसका कुछ असर नहीं पड़ता। धन्यवादके घोषणा-पत्रका उक्त रूप निश्चित है। मुझे याद है कि कुछ वर्ष पहले इवाके गवर्नरने इस प्रकारका घोषणा-पत्र प्रकाशित किया। उसने लिखा कि राज्यमें कैसी सुख-समृद्धि रही है और लोग कितने कृतज्ञ हैं! उसी राज्यमें एक तरुण रहता था। उसने एक दूसरा घोषणा-पत्र प्रकाशित कराया ताकि सरकारी घोषणा-पत्रसे कहीं ईश्वर भ्रममें न पड़ जाय! उसका कहना था कि राज्य खुश-हाल नहीं रहा है,

खेती एक प्रकारसे हुई ही नहीं, और राज्यका लगभग हर खेत गिरवी रख देना पड़ा है। उसकी माँग थी कि यदि ईश्वरको उसके कथनमें विश्वास नहीं है तो वह अपने किसी विश्वसनीय दूतको भेजे ताकि वह स्वयं देखकर ईश्वरको सच्ची सच्ची रिपोर्ट दे सके।

चार्ल्स डारविन

उन्नोसवीं शताब्दि डारविनकी शताब्दि कहलायेगी। जिन महानतम आदमियोंने कभी भूमण्डलको स्पर्श किया है, डारविन उनमेंसे एक था। सारे साम्प्रदायिक शिक्षकोंने मिलकर जीवन-घटनाओंको जितना समझाया है, डारविनने उससे कहीं अधिक जीवन-घटनाओंकी व्याख्या की है।

एक ओर चार्ल्स डारविनका नाम लिखिये और दूसरी ओर पृथ्वीके सभी सांप्रदायिक या मजहबी शिक्षकोंका। अकेले इस एक नामसे संसारको इतना प्रकाश मिला है, जितना उन सभी दूसरे लोगोंसे नहीं। डारविनके 'विकास' के सिद्धान्तने उसके 'जीवन संघर्षमें योग्यतमके विजयी' होनेके सिद्धान्तने, उसके नाना प्रकारके प्राणियोंकी उत्पत्तिके सिद्धान्तने हर विचारशील आदमीके मस्तिष्कमेंसे कट्टर ईसाइयतके अन्तिम अवशेषोंको समाप्त कर दिया। उसने न केवल यह कहा ही किन्तु सिद्ध भी कर दिया कि इलहामी पुरुषोंको इस ससारकी कुछ जानकारी न थी, उन्हें आदमीके आरंभका कुछ पता न था, वह भूगर्भशास्त्रके बारेमें, गणित ज्योतिषके बारेमें, और प्रकृतिके बारेमें कुछ न जानते थे। और बाइबल एक ऐसा ग्रन्थ है जिसकी रचना भयप्रेरित अज्ञानके हाथों हुई है। जरा उन आदमियोंका विचार कीजिये जो चार्ल्स डारविनके सिद्धान्तका प्रतिवाद करनेका प्रयत्न करते थे। कोई भी आदमी अपनेको इतना अज्ञानी नहीं मानता था कि डारविनका खंडन न कर सके और वह जितना ही अधिक अज्ञानी होता उतनी ही प्रसन्नतापूर्वक इस कार्यके लिए तैयार हो जाता। ईसाई संसारने डारविनका उपहास किया, मजाक उड़ाया और उससे घृणा की, तो भी जब उसका शरीरांत हुआ तो इंग्लैण्डको इस बातका अभिमान था कि उसने डारविनकी मिट्टीको अपने श्रेष्ठतम, और महत्तर पुत्रोंके आसपास जगह दी। चार्ल्स डारविनने विद्वानोंके संसारको जीत लिया। उसके सिद्धान्त आज वास्तविक घटनाएँ बने हुए हैं।

चार्ल्स डारविनने कट्टर ईसाइयतके आधारको नष्ट कर दिया। जिन बातोंको हम जानते हैं कि वे न कभी घटित हुई और न हो सकती थीं, उनमें श्रद्धाके अतिरिक्त और कुछ बच नहीं गया है। मजहब और विज्ञान परस्पर शत्रु है। एक मिथ्या विश्वास है, दूसरा वास्तविक घटना है। एकका आधार असत्य है, दूसरेका सचाई। एक भय और श्रद्धाका परिणाम है, दूसरा खोज और तर्कका।

धार्मिक मतमतान्तर

मैं कट्टर धर्मकी काफी चर्चा करता रहा हूँ। अनेक बार अपने व्याख्यानके अन्तमें मेरी कुछ भले धार्मिक आदमियोंसे भेंट हुई है और उन्होंने मुझे कहा है :—

" तुम उस तरह नहीं कहते जिस तरह हम ठीक ठीक विश्वास करते हैं।"

" मैं उस तरह कहता हूँ जिस तरह तुम्हारे धर्म-ग्रन्थोंमें लिखा है। "

" ओ, लेकिन अब हम उनकी बहुत परवाह नहीं करते। "

" तो तुम उनमें परिवर्तन क्यों नहीं कर डालते ? "

" हम अपनेमें जैसा है, समझे हुए हैं, और संभव है यदि हम उनमें कोई परिवर्तन करना चाहें तो कदाचित् हम एकमत न हो सकें। "

ऐसा लगता है कि धार्मिक मत इन दिनों बड़ी ही सुरक्षित अवस्थामे हैं। लोगोंमें एक तरहकी भीतरी मान्यता व्याप्त है कि वे उनमें विश्वास नहीं करते, उसके इधर उधरसे रास्ता काटकर निकला जा सकना है, उनकी पक्तियोंके भीतर झॉककर नया अर्थ निकाला जा सकता है; और यदि लोग नया मत बनाना चाहें तो वे आपसमें सहमत न हो सकेंगे और वे सार्वजनिक रूपमें तो नहीं किन्तु निजी तौरपर जो चाहें सो कहते रह सकते हैं। जब भी किसी धर्मका कोई उपदेशक किसी धार्मिक संप्रदायका प्रतिनिधि होते हुए भी उसकी मान्यताके विरुद्ध प्रचार करता है, तो मुझे यह ठीक जँचता है कि उसे न्यायसे दण्डित किया जाय। मैं मानता हूँ कि हर उस पादरीको दड मिलना ही चाहिए जो उस सिद्धान्तका प्रचार नहीं करता जिसे वह मानता है। मेरी उस प्रेस-बिटेरियन धर्मोपदेशकसे कुछ भी सहानुभूति नहीं है

जो प्रेस-बिटेरियन धर्मासनसे नास्तिकताका प्रचार करता है और प्रेस-बिटेरियन रुपया लेता है। जब वह अपने विचारोंमें परिवर्तन करे तो उसे एक आदमीकी तरह धर्मासनसे उत्तर आना चाहिए और कहना चाहिए—"मैं तुम्हारे सिद्धान्तोंमें विश्वास नहीं रखता, और मैं उनका प्रचार नहीं करूँगा। तुम्हें कोई दूसरा किरायेका टट्टू रख लेना चाहिए।"

नवीनतम मत

लेकिन मैं देखता हूँ कि मैंने मतोंकी ठीक ठीक व्याख्या की है। एक दिन मेरे हाथमें एक नया मत आया। मैंने उसे पढ़ा और मैं अब आपका ध्यान उस मतकी ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आप देखें कि क्या इस ईसाई संप्रदायने कुछ भी उन्नति की है? क्या इस संप्रदायके लिए विज्ञान-रूपी सूर्यका उदय व्यर्थ ही नहीं हुआ है? क्या ये लोग अब भी मानसिक अन्धकारकी ही संतान नहीं हैं? क्या ये लोग अब भी यह आवश्यक समझते हैं कि ऐसी बातोंमें विश्वास किया जाय जो हर तरहसे समझके परे हैं? अब हम देखें कि उनका मत क्या है? मैं इसे पढ़ना आरंभ करता हूँ—

"स्वर्ग और पृथ्वी तथा तमाम दृश्य और अदृश्य चीजोंके निर्माता सर्वशक्तिमान् पिता एक परमात्मामें विश्वास करो।"

उसका कहना है कि वह एक परमात्मा है, उसीने सृष्टिकी रचना की है और वही इसपर शासन करता है। मैं फिर वही पुराना प्रश्न पूछता हूँ,—उसने किस चीजसे इस सृष्टिकी रचना की? यदि अनन्त कालसे प्रकृति विद्यमान् नहीं थी तो इसी परमात्माने उसकी रचना की होगी। उसने इसे किससे बनाया? उसने इसकी निर्मितिमें किस सामग्रीका उपयोग किया? उस समय तक इस ईश्वरके अतिरिक्त विश्वमें और कुछ न था। अनन्त कालसे खाली बैठा हुआ परमात्मा क्या करता रहा? उसने कुछ नहीं बनाया, वह किसी वस्तुको अस्तित्वमें नहीं लाया; उसके मनमें कोई विचार ही उत्पन्न नहीं हुआ, क्योंकि जब तक विचारको उत्तेजन देनेवाली कोई वस्तु न हो तब तक कोई विचार पैदा हो ही नहीं सकता। तो फिर वह क्या करता रहा? इस मतवाले हमें इसका कुछ भी जवाब क्यों नहीं देते हैं? वे इस अनन्त अस्तित्वके बारेमें कैसे जानते हैं?

और यदि वह अनन्त है तो वह उनकी समझके भीतर कैसे आता है ? जिस चीजके बारेमें तुम जानते हो कि तुम समझते नहीं और कभी समझ भी नहीं सकते, उसमें विश्वास करनेसे क्या फायदा है ?

एक दूसरे ईसाई मतमें ईश्वरकी परिभाषा यूँ की गई है :—

" जीवित, सच्चा और सदा बना रहनेवाला परमात्मा एक ही है जिसका न कोई शरीर है, न कोई दूसरे अंग हैं और न उनमें किसी तरहकी उत्तेजना है । "

जरा इसपर विचार तो करो ! न शरीर, न अंग और न उत्तेजना ! मेरा खयाल है कि कोई आदमी शून्यकी इससे अच्छी परिभाषा नहीं कर सकता । यह सब होनेपर भी यह उत्तेजनारहित ईश्वर प्रतिदिन दुष्टोंपर क्रोध करता है, ईर्षालु है और जिसकी क्रोधाग्नि अन्तिम नरक तक पहुँचती है । यह रागरहित ईश्वर सारी मानव-जातिसे प्रेम करता है और उत्तेजनारहित ईश्वर मानव-जातिके अधिकांशको रसातल पहुँचाता है । ईश्वरकी यह परिभाषा एक ऐसी वस्तुका वर्णन है जिसकी किसीको कोई कल्पना नहीं ।

ईश्वर शासकके रूपमें

उनके मतमें यह भी है—

" हम विश्वास करते हैं कि संसारके शासनमें सभी बातें और सभी घटनायें ईश्वरकी उस कुदरतके अधीन हैं जिससे वह अपनी तमाम इच्छायें पूरी करता है । "

क्या ईश्वर संसारका शासक है ? क्या जातियोंका इतिहास इस बातका समर्थन करता है ? यदि तुम पूर्ण रूपसे ईमानदार हो और भयभीत नहीं हो, तो तुम्हें संसारके इतिहासमें इस बातका क्या प्रमाण मिलता है कि यह विश्व किसी सर्वज्ञ और दयालु परमात्माद्वारा शासित है ?

रूसकी तुम क्या व्याख्या करते हो ? साइबेरियाका तुम्हारे पास क्या जवाब है ? तुम इस बातका क्या उत्तर देते हो कि गुलाम अपने मालिकोंके कोड़ोंके अधीन युगोंतक पीसते रहे और उन्हें उसका कोई पुरस्कार नहीं मिला ? तुम्हारे पास इस बातका क्या जवाब है कि माताओंके बच्चे उन हाथोंसे छीन

लिये गये जो सहायताके लिए परमात्माके सामने फैले हुए थे ? आखिर तुम इसकी क्या व्याख्या करते हो ? तुम्हारे पास शहीदोंके अस्तित्वका क्या उत्तर है ? तुम इसका क्या जवाब देते हो कि यह परमात्मा लोगोंको आगमें जलने देता है ? सदैव न्याय होता है ? क्या निरपराधी सदैव अदंडित रहते हैं ? क्या भले लोग सदैव सफल होते हैं ? क्या ईमानदार आदमियोंको हमेशा खानेको मिलता है ? या क्या दयावान् कभी नंगे नहीं घूमते ? तुम्हारे पास इस बातका क्या उत्तर है कि संसार दुःख दर्द और आसुओंसे भरा है ? तुम्हारे पास इस बातका क्या उत्तर है कि भूकंप आदमियोंको निगल गये ? ज्वालामुखी पर्वतों और तूफानोंने उन्हें पृथ्वीसे मिटा दिया ? यदि हम सबके ऊपर किसी सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् और दयालु परमात्माका शासन है, तो क्या इन अकालों, महामारियों और प्लेगोंकी आसानीसे व्याख्या हो सकती है ?

मैं नहीं कहता कि कोई नहीं है। मैं नहीं जानता हूँ। जैसा मैं पहले कह चुका हूँ यह पृथ्वी ही वह ग्रह है जिसपर मैं कभी पैदा हुआ। मैं इस पृथ्वीके एक ग्रामीण जिलेमें रहता हूँ और इन चीजोंके बारेमें उतना नहीं जानता जितना कि ये पादरी पुरोहित जाननेका दावा करते हैं। किन्तु यदि दूसरे लोकके बारेमें भी इन लोगोंका ज्ञान वैसा ही है जैसा इस लोकके बारेमें, तो वह इस योग्य नहीं कि उसकी चर्चा की जा सके।

वे उक्त बातोंका क्या उत्तर देते हैं ? वे कहते हैं कि ईश्वर यह बाते केवल होने देता है। यदि मैं एक गुंडेके पास खड़ा होऊँ और वह एक बच्चेका सिर फोड़ रहा हो और मैं उसे रोकनेकी पूरा सामर्थ्य रखते हुए भी वैसा होने दूँ, तो तुम मुझे क्या कहोगे ? तुम सच सच यही कहोगे कि मैं हत्यारे जितना ही खराब हूँ। क्या ईश्वर इन सब बातोंको रोक सकता है ? यदि वह रोक सकता है और नहीं रोकता है, तो वह दुष्ट है, वह परमात्मा नहीं है। लेकिन वे कहते हैं कि वह हमें करने देता है। किसलिए ? ताकि हम कर्ममें स्वतंत्र रहें। किसलिए ? मैं समझता हूँ ताकि ईश्वर यह जान सके कि कौन भला है और कौन बुरा ? क्या वह यह बात उस समय नहीं जानता था जिस समय उसने हमें बनाया ? क्या वह यह ठीक ठीक नहीं समझता था कि वह क्या बनाने जा रहा है ? ऐसे आदमियोंको क्यों बनाया जिन्हें वह जानता था कि अपराधी बनेंगे ? यदि मैं एक मशीन

बनाऊँ, जो बाजारोंमें चले फिरे और आदमियोंकी जान ले, तो तुम मुझे फाँसीपर लटका दोगे। यदि परमात्माने एक ऐसे आदमीकी रचना की है जिसके बारेमें वह जानता था कि वह हत्या करेगा, तो परमात्मा हत्याका दोषी है। यदि परमात्माने जान बूझकर एक ऐसे आदमीकी रचना की है जो अपनी स्त्रीको पीटनेवाला है, जो अपने बच्चोंको भूखों मारनेवाला है, तो मेरा निवेदन है कि उस दुष्टको अस्तित्वमें लानेके कारण परमात्मा ही सब दोषोंके लिए जिम्मेदार है। यह सब होनेपर भी हमें जातियोंके इतिहासमें परमात्माकी कुदरत देखनेको कहा जाता है।

मैंने जो थोड़ा बहुत पढ़ा है, उससे मैं यही जान सका हूँ। यदि कभी आदमीको सहायता मिली है तो वह आदमीसे मिली है, यदि कभी गुलामीकी बेड़ियाँ टूटी हैं तो उन्हें आदमीने तोड़ा है। मानवताके शासनमें यदि कभी कोई खराब बात हुई है तो यह कठिन नहीं है कि उसके दोषी आदमियोंका पता लगाया जा सके और उनपर उसकी जिम्मेदारी डाली जा सके। तुम्हें आकाशकी ओर देखनेकी जरूरत नहीं। तुम्हें न देवताओंकी प्रशंसा करनेकी जरूरत है और न निंदा। तुम उक्त बातोंका संतोषजनक कारण यहीं इसी पृथ्वीपर खोज सकते हो।

परमात्माका प्रेम

इस मतमे मुझे दूसरी बात क्या मिलती है?—

"हम विश्वास करते हैं कि आदमी भगवानका रूप है, और कि वह उसे जाने, प्रेम करे, उसकी आज्ञाका पालन करे और सदैव उसमें आनन्दित रहे।"

मैं नहीं मानता कि कभी किसीने परमात्मासे प्रेम किया है। क्योंकि किसीने कभी उसके बारेमें कुछ जाना ही नहीं। हम एक दूसरेसे प्रेम करते हैं। हम किसी ऐसी ही चीजसे प्रेम करते हैं जिसे हम जानते हैं। हम ऐसी ही वस्तुको प्यार करते हैं जो हमें अपने अनुभवसे अच्छी, महान् और सुन्दर प्रतीत होती है। हमारे लिए यह किसी तरह संभव नहीं कि हम 'अज्ञात'से प्रेम कर सकते हैं, क्यों कि सत्यसे मानवकी प्रसन्नतामें वृद्धि होती है। हम न्यायसे प्रेम कर सकते हैं, क्योंकि इससे मानवका आनन्द सुरक्षित रहता है। हम दयासे प्रेम कर सकते हैं। हम हर सद्गुणसे जिससे हम परिचित हैं अथवा जिसकी

हम रचना कर सकते हैं, प्रेम कर सकते हैं; किन्तु हम किसी 'अनन्त अज्ञात'से प्रेम नहीं कर सकते। और हम किसी भी ऐसी चीजका रूप कैसे हो सकते हैं जिसका न कोई शरीर है, न दूसरे अंग हैं और न उनमें किसी तरहकी उत्तेजना है ?

सत्य और प्रेमका राज्य

इस मतमें मुझे निम्नलिखित बात भी पढ़नेको मिलती है—

" हम विश्वास करते हैं कि ईसा मसीह सत्य और प्रेम, न्याय और शांतिका ईश्वरी राज्य स्थापित करनेके लिए आया। "

संभव है, ईसा मसीहका यही उद्देश्य रहा हो। मैं इससे इन्कार नहीं करता, किन्तु परिणाम क्या हुआ ? ईसाई संसार शेष सारे संसारकी अपेक्षा युद्धका अधिक कारण हुआ। मृत्युके अनेक यंत्रोंके आविष्कार ईसाइयोंने ही किये हैं। आदमीका जीवन हर लेनेवाली और जातियोंको जीतकर गुलाम बनानेवाली सारी मशीनें ईसाइयोंके दिमागकी ही उपज हैं। तो भी उनका कहना है कि वह संसारमें शान्ति लेकर आया। बाइबलका कथन सर्वथा विपरीत है;—" मैं शान्ति नहीं लाया, किन्तु तलवार लाया हूँ। " और तलवार लाई गई। यूरोपमें आज ईसाई जातियाँ क्या कर रही हैं ? क्या एक भी ऐसी ईसाई जाति है जो दूसरीका विश्वास कर सके ? ऐसे कितने करोड़ ईसाई होंगे जिनके तनपर क्षमाकी वर्दी हो और हाथमें प्रेमकी बन्दूक ?

स्पेन देशका एक वृद्ध पुरुष मृत्यु-शय्यापर था। उसने पादरीको बुला भेजा। पादरी बोला—" तुम्हें मरनेसे पहले अपने शत्रुओंको क्षमा कर देना होगा। "

" मेरा कोई शत्रु नहीं है। "

" क्या कोई शत्रु नहीं ? "

" मैंने अपने अन्तिम शत्रुको तीन महीने हुए, जानसे मार डाला। "

इस समय कितने ईसाई हैं जो अपने ईसाई बंधुओंका विनाश करनेके लिए सन्नद्ध हैं ? योरपमें कौन लोग युद्धका विरोध कर रहे हैं ? क्या मजहबी लोग ? नहीं, वे ही लोग जो शांतिके मजहबमें विश्वास नहीं करते हैं।

धर्मके युद्ध

इस धर्मका पृथ्वीकी जातियोंपर क्या प्रभाव पड़ा है ? यह जातियाँ किस बातके लिए लड़ती रही हैं ? योरपकी तीस-साला लड़ाई किस बातके लिए हुई है ? हॉलैंडका युद्ध किस लिए हुआ ? इंग्लैण्डने स्कॉटलैण्डका क्यों सत्यानाश किया ? आप इन सब झगड़ोंके मूलमें कोई न कोई धार्मिक प्रश्न देखेंगे। ईसाई पादरी जिस तरह ईसाके धर्मका उपदेश देते हैं वही युद्ध, रक्तपात, घृणा और सारी अनुदारताका कारण है। और क्यों ? क्योंकि उनका कहना है कि मुक्ति विश्वासपर निर्भर करती है। वे यह नहीं कहते कि यदि तुम सद्व्यवहार करो, तो तुम वहाँ पहुँच सकोगे। वे यह नहीं कहते कि यदि तुम अपना कर्जा अदा कर दो, यदि तुम अपनी स्त्री और बच्चोंसे प्रेम करो, यदि तुम अपने मित्रों, अपने पड़ोसियों, और अपने देशके प्रति अपना कर्तव्य करो, तो तुम वहाँ पहुँच सकोगे। इस सबसे तुम्हारा कुछ भला न होगा। तुम्हें एक खास चीजमें विश्वास करना होगा। चाहे तुम कितने ही खराब हो, तुम तुरन्त क्षमा कर दिये जा सकते हो—और चाहे तुम कितने ही अच्छे हो यदि तुम उस बातमें विश्वास नहीं करते जिसे तुम समझ नहीं सकते तो तुम्हे रसातल जाना ही होगा।

आज दिन उसकी क्या शिक्षा है ? लगभग हर हत्यारा स्वर्ग जाता है। फाँसी और परमात्मामे केवल एक ही कदमका अंतर है। आज ईसाई धर्मकी यही शिक्षा है।

मैं समझता हूँ कि एक कानून बनना चाहिए; जिसके अनुसार किसी हत्यारेकेको थोड़ी भी धार्मिक सात्वना देना निषिद्ध हो।

सचाई यह है कि ईसाइयतने मित्र नहीं बनाये; शत्रु ही बनाये हैं। यह शांतिका धर्म नहीं है, जैसा प्रचार किया जाता है। यह युद्धका धर्म है। जिस आदमीको ईश्वर रसातल भेजनेवाला है उसकी हत्या करनेमें किसी भी ईसाईको संकोच क्यों हो ? एक ईसाई किसी भी नास्तिकपर दया क्यों करे जब कि वह जानता है कि ईश्वर भी उसपर दया नहीं करेगा ? यह सब होनेपर भी इस मतमें कहा जाता है कि हम अन्तमें सारी पृथ्वीपर ईसाके साम्राज्यके स्थापित होनेमें विश्वास करते हैं !

आप लोग क्या कर रहे हैं ? क्या आप लोग अपनी आजकी गतिविधिको बहुत महत्त्व देते हैं ? प्रतिवर्ष कितने आदमी पैदा होते होंगे ? लगभग ५ करोड़। वर्षमें तुम कितने आदमियोंको ईसाई बनाते होगे ? शायद ५ या ६ हजार। मैं समझता हूँ कि मैंने अंदाजा कुछ अधिक लगाया है। क्या कट्टर ईसाइयत वृद्धिपर है ? नहीं। दस वर्ष पहले कट्टर ईसाइयतमें जितने नास्तिक थे, उनकी संख्या अब सौगुनी बढ गई है। एक चीनीको ईसाई बनाये कितना समय हो गया ? यह अच्छा धर्म है कि ईसाई पादरियोंको तो बाइबलों और ट्रैक्टोंके साथ चीन भेजता है लेकिन यदि कोई चीनी यहाँ आता है तो उसकी दुर्गति की जाती है। किसी समझदार भारतीयको ईसाई बनाये तुम्हें कितना समय हो गया ? मैं समझता हूँ कि जबसे पहले ईसाई पादरीने उस भूमिपर पैर रखा, तबसे एक भी बुद्धिमान् हिन्दू ईसाई नहीं बना। मेरी समझमें आज तक एक भी बुद्धिमान् चीनी ईसाई नहीं बना। इनकी अपनी रिपोर्टोंके अतिरिक्त और कहीं हमे उनका कुछ पता नहीं चलता। वे मरणोन्मुख गरीब वूढ़ी औरतोंसे पैसा ठग लेते हैं, यह दिखलाने या बत-लानेके लिए कि एक सामान्य चीनी बाइबलके लिए कितना उत्सुक है !

अभी इस शांतिके साम्राज्यकी स्थापनामें कितनी देर है ? शांति और सद्व्यवहारकी स्थापनामें किसीको विरोध नहीं। हर भला आदमी उस दिनकी प्रतीक्षामे हैं, जब युद्ध बंद हो जायगा। हम सब उस दिनकी प्रतीक्षामें हैं जब आदमी अपनेपर काबू पा लेगा, जब उसके राग द्वेष उसकी बुद्धिके अधीन हो जायेंगे। लेकिन वह दिन आदमीकी 'संपूर्ण मुक्ति' और 'अनन्त प्रतिकार' के सिद्धान्तके प्रचारसे समीप आनेवाला नहीं। विश्वासद्वारा मुक्तिका प्रचार करनेसे वह सूर्य शीघ्र उदय होनेवाला नहीं है। उस उषापर चमकनेवाला सितारा विज्ञान है, मिथ्या विश्वास नहीं—तर्क है, धर्म नहीं।

क्या मुर्दे फिर जी उठेंगे ?

क्या कोई भी विचारशील आदमी मुर्दोंके पुनर्जीवित होनेके सिद्धान्तमें विश्वास कर सकता है ! एक आदमी है जिसका वजन है दो सौ पाउण्ड। वह बीमार पड़ता है और एक सौ बीस पाउण्डका होकर मरता है।

पुनर्जीवनके दिन उसका वजन कितना होगा ? एक आदमखोर आदमी दूसरे आदमीको खा लेता है। हम जानते हैं कि जिन कणोंको हम खाते हैं वे हमारे शरीरका अंश बन जाते हैं। यदि आदमखोर आदमीने उस पादरीको खा लिया है और उसके शरीरके कणोंको अपने शरीरका हिस्सा बना लिया है और तब वह मर गया है, तो पुनर्जीवनके प्रातःकाल वे कण किसके शरीरके माने जायेंगे ? क्या वह मिशनरी कुर्क किये हुए मालको वापिस लेने जैसी कोई कारवाई कर सकता है ? यदि 'हाँ' तो वह आदमखोर आदमी उसके लिए क्या करेगा ?

जहाँतक तर्कका संबंध है यह सिद्ध हो चुका है कि प्रकृतिमें न कुछ उत्पन्न होता है और न नष्ट। यह बार बार सिद्ध किया जा चुका है कि हमारे शरीरमें जो लाखों कण हैं वह दूसरी चीजोंमें रह चुके हैं, वह घासों और जगलोंके हिस्से रहे हैं; वह फूलोंमें खिले हैं और नाना प्रकारकी धातुओंमें रहे हैं। दूसरे शब्दोंमे हममें ऐसे कण हैं जो दूसरे लाखों प्राणियोंमें रहे हैं और जब हम मरते हैं तो ये कण पृथ्वीमें जा मिलते हैं। तब घास और वृक्षोंके रूपमें प्रकट होते हैं और तब फिर पशुओंद्वारा खाये जाते हैं। यह सब होनेपर भी प्रोफेसरों तथा कालिजोके सभापतियोंसे बनी हुई मजहबी कौंसिलके लोग उन्नीसवीं शताब्दीमे गंभीरतापूर्वक कहते हैं कि वे मुर्दोंके फिर जी उठनेकी बातमें अक्षरशः विश्वास करते हैं। ऐसी बातें आदमीके भविष्यके संबंधमें निराश करनेके लिए पर्याप्त हैं। ऐसा लगने लगता है कि कहीं बेहूदगी अमर तो नहीं है। ये प्रोफेसर ज्ञानमे कम नहीं हैं। उनमेसे एक भी ऐसा अनपढ़ नहीं है कि यह सब न समझता हो।

अन्तिम निर्णयका दिन

"हम अन्तिम निर्णायक दिनमें विश्वास करते हैं जिसका परिणाम अनन्त जीवन और अनन्त जीवन होगा।"

अन्तिम निर्णयके दिन हम सब वहाँ होंगे। हजारों, लाखों, करोड़ों, अरबो, खरबों, नीलों और शंखों जितने भी मरे हैं वे सब वहाँ होंगे। किताबें खोल-खोलकर हरेकको बारी बारी बुलाया जायगा। भेड़ें और बकरियाँ पृथक् पृथक्

कर दी जायेंगी, जब कि विश्वासी लोग अभिमानपूर्वक दाहिनी ओर चलेंगे। जो त्राण पायेंगे, वे बिना एक भी आँसूके, उन सब लोगोंसे जो उन्हें प्यार करते रहे हैं और जिन्हें वे प्यार करते रहे हैं, छुट्टी ले लेंगे। लगभग सारी मानव जाति अनन्त दंडकी अधिकारिणी होगी और थोड़ेसे भाग्यशाली अनन्त जीवनके! यह है वह आशाका संदेश जो जीवनके अंधकारको दूर करता है!

जब पादरी पुरोहित इस प्रकार पकड़में आ जाते हैं तो वे शब्दोंके दूसरे दूसरे अर्थ करना आरंभ करते हैं। वे कहते हैं कि संसार सात दिनोंमें नहीं, किन्तु सात युगोमे बना।

अपने इस मतमे वे कहते हैं कि भगवान्का दिन पवित्र होता है—हर सातवाँ दिन। थोड़ी देरके लिए मान लो कि तुम उत्तर ध्रुवके पास रहते हो, जहाँ तीन महीनेका दिन होता है, तो तुम किस दिनको पवित्र दिन मानोगे? यदि तुम उत्तर ध्रुवतक जा पहुँचो, तो तुम रविवारसे एकदम अपना पीछा छुड़ा सकते हो। तुम पृथ्वीके चक्कर काटनेकी गतिसे भी शीघ्रतर दूसरी ओर पहुंच जा सकते हो। यदि हम किसी ऐसी चीजका आविष्कार कर लें जो एक घण्टेमें एक हजार मील तय कर सके तो हम पृथ्वीके चारों ओर रविवारको कहीं भी टिकने न दे। क्या किसी समय-विभागके पवित्र होनेसे बढकर भी कोई बेहूदा बात हो सकती है? इस प्रकार तो तुम शून्यको भी सदाचारी कह सकते हो। अब हमें कहा जाता है कि बाइबल कोई वैज्ञानिक पुस्तक तो है नहीं और यूँ भी हम ईश्वरद्वारा चार हजार वर्ष पूर्व कही गई बातोपर निर्भर नहीं रह सकते, और फिर ईश्वर कोई हमारी तरह तो है नहीं; इसलिये हमे उसकी बातें बिना समझे तथा बिना प्रमाणके ही मान लेनी चाहिये।

लोग पूछते हैं, यदि हमसे बाइबल छीन ली गई, तो हम क्या करेंगे? हमारा काम उस इलहामके बगैर कैसे चलेगा जिसे कोई नहीं समझता? यदि हमारे पास झगड़नेके लिये बाइबल नहीं रहेगी, तो हम क्या करेंगे? हमारा काम बिना नरकके कैसे चलेगा? हम अपने शत्रुओंका क्या करेंगे?

हम उन लोगोंका क्या करेंगे, जिनसे हमारा प्रेम तो है किन्तु जिन्हे हम पसन्द नहीं करते ?

बिना बाइबलके सभ्यता नहीं

वे कहते हैं, यदि बाइबल न होती तो कहीं कोई सभ्यता न होती। यहूदियोंके पास बाइबल थी, रोमन लोगोंके पास बाइबल न थी। अधिक बड़ा और अधिक शानदार शासन किनका था ? हम ईमानदार बनें। इन दोनो जातियोंमेंसे, किस जातिने महत्तम कवियों, महत्तम सैनिकों, महत्तम व्याख्याताओं, महत्तम नीतिज्ञों और महत्तम शिल्पियोंको जन्म दिया ? रोमके पास बाइबल न थी। ईश्वरको रोमन साम्राज्यकी कोई चिन्ता न थी। उसने उन लोगोंको यूँ ही अपने आप स्वयं ऊपर उठने दिया। ईश्वरको हर समय यहूदी लोगोंकी ही चिन्ता थी। यह सब होने पर भी रोमवालोंने संसारको जीत लिया। उन्होंने ईश्वरके ' चुने हुए लोगों ' को भी नहीं छोड़ा। जिन लोगोंके पास बाइबल नहीं थी, उन्होंने बाइबलवालोंको हरा दिया। बाइबलवाले यहूदी लोगोंका क्या हुआ ? उनके पूजागृह उजाड़ दिये गये, और उनका नगर ले लिया गया। जब तक यहूदियोंको उनके ईश्वरने नहीं छोड़ दिया तब तक वे वैभवशाली नहीं बनें। तुर्कीलोग अपनी विजयोंका श्रेय कुरानको देते हैं। कुरानने उन्हें बाइबलके विश्वासियोंपर विजय दिलाई। हर जातिके पादरी पुरोहितोंने अपनी जातिके वैभवका श्रेय अपने धर्मको ही दिया है।

यह कहना कि जिसने रोगियोंका रोग दूर किया, लँगड़ोको चलने योग्य बनाया, अंधोंको आँखें दीं, मुर्दोंको जिन्दा किया, भूत-प्रेतोंको मार भगाया, हवाओं और लहरोंपर अधिकार किया, शून्यमेंसे भोजन पैदा किया और प्रकृतिकी सभी शक्तियोंको अपने अधीन बनाया, ऐसा आदमी ऐसे लोगोंके द्वारा, सूलीपर चढ़ा दिया गया जो उसकी इन अतिमानवीय शक्तियोंसे परीचित थे, एकदम बेसिर-पैरकी बात है। यदि उसे सार्वजनिक तौरपर फाँसी मिली, तो ईसाके ये करिश्में निजी तौरपर हुए होंगे। यदि ये करिश्में सार्वजनिक तौरपर हुए होते तो ईसाको फाँसी दी ही न जाती। इन करिश्मोंको छोड़ दो और ईसाका अतिमानवीय चरित्र नष्ट हो जाता है। वह वही रह जाता

है, जो कुछ वास्तवमें था—एक आदमी। इन आश्चर्यकर बातोंको छोड़ दो, तो ईसाकी सभी शिक्षायें बुद्धिके परेकी वस्तु नहीं रह जातीं। उस समय उनका मूल उतना ही रह जाता है जितना कि उनमें तर्क है, जितना कि उनमें सत्य है।

तब मानवताके दूसरे उपदेशकोंमेंसे ईसा अपना उचित स्थान प्राप्त कर लेता है। उसका जीवन तर्कसंगत और प्रशंसनीय हो जाता है। हम एक आदमीको देखते हैं जिसे अत्याचारसे घृणा थी, जो मिथ्या विश्वास और ढोंगकी निंदा करता था, जिसने अपने समयके निर्दय मजहबी सांप्रदायिकोंपर आक्रमण किया, जिसने ईर्षालु पादरियोंको अपना विरोधी बनाया और जिसने अपने सत्यके प्रति ईमानदार बने रहनेके लिए सच्चे वीरकी तरह मृत्युको गले लगाया।

विश्वासकी आवश्यकता

क्या विश्वास गवाहीपर निर्भर करता है? मैं समझता हूँ कि कुछ हालतोंमें यह किसी मात्रा तक अवश्य निर्भर करता है। अन्यथा यह कैसे होता है कि सारा न्यायमण्डल तमाम गवाही सुनता है, दोनों पक्षकी बातें सुनता है, न्यायाधीशका दोषारोपण सुनता है, कानूनी-पक्ष सुनता है और तब भी वे शपथपूर्वक अपना अपना मत देते हैं—छः वादीके पक्षमें और छः प्रतिवादीके पक्षमें। सभी आदमियोंपर गवाहीका समान प्रभाव नहीं पड़ता। क्यों? हमारे दिमाग एकसे नहीं हैं, हमारी समझ समान नहीं है, हमारा अनुभव समान नहीं है। यह सब होनेपर भी मुझे मेरे विश्वासोंके लिये दोषी ठहराया जाता है। मुझे पवित्र ईश्वर, पवित्र ईसा मसीह और पवित्र आत्माके एक ही साथ एक होने और तीन भी होनेमें विश्वास करना चाहिये। एक बार एकको तीन मान लिया जाय, तो एकका तीन गुणा भी एक ही होगा। यदि मैं इस गणितके गोरखधन्धेको स्वीकार न कर सकूँ, तो मुझे अनन्त काल तक रसातलमें रहना होगा! ईसाइयतका यही सबसे अधिक विषैला अंश है कि मुक्ति विश्वासपर निर्भर करती है। यही सबसे अधिक अभिशप्त हिस्सा है और यदि ईसाइयतके इस हिस्सेको तिलाञ्जलि नहीं दी जाती, तो मिथ्या-विश्वासके अतिरिक्त और कुछ शेष नहीं रह जाता।

आदमी अपने विश्वासको अपने काबूमें भी नहीं रख सकता। यदि मुझे

कोई खास प्रमाण मिलता है तो मै किसी खास बातमें विश्वास कर सकता हूँ। यदि मुझे वह प्रमाण नहीं मिलता, तो यह सम्भव है कि मै उस बातपर कभी विश्वास न करूँ। यदि वह बात मेरे दिमागके अनुकूल हो तो मैं उसमें विश्वास कर सकता हूँ, यदि अनुकूल न हो तो मैं अविश्वास कर सकता हूँ। और मैं आखिर किस चीज़के सहारे चलूँ ? प्रकृतिसे मुझे इतना ही प्रकाश तो मिला है। और यदि कोई ईश्वर है तो उसने भी मुझे जीवन नामक अन्धकार और रात्रिमें अपना रास्ता टटोलनेके लिये यही एक वस्तु दी है ! मैं इस सम्बन्धमें किसी सुनी-सुनाई बातपर विश्वास नहीं करता। मुझे किसी दूसरे आदमीके कथनको अन्धे होकर स्वीकार करनेकी जरूरत नहीं और न किसी पुस्तकके सामने घुटने टेकनेकी जरूरत है। मैं अपने दिमागके मन्दिरमे ईश्वरसे परामर्श करता हूँ अर्थात् अपने तर्कसे। 'देव वाणी' मेरे कानमें कुछ कहती है। मै उस 'देव-वाणी' की आज्ञा मानता हूँ। मुझे किसकी आज्ञा माननी चाहिये ? क्या मैं किसी दूसरे आदमीके कथनपर विश्वास करूँ, उसके विचारोंपर नहीं ? किन्तु जो वह कहता है कि किसी ईश्वरने उसे कहा है ?

यदि मैं किसी ईश्वरको देखूँ तो मै उसे पहचान न सकूँगा। मैने पहले भी कहा है और फिर दोहराता हूँ कि मेरा दिमाग मेरे बावजूद सोचता है, इस लिये मुझे मेरे विचारोंके लिये दोषी नहीं ठहराया जा सकता। मै अपने हृदयकी धड़कनपर क़ाबू नहीं पा सकता। अपनी नसोंमें बहनेवाली रक्तकी धाराको मै रोक नहीं सकता। और तब भी मुझे मेरे विश्वासोके लिये दोषी ठहराया जाता है ! तो ईश्वर मुझे प्रमाण क्यों नहीं देता ? लोग कहते हैं कि उसने प्रमाण दिया है। कहाँ ? एक इलहामी पुस्तकमें। किन्तु मैं उनकी तरह इसका अर्थ नहीं करता। क्या मुझे अपनी समझका तिरस्कार करना चाहिये ? उनका कहना है—"यदि तुम अपनी बुद्धिकी बातको अस्वीकार नहीं करते तो तुम्हें मरते समय इसके लिये दुखी होना होगा।" क्या मुझे इस बातके लिये दुखी होना होगा कि मैंने एक ढोंगीका जीवन व्यतीत नहीं किया ? क्या मुझे इस बातके लिये दुखी होना होगा कि मैंने अपने आपको झूठमूठ ईसाई नहीं कहा ? क्या मेरा ईमानदार होना मेरी मृत्युकी

घड़ियोंको कण्टकाकीर्ण बनायेगा ? क्या ईश्वर मुझे ईमानदारीके अपराधके लिये अवश्य दण्डित करेगा ?

वे कहते हैं कि ईश्वर मुझे कहता है कि 'अपने शत्रुओंको क्षमा कर दो।' मैं कहता हूँ, कि मैं उन्हें क्षमा करता हूँ, किन्तु वह कहता है:—'मैं तो अपने शत्रुओंको रसातल भेजूँगा।' ईश्वरके लिये परस्परविरोधी आचरण शोभा नहीं देता। यदि वह चाहता है कि मैं अपने शत्रुओंको क्षमा करूं, तो उसे अपने शत्रुओंको क्षमा करना चाहिये। मुझसे अपने ऐसे शत्रुओंको क्षमा कर देनेकी आशा की जाती है जो मुझे हानि पहुँचा सकते हैं, पर मैं ईश्वरसे केवल ऐसे शत्रुओंको क्षमा करनेको कहता हूँ जो उसे किसी तरहकी हानि नहीं पहुँचा सकते। उसे कमसे कम उतना उदार तो होना ही चाहिये, जितना उदार वह मुझे देखना चाहता है। और मैं किसी ईश्वरसे तब तक क्षमा-याचना करनेके लिये तैयार नहीं हूँ, जब तक मैं अपने शत्रुओंको क्षमा करनेकी तैयारी न करूँ, जब तक मैं उन्हें क्षमा न कर डालूँ। मैं इतना ही चाहता हूँ कि इस ईश्वरको अपने '*सिद्धान्त*' के *अनुसार कार्य करना चाहिये*। मैं '*विश्वास*' के धर्ममें विश्वास नहीं करता; किन्तु दयाके धर्ममें, सत्कर्मोंके धर्ममें करता हूँ। आदमीको अपने विश्वासके लिये उत्तर-दायी माननेका विचार ही मज़हबी असहनशीलता और अत्याचारका मूल कारण है।

मैं मानवताके धर्ममें विश्वास करता हूँ। ईश्वरसे प्रेम करनेसे कहीं अच्छा है कि आदमी अपने मानव बन्धुओंसे प्रेम करे। हम अपने मानव-बन्धुओंकी सहायता कर सकते हैं। हम ईश्वरकी कुछ सहायता नहीं कर सकते। जो हम नहीं कर सकते उसका झूठा बहाना करते रहनेकी अपेक्षा यह कहीं अच्छा है कि जो कुछ हम कर सकते हैं करे।

सदाचारका कोई रंग नहीं है और न दया, न्याय तथा प्रेमका कोई आकार-विशेष।

अनन्त दण्ड

अब मैं इस मतके अन्तिम सिद्धान्तको लेता हूँ, अनन्त दण्डके सिद्धान्तको। मेरा निश्चय है कि मैं कभी कोई ऐसा व्याख्यान न दूँगा, जिसमें मैं अनन्त दण्डके सिद्धान्तका खण्डन न करूँ। उक्त मतका यह सिद्धान्त ऐसा है कि इसके लिये अफरीकाके जंगलोंमें रहनेवाले नीचतम असभ्य प्राणी भी

अपमान अनुभव करेगा। जो आदमी इस उन्नीसवीं शतीमें भी अनन्त दण्ड अथवा अनन्त पीड़ाके सिद्धान्तका प्रचार करता है, उसका जीवन ही व्यर्थ है। जरा उस सिद्धान्तका विचार करो ! अनन्तकालीन दण्ड !

इस संसारमें हम कभी पूर्ण रूपसे सभ्य नहीं कहला सकते, जब तक पृथ्वीपर 'फॉसी' के तख्तोंकी छाया विद्यमान है। हम तब तक कभी सम्पूर्ण सभ्य नहीं हो सकते जब तक पृथ्वीपर ऐसे जेल-खाने हैं, जिनकी चार-दीवारीके भीतर आदमी क़ैद है। जब तक हम सभी अपराधोंसे मुक्त नहीं हो जाते, हम सभ्य कहला ही नहीं सकते। यह सब होने पर भी इस ईसाई मतके अनुसार ईश्वरका एक अनन्त जेलखाना होना चाहिये और स्वयं उसे उसका जेलर। उसे अपने कैदियोंको निरन्तर जेलमे रखना होगा। क्या उनका सुधार करनेके लिये ? नहीं। निरुद्देश्य दण्ड देनेके उद्देश्यसे। और यह दण्ड क्यों ? क्योंकि जिस समय वे इस पृथ्वीपर थे, बेचारे किसी चीज़में विश्वास न कर सके थे। जिनका जन्म अज्ञानमे हुआ, जो दरिद्रतामें पले, जो लोभ-लालचके फंदोंमें जकड़े थे, जिन्हें 'श्रम' और 'अभाव' ने कुरूप बना दिया था—ऐसे लोगोंको अनन्त युगों तक जिम्मेदार ठहराया गया। कोई आदमी इससे भयानक कल्पना नहीं कर सकता। कोई आदमी इससे बढ़कर बेहूदा बात नहीं सोच सकता। इस सिद्धान्तकी उत्पत्ति अज्ञान-रूपी भूमि और भय-रूपी वर्षामेंसे हुई।

जो रसातलमें भेजे गये

हमें कहा जाता है कि ईश्वर संसारको इतना प्यार करता है कि वह लगभग हर किसीको रसातलमें भेजेगा। यदि यह कट्टर धर्म सच्चा हो, तो संसारमें जो महानतम् और श्रेष्ठतम् महापुरुष हुए हैं वे आज ईश्वरके हाथों कष्ट पा रहे होंगे। धर्म-वालोंको इसकी कुछ चिन्ता नहीं। वे सदाकी तरहसे मौज-मेला मनानेमें मस्त हैं। यदि यह सिद्धान्त सत्य हो, तो बैंजामिन फ्रेंकलिन, जो दुनियाके श्रेष्ठ और बुद्धिमान् आदमियोंमेंसे एक था, जिसने हमें एक स्वतन्त्र सरकार देनेके लिये इतना कुछ किया, इस समय ईश्वरके अत्याचारोंसे पीड़ित होगा। यदि धर्मोपदेशक लोग ईमानदार हों तो उन्हें अपने श्रोताओंसे कहना चाहिये, देखो, बैंजामिन फ्रैंकलिन नरकमें है, कोई

उसका अनुकरण करनेका साहस न करे। सभी पादरी-पुरोहितोंमें यह बात कहनेका साहस होना चाहिये। जो बात मनमें हो, वही बोलो। या तो अपने मतका साथ दो, या उसे बदल दो। मैं आपके मनपर इस बातको अंकित करना चाहता हूँ, क्यों कि मैं इस दुनियामेंसे नरककी आग बुझा देना चाहता हूँ।

मै चाहता हूँ कि आप यह बात जान लें कि इस मतके अनुसार जिन लोगोंने इस महान् शानदार सरकारकी स्थापना की, वे सभी आज नरकमें हैं। जो आदमी क्रान्ति-युद्धमे लड़े और जिन्होंने ब्रिटेनके हाथोंसे यह प्रायद्वीप छीना, वे सब ईश्वरकी अनन्त क्रोधाग्निके शिकार हैं। धर्मोपदेशकोंमें इस बातके कहनेका साहस होना चाहिये। गृह-युद्धमें देशकी सेवा करनेवाले हजारो वीर, जेलोंमें भूखों मरनेवाले सैंकड़ो वीर—सभी ईश्वरके जेल-खानोंमें हैं। यदि इस मतका उक्त सिद्धान्त सत्य है तो महान्तम वीर, महान्तम कवि, महान्तम वैज्ञानिक और वे सभी लोग जिन्होंने इस संसारको सुन्दर बनानेका प्रयत्न किया, रसातल गये हैं।

हमबोल्ट, जिसने प्रकाश दिया, जिसने मानवताके दिमागी धनमें वृद्धि की; गेटे, शिलर और लेसिंग, जिन्होंने एक प्रकारसे जर्मन-भाषाको जन्म ही दिया, सब ही रसातल गये। लापलेस, जिसने आकाशको एक खुली पुस्तककी तरह पढ़ा, वह भी नरकमें है। मानव-प्रेमका कवि राबर्ट-बर्न भी वहीं है। डिकंसने करुणाका पाठ पढ़ाया। ईश्वर उससे भी बदला ले रहा है। हमारे अपने राल्फ वाल्डो एमर्सनको सुननेके ईसाई पादरियोको हजारों अवसर मिले थे; तो भी उसने किसीकी दयाके भरोसे 'मुक्ति' के सिद्धान्तको नहीं अपनाया। उसने अपने मानव-बंधुओंको अपने श्रेष्ठतम ऊँचेसे ऊँचे विचार दिये। यह सब होने पर भी वह आज दिन नरकमें है।

लौंग-फैलो, जिसने हजारों घरोंको स्वच्छ बनाया, जो अपने मानव बन्धुओंसे प्यार करता था, जिसने गुलामोंकी स्वतन्त्रताके लिये भरसक प्रयत्न किया, जिसने आदमीकी प्रसन्नतामें वृद्धि करनेकी भरसक कोशिश की, वह भी नरकमें है। आदमीके अधिकारका (Rights of man) लेखक थामस-पेन, जिसने पृथ्वीके दोनों गोलार्धोंमें मानव-जातिकी स्वतन्त्रताके लिये अपने आपको खपा दिया, जो प्रजातन्त्रके संस्थापकोंमेंसे एक था, वह भी

आज नरकमें है। 'पोजिटिव-फिलासफी' का लेखक आगस्ट कामटे, जो अपने मानव-बन्धुओंको इतना अधिक प्यार करता था कि उसने 'मानवता' को ही 'ईश्वर' के दर्जेपर पहुँचा दिया, जिसने अश्रु-मुख हो अपने महान् काव्यकी रचना की; वह भी आज नरकमें है।

वाल्टेअर, जिसने फ्रांससे यातनाका मूलोच्छेद किया; जिसने किसी भी दूसरे जीवित अथवा मृत आदमीकी अपेक्षा मानव-स्वतन्त्रताके लिये अधिक कार्य किया; जो मिथ्या विश्वासोंकी हत्या करनेवाला था—वह भी शेष सब लोगोंके साथ नरकमें है।

ज्यूरदनो ब्रूनो—लम्बी अन्धकारपूर्ण रात्रिके बाद सुबहका प्रथम सितारा; बैनेडिक्ट स्पिनोज़ा—सृष्टि और ईश्वरको एक ही माननेवाला, दार्शनिक, पवित्र और उदाराशय; डिडेरोट,—विश्वकोषनिर्माता, जिसने तमाम ज्ञानको एक छोटी-सी गागरमें कैद करनेका प्रयत्न किया ताकि वह एक किसान और एक राजकुमारको ज्ञानके एक ही दिमागी-स्तरपर खड़ा कर दे, जो समस्त पृथ्वीपर ज्ञानका बीजारोपण करना चाहता था; जो मानवताके लिये काम करना चाहता था—वह भी नरकमें ही है।

स्काटलेण्डका दार्शनिक डेविड ह्यूम, भी वहीं है। संगीताचार्य्य बीथोविन भी वहीं है। सुर-तालका शेक्सपीयर वेगनर भी वहीं है। उन सबके कारण आज नरकमें स्वर्गकी अपेक्षा कहीं अच्छी संगीत–लहरियोंका साम्राज्य है।

शैले भी, जिसकी आत्मा कोयलकी भाँति आकाशगामिनी थी, वहीं है। शेक्सपीयर जिसने मानवताको उठानेके लिये सभी जीवित अथवा मृत पादरी-पुरोहितोंकी अपेक्षा अधिक कार्य किया, जो मानव-जातिके महान्तम व्यक्तियोंमें था,—वह भी वहीं है।

लेकिन, जिन्होंने जेलोंकी स्थापना की; जिन्होंने बेड़ियाँ बनाईं, जिन्होंने यंत्रणाके आयुधोंका आविष्कार किया; जिन्होंने आदमियोंके चमड़ेको चीर-फाड़ डाला, जला डाला; जिन्होंने बच्चोंको चुराया, जिन्होंने पति-पत्नियोंको बेचा; जिन्होंने हजारों वर्ष तक चिताकी आगको प्रज्वलित रखा--वे सब स्वर्गमें हैं। मैं उस स्वर्गकी मंगल-कामना करता हूँ।

कुछ ही समय पूर्व, पृथ्वीके शासक परमात्माने प्रातःकालके ताराओंकी छायामें 'ओहियो' में बाढ़ ला दी। एक घर नीचे आ रहा था। उसकी छतपर एक मानव दिखाई दिया—एक स्त्री—एक माता। लोगोंने उसे बचाना चाहा। वह बोली—"नहीं, मैं जहाँ हूँ वहीं रहूँगी। इस घरमें मेरे तीन मृत बच्चे हैं। मैं उन्हें छोड़कर नहीं जा सकती।" क्या असीम प्रेम है! निराशा और मृत्युसे भी कहीं अधिक गहरा। यह सब होनेपर भी ईसाई मत कहता है कि यदि वह स्त्री, यदि वह माँ, कहीं उनके मतमें विश्वास करनेवाली न हुई, तो ईश्वर उसकी आत्माको अनन्त नरककी आगमें झोंक देगा।

इस ईसाई-धर्मके विरुद्ध मेरी सबसे बड़ी आपत्ति इसका अनन्त-यातनाका सिद्धान्त है। मैं इसकी असीम हृदयहीनताके कारण इसे अस्वीकार करता हूँ। गत युद्धमें अनेक ईसाई, जो यह मानते थे कि यदि वे मारे जायेंगे तो स्वर्ग जायेंगे, कुछ दूसरे लोगोंको रुपया देकर अपनी बजाय लड़नेके लिये भेजते थे। बेचारोंको यदि घरपर रहना मिले, तो वे नरकमें जानेको तैयार थे। आप देखते हैं कि वे अपनी मान्यताओंमें ईमानदार नहीं हैं। वे यह कल्पना नहीं कर सकते कि वे कितनी भयानक झूठका प्रतिपादन करते हैं। आज रात मै आप सबसे हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता हूँ कि किसी ऐसे गिर्जेके निर्माणके लिये, जिसमें इस झूठका प्रचार होता है, एक डालर न दें, किसी पादरीको जिसके मुँहमें यह झूठ भरा हो, धर्मप्रचारार्थ विदेश भेजनेके लिए एक कौड़ी न दें।

दूसरी आपत्ति

कट्टर धर्मके विरुद्ध मेरी दूसरी आपत्ति यह है कि यह मानवीय-प्रेमको नष्ट करता है। इसका कहना है कि परलोकमें स्वर्ग बनानेके लिए इस संसारसे प्रेम करना आवश्यक नहीं।

स्त्री नहीं, बच्चे नहीं, भाई नहीं, बहन नहीं,—मानवी हृदयका कोई स्नेह-संबंध नहीं—जब तुम वहाँ पहुँचोगे तो तुम देवताओंमें रहोगे। मैं नहीं जानता कि मुझे देवता अच्छे लगेंगे या नहीं। मै यह भी नहीं जानता कि मै किसी ऐसे स्वर्गमें जानेकी अपेक्षा जो मुझसे प्रेम करते रहे हैं और जिन्हें मैं जानता हूँ, उनके साथ रहना अधिक पसंद करूँगा। मैं अपने प्रेम-

भाजनोंको छोड़कर किसी स्वर्गकी कल्पना नहीं कर सकता। अपने पिताको छोड़ो, अपनी माताको छोडो, अपनी स्त्रीको छोड़ो, अपने बच्चोंको छोड़ो, हर चीज़को छोडो, और ईसामसीहके पीछे चलो! मै नहीं चलूँगा। मैं अपने हृदयकी श्रेष्ठतम् भावनाओको किसी स्वार्थपूर्ण भयकी वेदीपर बलि न होने दूँगा।

मानवीय प्रेमको समाप्त कर दो, तो शेष क्या रहता है? परलोकमे ही क्या रहेगा, और यहाँ क्या बचेगा? क्या मानवीय प्रेमके बजाय सगीतकी कल्पना की जा सकती है? कलाकी की जा सकती है? आनन्दकी की जा सकती है? मानवीय प्रेम ही हर घरका निर्माता है। मानवीय प्रेम ही समस्त सौन्दर्यका रचयिता है। प्रेम ही प्रत्येक चित्रको चित्रित करता है और करता है प्रत्येक मूर्तिका निर्माण। प्रेम ही हर चूल्हेको प्रज्वलित रखता है। मानवीय प्रेमके बिना स्वर्ग क्या होगा? यह सब होनेपर भी हमें ऐसे ही स्वर्गका लालच दिया जाता है, जहाँ न स्त्री हो, न माँ हो और न बच्चे हों। और तुम्हें आशा है कि किसी देवताकी संगति प्रसन्न रखेगी। ऐसा धर्म निंदनीय है। ईसाइयत मानवीय प्रेमको शून्य समझती है, तो भी—

जीवनके काले बादलोंपर प्रेम ही एकमात्र इन्द्रधनुष्य है। यही प्रातः सायं चमकनेवाला सितारा है। यह बच्चेके झूलनेपर चमकता है और शब्दविहीन समाधिपर भी अपना तेज फैला देता है। यह कलाकी जननी है। यह कवि, देशभक्त और दार्शनिकको प्रेरणा देता है। यह प्रत्येक हृदयका प्रकाश है। इसीने सबसे पहले अमरत्वका स्वप्न देखा। इसने संसारको स्वर-तालसे भर दिया, क्योंकि प्रेमकी भाषाका ही दूसरा नाम संगीत है। प्रेम ही वह जादूगर है जो निकम्मी चीज़ोंको आनन्द प्रदान करता है। यह उस अद्‌भुत पुष्प—हृदय—की सुगध है, जिसके बिना हमारा दर्जा पशुओंसे भी गया-बीता हो जाता है, किन्तु जिसके होनेसे पृथ्वी स्वर्ग बन जाती है और हम सब देवता।

यह स्वर्ग क्या शानदार संसार होगा! उस संसारमे कही कोई सुधार नहीं, थोड़ा-सा भी नहीं।

जब तुम वहाँ पहुँचो, ईश्वर तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता। वह जिसने तुम्हारी आत्माको पैदा किया है, आत्माके लिए उतना कुछ भी नहीं कर सकता जितना कि एक सामान्य ईसाई पादरी। आत्मा स्वर्ग जाती है।

जहाँ सत्संगति ही सत्संगति है, कोई बुरा उदाहरण नहीं। ईश्वर, उसका पुत्र और पवित्र आत्मा, सभी वहाँ हैं, फिर भी वह उस गरीब अभागेको रसातल भेजनेके अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकते।

मैं जो कहता हूँ वह इतना ही है—न कोई ऐसा ससार है और न हो ही सकता है जहाँ हर आदमीको सुकर्म करनेका अनन्त अवसर न हो।

ईसाई धर्मके प्रति मेरी यही आपत्ति है। यदि इस पृथ्वीका प्रेम स्वर्गका प्रेम नहीं है, जिन्हें हम यहाँ प्यार करते हैं, वे यदि हमसे वहाँ पृथक् कर दिये जायेंगे, तो मैं अनन्त निद्रा चाहता हूँ। मुझे अकेला रहने दो। यदि कब्र फटनेके समय मुझे उन चेहरोंका दर्शन नहीं होगा जो मेरे जीवनको प्रकाशित करते रहे हैं, तो मुझे सोने दो। इस अनन्त दण्डके सिद्धान्तके सच्चा होनेसे मैं यह कहीं अधिक अच्छा समझता हूँ कि हमारी सभ्यताका यह भवन टूट-फूटकर गिर जाय और धूल बनकर अदृश्यमें विलीन हो जाय।

मैं समझता हूँ कि ईश्वरसे प्रेम करनेकी अपेक्षा अपने बच्चोंसे प्रेम करना हजार दर्जे अच्छा है, क्यों कि तुम उनकी कुछ सहायता कर सकते हो। मैं समझता हूँ कि ईश्वरका काम तुम्हारी मददके बिना चल सकता है। यह निश्चित है कि हम किसी ऐसेकी कुछ मदद नहीं कर सकते, जिसका न शरीर है, न अंग है और न उनमें किसी तरहकी उत्तेजना है।

मैं क्या मानता हूँ?

मैं परिवारके धर्ममें विश्वास करता हूँ। जिस परिवारमें सदाचारके साथ प्रेम है, वह संसारका सुन्दरतम फूल है। और मैं कहता हूँ कि परमात्मा किसी ऐसे आदमीको जिसने इस लोकमें किसी परिवारको सुखी बनाया हो, दूसरे लोकमें रसातल नहीं भेज सकता। ईश्वर किसी दयालु हृदयके साथ निर्दयताका व्यवहार नहीं कर सकता। ईश्वर किसी ऐसे आदमीको आगमें नहीं झुलसा सकता जिसने यहाँ किसी नंगेको वस्त्र पहनाये हों। ईश्वर किसी ऐसे आदमीको, जिसने अपने मानव-बन्धुओंकी दशा सुधारनेके लिये कुछ किया हो, अनन्त यातना नहीं दे सकता। यदि वह दे सकता है, तो मैं स्वर्गमें ऐसे ईश्वरकी संगति करनेकी अपेक्षा नरक जाना अधिक पसन्द करूँगा।

अमरत्व

वे कहते हैं कि दूसरी भयानक बात जो मैं करता हूँ वह यह है कि मैं अमरत्वकी आशा छीनता हूँ। न मैं छीनता हूँ, न छीनना चाहता हूँ और न छीन सकता हूँ। मानवीय प्रेमने ही सर्व प्रथम अमरत्वका स्वप्न देखा; इतना होनेपर भी ईसाइयत अमरत्वमेंसे मानवीय प्रेमको निकाल बाहर करना चाहती है। हम प्रेम करते हैं, इसीलिये हम (भविष्यमें भी) जीवित रहना चाहते हैं। हमारा प्रेम-पात्र मरता है, हम उससे फिर मिलना चाहते हैं और मानवीय हृदयके इस प्रेममेंसे ही अमरत्वकी आशाका महान् पौधा उग आया है।

मैं मानवीय आशाकी सबसे मद्धम किरणको भी नष्ट न होने दूँगा; किन्तु मैं यह स्वीकार नहीं करता कि हमें अपना अमरत्वका ख्याल बाइबलसे मिला है। यह मूसासे बहुत पहलेसे चला आया है। यह तमाम मिस्रमें व्याप्त है, तमाम भारतमें है। जहाँ भी आदमी रहा है, उसने दूसरे संसारकी कल्पना की है, जहाँ वह इस संसारके बिछुड़ोंसे मिल सके।

हम अमरत्वके इस विश्वासका इतिहास उन समाधियोंमें और उन मन्दिरोंमें देखते हैं जिनका निर्माण रोनेवालोंने किया, आशावानोंने किया। अपने मृतोंकी मिट्टीपर उन्होंने दूसरे जीवनके चिह्न बनाये।

हम नहीं जानते। हम दुःख-दर्दपूर्ण भावी जीवनका चित्र नहीं खींचते। हम अपने मृतकोंको अपनी माता प्रकृतिकी गोदमें विश्राम करने देते हैं।

यदि ईसा वास्तवमें ईश्वर था, तो उसने साफ साफ यह क्यो नहीं बताया कि कोई दूसरा जीवन है? उसने इसके बारेमें हमें कुछ भी क्यों नहीं बताया? वह संसारको अन्धकार और सन्देहके मुँहमें छोड़ कर स्वयं चुपचाप मृत्युके मुँहमें क्यों चला गया? क्यों? क्योंकि वह एक आदमी था और वह नहीं जानता था। हम नहीं जानते। हम नहीं कह सकते कि मृत्यु कोई एक बड़ी दीवार है अथवा कोई एक बड़ा दरवाजा; दिनका आरम्भ है अथवा अवसान, जीवनका सूर्योदय है अथवा सूर्यास्त; अथवा यह वह अनन्त जीवन है जो हर किसीको शान्ति और प्रेम प्रदान करता है।

माता पिताकी सलाह

जो माता पिता बाइबलको इलहामी ग्रंथ नहीं मानते उन्हें अपने बच्चोंको यह शिक्षा नहीं देनी चाहिए कि बाइबल इलहामी ग्रंथ है। उन्हें एकदम ईमानदार होना चाहिए। ढोंग कोई गुण नहीं है और वास्तविक घटनाओंका जो मूल्य है, वह मिथ्या कथनोंका कभी हो नहीं सकता।

एक बुद्धिवादीका यह कर्तव्य है कि वह अपने बच्चेके दिमागको मिथ्या विश्वासके परिणामस्वरूप बिगड़ने न दे। वह जिस प्रकार बच्चेके शरीरकी रक्षा करता है उसी प्रकार उसे मिथ्या विश्वासके आक्रमणसे उसके दिमागकी भी रक्षा करनी चाहिये। रविवारके धार्मिक स्कूलोंमें बच्चोंको सिखाया जाता है कि विश्वास करना कर्तव्य है, उसके लिये कोई प्रमाण नहीं चाहिये, श्रद्धाका वास्तविकतासे सम्बन्ध नहीं और धर्म तर्कसे ऊपर है। उन्हें सिखाया जाता है कि वे अपनी स्वाभाविक बुद्धिका प्रयोग न करें, जो कुछ वे वास्तवमे सोचते हैं उसे मुँहसे न निकालें, मनमें किसी संदेहको जगह न दे, हैरान करनेवाले प्रश्न न पूछें, प्रत्युत जो कुछ अध्यापकगण कहें उसे अक्षरशः सत्य माने। इस प्रकार बच्चोंके दिमागपर आक्रमण किया जाता है, उन्हें बिगाड़ा जाता है और उनपर विजय प्राप्त की जाती है। क्या कोई भी शिक्षित आदमी अपने बच्चेको किसी ऐसे स्कूलमें भेजेगा जिसमे गुरुत्वाकर्षणके संबंधमें न्यूटनके कथनको ही अस्वीकार किया गया हो, जिसमें गैलीलियोके बताये हुए वस्तुओंके जमीनपर गिरनेके सिद्धान्तका मजाक उड़ाया गया हो, जिसमें कैपलरके तीन सिद्धान्तोंको कुबुद्धिका परिणाम समझा जाता हो और जिसमें पृथ्वीका सूर्यके गिर्द घूमना एकदम बेहूदा बात मानी जाती हो?

तो फिर एक बुद्धिमान् आदमी अपने बच्चेको बाइबलका भूगर्भशास्त्र और ज्योतिषशास्त्र क्यों सीखने दे ? बच्चोंको यही शिक्षा मिलनी चाहिए कि वे सत्यकी खोज करें, ईमानदार बनें, दयावान् बनें, उदार बनें, करुणापूर्ण बनें, और न्यायी बनें। उन्हें सिखाना चाहिये कि वे स्वतंत्रतासे प्रेम करें और अपने आदर्शके अनुसार जियें।

एक अविश्वासी जो प्रकृतिकी एकरूपतामें, कार्य-कारणकी अटूट शृंखलामें, विश्वास करता है, अपने बच्चेके दिलमें यह बातें क्यों बैठने दे कि करिश्में हुए हैं, आदमी सशरीर स्वर्ग गये हैं, आगने कपड़े और आदमियोंको जलानेसे इंकार कर दिया है, लोहा पानीपर तैरने लगा है, चंद्रमा और पृथ्वीकी गति रुक गई है; और पृथ्वीकी तो गति रुकी ही नहीं बल्कि वह दूसरी ओर मुड़ गई है !

विचारवान् मनुष्य यदि जानता है कि ये करिश्में कभी नहीं हुए, तो वह अपने बच्चोंके दिमागमें किसीको भी ये मूर्खतापूर्ण और असंभव बातें क्यों ठूसने दे ! वह अपने मेमनोंको मिथ्या विश्वासके भेड़ियों और विषैले सर्पोंकी देखरेखमें क्यों रहने दे ? बच्चोंको केवल वही बातें सिखाई जानी चाहिए जिनकी किसीको ठोस जानकारी हो। कल्पनाओंको वास्तविक घटनाओंका दर्जा नहीं दिया जाना चाहिए। यदि एक ईसाई कुस्तुनतुनियामें रहे तो वह अपने बच्चोंको किसी मसजिदमें यह सीखनेके लिए नहीं भेजेगा कि मुहम्मद खुदाका पैगम्बर है और कुरान एक इलहामी किताब है। ऐसा क्यों ? क्यों कि वह मुहम्मद और कुरानमें विश्वास नहीं करता। यह पर्याप्त कारण है। इसी प्रकार न्यूयार्कमें रहनेवाले अज्ञेयवादीको चाहिए कि वह बच्चोंको यह बात नहीं सीखने दे कि बाइबल एक इलहामी किताब है। मैं अज्ञेयवादी शब्दका प्रयोग करता हूँ, क्योंकि मै इसे अनीश्वरवादी शब्दसे अच्छा समझता हूँ। वास्तवमें न कोई यह जानता है कि ईश्वर है और न कोई यही जानता है कि ईश्वर नहीं है। मुझे तो यही लगता है कि ईश्वरके अस्तित्वका कोई प्रमाण नहीं और इस बातका भी कि यह संसार किसी अनन्त बुद्धि और शक्तिद्वारा शासित होता है। लेकिन मैं जाननेका दावा नहीं करता। जो बात मैं जोर देकर कहना चाहता हूँ वह यही है कि बच्चोंके दिमागमें विष न घोला जाय, उनके

साथ उचित और ईमानदारीका व्यवहार किया जाय; उनपर कोई बात बाहरसे लादनेकी अपेक्षा उन्हें अन्दरसे विकसित होने दिया जाय; और उन्हें तर्क करना, विचार करना, खोज करना, अपनी इंद्रियों तथा अपने दिमागोंको काममें लाना सिखाया जाय, न कि विश्वास करना। बुद्धिवादियोंको मैं यही सलाह दूँगा कि वे अपने बच्चोंको रविवारके दिन भरनेवाले कट्टरपन्थी स्कूलोंमें न जाने दें, कट्टरपन्थी गिरजोंमें न जाने दें और कट्टरपन्थी वेदियोंके विषसे बचाये रखें।

अपने बच्चोंको जो वास्तविक बातें आप जानते हैं केवल उन्हींकी शिक्षा दें। यदि आप नहीं जानते तो वैसा कह दें। आप जितने अज्ञानी हैं उतने ही ईमानदार भी बने रहें। आप उनके दिमागका ऐसा विकास करनेके लिए जो कुछ कर सकें करें, जिससे उनका जीवन उपयोगी और सुखी हो जाय।

उन्हें शिक्षा दें कि संसार प्राकृतिक है, उन्हें पूर्ण ईमानदार बने रहनेकी शिक्षा दें, उन्हें ऐसी जगह न भेजें जहाँ दिमागी बीमारीका खतरा हो— आत्माके कोढ़का!

अपने बच्चोंको समझदार बनानेके लिए जो कुछ भी हम कर सकते हैं, करें।

काल्पनिक कथायें और करिश्में

१

सुख-प्राप्ति ही जीवनका सच्चा उद्देश्य है। बुद्धिका काम है कि वह यह पता लगाये कि आदमी कैसे सुखी रहता है और बुद्धिमान् आदमीका काम है कि उसी रास्तेपर चले। सुखका मतलब केवल खाना-पीना मौज उड़ाना आदि इन्द्रिय-सुख ही नहीं किन्तु उच्चतम और श्रेष्ठतम कल्याण है। ऋणमुक्त होनेसे, अपना कर्तव्य पूरा करनेसे, कोई उदारतापूर्ण कार्य करनेसे, अपने आदर्शके प्रति सच्चा रहनेसे, तथा प्रकृति, कला और आदमीके आचरणमें जो सौन्दर्य है उसका बोध होनेसे प्राप्त होनेवाला सुख, कविता और संगीतसे पैदा होनेवाला सुख, कविता और संगीतका सुख, श्रेष्ठतम इच्छाओंकी पूर्तिसे पैदा होनेवाला सुख ही सुख है।

जीवनमें जो कुछ भी उचित और बुद्धिमत्तापूर्ण है—सुख उसीका परिणाम है।

लेकिन बहुतसे लोग हैं जो प्रसन्न होनेकी इच्छाको बड़ी ही नीचे स्तरकी आकांक्षा मानते हैं। ये लोग अपने आपको आध्यात्मिक कहते हैं, ये इन्द्रिय-सुखकी भी तनिक चिन्ता न करनेका ढोंग रचते हैं। वे उस संसारसे—उस जीवनसे घृणा करते हैं। वे इस लोकमें प्रसन्नता नहीं चाहते, दूसरे लोकमें चाहते हैं। यहाँ सुख पतनोन्मुख बनाता है, परलोकमें सुख आदमीको पवित्रता प्रदान करता है और ऊँचा उड़ाता है!

आध्यात्मिक लोग पैगम्बर, ऋषि, मुनि, साधु, महात्मा, पादरी, पण्डित, पुरोहित कहलाते रहे हैं। वे बड़े ही निष्ठावान् और बड़े ही अनुपयोगी सिद्ध

हुए हैं। वे खेती नहीं करते। वे कुछ भी पैदा नहीं करते। वे दूसरोंकी कमाई-पर जीते हैं। वे 'पवित्र' और 'परावलम्बी' एक साथ होते हैं। यदि दूसरे लोग इनकी बजाय काम करें, तो ये उनके लिए 'प्रार्थना' करेंगे। वे दावा करते हैं कि उन्हें ईश्वरने लोगोंको शिक्षित करने और उनपर शासन करनेके लिये चुना है। वे बिनम्र और अभिमानी साथ साथ हैं। वे सहनशील हैं और साथ साथ बदला लेनेकी भावनासे भी भरे हैं।

वे स्वतन्त्रता, खोज और विज्ञानके शत्रु रहे हैं, हैं और रहेंगे। वे परा-प्राकृतिक, करिश्मों तथा बेहूदा बातोंमें विश्वास करते हैं। उन्होंने संसारको घृणा, पक्षपात और भयसे भर दिया है। अपने मतकी रक्षामें उन्होंने कोई अपराध और कोई अत्याचार बाकी नहीं उठा रखा है।

वे अपनी स्त्री तथा बच्चोंसे प्यार करनेवालोंको, घर बनानेवालोंको, जंगल काटनेवालोंको, समुद्रमें नौकायें चलानेवालोंको, जमीन जोतने-वालोंको, मूर्तियाँ बनानेवालोंको और चित्र चित्रित करनेवालोंको, तथा दुनियामें प्रेम और कलाकी वृद्धि करनेवालोंको सांसारिक और इन्द्रियोंका दास कहकर घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं।

उन्होंने विचारकों, कवियों, नाटककारों, अभिनेताओं, व्याख्याताओं, कार्यकर्ताओं, और संसार जीतनेवालोंकी निन्दा की है और उन्हें बदनाम किया है।

उनके लिये यह लोक परलोककी ड्योढ़ी-मात्र है, एक प्रकारका स्कूल, एक प्रकारकी पाठशाला। उनका आग्रह है कि लोग इस जीवनको दूसरे जीवनकी तैयारीमें खर्च करें, और जो लोग इन आध्यात्मिक मार्ग-प्रदर्शकों—इन गड़-रियोंका—पालन पोषण करेंगे तथा उनकी आज्ञाका पालन करेंगे, वे अनन्त-सुखके स्वामी होंगे; और शेष सबको अनन्त यातनायें भोगनी पड़ेंगी!

ये आध्यात्मिक लोग सदा ही श्रमसे घृणा करनेवाले रहे हैं। इन्होंने संसारके धनमें किसी प्रकारकी वृद्धि नहीं की। ये सदा 'दान' खाकर जीते रहे हैं—दूसरोंकी पसीनेकी कमाई। ये सदासे सरल, भोले-भाले मुखों और भोले-भाले मानवीय प्रेमके शत्रु रहे हैं।

इन आध्यात्मिक लोगोंने कुछ साहित्य पैदा किया है। इनकी लिखी हुई किताबें पवित्र कहलाती हैं। हमारी पवित्र किताब बाइबल कहलाती है। हिन्दुओंके पास वेद हैं, और वैसे ही बहुत-से दूसरे ग्रन्थ। पारसियोंके पास ज़िन्दावस्ता, मिसरियोंके पास 'मरे हुओंका ग्रन्थ,' मुसलमानोंके पास कुरान।

इन ग्रन्थोंमें अधिकतर अज्ञेयकी चर्चा है। वे देवताओं और आकाशके प्राणियोंका वर्णन करते हैं। वे संसारकी उत्पत्ति, आदमीकी उत्पत्ति और परलोककी बातें करते हैं। उनमें कुछ भी कामका नहीं। लाखों-करोड़ों आदमियोंने इन अज्ञानपूर्ण बेहूदा पुस्तकोंके अध्ययनमें अपने जीवन बरबाद कर दिये हैं।

प्रत्येक देशके आध्यात्मिक लोगोंका यह दावा रहा है कि इन ग्रन्थोंके रचयिता ऋषिगण हुए हैं। वास्तवमें ये ईश्वर-वचन हैं। जो भी स्त्री-पुरुष इस बातसे इंकार करेगा वह मृत्युके बाद अनन्त काल तक यातनायें भोगेगा।

यह सब होनेपर भी सांसारिक लोगोंने, सामान्य लोगोंने, शरारती लोगोंने, इन आध्यात्मिक लोगोंकी अपेक्षा कहीं अधिक ऊँचा और श्रेष्ठ साहित्य उत्पन्न किया है।

आध्यात्मिक लोगोंने भय और विश्वाससे—परलोकमें दण्डके भय और पुरस्कारकी आशासे—संसारको सभ्य बनानेका प्रयत्न किया है। उन्होंने लोगोंको अपने मानव-बन्धुओंसे घृणा करनेकी शिक्षा दी है। सभी युगोंमें उन्होंने पशु-बलका आश्रय लिया है, सभी समयोंमें उन्होंने ठगीसे काम लिया है। उन्होंने दावा किया है कि वे देवताओंको प्रभावित कर सकते हैं; उनकी प्रार्थनाओंसे वर्षा होती है, सूर्य उदय होता है और खेती होती है। उनके शापोंसे अकाल और महामारी आ जाती है; और उनके आशिर्वाद संसारको समृद्ध कर दे सकते हैं। उनके मिथ्या-कथनोंसे जिस भीतिका सर्जन हुआ, वही उनकी जीविकाका आधार रही है। विषैली बेलकी तरह वे परिश्रमके पेड़पर फले फूले हैं। उन्होंने सदा दानकी महिमा गाई है, किन्तु कभी किसीको दान दिया नहीं। उन्होंने सदा क्षमा कर देनेकी बात की है, किन्तु कभी किसीको क्षमा किया नहीं।

जब भी कभी इन आध्यात्मिक लोगोंके हाथमें शक्ति आई, कला मर गई, विद्याका दम निकल गया, विज्ञानको घृणाकी दृष्टिसे देखा गया, स्वतन्त्रता नष्ट कर दी गई, विचारकोंको जेलमें डाल दिया गया, समझदार और ईमानदार आदमी अछूत बना दिये गये और वीर पुरुष मार डाले गये।

आध्यात्मिक लोग सदासे मानव-जातिके शत्रु रहे हैं, हैं, और रहेंगे।

जीवनके जितने भी सुखोंका हम आज उपभोग कर रहे हैं, वे सब—हर प्रकारकी प्रगति; विज्ञान और कला; दीर्घ-जीवी होनेके साधन; रोगोंको नष्ट करनेका सामर्थ्य; वेदनाको घटानेकी शक्ति; घर, छत और भोजन; ऊँचेसे ऊँचा संगीत; जीवनको श्रेष्ठ बनानेवाली अद्‌भुत मशीनें—वे सभी सांसारिक लोगोंकी देन हैं। इनके लिये हम उन्हींके ऋणी हैं। केवल वे ही मानव-जातिका उपकार करनेवाले हैं।

२

यह सब सही होनें पर भी, ये सभी धर्म, ये सभी पवित्र ग्रन्थ, ये सभी पादरी-पुरोहित प्रकृतिके नियमानुसार पैदा हुए हैं। असभ्यताकी गुफाओं और गारोंमेंसे सभ्यताके महलों तक पहुँचनेमें आदमीको आवश्यक रास्ते और सड़कें पार करनी पड़ी हैं। हर कदमके पीछे उसका पर्याप्त कारण रहा है। संसारके इतिहासमें कभी कोई भी बात आकस्मिक नहीं हुई है। बाहरसे कभी कोई किसी तरहका हस्तक्षेप नहीं हुआ है, कभी कोई करिश्मा नहीं हुआ। हर बात प्रकृतिके द्वारा और उसके नियमानुसार उत्पन्न हुई है।

हमें ढोंगी और अत्याचारीको दोषी ठहरानेकी आवश्यकता नहीं। वे लोग जिस तरह सोचने और कार्य करनेके लिये बाध्य थे, उसी तरह उन्होंने कार्य किया।

सभी युगोंमें आदमीने अपनी और अपने आस-पासकी व्याख्या करनेकी कोशिश की है। उसने अपनी ओरसे कसर नहीं छोड़ी। उसे आश्चर्य होता था कि यह पानी क्यों बहता है, पेड़ क्यों उगते हैं, हवामें बादल क्यों तैरते हैं, तारे क्यों चमकते हैं तथा आकाशपर चन्द्रमा और सूर्य क्यों घूमते हैं? वह जन्म-मरणके रहस्यको, अन्धकार और स्वप्नोंके रहस्यको, समझना चाहता

था। ये समुद्र, ये ज्वालामुखी पर्वत, यह बिजली और उसकी कड़क, ये भूकम्प—सभी उसे भयसे भर देते थे। समस्त जीवन-विकास और गतिके ही पीछे नहीं उसने निर्जीव पदार्थोंके पीछे भी एक देवताकी कल्पना की, एक प्राणी की—जो प्रेम और घृणाकी भावनाओंसे शासित होता है। उसके लिये कार्य और उसका कारण देवता बन गये—परा प्राकृतिक प्राणी।

अतीतकी सभी काल्पनिक कथाओं और किवदन्तियोंमें हमें उन महान् और कोमल आत्माओंके अश्रुसिक्त दार्शनिक विचार, स्वप्न और प्रयत्न दिखाई देते हैं, जिन्होंने जीवन और मृत्युके रहस्यको खोज निकालनेकी कोशिश की; जिन्होंने 'कहाँ' और 'किधर' के प्रश्नोंका उत्तर देनेका प्रयास किया; जिन्होंने टूटे फूटे शीशेको एक ऐसा दर्पण बनानेका व्यर्थ प्रयत्न किया जिसमें वह प्रकृतिकी सम्पूर्ण और सही छाया देख सकें।—इन काल्पनिक कथाओंको आशा और भयने तथा आँसुओं और मुस्कराहटने पैदा किया है। जन्मके उषः-कालसे लेकर मृत्युकी अन्धकारपूर्ण रात्रि तक जीवनमें जो भी आनन्द और दुख भोगना पड़ता है, ये काल्पनिक-कथायें उस सबसे संबंधित और रंजित हैं। उन्होंने नक्षत्रों तकको राग-द्वेष पूर्ण बना दिया और आकाशके देवताओं तकके सिर पृथ्वी-पुत्रोंकी दुर्बलतायें मढ़ दीं।

ये काल्पनिक कथायें यद्यपि वास्तविक घटनायें नहीं हैं तो भी इनमें विचारोंकी सुन्दरता और सचाई है और इन्होंने युगों तक नाना प्रकारसे हृदय और विचारोंको समृद्ध बनाया है।

२

अधिक सम्भव यही है कि मानवका पहला धर्म सूर्य-पूजाका धर्म रहा होगा। कोई भी दूसरी चीज़ इससे अधिक स्वाभाविक नहीं हो सकती थी। प्रकाश ही जीवन था, उष्णता थी और प्रेम था। सूर्य ही संसारका चूल्हा था। सूर्य ही सर्वद्रष्टा था, और आकाश स्थित पिता। * अन्धकार मृत्युका दूसरा नाम था और रात्रिकी छायामें निराशा और भयके सर्प रेंगते थे।

सूर्य देवता एक बड़ा योद्धा था, रातके शत्रुओंसे लड़नेवाला। अग्निदेवता

* तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमय (उपनिषद्)

उसीका एक रूप था। दोनों अरणियाँ जिनके रगड़नेसे आग पैदा होती थी अग्निदेवताके प्रतीक थे। कहा जाता है कि अग्निदेवता अपने माता-पिताका भक्षण कर जाता था, अर्थात् उन दो लकड़ियोंका जो उसे जन्म देती थीं।

लगभग सभी धर्म सूर्य-पूजामेंसे पैदा हुए हैं। आजकल जो पादरी-पुरोहित पूजा करते हैं वे अपनी आँखें बन्द कर लेते हैं। यह सूर्य-पूजाका ही एक अवशेष है। जब लोग सूर्यके सम्मुख बैठकर उसकी पूजा करते थे तो उन्हें अपनी आँखें बन्द करनी होती थीं। बादमें यह प्रकट करनेके लिये कि वे मूर्तियोंके तेजके सामने भी अपनी आँखें खुली नहीं रख सकते, लोगोंने अपनी आँखें बन्द करनी आरम्भ कर दीं।

हमारे आजके धर्ममें कुछ भी मौलिक नहीं है। इसके सभी सिद्धान्त, सभी प्रतीक और सभी संस्कार उन पुराने धर्मोंके अवशेष हैं जिन्हें लुप्त हुए बहुत समय बीत गया।

४

हमें याद रखना चाहिये कि काल्पनिक कथाओं और करिश्मोंमें बड़ा अन्तर है। किसी वास्तविक घटनापर कल्पनाका मुलम्मा चढ़ानेसे भी काल्पनिक कथा बन जाती है। किन्तु करिश्मा तो अघटित घटनाका ही दूसरा नाम है; एकदम जाली सिक्का। काल्पनिक कथा और करिश्मेंमे वही भेद है जो उप-न्यास और असत्यमें, जो काव्य और झूठी गवाहीमें। करिश्में या तो सुदूर अतीतमें हुए अथवा सुदूर भविष्यमें होंगे। इन दो समुद्रोंके बीच जो बालूकी छोटी-सी रेखा है, जिसे वर्तमान कहते हैं, उसीमें सहज बुद्धिके लिये जगह है, प्राकृतिकके लिये।

यदि तुम किसी आदमीको कहो कि दो हजार वर्ष हुए मरे हुए जी उठे थे, तो वह सम्भवतः यही कहेगा; 'हाँ, मैं जानता हूँ।' यदि तुम कहो कि अबसे एक लाख वर्ष बाद तमाम मुर्दे जी उठेंगे तो भी शायद वह यही कहे; 'सम्भवतः वे जी उठेंगे'। किन्तु यदि तुम कहो कि तुमने उस दिन देखा है कि एक मुर्दा जी उठा है, तो वह बहुत करके तुमसे उस पागलखानेका नाम पूछेगा जहाँसे तुम भाग आये हो!

हमारी बाइबल करिश्मोंसे भरी पड़ी है, तब भी उनमें कभी विश्वास पैदा नहीं होता।

ईसा मसीहके साथ जिन करिश्मोंका सम्बन्ध जोड़ा जाता है उनका कुछ प्रभाव नहीं पड़ा। उन करिश्मोंने किसी आदमीके दिलमें विश्वास पैदा नहीं किया। जिन मुर्दोंको उसने जिलाया, जिनका कोढ़ दूर किया, जिन्हें आँखें दीं, उनमेंसे कोई भी ईसाका अनुयायी नहीं बना। जब ईसापर मुकदमा चलाया गया तो उनमेंसे कोई भी हाजिर नहीं हुआ। किसी एकने भी आकर उसकी करिश्मे करनेकी शक्तिकी गवाही नहीं दी।

इस सबकी एक ही सही व्याख्या है कि करिश्में कभी हुए ही नहीं। इन कहानियोंकी रचना बादकी शताब्दियोंमें हुई। इन कहानियोंको उन लोगोंकी कल्पनाओंने जन्म दिया, जो उस समय तक पैदा भी नहीं हुए थे जब ईसाको मरे अनेक पीढ़ियाँ गुजर चुकीं थीं।

उन दिनों संसार अज्ञान और भयसे भरा था। करिश्में प्रति दिनकी बात थी। लोगोंका परा-प्रकृतिमें विश्वास था। देवतागण लगातार संसारके मामलोंमे दखल देते रहते थे। सत्यके अतिरिक्त और सब कुछ बताया जाता था, वास्तविक घटनाके अतिरिक्त प्रत्येक बातमें विश्वास किया जाता था। जो घटनायें कभी घटीं ही नहीं उनके परिस्थितिजन्य विवरणका नाम इतिहास था। भूत-प्रेत उतने ही अधिक थे जितने सन्त-महात्मा। मरे आदमियोंकी हड्डियोंसे जीवितोंकी चिकित्सा की जाती थी। श्मशानगृह अस्पताल थे और मुर्दे चिकित्सक। सन्त जन जादू टोना करते थे। पवित्रात्मायें स्वप्नमें देवताओंसे वार्तालाप करती थीं और प्रार्थनाओंसे घटनाओंके क्रम बदले जाते थे। अन्धविश्वासी लोग आश्चर्य-जनक करिश्मोंकी माँग करते और पादरी पुरोहित उनकी इस माँगकी पूर्ति। आकाश मृत्यु और विपत्तिके चिह्नोंसे भरा था और अन्धकारमें आदमियोको कुपथगामी बनानेवाले प्रेतात्माओंकी कमी न थी।

हमारे पूर्वज समझते थे कि प्रत्येक वस्तु आदमीके लिए बनी है और जितने भी देवता तथा दैत्य हैं उन सबका काम इसी संसारकी ओर ध्यान

देना है। लोगोंके विश्वास था कि वे इन्हीं सबके हाथके खिलौनें हैं; उनके शिकार अथवा दया-भाजन। उनका यह भी विश्वास था कि सृष्टिका रचयिता ईश्वर यज्ञों तथा प्रार्थनाओंसे प्रभावित किया जा सकता है।

संसारकी यही सबसे बड़ी गल्ती रही है। जितने मन्दिर बनें सब बेकार, जितनी वेदियाँ बनीं सब व्यर्थ। जितने यज्ञ हुए सब निष्प्रयोजन। जितनी प्रार्थनायें की गईं सब निष्फल। न कभी किसी देवताने हस्तक्षेप किया, न कभी कोई प्रार्थना सुनी गई और न कभी आकाशसे किसी प्रकारकी सहायता मिली। न कोई चीज आदमीके लिये पैदा की गई; और न कोई घटना आदमीसे सम्बन्धित होकर घटी। यदि एक भी मानव जीता न हो, यदि सब अपनी कब्रमें हों, तो भी सूर्य चमकता ही रहेगा। पृथ्वी अपने पथपर दौड़ती ही रहेगी, गुलाबके फूल वायुको सुगन्धित करते ही रहेंगे, अंगूरकी बेलें अपने पत्तों और मृतकोंको ढकतीं ही रहेंगीं; बदलनेवाली ऋतुएँ आती और जाती ही रहेंगी; समय अपनी वार्षिक कविताको दोहराता ही रहेगा; जब कि वायु, लहरें और आग —अथवा परिश्रम करनेवाले पुराने शिल्पी— विनाश और निर्माणका कार्य करते ही रहेंगे और मृत्युकी धूलिमें बार बार जीवनका स्पन्दन उठता ही रहेगा।

५

कुछ ही साल गुजरे, चन्द आदमियोंने सोचना आरंभ किया, खोज करना आरंभ किया, तर्क करना आरंभ किया। उन्होंने मजहबी दन्तकथाओं और अतीतके करिश्मोंमें अविश्वास करना आरंभ किया। उन्होंने जो कुछ वास्तवमें होता था, उसकी ओर ध्यान देना शुरू किया। उन्होने देखा कि चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण निश्चित समयोंपर होते हैं और उनका होना पहलेसे बताया जा सकता है। उन्हें इस बातका निश्चय हो गया कि इन ग्रहणोंको आदमियोंके आचरणसे कुछ लेना देना नहीं। गैलीलियो, कौपर-निकस, और केपलरने बाइबलके ज्योतिषको नष्ट कर दिया और यह दिखला दिया कि संसारकी उत्पत्तिकी 'इलहामी' कहानी कभी सच्ची नहीं हो सकती और साथ ही यह भी कि मजहबी लोग उतने ही अज्ञानी थे, जितने कि वे बेईमान थे।

उन्हें पता लग गया कि काल्पनिक कथाओंके गढ़नेवाले गलतीपर थे; सूर्य और दूसरे नक्षत्र पृथ्वीके गिर्द नहीं घूमते थे; पृथ्वी चपटी नहीं थी और देववादियोंका तथाकथित दर्शन ऊल-जलूल और मूर्खतापूर्ण था।

तारागणोंने मिथ्या विश्वासके मतोंके विरुद्ध साक्षी दी।

ईसाई मजहबने वास्तवमें होनेवाली बातोंको अस्वीकार किया और गणित-ज्योतिषियोंको यंत्रणायें दीं। सोलहवीं शताब्दीमें कैथालिक संप्रदायने गियोर्दनो ब्रूनोके विरुद्ध यह इलजाम लगाया कि वह इस संसारके अतिरिक्त और भी दूसरे संसारके होनेकी बात कहता है। उसपर मुकदमा चलाया गया, सजा दी गई और सात वर्षतक उसे जेलमें डाले रखा गया। उसे कहा गया कि यदि वह पश्चात्ताप करे तो उसे छोड़ दिया जायगा। अनीश्वरवादी दार्शनिक ब्रूनोने सत्य बातसे इनकार करके अपनी आत्माको कलंकित नहीं करना चाहा। वे पादरी, जो अपने शत्रुओंसे प्रेम करनेकी बात कहते थे, उसे वधस्थलपर ले गये। उसे ऐसे कपड़े पहनाये गये जिनपर यमराजके दूतोंके चित्र बने थे—वे दूत जो शीघ्र ही उसकी आत्माको दबोच लेनेवाले थे। उसे एक खूँटेसे जकड़ दिया गया। तब पादरियोंने—ईसामसीहके चरण-चिह्नोंपर चलनेवालोंने—चितामें आग लगा दी और इस प्रकार एक महान् शहीदको जलाकर राख बना दिया।

और तब भी ईश्वरके इटैलियन एजैण्ट तेरहवें लुईने कुछ ही वर्ष हुए इस वीरोंके वीर ब्रूनोकी कायर कहकर निंदा की।

ईसाई सम्प्रदायने उसकी हत्या की और पोपने उसकी स्मृतिको कलंकित किया। आग और असत्य—मजहबके पास यही दो बड़े अस्त्र हैं।

कुछ ही समय पहले चन्द आदमियोंने चट्टानोंकी, मिट्टीकी, पर्वतोंकी, द्वीपोंकी और समुद्रोंकी परीक्षा की। उन्होंने नदियोंद्वारा निर्मित टूनों और चट्टानोंको देखा। ज्वालामुखी पर्वतोंसे निकलकर मिट्टी बनी पर्वत-सामग्रीके नाना स्तरोंको देखा; धातु और कोयलेके बेहिसाब ढेरोंको देखा। अतीतकी हिमचट्टानोंके कार्योंको देखा। चट्टानोंकी टूट-फूट और वनस्पतिकी उत्पत्ति और ह्राससे बनानेवाली मिट्टीको देखा और जिन युगोंमेंसे होकर पृथ्वी गुजरी

है, उनके असंख्य प्रमाणोंको देखा। भूमिगर्भवेत्ताओंने समुद्रकी लहरों और आगकी ज्वालाओंद्वारा लिखे गये तथा चट्टानोंके निर्माणद्वारा, पर्वत-शृंखलाओं-द्वारा, ज्वालामुखी पर्वतोंद्वारा, नदियोंद्वारा, द्वीपोंद्वारा तथा महाद्वीपोंद्वारा समर्थित संसारके इतिहासको पढ़ा।

बाइबलका भूवृत्त-ज्ञान, इस्लामी संप्रदायका भूवृत्त-ज्ञान, तथा 'स्वतः प्रमाण' पोपका भूवृत्त-ज्ञान संपूर्ण रूपसे झूठा तथा मूर्खतापूर्ण सिद्ध हुआ। पृथ्वी मिथ्या-विश्वासके मतोंके विरुद्ध एक गवाह बन गई।

तब भाप और बिजलीके आविष्कारोंको लेकर वाट और गैलवनी आये। इसी समय असंख्य आविष्कारकोंने सारे संसारका काम चलानेवाली अद्भुत मशीनोंको पैदा किया। खोजने अन्धविश्वासका स्थान ले लिया। आदमी झोपड़ों और चीथड़ोंसे असंतुष्ट हो उठा। वह आराम और जीवनके सुखोंकी इच्छा करने लगा। दिमागी क्षितिज विशाल बना। नवीन सत्योंका पता लगा; पुराने विचार एक ओर फेंक दिये गये; दिमाग विशाल बना; हृदय सभ्य बना, और विज्ञानने जन्म लिया। हमबोल्ट, लाप्लास और दूसरे सैकड़ों चिन्तकोंने प्राकृतिक घटनाओंकी व्याख्या की, प्राचीन गलतियोंकी ओर ध्यान आकर्षित किया और इस प्रकार मानवके ज्ञानमें वृद्धि की। डारविन और हैकलने संसारको अपने आविष्कारोंसे परिचित कराया। आदमी वास्तवमें विचार करने लगे, काल्पनिक कथायें मद्धम पड़ने लगीं, करिश्में तुच्छ प्रतीत होने लगे, और इस प्रकार देववाद नामका महान् भवन एक धड़ाकेके साथ जमीन-पर आ रहा।

विज्ञान काल्पनिक कथाओं और करिश्मोंके सत्यको अस्वीकार करता है, और उसका कहना है कि करिश्मोंको किसी भी तरह प्रमाणित नहीं किया जा सकता। वह परा-प्रकृतिके अस्तित्वको अस्वीकार करता है। विज्ञान प्रकृतिकी अपरिवर्तनशील प्रकृतिको स्वीकार करता है। विज्ञानका आग्रह है कि वर्तमान अतीतकी संतान है और अतीतको किसी भी तरह बदला नहीं जा सकता; और प्रकृति सदा समरस रहती है।

रसायन-शास्त्रज्ञोंने पता लगाया है कि एक खास तरहके परमाणु एक दूसरी तरहके परमाणुओंसे—एक निश्चित संख्यामें, न कम न अधिक, हमेशा उतने

ही—मिलते हैं। रसायन-शास्त्रमें अचानक कहीं कुछ नहीं; बाहरसे किसी प्रकारका हस्तक्षेप नहीं।

विज्ञानवेत्ता जानते हैं कि धातुओंकी अणु-शक्ति सदैव एक-सी बनी रहती है, प्रत्येक धातु अपनी प्रकृतिके प्रति सच्ची रहती है, और उसके कण समान शक्तिके साथ ही एक दूसरेसे चिपटे रहते हैं। वैज्ञानिकोंने शक्तिके निरंतर अस्तित्वको सिद्ध कर दिया है, और इस बातको भी कि यह निरंतर क्रियाशील है, अपरिवर्तनीय है तथा किसी भी तरह नष्ट नहीं की जा सकती।

इन महान् सत्योंने संसारके विचारमें क्रांति ला दी है।

प्रत्येक कला, प्रत्येक कार्य, सभी तरहके अध्ययन, सभी तरहके तजर्बे—प्रकृतिकी समरसता और शक्तिकी निरंतर विद्यमानता और उसके अविनाशी होनेके विश्वासपर निर्भर करते हैं।

कार्य-कारणकी अनन्त शृंखलामेंसे एक कड़ी तोड़ दो, और प्रकृतिका स्वामी सामने आ खड़ा होगा। यही टूटी हुई कड़ी ईश्वरका सिंहासन बन जायगी।

प्रकृतिकी एकरूपता परा प्रकृतिको अस्वीकार करती है और इस बातको सिद्ध करती है कि बाहरसे कहीं कोई हस्तक्षेप नहीं है। देवताओंके लिए कहीं किसी प्रकारकी कोई जगह नहीं रह जाती। प्रार्थनायें वायुकी व्यर्थकी हलचल रह जाती हैं और धार्मिक रीति रिवाज निरर्थक क्रिया-कलाप मात्र।

लकड़ीके देवताकी पूजा करनेवाला नग्न हब्शी धार्मिक चेतनाके ठीक उसी स्तरपर है जिस स्तरपर कुमारी मेरीको मूर्तिके सामने घुटने टेकनेवाला पोप।

दुष्टात्माओंसे अपनी रक्षा करनेके लिये वृक्षोंकी जड़ें और छाल ढोनेवाला गरीब अफरीकावासी और जो 'पवित्र पानी' से अभिषिक्त होता है—दोनों, धार्मिक चिंतनके एक ही स्तरपर हैं।

ईसाइयतके सभी मत तथा गैर ईसाइयोंके सभी धर्म समान रूपसे ऊल-जलूल हैं। गिरजाघर, मंदिर, मसज़िद सभीका एक ही आधार है। उनके निर्माता प्रकृतिकी एकरूपतामें विश्वास नहीं करते। सभी पादरियोंका

एक ही काम है कि वह एक तथाकथित असीम अस्तित्वको घटनाओंके क्रममें परिवर्तन लानेके लिए प्रेरित करें। वे अविचारणीयमें विश्वास करते हैं और असंभवके लिये प्रार्थना करते हैं।

विज्ञान बताता है कि न कभी कोई उत्पत्ति हुई और न कोई विनाश संभव है। वह अनन्त उत्पत्ति तथा विनाश दोनोंको अस्वीकार करता है। एक अनन्त व्यक्ति तो एक अनन्त असंभावना है। दिमाग किसी भी तरह किसी भी ऐसे व्यक्तित्वकी कल्पना कर ही नहीं सकता। तो भी सभी धर्म इस ×अचिंत्य, इस अकल्पनीयके अस्तित्वपर आधारित हैं और इन धर्मोंके पादरी पुरोहित इस अचिन्त्य, इस अकल्पनीयकी योजनाओं तथा इच्छाओंसे पूर्णरूपसे परिचित होनेका दावा करते हैं।

विज्ञान बताता है कि जो है वह सदासे रहा है और हर कार्यके पीछे उसका पर्याप्त और आवश्यक कारण है। विश्वमें कहीं कोई बात अचानक नहीं होती, कहीं कोई बाहरी हस्तक्षेप नहीं होता और शक्ति अनन्त है।

विज्ञान ही मनुष्यका भाग्य-विधाता है, सच्चे करिश्मों तथा अद्भुत बातोंको संभव बनानेवाला। विज्ञानने गुलामोंको मुक्ति दी है और उनके मालिकोंको भी मुक्त किया है। विज्ञानने आदमीको अपने मानव बंधुओंको जंजीरोंमें जकड़नेकी शिक्षा नहीं दी। उसने उन्हें प्रकृतिकी शक्तियोंको कैद करना सिखाया, उन शक्तियोंको जिनके पास कोड़ोंके निशान पड़नेके लिए हाथ-पैर नहीं हैं, जिनके पास टूटनेके लिए दिल नहीं हैं, जो कभी थकना नहीं जानतीं और जो कभी आँसू नहीं बहातीं।

विज्ञान महान् चिकित्सक है। उसके स्पर्शने लोगोंको आँखें दी हैं। उसने लँगड़ोंको चलने योग्य बनाया है। उसने बहिरोंको कान दिये हैं। उसने गूंगोंको बोलना सिखाया है। उसके स्पर्शसे कुम्हलाये हुए चेहरोंपर स्वास्थ्यका गुलाबी रंग छा गया है।

विज्ञान रोगोंको नष्ट करनेवाला, सुखी गृहोंका निर्माता तथा जीवन और प्रेमका संरक्षक है। विज्ञान प्रत्येक गुणका मित्र और प्रत्येक दुर्गुणका शत्रु है।

× अचिन्त्यं अजं निर्विकल्पस्वरूपं।

विज्ञानने नैतिकताको सच्चा आधार दिया है। कृतज्ञता तथा कर्तव्य-बुद्धिका मूल बताया है और इस बातको सिद्ध करके दिखा दिया है कि सच्चा सुख ही मानवका एकमात्र उद्देश्य है। विज्ञानने मिथ्या-विश्वासके भूतको मार भगाया है और इलहामी पुस्तकोंकी प्रामाणिकताको नष्ट कर दिया है। विज्ञानने चट्टानोंके अमिट अक्षरोंको पढ़ा है और उसकी अद्भुत तराजूपर परमाणुसे लेकर बड़े बड़े ग्रहोंतक सभी तुले हैं।

विज्ञानने ही एकमात्र सच्चे धर्मकी स्थापना की है। विज्ञान् ही संसारका एकमात्र संरक्षक है।

६

युगोंसे धर्मकी परीक्षा हो रही है। असंख्य शताब्दियोंसे आदमी आकाशकी ओर देखता रहा है। ईश्वरके हृदयकी कठोरता कम करनेके लिए माताओंने अपने बच्चोंका बलिदान कर दिया; किन्तु ईश्वरने न सुना, न देखा और न किसी प्रकारकी सहायता की। नंगे हब्शियोंको जंगली जानवर निगल गये, साँपोंने काट खाया और बर्फने गला डाला। उन्होंने सहायताके लिए प्रार्थना की; किन्तु उनका भगवान् बहिरा था। उन्होंने मंदिर बनवाये, पुजारी रखे, और उनका पालन-पोषण किया; किन्तु तो भी ज्वालामुखी पर्वत तबाही लाये और अकाल नहीं रुके। ईश्वरके लिये लाखों आदमियोंने अपने मानव बंधुओंकी हत्या की, किन्तु ईश्वर चुप रहा। लाखों शहीदोंने ईश्वरके नामपर अपनी जान दे दी, लेकिन ईश्वर अंधा बना रहा। उसे न आगकी लपटें दिखाई दीं, और न बेड़ियाँ, उसने न प्रार्थनायें सुनीं और न चीत्कार। हजारों पादरी पुरोहितोंने ईश्वरका नाम लेकर अपने मानव-बन्धुओंको नाना प्रकारके कष्ट दिये। ईश्वर अंधा और बहिरा बना रहा। उसे यह मंजूर था कि उसके शत्रु उसके मित्रोंको पीड़ा पहुँचायें।

इस सारे समयमे देववादियोंका यह दावा रहा है कि उनका ईश्वर संसारका शासन करता रहा है; वह सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है और पृथ्वीकी सभी शक्तियाँ उसके नियंत्रणमें है। इस सारे समयमें ईसाई संप्रदाय प्रगतिका शत्रु रहा है। यह सारे चिकित्सा-शास्त्रको घृणाकी दृष्टिसे देखता

रहा है। लोगोंको प्रार्थनाओं, टोटकों तथा धर्मके अवशेषोंपर निर्भर रहनेकी शिक्षा देता रहा है। इसने गणित-ज्योतिषियों और भूगर्भवेत्ताओंपर अत्याचार किये हैं, नास्तिक अनीश्वरवादी तथा मानवताके शत्रु कहकर उनकी निन्दा की है। इस सारे समयमें ईसाई मतने आदमीकी शक्तियोंको उलटे रास्ते चलाया है, और जब यह अपनी शक्तिकी पराकाष्ठापर पहुँच गया, तब संसारमें गहरा अंधकार छा गया।

सभी जातियोंमे और सभी युगोंमें धर्म असफल हुआ है। देवताओंने कभी किसी तरहका हस्तक्षेप नहीं किया। प्रकृतिने विना किसी प्रकारके ममत्वके चीज़ोंको उत्पन्न किया और बिना किसी प्रकारकी घृणाके उन्हें नष्ट कर डाला। उसने जंगलके पत्तोंसे अधिक आदमीकी चिंता नहीं की, दीमककी बाँबियोंसे अधिक जातियोंकी चिन्ता नहीं की, और न चिन्ता की पुण्य और पापकी, जीवन और मरणकी तथा दुःख और सुखकी। आदमीको अपनी बुद्धिद्वारा अपनी रक्षा करनी चाहिये। उसे किसी दूसरे लोकसे कोई सहायता नहीं मिलती। धर्मने हमेशा यह दावा किया है और वह आज भी करता है कि वही एकमात्र सुधारक शक्ति है; वही आदमियोंको ईमानदार, सदाचारी और दयालु बनाता है; और वही हिंसा तथा युद्धको रोकता है। इसके प्रभावके बिना मानव-जाति पुनः बर्बर हो जायगी।

कोई भी बात इन दावोंके ऊल-जलूलपनेसे बढ़ नहीं सकती।

यदि हम मानवताकी दशा सुधारना चाहते हैं, यदि हम भले पुरुषों और स्त्रियोंको देखना चाहते हैं, तो हमें लोगोंके दिमागको विकसित करना चाहिये, हमें विचार करने और खोज करनेकी प्रवृत्तिको उत्साहित करना चाहिये। हमें संसारको यह विश्वास दिलाना चाहिये कि अन्ध-विश्वास एक दुर्गुण है; और प्रमाणके विरुद्ध अथवा विना प्रमाणके किसी चीज़पर विश्वास करना कोई सद्गुण नहीं है। वास्तविक ईमानदार आदमी अपने प्रति सच्चा होता है। हमें संसारको बुद्धिके प्रकाशसे भर देना चाहिये। हमें दिमागी साहसको उत्साहित करना चाहिये। हमें बच्चोंको शिक्षित बनाना चाहिये, उन्हें अज्ञान और अपराधसे मुक्त करना चाहिये। विद्यालय ही वास्तविक मंदिर हैं और अध्यापक-गण ही सच्चे पुरोहित।

फोटोग्राफीके द्वारा सारा संसार महान् मूर्तियोंसे, महान् चित्रोंसे, कलाकी विजयोंसे—परिचित हो सकता है। इस तरह दिमागमें विशालता आती है, सहानुभूतिमें तीव्रता पैदा होती है, सौन्दर्यकी परख करनेकी शक्ति बढ़ती है, रुचि स्वच्छ होती है और चरित्र निर्मल होता है।

सभीको महान् उपन्यास पढ़ने चाहिये। सभीको औपन्यासिक संसारके, द्वारा आदर्श संसारसे परिचित होना चाहिये। कल्पना शक्तिको विकसित, शिक्षित और शक्तिशाली होना चाहिये। मिथ्या विश्वास कला और साहित्यके पतनका कारण हुआ है। उसने हमे परोंवाले राक्षस दिये, स्वर्ग नरकके दृश्य दिये, देवताओं और दैत्योंके चित्र दिये और कलाके नामपर असम्भव मूर्तियों तथा ऊल-जलूल चित्रोंका निर्माण किया। उसने हमें पागलोंके स्वप्न दिये, धर्मके पगले महात्माओंकी जीवनियाँ दीं, करिश्मोंके विवरण दिये और मुर्दोंकी हड्डियोंसे जीवितोंके ठीक होनेकी कहानियाँ दीं और यह सब पवित्र साहित्य कहलाया।

धर्मने सिखाया है कि जो विश्वासी हैं, जो माला जपते हैं, जो प्रार्थनायें करते हैं और जो अपना समय और पैसा धार्मिक-ग्रन्थोंके प्रचारके लिये खर्च करते हैं, वे ही लोग भले हैं; शेष सब अनन्त पीड़ाकी चौड़ी-सड़कपर बढ़े चले जा रहे हैं। देववादियोंने इस संसारके सुखोंकी धानकी फूसी और गन्दे-चीथड़ोंसे उपमा दी और इस बातकी घोषणा की कि आदमीके पापोंके कारण सारा संसार अभिशप्त है।

लेकिन सच्चे कवि और सच्चे कलाकार इस संसारसे—इस जीवनसे—चिपटे रहे। उन्होंने केवल विद्यमान् वस्तुओंको चित्रित किया। उन्होंने दिमागके विचारोंको, हृदयकी भावनाओंको, पुरुषों और स्त्रियोंके दुःखों, सुखों, आशाओं तथा निराशाओंको व्यक्त किया। उन्हें चारों ओर शक्ति और सौन्दर्य्य दिखाई दिया। उन्हें अपने देवता यहीं इसी पृथ्वीपर मिले। कविता और कला इसी भूमिकी चीजें हैं। वे मानवीय हैं।

हममें अब इतनी कल्पना शक्ति है कि हम अपने आपको दूसरोंकी जगह रखकर देख सकें। जो लोग नरकमें विश्वास करते हैं उनमें उसी तरह कल्पना-

शक्ति नहीं होती जैसे हत्यारोंमें । हत्यारेमें इतनी कल्पना नहीं होती कि वह अपने मृतकको देख सके। उसे उसकी आँखें नहीं दिखाई देतीं । उसे उसकी विधवाके वे हाथ नहीं दिखाई देते जो लाशसे चिपटे हैं और वह होंठ भी नहीं जो लाशसे लगा है । उसे बच्चोंका विलाप नहीं सुनाई देता । उसे चिताकी आग नहीं दिखाई देती ।

हम दिमागको विकसित करें, हृदयको सभ्य बनायें और कल्पना शक्तिको पर लगने दें ।

७

यदि हम काल्पनिक कथाओं और करिश्मोंको छोड़ दें, यदि परा-प्राकृतिकका त्याग कर दें, तो फिर संसारको सभ्य कैसे बना सकते हैं ?

क्या असत्यमें सुधार करनेका सामर्थ्य है ? क्या मिथ्या विश्वास सद्‌गुणोंकी माता है ? क्या असंभव और ऊल-जलूल बातोंमें किसीकी रक्षा करनेकी शक्ति है ? क्या बुद्धि मरनेवालोंके साथ ही समाप्त हो गई ? क्या सभ्य लोगोंको भी इन्डियोंके धर्मको स्वीकार करना चाहिए ?

यदि हम संसारका सुधार करना चाहते हैं, तो हमें सत्यपर, वास्तविक घटनाओंपर और तर्कपर निर्भर रहना चाहिये । हमें आदमियोंको सिखाना चाहिये कि यदि वे भले हैं तो अपने लिये और यदि बुरे हैं तो अपने लिये। दूसरे उनके लिये अच्छे अथवा बुरे नहीं हो सकते। न उन्हें दूसरोंके अपराधोंके लिए दोषी ठहराया जा सकता है और न उन्हें दूसरोंके गुणोंका श्रेय दिया जा सकता है। हमें 'दूसरोंके पापोंका प्रायश्चित्त' नामक सिद्धान्तको ठुकरा देना चाहिए। क्योंकि यह ऊल-जलूल और अनैतिक है। हम आदमके पापोंके लिये दोषी नहीं और ईसाके गुण हमको दिये नहीं जा सकते। निरपराधियोंके कण्ठ, अपराधियोंके अपराधका प्रायश्चित्त क्यों करें ?

एक कार्य अच्छा, बुरा, अथवा न अच्छा न बुरा, अपने परिणामोंके अनुसार होता है। कार्य और उसके स्वाभाविक परिणामके बीच कोई चीज नहीं आ सकती। एक शासक किसी अपराधीको क्षमा कर सकता है,

किन्तु अपराधके स्वाभाविक परिणाम होकर ही रहेंगे। एक ईश्वर भले ही क्षमा कर दे, लेकिन क्षमा किये गये कर्मका फल तब भी वही होगा। हमे संसारको बताना चाहिए कि बुरे कर्मोंके परिणामसे बचा नहीं जा सकता। वे अदृश्य पुलिस हैं, वे अदृश्य परिशोध लेनेवाले हैं। वे कोई रिश्वत नहीं लेते, कोई प्रार्थना नहीं सुनते, और उन्हें कोई चालाकी ठग नहीं सकती। हमें देवताओंकी नहीं बल्कि स्वयं अपनी और उन लोगोंकी, क्षमा चाहिये जिन्हें हमसे हानि पहुँची है। बिना पछतावेके भी यदि अपनी गलतीका मार्जन हो, तो वह बिना मार्जनके पछतावेसे कहीं अच्छा है।

हम किसी ऐसे ईश्वरको नहीं जानते जो पुरस्कार देता हो, दण्ड देता हो, अथवा क्षमा करता हो।

हमें अपने मानव बंधुओंको सिखाना चाहिये कि आदर अंदरसे पैदा होता है, कहीं बाहरसे नहीं। सम्मान अर्जन किया जाना चाहिये। यह कोई दान नहीं है। कोई अनन्त शक्तिशाली परमात्मा भी किसी भिख-मंगेकी हथेलीपर सम्मानरूपी हीरा रखकर उसे धनी नहीं बना सकता।

उन्हें यह भी सिखायें कि सुख अच्छे कर्मोंकी कली है, फूल है और फल है। यह किसी देवताका प्रसाद नहीं है। आदमीको उसे कमाना चाहिये; उसका अधिकारी बनना चाहिये।

इस ससारमें ऐसा कोई जादू नहीं, ऐसी कोई हत्थ-फेरी नहीं जिससे अच्छे कर्मोंका फल बुरा और बुरे कर्मोंका अच्छा हो सके।

आदमियोंको सिखाओ कि वे किसी परलोकके लिये इस लोकका बलिदान न करे; बल्कि अपना ध्यान इस लोककी समस्याओंको हल करनेमे लगाये। लोगोंको बताओ कि देव-वाद निराधार है, यह अज्ञान और भयका पुत्र है। इसने आदमियोंके दिलोंको कठोर बना दिया है और उनकी कल्पनाओंको गन्दा।

देव-वाद इस संसारके लिये नहीं है। यह वास्तविक धर्मका कोई हिस्सा नहीं है। उसे अच्छाई या बुराईसे कुछ लेना देना नहीं है। धर्म देवताओंकी पूजामें नहीं है, किन्तु मानवके कल्याणकी, मानवताकी

सुख-वृद्धि करनेमें है। कोई आदमी नहीं जानता कि कहीं कोई ईश्वर है अथवा नहीं, और हमारे अथवा किसी दूसरी जातिके ईश्वरके बारेमें जो कुछ भी कहा गया है वह सब निराधार है, बिना विचारका शब्द, बिना वर्षाका बादल है।

हमें चाहिए कि हम धर्ममेंसे देव-वादको निकाल बाहर करें।

धार्मिक संगठन और राज्यका परस्पर कुछ संबंध नहीं रहना चाहिये। पादरी-पुरोहितोंका कहना है कि वे ईश्वरद्वारा चुने गये हैं और उनकी शक्ति उन्हें ईश्वरसे ही प्राप्त है। राजा ईश्वरकी इच्छाके अनुसार सिंहासनपर बैठते हैं। ये तमाम कथन एकदम बिना सिर-पैरके हैं। तो भी लाखों करोड़ों आदमी इन बातोंमें विश्वास करते हैं और इन्हें स्वीकार करते हैं। देववादको सरकारमेंसे निकाल बाहर करो, और राजाओंको अपने सिंहासन छोड़ देने होंगे। सभी लोगोंको यह स्वीकार करना पड़ेगा कि सरकारोंको उनकी शक्ति शासितोंकी अनुमतिसे मिलती है, और सभी सरकारी पदाधिकारी जनताके नौकर हैं। देव-वादको सरकारमेंसे निकाल बाहर करो कि इलहामी पुस्तकों और मिथ्या-विश्वासपूर्ण मठोंके बारेमें लोग अपने विचार स्वतन्त्रता-पूर्वक प्रकट करने लग जायेंगे और पादरी-पुरोहित हमारे समयका अधिकांश व्यर्थ नष्ट न कर सकेंगे।

देववादको शिक्षामेंसे निकाल बाहर करो। किसी विद्यालयमें कोई ऐसी बात नहीं सिखाई जानी चाहिये जिसे कोई नहीं समझता। इस संसार और इस जीवनके बारेमें जानने लायक बहुत बातें हैं। हर बच्चेको विचार करना सिखाना चाहिये, और यह भी कि विचार न करना खतरनाक है। बच्चोंको मिथ्या-विश्वासकी बेहूदगियाँ और अत्याचार नहीं सिखाने चाहिए। किसी धार्मिक संप्रदायका किसी भी सार्वजनिक स्कूलपर कोई अधिकार नहीं होना चाहिये। एक दूसरेसे घृणा करनेवाले और परस्पर लड़नेवाले धार्मिक संप्रदायोंके हाथमें जनताका पैसा नहीं जाना चाहिये। सार्वजनिक स्कूलको एकदम लौकिक होना चाहिए। वहाँ केवल उपयोगी बातोंकी शिक्षा दी जानी चाहिये। हमारे बहुतसे विद्यालय धार्मिक संगठनोंके अधीन हैं। वहाँके सभापति और अध्यापक धर्म-ग्रंथोंके पंडित हैं। परिणामस्वरूप जो भी यथार्थ बात किसी

भी मत विशेषके विरुद्ध पड़ती है उसे या तो दबा दिया जाता है या अस्वीकार किया जाता है। केवल वे ही अध्यापकगण जो स्वभावसे मूर्ख हैं अथवा बेईमान हैं, अपनी जगह बनाये रख सकते हैं। जो सत्य बोलते हैं, जो यथार्थ ज्ञान सिखाते हैं उन्हें त्यागपत्र देनेको कहा जाता है।

प्रत्येक विद्यालयमें सत्य आदृत अतिथि होना चाहिये। प्रत्येक अध्यापकको खोज करनेवाला होना चाहिये और प्रत्येक विद्यार्थीको जिज्ञासु। देववाद और मानसिक बेईमानी दोनोंका गठबंधन है। बच्चोंके अध्यापकको समझदार और संपूर्ण रूपसे ईमानदार होना चाहिये।

आओ, हम देववादको शिक्षामेंसे निकाल बाहर करें।

धार्मिक प्रवृत्तिके लोग लौकिक स्कूलोंकी ईश्वर-विहीन कहकर निंदा करते हैं। उन्हें वैसा होना ही चाहिये। सभी विज्ञान लौकिक हैं और ईश्वरविहीन। देववादका विज्ञानसे वही संबंध है, जो जादू-टोनेका रसायन शास्त्रसे। यह वस्तु कुछ ऐसी है कि जिसकी शिक्षा दी ही नहीं जा सकती। क्यों कि यह जानी ही नहीं जा सकती। इसका कहीं कुछ यथार्थ आधार नहीं है। यह न तो दिमागमें किसी चित्रको उत्पन्न करता है और न किसी मानसिक चित्रसे मेल ही खाता है। यह केवल अज्ञेय ही नहीं है, किन्तु इसके बारेमें विचार भी नहीं हो सकता। सैकड़ों और हजारों वर्षोंसे आदमी देववादके बारेमें चर्चा करते रहे हैं, शास्त्रार्थ करते रहे हैं, और झगड़ते रहे हैं। पर कहीं कुछ भी तो प्रगति नहीं हुई। धार्मिक वर्दी पहननेवाला पुरोहित अभी वहींतक पहुँचा है, जहाँसे हब्शीने चलना आरंभ किया था।

हम जानते हैं कि देववादने हमेशा शत्रुताको जन्म दिया है और आगे भी शत्रुताको जन्म देता रहेगा। यह परिवारोंमें घृणाके बीज बोता है, यह स्वार्थी है, अत्याचारी है, बदला लेनेकी भावनासे भरा है और ईर्षालु है। इसके अनुसार स्वर्गमें जा सकनेवाले थोड़े हैं और नरकमें जानेवाले बहुत। अब हम जानते हैं कि दिमागी साहस कोई गुण नहीं है। हमें ढोंग और पक्षपातको पुरस्कृत करना छोड़ना चाहिए। हमें विचारकों, खोजियों, प्रकाशदाताओं और संसारको सभ्य बनानेवालोंको त्रास देना छोड़ना चाहिए।

८

क्या अज्ञात जीवन और मृत्युके रहस्य, मनकी सीमाओंसे परेका संसार, मिथ्या-विश्वासके लिए सदैव सामग्री उपस्थित करता रहेगा ! क्या विज्ञानकी सेनाओंके सामने देवता और दैत्य नष्ट हो जायेंगे या पीछे हटकर ज्ञातके क्षितिजसे परे कहीं न कहीं लटकते रहेंगे ? क्या अंधकार सदैवके लिये परा-प्राकृतिकको जन्म देता रहेगा !

कुछ ही समय पहले पादरी लोग किसानोंसे कहते थे कि नया येरुसलम, दिव्य नगर, पातालोंके ठीक ऊपर है। उनका कहना था कि इसकी दीवारें और शिखर आदमीकी दृष्टिसे परे हैं। दूरबीनका आविष्कार हुआ, तारागणोंके शून्यमें देखनेवालोंको कहीं कोई नगर नहीं दिखाई दिया। उन्होंने पादरियोंसे पूछा—" तुम्हारा नया येरुसलम कहाँ है ! " पादरियोंने बड़े आनन्द और विश्वासके साथ उत्तर दिया—" जहाँतक तुम देख सकते हो, ठीक उससे आगे है ! "

एक समय था जब यह विश्वास किया जाता था कि आदमियोंकी एक ऐसी नस्ल है जिनके कंधे उनके सिरोंसे ऊँचे होते हैं। सुदूर देशोंसे लौटनेवाले यात्रियोंसे इन अद्भुत लोगोंके बारेमें पूछा गया। सभीका उत्तर था कि उन्होंने उन्हें नहीं देखा। दैत्योंमें विश्वास करनेवालोंका कहना था, " ओह, ऐसे लोग जिनके सिर उनके कंधोंसे नीचे होते हैं, उस प्रदेशमें रहते हैं, जहाँ तुम नहीं गये। " इस प्रकार जबतक सारे संसारका ज्ञान नहीं हो गया, दैत्य बने रहे और फलते फूलते रहे। हम सारे विश्वको नहीं जान सकते, हम असीम प्रदेशमें हर जगह नहीं जा सकते, और इसलिये इस असीम आकाशमें देवताओं और दैत्योंके लिये तथा स्वर्गों और नरकोंके लिये कहीं न कहीं स्थान बना ही रहेगा। इसलिए यह संभव है कि मिथ्या विश्वास तब तक लँगड़ाता चलता रह सकता है जब तक कि संसार इतना बुद्धिमान् नहीं हो जाता कि वह ज्ञातके आधारपर निर्माण कर सके, अपनी कल्पना-शक्तिको संभवकी सीमामें बद्ध रख सके, और जब तक परा-प्राकृतिक अपने आपको सिद्ध नहीं कर देता तब तक प्राकृतिकमें ही विश्वास करता रहे।

हब्शी लोग जिस दुनियामें रहते थे, उस दुनियाके बारेमें कुछ भी जाननेसे पहले देवताओं तथा स्वर्ग और नरकके बारेमें सब कुछ जानते थे। वे आकाशमें विचरनेवाले प्रेतोंसे सुपरिचित थे। वे मानव-जातिके आरंभ और अंतके बारेमें सब कुछ जानते थे। जिन समस्याओंको दार्शनिक लोग बुद्धिसे परेकी चीज मानते हैं, वे उनके बारेमें सुनिश्चित थे। वे फलित-ज्योतिष जानते थे किन्तु गणित-ज्योतिष नहीं। जादू-टोनोंके बारेमे जानते थे, किन्तु रसायन-शास्त्रके बारेमें कुछ नहीं। वे केवल उन्हीं बातोंके विषयमे बुद्धिमान् थे जिनके बारेमें कुछ नहीं जाना जा सकता।

सभ्यताके विकासकी आरंभिक अवस्थामें सभी लोग एक ही तरह सोचते थे। आजके ईसाई उन्हींका अनुकरण करते हैं। वे लोग संसारके बारेमें एक प्रकारसे कुछ भी नहीं जानते थे और समझते थे कि आदमीके उपयोगके लिए ही स्पष्ट रूपसे संसार की रचना की गई है। वे नहीं जानते थे कि पृथ्वीके बड़े बड़े प्रदेश सदा हिमाच्छादित रहते हैं, और अधिकांश देशोंकी परिस्थिति मानव-जीवनके अनुकूल नहीं है। वे मानवके उन असंख्य शत्रुओंसे अपरिचित थे जो अदृश्य रूपमे जल, भोजन तथा वायुमें रहते हैं। थोड़ी बहुत भलाईके पीछे उन्हें देवता दिखाई देते और बुराईके पीछे दैत्य। उन्हें देवताओंका कृपा-भाजन बनना सबसे बड़ी बात मालूम होती थी, क्यों कि वे ही दैत्योंसे उनकी रक्षा कर सकते थे। जो इन देवताओंकी पूजा करते, बलिदान चढाते और पुजारियोंकी आज्ञा मानते, वे उस जातिके वफ़ादार सदस्य माने जाते, और जो पूजा करनेसे इंकार करते, वे शत्रु और जातिद्रोही घोषित किये जाते। आत्म-रक्षाके लिये, देवताओंके, अभिशापसे बचनेके लिये, देवताओंमें विश्वास रखनेवाले लोग देवताओंके अविश्वासियोंको या तो देशनिकाला दे देते या उन्हें नष्ट ही कर डालते।

जैसा उनका विश्वास था, उसके अनुसार उनका आचरण सर्वथा स्वाभाविक था। न केवल रोग और मृत्युसे, न केवल महामारी और अकालसे ही वे अपनी रक्षा करना चाहते थे किन्तु वे परलोकमें अपनी संतानकी आत्माओंको भी अनन्त यातनासे सुरक्षित रखना चाहते थे। उनके देवता असभ्य थे, वे केवल खुशामद और पूजा ही नहीं चाहते थे, किन्तु मत विशेषका आग्रह भी। जब तक ईसाई अनन्त दंडके सिद्धान्तमें विश्वास करते हैं, तब तक खोज करनेवालोंके तथा तर्कको ही प्रमाण माननेवालोंके शत्रु रहेंगे।

विज्ञान सदासे विनम्र, विचारपूर्ण तथा सत्यका पक्षपाती रहा है, है, और रहेगा। इसका केवल एक ही उद्देश्य है : सत्यका पता लगाना। इसमें न कहीं कोई पक्षपात है न घृणा। यह बुद्धिका राज्य है, यहाँ उत्तेजनासे कुछ भी इधर उधर नहीं हो सकता। यह किसी ईश्वरको प्रसन्न करने, स्वर्गप्राप्ति अथवा नरकसे बचनेका प्रयत्न नहीं है। यह इस संसारके लिए है। आदमीके उपयोगके लिए यह संपूर्ण रूपसे खुला है। यह कुछ छिपाता नहीं, किन्तु प्रकट करता है। यह रहस्यका शत्रु है। यह आदमीसे अपनी सभी इंद्रियोंका उपयोग करनेके लिए कहता है और इसपर जोर देता है। यह पवित्र अथवा इलहामी होनेका झूठा दावा नहीं करता। यह खोज, आलोचना और इनकार तक को निमंत्रण देता है। यह हर तरहसे परखनेकी बात कहता है। इसके अनुसार कोई भी नास्तिक अथवा अविश्वासी नहीं होता। जो लोग अजानमे अथवा जान-बूझ-कर सत्यसे इनकार करते हैं, उन्हे जेलमें डालनेकी बात यह नहीं करता। सत्यके ज्ञानमेसे जो सुख उत्पन्न होता है वही इसकी ओरसे दिया जा सकनेवाला एकमात्र पुरस्कार है, और सुधारमेंसे पैदा होनेवाला दुःख ही एकमात्र दंड। ससारको समझदार बनाकर उसका सुधार करना ही इसका प्रयत्न है।

दूसरी ओर देववाद सदासे अज्ञानी, अभिमानी और अत्याचारी रहा है और रहेगा। जब ईसाइयतके हाथमें ताकत थी, उस समय ढोंगके सिरपर मुकुट था और ईमानदारी कैद थी। देववादने सदासे निकृष्टतम लोगोंको स्वर्ग भेजा है, और श्रेष्ठतम लोगोंको नरक।

अन्तिम न्यायके दिनका एक दृश्य देखिये—

ईसामसीह अपने सिंहासनपर विराजमान है। उसका मंत्री उसके पास बैठा है। एक आत्माका आगमन होता है। आगे जो कुछ घटता है वह इस प्रकार है:—

"तुम्हारा नाम क्या है?"
"तोरक्यूमद।"
"क्या तुम ईसाई थे?"
"हाँ, मैं ईसाई था।"

" क्या तुमने औरोंको ईसाई बनानेका प्रयत्न किया ? "

" मैंने उन्हें प्रेरणासे, प्रचारसे, प्रार्थनासे और जोर-जबर्दस्तीसे भी ईसाई बनानेका प्रयत्न किया। "

" तुमने क्या क्या किया ? "

" मैंने नास्तिकोंको जेलमें डाला, बेड़ियोंमें जकड़ा, उनकी जबानें चीर डालीं, आँखें निकाल लीं, हड्डियाँ चूर चूर कीं, पैरोंको भून डाला, और फिर भी वे नहीं माने तो उन्हें जीवित जला दिया। "

" क्या तुमने यह सब मेरी शानके लिये किया ? "

" हाँ, सब कुछ आपके लिये। मैं कुछको बचाना चाहता था, मैं छोटे बच्चों और दुर्बल दिमागवालोंकी रक्षा करना चाहता था। "

" क्या तुम बाइबलमें विश्वास रखते थे, करिश्मोंको मानते थे ? "

" हाँ, मै यह सब मानता था, मेरी बुद्धि श्रद्धाकी गुलाम थी। "

" बहुत अच्छा किया। नेक और वफादार नौकर, इसे मेरे स्वामीके दिव्य-लोकमें पहुँचा दो। "

एक दूसरा आत्मा उठ खड़ा होता है।

" तुम्हारा क्या नाम है ? "

" ग्युर्दनो ब्रूनो "

" क्या तुम ईसाई थे ? "

" एक समय था, किन्तु अब बहुत वर्षोंसे मैं एक दार्शनिक हूँ, सत्य अन्वेषक। "

" क्या तुमने अपने भाइयोंके धर्म-परिवर्तनका प्रयत्न किया ? "

" मैंने उन्हें ईसाई बनानेका तो नहीं, किन्तु तर्क-धर्मके अनुयायी बनानेका प्रयत्न किया, मैने उन्हे अज्ञान और मिथ्या विश्वासकी गुलामीसे मुक्त करनेका प्रयत्न किया। मैंने संसारको यथासामर्थ्य सभ्य बनानेका प्रयत्न किया, लोगोंको सहनशील और दयालु बनानेका, पादरियोंके दिलोंको नरम करनेका, और संसारसे यातनाका मूलोच्छेद कर देनेका, यत्न किया। मैंने अपने ईमानदाराना विचारोंको प्रकट किया, और तर्कके प्रकाशमें चलनेका प्रयत्न किया। "

" क्या तुम्हारा बाइबलमें विश्वास था ? क्या तुम करिश्मोंको मानते थे ? "

" नहीं, मैं विश्वास नहीं करता था। मैं यह नहीं मानता कि ईश्वरने कभी इस संसारमें जन्म ग्रहण किया, अथवा ईश्वरने कभी बढ़ईका काम सीखा। इस प्रकारकी बातोंमें न विश्वास कर सकता था और न कभी किया। किन्तु जितनी भी कर सकता था मैंने उतनी भलाई करनेकी कोशिश की। मैंने अज्ञानियोंके अज्ञानको दूर किया, दुखियोंको सान्त्वना दी, निर्दोष व्यक्तियोंका पक्ष ग्रहण किया, अपनी गरीबीको ही गरीबोंमें बाँटा, और अपने मानव बंधुओंके सुखमें वृद्धि करनेके लिये जो कुछ मुझसे हो सकता था, किया। "

ईसा मसीहका चेहरा काला पड गया। गुस्सेसे उसकी भवें तन गईं। अपना हाथ ऊपर उठाकर वह चिल्ला उठा—दूर भागो यहाँसे और उस अनन्त आगमें जल मरो जो कि शैतान और उसके गणोके लिये बनी है।

यही ईश्वरकी करुणा है—दयालु ईसा मसीहकी दया।

देववाद ईश्वरको एक दैत्य, एक अत्याचारी, एक हब्शीका रूप दे देता है। वह आदमीको गुलाम बना देता है। वह आज्ञाकारी, विनम्र तथा भयभीतको स्वर्गका लालच देता है और आत्मनिर्भर लोगोंको नारकी यातनाओंकी धमकी देता है।

यह तर्ककी निन्दा करता है, आशा और भयके सामने झुकता है। यह अपने आलोचकोंके तर्कोंके उत्तर नहीं देता, बल्कि असत्य और झूठी निन्दाका रास्ता अपनाता है। यह प्रगति करनेके अयोग्य है।

परा-प्राकृतिक और प्राकृतिक संघर्षमे देवताओं और आदमियोंके बीचकी लड़ाईमे हम मध्य रात्रिमेंसे गुजर चुके हैं। सभ्यताकी शक्तियाँ और जिन यथार्थ बातों और सत्योंका आविष्कार हो चुका है वे, सभी विज्ञानके पक्षमें हैं। हमें न काल्पनिक कथाओंकी आवश्यकता है, न करिश्मोंकी, न देवताओंकी और न दैत्योंकी।

९

पीढ़ी दर पीढ़ी काल्पनिक कथाओंकी शिक्षा दी जाती रही है और करिश्मोंमें विश्वास रहा है। हर माता एक धर्मप्रचारिका रही है और अपने

बच्चेको बड़े ही स्नेहपूर्ण ढंगसे धर्मके असत्य सिखाती रही है। माताके दूधमें ही मिथ्या-विश्वासका विष रहा है। वह ईमानदार थी और प्रेमकी मूर्ति थी। उसका चरित्र, उसकी भलाई, उसकी मुसकराहट और उसके चुंबन उसके द्वारा सिखाये गये मिथ्या-विश्वासोंमें घुलमिलकर एक हो गये। पिता, मित्र और पुरोहितने माताका साथ दिया, और इस प्रकार शिक्षित बच्चे अपनी संतानके शिक्षक बन गये। इसी क्रमसे ये मत आजतक जीवित रखे गये हैं।

बचपनको रोमांच, रहस्य और विशालता अच्छी लगती है। यह एक ऐसे संसारमें रहता है जहाँ किसी कार्यके लिये कारणकी आवश्यकता नहीं। जहाँ परी हाथ हिलाती है और राजकुमार प्रकट हो जाता है। जहाँ इच्छामात्रसे वांछित वस्तु पैदा होती है और मंत्र-तंत्र जो चाहे कर सकता है। व्यक्ति जातिका जीवन जीता है, और जातिने अपनी बाल्यावस्थामें जो कुछ किया उससे बच्चा आनन्दित होता है।

गलतियों और वास्तविक घटनाओंमें वही सबंध मालूम देता है जो धान और जंगली घासमें। गलतियाँ अपनी चिन्ता आप कर लेती हैं, जब कि वास्तविक घटनाओंकी पूरी सावधानीसे रक्षा करनी होती है। असत्य जंगली घासकी तरह अपने आप ही बढ़ता है। जंगली घासको योग्य भूमि अथवा वर्षाकी कुछ परवाह नहीं होती। इतना ही नहीं कि जंगली घास किसी तरहकी कोई सहायता नहीं चाहती, बल्कि नष्ट करनेके लगभग सभी प्रयत्नोंके बावजूद भी उगती है। बच्चोंके मनमें, मिथ्या-विश्वास, काल्पनिक कथायें और करिश्में एक प्रकारका स्वाभाविक घर बना लेते हैं, और बहुत-सी हालतोंमें हमेशाके लिये। जवानीमें भुला दिये जानेपर अथवा इनकार कर दिये जानेपर भी वे बुढ़ापेमें फिर प्रकट हो जाते हैं और अंत समय तक पीछा नहीं छोड़ते।

धार्मिक असत्योंके दीर्घायु होनेका एक हदतक यही कारण है। पादरी-पुरोहित हाथोंको जोड़कर और आँखोको आकाशकी ओर उठाकर हर चिंतकसे पूछते हैं कि वह इतना निर्दयी कैसे हो गया कि अपनी माँके धर्मपर आक्रमण कर सका? पादरी समझते हैं कि इस प्रश्नका किसीके पास कोई उत्तर नहीं।

आश्चर्य है कि वे यही प्रश्न हिन्दुओं और चीनियोंके बारेमें क्यों नहीं पूछते ? उनसे ये लोग अपनी माताओंके धर्मको उसी प्रकार छोड़ देनेकी आशा करते हैं जिस प्रकार ईसा और उसके शिष्योंने अपनी माताओंके धर्मको छोड़ दिया था। यहूदियों और अन्य धर्मावलंबियोंके लिये यह ठीक है कि अपनी माताओंके धर्मको छोड़ दें; किन्तु दार्शनिकों और चिंतकोंके लिए नहीं।

प्राकृतिक घटनाओंकी जाँच पड़ताल की गई और कहीं किसी परा-प्रकृतिका पता नहीं लगा। काल्पनिक कथायें, कल्पना-लोकसे अन्तर्धान हो गईं। उनमें जो काव्यका अंश था वही शेष बच रहा। अब हम एक प्राकृतिक संसारमें जी रहे हैं।

हमारे पूर्वजोंमेंसे कुछने धर्मकी स्वतंत्रताकी माँग की थी। हम एक कदम आगे बढ़ना चाहते हैं:—हम स्वतंत्रताके धर्मकी माँग करते हैं।

हे स्वतंत्रते! एकमात्र तू ही मेरी आराधनाकी देवी है। एकमात्र तू ही ऐसी देवी है जिसे झुके हुए घुटनोंसे घृणा है। तेरे खुले मंदिरमें—जहाँ न दीवारे हैं और न छत; जहाँ तारे जगमगाते हैं और सूर्य चमकते हैं—तेरे पुजारी सीधे तनकर खड़े हो सकते हैं। वे न झुकते हैं, न रेंगते हैं और न जमीनपर अपना माथा ही टेकते हैं। उनके ओठोंने कभी जमीनकी मिट्टीका स्पर्श नहीं किया। हे स्वतंत्रते! तेरी वेदीपर न मातायें अपने बच्चोंका बलिदान करती हैं और न आदमी अपने अधिकारोंका। तू आदमीसे केवल वे ही चीज़े माँगती है जिन्हें हर भला आदमी घृणाकी दृष्टिसे देखता है—चाबुक, बेड़ी, और कारागारकी चाबियाँ। तेरे यहाँ न कोई पोप है, न पादरी-पुरोहित, जो तेरे और मानव-बंधुओंके बीच आकर खड़ा हो सके। तुझे न मूर्खतापूर्ण बाह्य क्रिया-कलापोंकी परवाह है और न स्वार्थ-पूर्ण प्रार्थनाओंकी। तेरे पवित्र मंदिरपर तर्ककी न बुझनेवाली बत्ती जल रही है। एक दिन आयेगा, जब उसका पवित्र प्रकाश सारे संसारको प्रकाशित कर देगा।

एक गृहस्थका प्रवचन

महिलाओ और भद्र पुरुषों, मैं आज कुछ ऐसे विषयोंके बारेमें दो चार शब्द कहना चाहता हूँ जो हम सबको प्रिय हैं, और जिनमें हर आदमीकी रुचि होनी चाहिये। संभव है इनमें किसी पुरुषकी रुचि न हो तो उसकी स्त्रीकी होगी, उसके बच्चोंकी हो सकती है। मैं चाहूँगा कि यह संसार ऐसा बन जाय कि जब कोई आदमी मरने लगे तो उसको यह अनुताप न हो कि वह अपनी स्त्री और बच्चोंको दुनियाके लोगोंके लोभ, ईर्षा और निर्दयताका शिकार बननेके लिए छोड़े जा रहा है। जिस शासनमें सबसे अधिक परिश्रम करनेवाले, सबसे कम पाते हैं, वह शासन ही सदोष है। जब ईमानदार लोगोंको चीथड़े पहनने पड़ते हैं और गुंडे अच्छेसे अच्छे कपड़े पहने घूमते हैं, जब कोमल प्रकृतिके दयावान् लोग रोटीके सूखे टुकड़े खाकर जीते हैं और दुष्ट दावतें उड़ाते हैं, तब यह सब कुछ पाप है। मैं कुछ बहुत नहीं कर सकता, तो जो दुखी है, उससे कमसे कम सहानुभूति तो रख सकता हूँ। एक बात है जो हमें आरम्भमें ही याद रखनी चाहिये और यदि मैं आज रात आप सबको वही एक बात सिखा सकूँ—यदि आप उसे पहलेसे न जानते हों—तो मैं अपने आजके कथनको असाधारण रूपसे सफल मानूँगा।

मैं चाहता हूँ, आप यह बात याद रखें कि हर आदमी वही कुछ होता है जो उसे होना चाहिये। मैं चाहता हूँ कि आप उस पुरानी स्वतंत्र नैतिक कर्तृत्ववाली बेहूदा बातसे अपने दिमागको मुक्त कर लें। तब आप देखेंगे कि आपके मन तमाम मानव जातिके लिये उदारताकी भावनासे भर जायेंगे। जब आप जानेंगे कि लोग जिस प्रकार अपने कदकी ऊँचाईके लिये उत्तरदायी नहीं हैं, जिस प्रकार अपने स्वप्नोंके लिये उत्तरदायी नहीं है, उसी प्रकार अपने कार्योंके लिए भी उत्तरदायी नहीं हैं। यदि आप अन्तमें यह समझ जायँगे कि हर कार्यका अपना पर्याप्त कारण होता है, तो मुझे विश्वास है कि

आपके मनमें अपने प्रति और सारी मानवताके प्रति वही उदारताकी भावना भर जायगी।

धन कोई पाप नहीं है; निर्धनता कोई पुण्य भी नहीं है। इसमें संदेह नहीं है कि सदाचारी आदमी प्रायः निर्धन रहे हैं। मानव-जीवनके लिये आदमी-का सुख ही सबसे बड़ा आदर्श है। अपनेको और दूसरोंको सुखी बनानेवाला आदमी ही वास्तविक बुद्धिमान् है।

मैं जन्मसे ही आत्म-त्यागकी बात सुनता रहा हूँ। इससे बढ़कर बुद्धू-पनकी कभी कोई बात नहीं हुई। कोई भी आदमी जो भला काम करता है निःस्वार्थ भावसे नहीं करता। भला काम करना बुद्धिकी कली है, फूल है और फल है। उच्चतम स्वार्थ और संपूर्ण औदार्यसे प्रेरित होकर ही भला कार्य किया जाना चाहिये। कोई भी आदमी कभी आत्मत्यागी नहीं होता, जब तक कि वह कोई गलती न करे। अपनी हानि करना आत्मत्यागी होना है। जो दूसरेके साथ न्याय नहीं करता वह अपने भी न्यायका अधिकारी नहीं। ऐसे पौधे रोपना जिनमें सदैव आनन्दके फल लगते रहें, आत्मत्यागी होना नहीं है। मात्र परोपकारके लिये ही भला काम करना एक बेहूदी कल्पना है। तुम यदि कोई भला काम करना चाहते हो, तो न केवल दूसरोंके लिये किन्तु अपने लिये भी; क्योंकि कोई भी संपूर्ण सभ्य आदमी कभी पूर्ण सुखी नहीं रह सकता, जब तक दुनियामें एक भी आदमी दुखी है।

हम एक कदम आगे बढ़ें। बर्बरताके युगमें यदि कोई आदमी इस संसारमें बुद्धिमानीपूर्वक रहता था तो वह दूसरे लोकमें पुरस्कृत होता था। लोगोंको दूसरे लोकमें पुरस्कृत होनेका विश्वास दिलाया जाता था। यदि उनमें इतना आत्म-त्याग हो कि वे सदाचारी बने रह सकें, यदि वे चोरी और हत्या करनेसे बचे रहें; यदि वे यहाँ काम-भोगके जीवनमें लिप्त न हों, तो उन्हें पर-लोकमें इस आत्मत्यागका बदला मिलेगा। मेरे सोचनेका तरीका एकदम विपरीत है। जो उचित है वह, आत्मत्यागकी भावनासे न करो, किन्तु इसलिये करो कि तुम अपनेको प्रेम करते हो और दूसरोंको प्रेम करते हो। उदार बनो, क्योंकि यह तुम्हारे लिये अच्छा है। न्यायी बनो, क्योंकि कोई दूसरी बात आत्महत्या है। जो आदमी कोई गलत काम करता है वह अपनेको प्लेगका रोगी बनाता है, और जब वह अपनी खेती काटेगा तो उसे

पता लगेगा कि जिस समय उसने अपना धर्म निभाया उस समय वह आत्म-त्यागसे काम नहीं ले रहा था।

यदि तुम स्वयं प्रसन्न रहना चाहते हो, और यदि तुम वास्तवमें सभ्य हो, तो यह चाहोगे कि दूसरे भी सुखी रहें। हर आदमीको अपनी योग्यताके अनुसार मानवताके सुखमें वृद्धि करनी चाहिये, क्योंकि उससे स्वयं उसके सुखमें वृद्धि होती है। कोई भी आदमी तब तक वास्तवमें सुखी नहीं हो सकता जब तक कि अपने साथ रहनेवालोंमें अपने जीवनके सुखको नहीं बाँटता।

बहुत-से लोग कल्पना करते हैं कि धनी स्वर्गमें रहते हैं, किन्तु उनका स्वर्ग एक मुलम्मा चढ़ा हुआ प्रायः नरक ही है। न्यूयार्कमें ऐसा एक भी बुद्धिमान् आदमी नहीं होगा, जिसके पास पचास लाख डालर हों। क्यों? क्योंकि तब रुपया ही उसका मालिक बन जायगा। वह अपनी तिजोरीकी चाबीमात्र हो जायगा। वह रुपया उसे दिन चढ़े उठायगा, उसके मित्रोंको उससे जुदा कर देगा; उसके दिलको डरसे भर देगा और उसका दिनका सुख और रातके मधुर स्वप्न छीन लेगा। वह रुपयेका मालिक नहीं बन सकता, रुपया उसका मालिक बन जाता है और तब अधिकाधिक कमाता जाता है। किस लिये? वह नहीं जानता। यह एक पागलपन बन जाता हैं। कोई भी आदमी एक महलमें एक कोठड़ीसे अधिक प्रसन्न नहीं रह सकता।

जो कुछ तुम्हें चाहिये उससे अधिककी इच्छा करना पागलपन है। हम एक आदमीकी, इस बड़े नगरमें रहनेवाले एक आदमीकी, कल्पना करें जिसके पास २० या ३० लाख कोट हों, ५० लाख या १ करोड़ टोपियाँ हों, जूतोंका एक बड़ा भारी भंडार हो और करोड़ नेकटाइयाँ हों और फिर कल्पना करें उस आदमीकी जो पानीमें, बरफ़में, सुबह चार बजे उठकर दिनभर एक कुत्तेकी तरह काम करता है ताकि उसे एक और नेकटाई मिल जाय। दो करोड़ या तीन करोड़का मालिक आज क्या ठीक यही नहीं करता है? वह अपने जीवनके तारतार करता रहता है ताकि कोई कह उठे—ओह! तुम कितने धनी हो! पर वह इस धनका क्या उपयोग कर सकता है? कुछ नहीं। क्या वह इसे खा सकता है? नहीं। मित्र बना सकता है? नहीं। खुशामद और असत्य खरीद सकता है? हाँ। अपने सभी गरीब संबंधियोंकी घृणाका पात्र बन सकता है? हाँ।

भगवानका अभिशाप

सारा संसार भयसे त्रस्त है। आत्माने अज्ञानकी शरण गही है। सहस्रों वर्ष तक बुद्धिरूपी समुद्रमें तर्कके हत्यारे लूट मार करते रहे हैं। पवित्र आत्मायें तटसे सटे हुए दीप-स्तम्भकी ओर देखती रही हैं।

समुद्र दैत्योंसे भरे थे और द्वीप परियोंसे, जनता एक तंग सड़कके बीचसे हाँकी जा रही थी। पादरी पुरोहित आगे आगे झाड़ियोंको पीटते चलते थे, मानो वे डाकुओंको डरा रहे हैं। बेचारे अनुयायियोंको जब कहीं कोई लुटेरे न दिखाई दिए तो उन्होने अपने वीर नेताओंके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की।

झुंडके झुंड गिरते पड़ते लोगोने आँखे फाड़ फाड़ कर उन गड़रियोंकी ओर देखा जिन्होंने उन्हें भयानक भेड़ियोंकी कथाएँ सुनाईं। बड़ी प्रसन्नतापूर्वक उन्होने आत्म-सुरक्षाके बदलेमें अपने गरम कोट उन गड़रियोंको दे दिये। वे स्वयं वस्त्रविहीन हो गये और भयानक सर्दीमें ठिठुरते रहे। किन्तु उन्हें प्रसन्नता थी कि उनके रक्षक सुखी और गरम हैं।

इस सारे युगमें हल चलानेवालोंको अपनी पसीनेकी कमाई प्रार्थना करनेवालोंको देनी पड़ी। धनीवर्ग इन पवित्र निकम्मोंको पोसता था। झोपड़ी मंदिरके लिए लुटती थी और ढोंगीके दुशालेके लिए दरिद्र आदमीने अपनी चीथड़े तक दे डाले।

भय दिमागका कारागार है, और मिथ्या विश्वासरूपी खड्गसे ही ढोंग आत्माकी हत्या करता है। साहस स्वतंत्रता है। मैं विचारोंके पूर्ण स्वातंत्र्यका पक्षपाती हूँ। विचारके साम्राज्यमें हर कोई एक राजा है। हर किसीके तनपर अधिकारकी वर्दी है। मैं मानसिक स्वतंत्रताके जनतंत्रका नागरिक हूँ और

केवल वे ही इस जनतंत्रके अच्छे नागरिक समझे जा सकते हैं जो तर्क और प्रेमका आश्रय लेते हैं। पशुबलका आश्रय लेनेवाले तो जनतत्रके द्रोही हैं, गद्दार हैं।

अब मैं आप सबसे प्रार्थना करता हूँ कि आप थोड़ी देरके लिए यह भूल जाय कि आप अमुक संप्रदाय अथवा अमुक धर्मके अनुयायी हैं। थोडी देरके लिए हम केवल इतनी ही बात याद रखे कि हम पुरुष और स्त्रियाँ हैं। आप मुझे यह कहनेकी आज्ञा दीजिए कि पुरुष और स्त्री ये मानवताको दी जा सकनेवाली ऊँचीसे ऊची डिगरियाँ हैं।

आओ, यदि हो सके, तो हम अपने दिमागको भयसे सर्वथा मुक्त कर लें। यह कल्पना मत करो कि इस अनन्त विस्तारमे कोई ऐसा ईश्वर है जो यह नहीं चाहता कि प्रत्येक पुरुष और स्त्री अपने लिए स्वतंत्रतापूर्वक सोचे। यह कल्पना मत करो कि कोई ऐसा ईश्वर है, जो अपने बच्चोके हाथमे तर्करूपी मशाल दे और जब वे उसके प्रकाशमे आगे बढने लगे तो उन्हे नरक भेज दे। हम साहससे काम लें।

पादरी-पुरोहितोने नास्तिकता नामक एक अपराधका आविष्कार किया है और ढोगी-लोग हजारो वर्षसे इस अपराधकी ओटमें चैनकी बसी बजा रहे हैं। नास्तिकता केवल एक ही है और वह है अन्याय, पूजा भी एक ही है और वह है न्याय।

तुम्हे किसी ऐसे भगवान्से डरनेकी आवश्यकता नहीं जिसे तुम कोई हानि नहीं पहुँचा सकते। सावधान रहो कि तुमसे तुम्हारे किसी मानव-बन्धुको हानि न पहुँच। जिस अपराधको तुम कर ही नही सकते उसे करनेसे क्यो डरते हो? तुम उस अपराधसे बचनेका प्रयत्न करो जो शायद तुमसे हो सकता है। ईश्वरको कोई हानि न पहुँचा सकनेका कारण यह है कि अनन्तमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। तुम बिना किसीकी अवस्थामे परिवर्तन किये उसके सुखको बढ़ा या घटा नहीं सकते। यदि ईश्वरमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता, तो तुम न उसकी कोई हानि कर सकते हो और न उसे कोई लाभ ही पहुँचा सकते हो।

एक यहूदी एक बार किसी भोजनालयमें भोजन करने गया। उसकी जबान ललचाई और उसने उस यहूदीके कानमें कहा— " थोड़ा-सा सूअरका मांस खाओ।" वह जानता था कि विश्वमें यदि कोई बात है कि जिससे खुदा सख्त नाराज होता है तो वह है किसी भले आदमीको सूअरका मांस खाते देख लेना। वह यह अच्छी तरह जानता था और यह भी जानता था कि खुदा हर छोटी-बड़ी बातपर हर समय निगाह रखता है। लेकिन उसकी भूख जीत गई, जैसा कि हम सबके साथ होता है, और उसने सूअरका मांस खा लिया। वह जानता था कि यह पाप है और इसलिए लज्जाके मारे उसके गाल लाल हो गये। जिस समय उसने भोजन-गृहमें प्रवेश किया था, दिन बहुत ही अच्छा था और आकाश एकदम इतना स्वच्छ, जितना कि वह जूनके महीनेमें होता है। किन्तु जब वह भोजनगृहसे बाहर निकला, आकाशपर घनघोर बादल थे, बिजली चमक रही थी और उसकी कड़कसे पृथ्वी काँप रही थी। वह वापिस भोजनालयमें गया। उसका चेहरा दूध जैसा सफेद हो गया था। उसने उस भोजन-गृहके एक आदमीको बुलाया और कहा—

" मेरे यार, क्या तुमने पहले कभी एक जरासे सूअरके मासके टुकड़ेके लिए इतना हो हल्ला सुना है ! "

जब तक हम ऐसे ईश्वरमें विश्वास करते रहेंगे और जब तक हम समझते रहेंगे कि आकाशके ऊपर किसी ऐसे अत्याचारीका निवास-स्थान है तब तक सभी पृथ्वी-पुत्र रेंगते रहेंगे और वे दिमागी कायर बने रहेंगे। हम सोचें और ईमानदारीसे अपने विचार प्रकट करें।

थोड़ी देरके लिये भी यह मत समझो कि जो लोग मुझसे सहमत नहीं हैं, मैं उन्हें बुरे आदमी मानता हूँ। मैं स्वीकार करता हूँ और प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता हूँ कि मानवताका एक बड़ा हिस्सा, एक विशाल एवं विराट् बहु-जन समुदाय पर्याप्त ईमानदार है। मेरा विश्वास है कि अधिकांश ईसाई अपने विश्वासोंका ही प्रचार करते हैं और अधिकाश पादरी संसारको बेहतर बनानेके लिये प्रयत्न-शील हैं। मैं उनकी अपेक्षा अच्छा होनेका दावा नहीं करता। यह केवल बुद्धिका प्रश्न है। यह प्रश्न सर्वप्रथम मानसिक-स्वतन्त्रताका प्रश्न है और उसके बाद एक ऐसा प्रश्न है, जिसका निर्णय मानवता-

की तर्ककी वेदिकापर ही हो सकता है । मैं उनकी अपेक्षा अच्छा होनेका दावा नहीं करता । शायद मैं उनमेंसे बहुतोंकी अपेक्षा बुरा हूँ; किन्तु यह तो प्रश्न ही नहीं है । प्रश्न यह है कि बुरा-भला जैसा भी मैं हूँ, क्या मुझे सोचनेका अधिकार है ? दो कारणोंसे मैं समझता हूँ; हाँ, मुझे अधिकार है ।

पहले तो मैं बिना सोचे रह नहीं सकता, दूसरे मैं इसे पसन्द करता हूँ ।

सारा प्रश्न अधिकारका है । यदि मुझे अपने विचार प्रकट करनेका अधिकार नहीं, तो फिर किसे है ?

"ओह" उनका कहना है, "हम तुम्हें सोचने देंगे, हम तुम्हें जलायेंगे नहीं ।"

"अच्छा, तुम मुझे क्यों नहीं जलाओगे ?"

"क्योंकि हम समझते हैं कि एक सज्जन आदमीका यह कर्तव्य है कि वह दूसरोंको सोचने और अपने विचार प्रकट करने दे ।"

"तब यदि तुम मुझे मेरे विचारोंके लिये दण्ड नहीं देते तो इसी लिये कि तुम समझते हो कि इससे तुम्हारी निन्दा होगी ?"

"हाँ ।"

"और तब भी तुम ऐसे परमात्माको पूजते हो जिसके बारेमें तुम्हारा कहना है कि वह मुझे अनन्त दण्ड देगा ?"

निःसंदेह, अनन्त परमात्माको एक आदमी जितना न्यायी तो होना ही चाहिये । निश्चय ही, किसी परमात्माको यह अधिकार नहीं हो सकता कि वह अपने पुत्रोंको ईमानदार बननेके लिये दण्डित करे । उसे ढोंगियोंको स्वर्ग नहीं भेजना चाहिये और सच्चे आदमियोंको अनन्त-पीड़ाका कष्ट नहीं देना चाहिये ।

दूसरा प्रश्न यह है कि यदि मैं सोच-विचार करता हूँ तो क्या मैं परमात्माके दरबारमें अपराधी हूँ ? यदि परमात्मा यही चाहता था कि मैं विचार न करूँ, तो उसने मुझे सोचनेकी शक्ति क्यों दी ? मेरा यह दृढ विश्वास है कि न केवल मुझे सोचनेका अधिकार ही नहीं है, बल्कि अपने ईमानदाराना विचारोंको

प्रकट करना भी मेरा कर्तव्य है। देवता-गण कुछ भी कहें, हमें अपने प्रति सच्चा होना चाहिये।

हमारे सम्मुख वह वस्तु है, वह पद्धति है, जिसे लोग ईसाई धर्म कहते हैं। हजारों लोग सोचते हैं कि मैं ऐसा बदमाश कैसे हो सकता हूँ कि मैं ईसाई धर्मपर आक्रमण करूँ?

इसमें कई अच्छी बातें भी हैं। मैं कभी किसी ऐसी बातपर आक्रमण नहीं करता जिसके बारेमें मेरा विश्वास हो कि वह अच्छी है। मैं कभी किसी ऐसी बातपर आक्रमण करनेसे नहीं डरता जिसके बारेमें मेरा विश्वास है कि वह बुरी है। मेरे सम्मुख वह वस्तु है, जिसे वे लोग ईसाई धर्म कहते हैं। मैं देखता हूँ कि जो जातियाँ जितनी ही अधिक मात्रामें धार्मिक रही हैं, वे उतनी ही अधिक मात्रामें उन धर्मोंके संस्थापकोंसे चिपटी रही हैं, अर्थात् उन्होने बर्बरताकी ओर प्रगति की है। मैं देखता हूँ कि यूरोपमें स्पेन, पुर्तगाल और इटली सबसे खराब हालतमें हैं। मै देखता हूँ कि जो जाति नास्तिकताके अधिकसे अधिक समीप है, वह सबसे अधिक सम्पन्न है, जैसे फ्रास।

इस लिये मैं कहता हूँ कि संपूर्ण मानसिक स्वातन्त्र्यमें किसी तरहका कोई खतरा नहीं। मैं अपनेमें ही देखता हूँ कि जो आदमी विचार करते हैं वे विचार न करनेवालों जितने अच्छे अवश्य हैं।

मैं कहता हूँ कि हमारे सामने वह चीज है, जिसे लोग ईसाई-धर्म कहते हैं। वे बताते हैं कि ईसाई-धर्मका आधार 'न्यू टेस्टामेंट' या 'नवीन-प्रवचन' है। 'नवीन-प्रवचन' किसने लिखा? मैं नहीं जानता। कौन जानता है? कोई नहीं। हमें अनेक पाण्डु-लिपियाँ मिली हैं जिनमें नये-प्रवचनके कुछ हिस्से हैं। इनमेंसे अधिकांश पाण्डुलिपियोंमें पाँच या छः पुस्तिकायें नहीं हैं—। कुछमें कम हैं, कुछमें अधिक। इनमेंसे कोई भी दो पाण्डुलिपियाँ ठीक एक जैसी नहीं हैं। वे सब यूनानी भाषामें लिखी हैं। जहाँ तक हम जानते हैं, ईसाके शिष्य केवल हिब्रू भाषा जानते थे। जहाँ तक हमारी जानकारी है, आजतक किसीने मूल हिब्रू पाण्डु-लिपि नहीं देखी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आपके नगरके पादरियोंने आपको यह

बातें हजारों बार कही होंगी और उन्हें एक बार फिर दोहरा देनेके लिये वे मेरे कृतज्ञ होंगे। ये हस्तलिखित ग्रन्थ बड़े यूनानी अक्षरोंमें लिखे हैं। १५५१ तक नया-प्रवचन परिच्छेदोंमें विभक्त न था। मूलमें पाण्डुलिपियों तथा कथानकोंमें किसीके हस्ताक्षर नहीं हैं। चिट्ठियॉ (Epistles) किसीके प्रति नहीं लिखी गई हैं, और उनपर एक ही आदमीके हस्ताक्षर हैं। तमाम पते, तमाम ऐसे चिह्न जो बताते हैं कि ये पत्र किसे लिखे गये और किस द्वारा लिखे गये प्रक्षित हैं, और जिस किसीने भी इस विषयका अध्ययन किया है वह इस बातसे सुपरिचित है।

यह भी माना गया है कि इन पाण्डुलिपियोंका ठीक ठीक अनुवाद भी नहीं हुआ और आजकल एक परिषद् एक नया अनुवाद तैयार कर रही है। अब जब तक मै यह नया अनुवाद न देख लूँ तब तक मेरे लिये यह कह सकना कठिन है कि मै नये-प्रवचनको मानता हूँ अथवा नहीं।

तुम्हे एक बात और भी याद रखनी चाहिये। ईसाने नये-प्रवचनका एक भी शब्द नहीं लिखा—एक भी शब्द। एक कथा है कि एक बार ईसा झुका था और उसने बालूपर कुछ लिखा था; किन्तु वह लेख सुरक्षित रखा नहीं गया। उसने कभी किसीको एक शब्द लिखनेको नहीं कहा। उसने कभी नहीं कहा—"मैथ्यू, इसे याद रखना। मार्क, इसे लिखना मत भूलो। ल्यूक, सावधानी रखो कि तुम्हारे कथानकमें यह बात अवश्य आ जाय। जान, उसे मत भूलो।" एक भी शब्द नहीं। मुझे सदैव यह लगता रहा है कि जो दूसरे ससारसे यहाँ आया और जो मानवताके लिये इतना महत्त्वपूर्ण सन्देश लाया, अपने हस्ताक्षरोंसे उसे प्रमाणित अवश्य कर देना चाहिये था। क्या यह आश्चर्यकी बात नहीं है कि ईसाने एक भी शब्द नहीं लिखा? क्या यह विचित्र बात नहीं है कि उसने अपना एक भी वचन सुरक्षित रखनेकी आज्ञा नहीं दी—वे वचन जिनपर ससारकी मुक्ति निर्भर रही है।

कुछ भी क्यो नहीं लिखा गया? मै तुम्हें बताता हूँ। मेरी समझके अनुसार वे लोग आशा करते थे कि संसार थोड़े ही समयमें समाप्त हो जायगा। उनका विश्वास था कि उसी पीढ़ीके रहते संसार जन्म-पत्रीकी तरह गोल हो जायगा और पृथ्वी भयानक गर्मीसे पिघल जायगी। उनका विश्वास

था कि संसार नष्ट हो जायगा, फिर नया संसार बसेगा और तब संसारमें सन्त-पुरुषोंका राज्य होगा। उन्होंने यहाँ तक किया, जैसा हम आजकल चुनावके दिनोंमें करते हैं कि पहलेसे ही यह तय कर लिया कि कौन शिष्य किस पदपर रहेगा। यह प्रवचन जैसा इसका वर्तमान स्वरूप है, शिष्योंके मिट्टीमें मिल जानेके सैकड़ों वर्षबाद तक नहीं लिखा गया। बहुत-सी घटनायें मिथ्या विश्वासकी जिह्वापर थीं। वे विस्मृतिरूपी रद्दीकी टोकरीमें पड़ी थीं। शताब्दियों तक सिद्धान्त और कथाये इधरसे उधर उड़ती-फिरती रहीं और जब उन्हें लिखा गया तो कभी कभी लेखकने हाशियेपर अपने विचार लिखे और दूसरे लिपिकने उसे भी मूलमें शामिल कर दिया। और जब यह अधिकाशमें लिखा जा चुका और चर्चको कोई कठिनाई हुई और इस बातकी आवश्यकता हुई कि प्रवचनका कोई अनुच्छेद उसकी सहायता कर सकता है तो 'चर्च' की आशासे भी उसमें 'कुछ' मिला दिया गया। अब 'प्रवचन' में कमसे कम एक सौ क्षेपकोंको ढूँढ निकालनेसे सरल ससारमें दूसरा काम नहीं। और मैं आगे बढ़नेसे पहले कुछ ऐसे क्षेपक निकाल कर दिखाऊँगा।

लेकिन एक बात मैं यहाँ निवेदन कर दूँ। आदमी ईसाके लिये मेरे मनमें अनन्त श्रद्धा है। जिस जगह यह आदमी मरा वह सचमुच पवित्र भूमि है। उस महान् और गम्भीर व्यक्तित्वकी मैं अपने आँसुओंसे पूजा करता हूँ। वह अपने समयका सुधारक था। वह अपने समयका नास्तिक था। उसे ढोंगि-योंने मार डाला, उन ढोंगियोंने जो हर युगमें मानवकी स्वतन्त्रताको कुचलनेके लिये सब कुछ करते आये हैं। यदि मैं उसके समयमें होता, तो मैं उसका मित्र होता और यदि वह फिर इस संसारमें आये तो उसे मुझसे बढ़कर मित्र न मिलेगा।

यह है आदमी ईसाके लिये। परन्तु जिस ईसाको ईसाइयतने जन्म दिया है उसके लिये मेरी भावना भिन्न है। यदि वास्तवमें परमात्मा था तो वह जानता था कि मृत्यु कोई चीज़ नहीं है। वह जानता था कि जिसे हम मृत्यु कहते हैं वह तो अनन्त आनन्दके स्वर्णिम द्वारका उद्घाटन मात्र है। ऐसी मृत्युको गले लगानेमें जो वास्तवमें अनन्त जीवन थी कौन बहादुरी थी!

लेकिन जब एक आदमी, जब एक सोलह वर्षका गरीब लड़का, स्वर्गमें अपनी पताका ऊँची रखनेके लिये युद्ध-क्षेत्रमें प्रवेश करता है, जब वह इतना ही समझता है कि मृत्यु सर्वविनाशिनी है, जब वह समझता है कि उसपर अनन्त अन्धकार छा जानेवाला है, तो उसमें वस्तुतः वीरता है। उस आदमीके लिये जिसने तमसुके भीतरसे पुकार कर कहा, " हे परमात्मा ! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया है ! " मेरे मनमें आदर है, प्रशंसा है और प्रेम है ! वास्तविक ईसाको ढँकनेवाले ईसाइयतके चिथड़ोंके पीछे मुझे एक सच्चा आदमी दिखाई देता है।

कुछ समय पहले मैंने यह निर्णय किया कि मैं पता लगाऊँ कि मुझे अपनेको बचानेके लिये क्या क्या करना चाहिये ? यदि मुझमें कोई आत्मा है तो मैं उसकी सुरक्षा चाहता हूँ । किसी भी मूल्यवान् वस्तुको गवाँना नहीं चाहता।

हजारों वर्ष तक संसार यह प्रश्न पूछता रहा है कि " हमें अपनेको बचानेके लिये क्या करना चाहिये ? "

दरिद्रतासे बचानेके लिए ? नहीं। अपराधसे बचानेके लिये ? नहीं। किन्तु हमें अपनेको बनानेवाले भगवान्के क्रोधसे बचानेके लिये क्या करना चाहिये ?

यदि परमात्माने हमें बनाया है तो वह हमें नष्ट नहीं करेगा। अनन्त-बुद्धि कभी कोई ऐसा काम नहीं करती जिसमें कुछ लाभ न हो। अनन्त शक्तिवाले परमात्माके सभी कामोंके अन्तमें कुछ लाभकी घोषणा होनी ही चाहिये। परमात्माको लाभ क्यों न हो ? परमात्मा किसी भी सामग्रीको व्यर्थ नष्ट क्यों करे ? वह लोगोंको रसातल भेजनेकी बजाय अपनी गलतियोंको सुधारता क्यों नहीं ? वेदिकाओंने झूलेनेमें झूलनेवाले बच्चों तकको नहीं बख्शा। अनन्त-दण्डके सिद्धान्तने ससारको हज़ार हज़ार आँसू रुलाया है। मैं इस सिद्धान्तसे घृणा करता हूँ। मैं इसे माननेसे इनकार करता हूँ।

मैंने निर्णय किया कि मैं पता लगाऊँ कि नवीन-प्रवचनके अनुसार अपनी आत्माको बचानेके लिये मुझे क्या करना चाहिये ? मैंने इसे पढ़ा।

मैंने मैथ्यु, मार्क, ल्यूक और जानके कथानकोंको पढ़ा। मुझे पता लगा कि पादरी लोग स्वयं अपनी पुस्तकोंको नहीं समझते और उनकी इमारतका आधार पुस्तकोंके प्रक्षिप्त अंश हैं जो सर्वथा मिथ्या हैं। मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं ऐसा क्यों सोचता हूँ।

१—मैथ्युका कथानक

पादरियोंके अनुसार, पहला कथानक मैथ्युका लिखा हुआ है। वास्तविक बात यह है कि उसने कभी इसका एक शब्द भी नहीं लिखा—इसे देखा नहीं, इसके बारेमें सुना नहीं, और सम्भवतः आगे भी नहीं सुनेगा। लेकिन इस व्याख्यानके मतलबके लिये मैं स्वीकार कर लेता हूँ कि उसने इसे लिखा। म मान लेता हूँ कि वह तीन वर्ष तक ईसाके साथ रहा। वह उसका दिन-रातका साथी था। वह उसके कष्टों और सफलताओंमें हिस्सेदार था। उसने एकान्त झील और ऊजड़ पहाड़ियोंमें, खुदाके घर और बाज़ारमें कहे गये शब्दोंको सुना। वह उसका दिल पहचानता था और उसके विचारों तथा उद्देश्योंसे सुपरिचित था।

अब हम देखें कि अपने बचावके लिये मैथ्यु हमें क्या करनेको कहता है और मैं यह मान कर चलता हूँ कि यदि यह सत्य है तो मैथ्युका कथन उतना ही प्रामाणिक है जितना संसारके किसी भी बड़ेसे बड़े पादरीका।

पहली चीज़ जो बचावके विषयमें मैथ्युमें मिलती है, वह उसके पाँचवें परिच्छेदमें है जो सामान्यतया ' पर्वतके उपदेश ' नामसे ज्ञात है। वह इस प्रकार है:—

" अत्यन्त विनम्र लोग भाग्यवान् हैं, क्यों कि स्वर्गका साम्राज्य उन्हींका है। " बहुत अच्छा। " दया करनेवाले भाग्यवान् हैं, क्यों कि उनपर दया की जायगी। " बहुत अच्छा। चाहे वे किसी सम्प्रदाय-विशेषके हों चाहे न हों। चाहे वे बाइबलमें विश्वास करें चाहें न करें।

" हृदयके पवित्र लोग भाग्यवान् हैं, क्यों कि वे ईश्वरको देख सकेंगे। शान्ति करानेवाले लोग भाग्यवान् हैं, क्यों कि वे ईश्वरके पुत्र कहलायेंगे। धर्मके लिये कष्ट सहन करनेवाले लोग भाग्यवान् हैं, क्यों कि स्वर्गका राज्य उन्हींका है। " बहुत अच्छा।

इसी प्रवचनमें कहा गया है—" यह मत सोचो कि मै धर्म-नियमों अथवा पैगम्बरोको मिटाने आया हूँ। मैं नष्ट करने नहीं आया, मैं तो पूर्ति करने आया हूँ।" और आगे उस असाधारण भाषाका उपयोग है, जो आज भी वैसी ही लागू है जैसी कि उस समय थी—" मै तुम्हे कहता हूँ कि यदि तुम्हारा सदाचार धर्मोपदेष्टाओके सदाचारसे बढ़कर नही होगा तो तुम किसी भी तरह स्वर्गके साम्राज्यमे प्रवेश न पा सकोगे।" बहुत अच्छा।

छठे परिच्छेदका निम्नलिखित अंश 'भगवानकी प्रार्थना' के ठीक बादमें है—

" यदि तू आदमियोंके अपराधोको क्षमा करेगा, तो तेरा स्वर्गीय पिता भी तेरे अपराधोंको क्षमा करेगा; यदि तू आदमियोके अपराध क्षमा नहीं करेगा, तो तेरा स्वर्गीय पिता भी तेरे अपराध क्षमा नहीं करेगा।"

मैं यह शर्त स्वीकार करता हूँ। एक प्रस्ताव है, मैं मानता हूँ। यदि तुम अपने विरुद्ध किये गये आदमियोके अपराधोको क्षमा करते हो, तो ईश्वर अपने विरुद्ध किये गये तुम्हारे अपराधोको क्षमा करेगा। मैं यह शर्त स्वीकार करता हूँ। मै कभी किसी ईश्वरसे यह आशा नहीं करूँगा कि वह मुझसे उससे अच्छा बरताव करे जैसा मै अपने मानव-बन्धुके साथ करता हूँ। इसमें बात साफ साफ है। सीधा-सादा लेन-देन है। यदि तुम दूसरोको क्षमा करोगे तो ईश्वर तुम्हे क्षमा करेगा। इसमे यह कहीं नहीं कहा गया कि तुम्हें पुरातन-प्रवचनमे विश्वास करना चाहिये, तुम्हें दीक्षित होना चाहिये, तुम्हे चर्चमे जाना चाहिये, तुम्हे माला फेरनी चाहिये, या प्रार्थना करनी चाहिये, या तुम्हे साधु अथवा साध्वी बन जाना चाहिये, और तुम्हे धार्मिक प्रवचन सुनाने या सुनने चाहिये और तुम्हे गिरजे बनाना चाहिये अथवा उन्हे भरना चाहिये। एक भी शब्द न खानेके बारेमे है और न व्रत रखनेके बारेमें, न अविश्वास करनेके बारेमें हैं और न विश्वास करनेके बारेमें। निर्देश इसमें केवल इतना ही है कि यदि तुम दूसरोको क्षमा करोगे तो ईश्वर तुम्हें क्षमा कर देगा। यह होना ही चाहिये। कोई भी भगवान् एक क्षमा शील आदमीको रसातल नहीं भेज सकता। थोड़ी देरके लिये मान लो कि ईश्वर एक क्षमाशील आदमीको अनन्त आगमें झोंक देता

है और वह आदमी इतना भला और इतना महान् है कि वह ईश्वरको क्षमा कर देता है तो उस समय ईश्वरकी क्या दशा होगी ?

लेकिन एक बात मुझे एकदम स्पष्ट कर देनी चाहिये—पूर्ण-रूपसे स्पष्ट। उदाहरणके लिये मुझे प्रेसबिटेरियनिज्मसे घृणा है, किन्तु मैं सैकड़ो बहुत अच्छे प्रेसबिटेरियन लोगोंको जानता हूँ। मेरी बातको समझिए। मुझे मैथाडिज्म-से घृणा है, किन्तु मै सैकड़ो भले मैथॉडिस्टोंको जानता हूँ। मुझे कैथालिसिज्म-से घृणा है, किन्तु कैथालिक लोगोंसे प्रेम है। मुझे पागलपनसे घृणा है, किन्तु पागलोसे नहीं।

मैं आदमियोके विरुद्ध नहीं लड़ता। मेरी व्यक्तियोंसे लड़ाई नहीं है। मेरी लड़ाई कुछ सिद्धान्तोंसे है जिन्हे मै गलत समझता हूँ। लेकिन मैं साथ ही हर आदमीको वही अधिकार देता हूँ जो मै अपने लिये चाहता हूँ।

अगली बात जो मुझे मिलती है, वह सातवे परिच्छेदके दूसरे अनुच्छेदमे—

"जिस तरहसे तुम दूसरोकी समालोचना करोगे, उसी तरहसे तुम्हारी समालोचना होगी: जिस तरहसे तुम दूसरोंकी नाप-तोल करोगे, उसी तरहसे तुम्हारी नाप-तोल होगी।" बहुत अच्छा। यह मेरे प्रतिकूल नहीं है।

और मैथ्युके बारहवे परिच्छेदमें है—"जो भी कोई मेरे स्वर्गीय पिताकी इच्छाको पूर्ण करेगा, वही मेरा भाई, बहन और माँ है। क्योंकि मानव-पुत्र अपने पिताकी शानमे देवताओंके साथ आयेगा और हर किसीको पुरस्कृत करेगा उसके.. अनुसार।" क्या सम्प्रदायके अनुसार ? नही। उसकी मान्यताके अनुसार ? नही। वह हर आदमीको उसके कर्मोंके अनुसार पुरस्कृत करेगा।" बहुत अच्छा। मैं इस सिद्धान्तको स्वीकार करता हूँ।

और अठारहवे परिच्छेदमे हैं:—

और ईसाने एक छोटे बच्चेको अपने पास बुलाया और (लोगोंके) बीचमे खड़ा किया और कहा :—"मैं तुम्हें निश्चयसे कहता हूँ कि यदि तुम अपने आपमे परिवर्तन लाकर छोटे बच्चे नहीं बन जाते, तो कभी भी स्वर्गके साम्राज्यमे प्रवेश नहीं पा सकते।" मुझे इसमें कुछ आश्चर्य

नहीं है कि यदि धर्मध्वजियोंसे घिरे हुए ईसाने इस प्रकार प्रेमपूर्वक बच्चोंकी ओर ध्यान दिया।

उन्नीसवें परिच्छेदमें है :—

" और देखो, कोई आया, और उसने कहा : अच्छे स्वामी, मैं क्या अच्छी बात करूँ कि मुझे अनन्त जीवन मिले ? और उसने उसे कहा : 'तू मुझे अच्छा क्यों कहता है ? ईश्वरके अतिरिक्त और कोई अच्छा नहीं। किन्तु यदि तू अनन्त जीवनमें प्रवेश किया चाहता है तो आज्ञाओंका पालन कर।' उसने उससे पूछा :—" कौन-सी ? "

अब यह एक सीधा प्रश्न है। ईश्वरका एक बच्चा ईश्वरसे पूछ रहा है कि अनन्त जीवनकी प्राप्तिके लिये उसे क्या करना चाहिये ? और ईश्वरने उससे कहाः—" (सदाचारकी) आज्ञाओंको मानो।" और बच्चेने ईश्वरसे पूछाः—" कौन-सी ? " अब यदि सर्वशक्तिवान् ईश्वरको कभी कोई ऐसा अवसर मिला है जब वह एक जिज्ञासुको इस विषयमें आवश्यक जानकारी दे सके तो इससे अच्छा अवसर नहीं मिल सकता था। उसने उससे पूछाः—" कौन-सी ? " ईसाने कहाः—' तुम्हें हत्या नहीं करनी होगी; तुम्हें व्यभिचार नहीं करना होगा, तुम्हें चोरी नहीं करनी होगी, तुम्हें झूठी गवाही नहीं देनी होगी, माता-पिताका सम्मान करना होगा; और तुम्हे अपने पड़ौसीको अपने जैसा प्रेम करना होगा।"

उसने यह नहीं कहा कि तुम्हें मुझमें विश्वास करना चाहिए, क्योंकि अकेला मैं ही परमात्माका पुत्र हूँ। उसने यह नहीं कहा कि तुम्हें फिर पैदा होना होगा। उसने यह नहीं कहा कि तुम्हें बाइबलमें विश्वास करना चाहिये। उसने यह नहीं कहा कि तुम्हें रविवारके दिनको पवित्र मानना चाहिये। उसने केवल इतना ही कहाः—" तुम्हे हत्या नहीं करनी होगी, तुम्हें व्यभिचार नहीं करना होगा, तुम्हें चोरी नहीं करनी होगी, तुम्हे झूठी गवाही नहीं देनी होगी, माता-पिताका सम्मान करना होगा; और अपने पड़ौसीको अपने जैसा समझना होगा।" और तब उस तरुणने, जो मैं समझता हूँ गलतीपर था, उससे कहाः—" मैं इन सब बातोंका पालन करता आ रहा हूँ।"

अब चर्चको क्या अधिकार है कि वह बचावकी बातोंमें कुछ और बातें भी शामिल कर दे ? हम यह क्यों मानें कि ईसाने उस तरुणको सभी आवश्यक बातें नहीं बताईं ? क्या यह सम्भव है कि उसने कोई महत्त्वपूर्ण बात केवल इस लिये छोड़ दी कि वह उसे ग़लत रास्तेपर डालना चाहता था ?

पुराने समयमें जब पादरियोंको पैसेकी तंगी होने लगी तो उन्होंने दरिद्रताका बखान करनेवाली कुछ पंक्तियाँ मिला दीं। इस प्रकार उन्होंने इस तरुणसे पुछवाया:—"अभी मुझमें क्या कमी है ?" और ईसाने उसे उत्तर दिया, "यदि तू पूर्णता प्राप्त करना चाहता है तो जो कुछ तेरे पास है उसे बेच दे और गरीबोंको दे दे। तुझे स्वर्गमें ख़ज़ाने मिलेंगे।"

पादरी लोग सदासे पृथ्वीके वास्तविक धनके बदलेमें स्वर्गके खजाने देनेके लिए तैयार रहे हैं। और जब अगली पंक्तियाँ लिखी गई तब तो ईसाइयतका दिवाला ही निकल गया होगा।—"और मैं तुम्हें फिर कहता हूँ कि धनी आदमीके लिए ईश्वरके साम्राज्यमें प्रवेश करनेकी अपेक्षा एक ऊँटका सूईके सूराखमेंसे निकल जाना आसान है।" क्या तुमने कभी एक भी ऐसा धनी शिष्य जाना है जिसने इन पंक्तियोंके कारण अपने आपको निर्धन बना लिया हो ?

आगे कुछ और पंक्तियाँ हैं जिन्हें मैं प्रक्षिप्त मानता हूँ ! "जो कोई मेरे नामपर घर, अथवा भाई, अथवा बहिन, अथवा पिता, अथवा माता, अथवा स्त्री, अथवा बच्चे, अथवा जमीन छोड़ देगा उसे ये सब चीजें सौगुनी होकर मिलेंगी और वह अनन्त जीवनका उत्तराधिकारी होगा।"

क्राइस्टने ऐसा कभी नहीं कहा, कभी नहीं कि "जो कोई अपने माता पिताको छोड़ देगा..."

जिस: तरुणने उससे पूछा कि मैं अनन्त जीवनका उत्तराधिकारी कैसे बनूँ, उसे उसने दूसरी बातोंके साथ बताया—अपने माता पिताका सम्मान करो। और हम दूसरा पन्ना पलटते हैं तो वह कहता है—"यदि तुम अपने माता पिताको छोड़ दोगे तो तुम्हें अनन्त जीवन मिलेगा।" नहीं, यह नहीं

चलेगा। यदि तुम अपनी स्त्री, अपने छोटे बच्चे अथवा अपनी जमीन छोड़ दोगे—यहाँ घर और बहुत सी दूसरी चीजोंको बीवी बच्चोंके साथ समान दर्जा दिया जा रहा है! जरा इसका विचार करो! मैं यह शर्त कभी नहीं स्वीकार कर सकता। किसी ईश्वरके वचनके भरोसे जिसे मैं प्यार करता हूँ उसे कभी नही छोड सकता।

ईश्वरसे प्रेम करनेकी बजाय कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है अपनी स्त्रीसे प्रेम करना। मैं तुम्हे कारण बताता हूँ। तुम ईश्वरकी मदद नहीं कर सकते, किंतु स्त्रीकी मदद कर सकते हो। उसके जीवनको सतत आनन्दकी सुगंधिसे भर सकते हो। ईसा मसीहसे प्रेम करनेकी अपेक्षा अपने बच्चोसे प्रेम करना कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। क्यो? यदि वह ईश्वर है, तो तुम उसकी मदद नहीं कर सकते, किन्तु बच्चेके झूलनेके समयसे लेकर जब तक तुम उसके हाथोमें मर न जाओ तब तक उसके हर कदमपर प्रसन्नताका एक छोटा फूल उगा सकते हो। आज मै आपको बताऊँ कि एक मंदिर बनानेकी अपेक्षा एक घर बनाना अधिक महत्त्वपूर्ण है। तारोंके नीचे पवित्रतम मंदिर वह घर है जिसे प्रेमने बसाया है, और समस्त संसारमें पवित्रतम वेदिका* घरका चूल्हा है जिसके इर्द गिर्द माता पिता और बालक इकट्ठे होते हैं।

एक समय था जब लोग इन भयानक पंक्तियोंकी आज्ञा माननेमें विश्वास करते थे। एक समय था जब वे माता पिता तथा स्त्री-बच्चोंको वास्तवमें छोड़ कर चले गये। सत ऑगस्टाइनने भक्तोंको उपदेश दिया है—जगलकी ओर भागो। यदि तुम्हारी स्त्री तुम्हारे गलेमें हाथ डाले, तो उसके हाथ झटक दो। वह मारका फंदा है। यदि तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे बच्चोंको तुम्हारे रास्तेमें लिटा दें, तो तुम उनके ऊपरसे चले जाओ। यदि तुम्हारे बच्चे तुम्हारे पीछा करके और अश्रुमुख होकर तुमसे प्रार्थना करें कि घर लौट चलो, तो उनको बात न सुनो। यह भी मारका फंदा है। बियाबानमें भाग जाओ और अपनी आत्माको बचा लो।

क्या ऐसी आत्मा बचानेके लायक है? मैं जब तक जीता हूँ तब तक मैं उनका साथ देनेका इरादा रखता हूँ जिन्हें मैं प्यार करता हूँ।

भगवानके अभिशापसे बचनेकी एक और शर्त है। यह पच्चीसवें परिच्छेदमें है:—"तब राजा अपनी दाईं ओर खड़े हुए लोगोंको कहेगा, आओ, मेरे पिताके भाग्यवानो, अपने लिये संसारके आधारपर तैय्यार किये गये साम्राज्यका उत्तराधिकार सँभालो। जब मैं भूखा था, तुमने मुझे खाना दिया; जब मैं प्यासा था, तुमने मुझे पेय दिया; मैं अपरिचित (मुसाफिर) था, तुमने मुझे (घरमें) अन्दर लिया; नंगा था, तुमने मुझे कपड़े पहनाये; बीमार था, तुम मुझे देखने आये; और जब मैं जेलमें था, तब भी तुम मेरे पास आये।" बहुत अच्छा।

मैं आज आपको कहता हूं कि ईश्वर उस आदमीको कभी अनन्त-काल तक प्यासा नहीं रखेगा जो अपने पडौसीको ठण्डा पानी पिलाता है। ईश्वर उस आदमीको कभी अनन्त-काल तक नग्न रहनेका दुख नहीं देगा जिसने अपने मानव-बन्धुओंको कपड़े पहनाये हैं।

एक जहाज डूब रहा है। एक वीर नाविक स्वयं एक ओर खड़ा हो जाता है और एक ऐसी स्त्रीको जिसे उसने कभी नहीं देखा नौकामें अपना स्थान लेने देता है। वह वहीं खड़ा रहता है—समुद्रकी तरह ही महान् और गम्भीर और वह समुद्रमें नीचे चला जाता है। क्या तुम मुझे यह बताना चाहते हो कि कोई ऐसा ईश्वर है जो अनन्त-जीवनके तटपर खड़ी हुई नौकामें उस आदमीको न चढ़ने देगा? क्या तुम मुझे यह कहना चाहते हो कि ईश्वर दयालुके प्रति निर्दय और क्षमा-वान्के प्रति क्षमाहीन हो सकता है? मैं इसे अस्वीकार करता हूँ और ईश्वरको बदनाम करनेवाले धर्म-ध्वजियोंसे उसके यशकी रक्षा करना चाहता हूँ।

भगवानके अभिशापसे सुरक्षित रहनेके सम्बन्धमें जो कुछ मैथ्युमें है, एक प्रकारसे मैंने वह सब पढ दिया है। जो कुछ वहाँ है, इतना ही है। किसी भी बातमें विश्वास करनेके सम्बन्धमें एक भी शब्द नहीं। यह कर्मका उपदेश है, दानका उपदेश है, आत्म-परित्यागका उपदेश है, और यदि केवल इन्हीं बातोंका उपदेश दिया जाता तो धर्मके नामपर रक्तकी एक भी बूँद न बहती।

२—मार्कका कथानक

अब हम देखें कि मार्कके मतमें आदमीको अपनी आत्माकी सुरक्षाके लिये क्या क्या करना आवश्यक था। चौथे परिच्छेदमें जब ईसाने समुद्रतटवासी जनताके लिये बोनेवालेकी उपमा कह सुनाई, तब उसके शिष्योंने अकेलेमे इस उपमाका अर्थ पूछा। ईसाने उत्तर दिया—

" तुम्हारे लिये भगवान्‌के साम्राज्यका रहस्य है, किन्तु जो बाह्य हैं, उन्हें ये सब बातें उपमाओंके द्वारा कही जाती हैं। "

" ताकि वे देखते हुए केवल देखते रहें, जानें नहीं, सुनते हुए केवल सुनते रहें, समझें नहीं। अन्यथा ऐसा न हो कि किसी समय वे दीक्षित हो जायँ और उनके पाप क्षमा हो जायँ। "

यह समझना थोड़ा कठिन है कि ईसा ऐसे लोगोंको उपदेश ही क्यों देना चाहता था जिनको वह चाहता था कि उसका अर्थ ही न समझ सकें। यह भी स्पष्ट नहीं है कि उसे उनके दीक्षित होनेपर क्या आपत्ति थी। मैं सोचता हूँ शायद यह कोई रहस्य है, जिसमें हमें बिना समझे ही विश्वास कर लेना चाहिये।

उक्त अपवाद और एक और बातके अतिरिक्त जिसका उल्लेख मैं करने जा रहा हूँ, शेष बातोंमें मार्क और मैथ्युका प्रायः एक मत था। मार्क मानता है कि ईश्वर दयालुओंके प्रति दयावान् होगा, मेहरबानोंके प्रति मेहरबान होगा, करुणार्द्रोंके प्रीत करुणार्द्र होगा और प्रेम करनेवालोंको प्रेम करेगा। मार्क मैथ्युके धर्मको स्थापित करता है। किन्तु जब हम सोलहवें परिच्छेदके चौदहवें तथा पंद्रहवें अनुच्छेदपर आते हैं तब मामला बदल जाता है। यहाँ हमें एक ऐसा प्रक्षिप्त अंश मिलता है जिसे ढोंगने ही बाइबलमें घुसेड़ा है, जो उन पादरियोंकी जालसाज़ी है जो संसार-भरका अधिकार अपने ही रक्त-रंजित हाथोंमें चाहते हैं। मैं तुम्हें यह पढ़कर सुनाता हूँ। यह बाइबलमें सबसे बदनाम अनुच्छेद है। ईसाने इसे कभी नहीं कहा। किसी ऐसे आदमीने, जो पागल नहीं था, कभी नहीं कहा—

" और उसने उन्हें (अर्थात् अपने शिष्योंसे) कहा, " संसारमें जाओ और हर प्राणीको उपदेश दो। जो विश्वास करेगा और दीक्षा लेगा वह बच जायेगा, लेकिन जो विश्वास नहीं करेगा वह रसातल जायगा। "

उपर्युक्त पक्तियाँ इसी लिये लिखी गई थीं कि भय ढोंगको दान दिया करे। अब मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि यह प्रक्षिप्त है। कैसे? पहली बात तो यह है कि मैथ्युके कथानकमें विश्वासके सम्बन्धमें एक शब्द नहीं पाया जाता। दूसरी बात यह है कि मार्कके कथानकमें भी इन पंक्तियोंके पूर्व कहीं एक भी शब्द विश्वासके बारेमें नहीं। और ये पंक्तियाँ कब कही बताई जाती हैं? मार्कके मतानुसार यह ईसाकी अन्तिम बातचीत है, उस समयके ठीक पहले, जब वर्णनके अनुसार, उन लोगोंकी आँखोंके सामने वे सदेह स्वर्ग चले गये। यदि ससारमें कभी कोई महत्त्वपूर्ण घटना घटी थी, तो वह यह थी। यदि कभी कोई ऐसी बातचीत हुई है जिसे लोग स्वाभाविक तौरपर याद रखें, तो वह ईश्वरके साथ अन्तिम बातचीत थी, जिसके बाद वह आँखोंके सामने आकाशमे उड़ गया और अनन्त सिंहासनपर जा विराजमान हुआ। इस नवीन-प्रवचनमें हमे ईसा और उसके शिष्योंके पाँच वर्णन मिलते हैं। मैथ्युने भी इसका वर्णन किया है, लेकिन तो भी मैथ्यु यह नहीं कहता—" जो विश्वास करेगा और दीक्षा लेगा वह बच जायगा, लेकिन जो विश्वास नहीं करेगा वह रसातल जायगा। " यदि ईसाने ये शब्द कहे, तो उसके मुँहसे निकलनेवाले अत्यधिक महत्त्वपूर्ण शब्द थे। मैथ्युने या तो उन्हें सुना नहीं, या विश्वास नहीं किया, अथवा वह भूल ही गया।

अब मैं ल्यूकके कथानकको लेता हूँ। उसने भी इस अन्तिम बातचीतका वर्णन किया है। वह भी इस विषयमें एक शब्द नहीं कहता। ल्यूक यह ढोंग नहीं करता कि ईसाने यह कहा कि जो विश्वास नहीं करेगा वह रसातल जायगा। ल्यूकने निश्चयसे इसे नहीं सुना। शायद वह भूल गया। शायद उसने इसे लिखने योग्य नहीं समझा। अब यदि ईसाने कभी ऐसा कहा तो उसके कथनोंमें यह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है।

अब मैं जॉनके कथानकको देखता हूँ। उसमें अन्तिम बातचीतका

वर्णन है; किन्तु विश्वास अथवा अविश्वासके बारेमें और रसातल भेजनेके बारेमें एक शब्द भी नहीं। शायद जॉन सुन ही न रहा हो।

इस सबसे स्पष्ट होता है कि ये पंक्तियाँ प्रक्षिप्त हैं। मेरे पास दूसरे कारण क्या हैं? इन पंक्तियोंमें विचारको जरा-सा भी स्थान नहीं है। क्यों? कोई भी आदमी अपने विश्वासको अपने काबूमें नहीं रख सकता। तुम पक्ष और विपक्षमे गवाही सुनते हो, तुम्हारा अन्दरवाला बताता है कि कौन-सा पक्ष ठीक है और कौन-सा गलत। तुम जैसा चाहो वैसा विश्वास नहीं कर सकते। तुम्हें वैसा ही विश्वास करना होगा जैसा तुम्हें करना चाहिये। वह ऐसा भी कह सकता था—"संसारमें जाओ और प्रचार करो। लाल बालोंवाला बचेगा और जिसके बाल लाल नहीं, वह रसातलको जाएगा।"

एक और भी कारण है। जिस आदमीने ये पंक्तियाँ घुसेड़ीं, मै उसके प्रति बहुत कृतज्ञ हूँ। क्योंकि उसने दो और भी प्रक्षिप्त अंश दाखिल किये—दो और। सुनिये—

"जो विश्वास करेंगे, उनके ये चिह्न होंगे।"

"मेरा नाम लेकर वे भूत प्रेतोंको भगा सकेंगे; वे नई वाणी बोलेंगे; वे विषैले सॉपोंको धारण करेंगे; और यदि वे कोई मरणान्तक विषैली चीज़ पी लेंगे, तो उससे उन्हें किसी तरहकी हानि नहीं होगी। वे रोगीका स्पर्श करेंगे और वह अच्छा हो जायगा।"

अपने किसी विश्वासीको लाओ और वह भूत-प्रेतोंको भगा कर दिखाये। मैं किसी बड़े भूतको भगानेकी बात नहीं कहता। किसी छोटेसे छोटेको ही भगाकर दिखाये। वह सर्पोंको धारण करे। "यदि वे कोई मरणान्तक विषैली चीज़ पी लेंगे तो इससे उन्हे किसी तरहकी हानि नहीं होगी।" मैं विश्वासीको एक बूँद-भर मिला कर देता हूँ और यदि इससे उसे किसी तरहकी हानि नहीं हुई, तो मैं किसी चर्चमें शामिल हो जाऊँगा। ओह! लेकिन, उनका कहना है कि ये बातें ईसाके शिष्योंके समयमें ही थीं! "सारे संसारमें जाओ और प्रचार करो। जो विश्वास करेगा और दीक्षित होगा, बच जायगा। विश्वास करनेवालोंके ये चिह्न होंगे।"

कब तक? मैं सोचता हूँ कि कमसे कम उस समय तक जब तक वे सारे

संसारमें चले जायँ। निश्चयसे जब तक सारे संसारमें न पहुँचा जाय तब तक वे चिह्न रहने चाहिये। यह सब होनेपर भी यदि ईसाने सचमुच वह घोषणा की, तो वह यह जानता रहा होगा कि उस समय आधा संसार अज्ञात था और उसे मरे १४५२ वर्ष हो गये होंगे जब उसके शिष्योंको यह पता लगेगा कि कोई और भी महाद्वीप है। यदि पुराने-संसारके लिये यह आवश्यक था कि 'चिह्न' हों, तो नये संसारके लिये भी चिह्नोंकी अपेक्षा थी। चिह्नोंकी अपेक्षा अविश्वासियोंको विश्वास दिलानेको थी। आज भी दुनियामें उतने ही अविश्वासी हैं जितने कभी थे। आज भी चिह्नोंकी उतनी ही आवश्यकता है, जितनी कभी थी। मैं भी चाहूँगा कि कुछ चिह्न मेरे पास हों।

इस भयानक घोषणाने—"जो विश्वास करेगा और दीक्षित होगा बच जायगा; किन्तु जो विश्वास नहीं करेगा वह रसातलको जायगा।" इन पंक्तियोंने—ससारको कष्ट और अपराधोंसे भर दिया। इन पंक्तियोंका प्रत्येक अक्षर तलवार और बेड़ी सिद्ध हुआ। इन पंक्तियोंका प्रत्येक शब्द कारागार और ज़ंजीर बना। इन पंक्तियोंके कारण शताब्दियों तक अत्याचारकी तलवार निरपराधियोंके रक्तसे भीगी रही। मैं इन्हें अस्वीकार करता हूँ। ये निन्दनीय हैं। ईसाने इन्हें कभी नहीं कहा।

३—ल्यूकका कथानक

यह कहना पर्याप्त है कि अधिकांशमें ल्यूक मैथ्युसे सहमत है।

"जैसा तुम्हारा पिता (ईश्वर) करुणामय है, तुम भी करुणामय बनो।" बहुत अच्छा।

"दूसरोंकी आलोचना न करो, तुम्हारी आलोचना नहीं होगी। दूसरोंकी निन्दा न करो, तुम्हारी निन्दा नहीं होगी। दूसरोंको क्षमा करो, तुम भी क्षमा किये जाओगे।" बहुत अच्छा।

"दो, और तुम्हें मिलेगा। अच्छे मापसे, दबाकर, हिलाकर और बाहर गिरता हुआ।" बहुत अच्छा। मुझे यह पसन्द है।

"जिस मापसे तुम दूसरोंको देते हो उसीसे तुम्हें दिया जायगा।"

वह मुख्य बातोंमें मार्कसे सहमत है। और मैथ्युसे सहमत है। अन्तमें मैं उन्नीसवें परिच्छेदपर आता हूँ—

जैचियस् खड़ा हुआ और उसने भगवान्से कहा—स्वामी देखें, मैं अपनी आधी चीजें गरीबोंको दे रहा हूँ। और यदि मैंने किसी आदमी-पर कोई झूठा दोष लगाकर उससे कोई चीज़ ले ली है, तो मैं उसे चौगुनी देता हूँ। और ईसाने उससे कहा, आज इस घरमें मुक्तिने प्रवेश किया है।

यह बढिया सिद्धान्त है। उसने जैचियस्से यह नहीं पूछा कि वह क्या विश्वास करता है? उसने यह भी नहीं पूछा, क्या तुम बाहुबलमें विश्वास करते हो? क्या तुम पाँच बातें स्वीकार करते हो? क्या तुम कभी शिक्षित हुए हो? कभी अभिषिक्त हुए हो? कभी डुबकी लगाई है? मैं अपनी आधी चीज़ें गरीबोंको दे रहा हूँ और यदि मैंने किसी आदमीपर कोई झूठा दोष लगाकर उससे कोई चीज़ ले ली हो, तो मैं उसे चौगुनी देता हूँ। बहुत अच्छा।

मैं ल्यूकमें यह भी पढ़ता हूँ कि जिस समय ईसाको फाँसी दी जा रही थी, उस समय उसने अपने हत्यारोंको क्षमा कर दिया। यही ईसाकी क्षमाकी पराकाष्ठा कही जाती है। उसने उन आदमियोंको क्षमा कर दिया, जिन्होंने उसके हाथ और पैरोंमें मेखें ठोकीं, जिन्होंने उसकी पसलियोंमें भाला घोंप दिया। उसने उन सबको मुक्त हृदयसे क्षमा कर दिया। यह सब होने पर भी, उन्नीसवीं सदीकी कट्टरपंथी ईसाइयतका कहना है कि ईसा किसी भी सज्जनको अपने विचारोंके प्रकट करनेके कारण अनन्तकाल तक नरककी आगमे झोंक देगा! इतना अपर्य्याप्त है। ल्यूकमें उन दो चोरोंकी भी चर्चा है, जिन्हें उसी समय फाँसी दी गई थी। दूसरे कथानकोंमें भी उनकी चर्चा है। एकका कहना है कि दोनोंने ईसाको भला-बुरा कहा। दूसरेमे इसके बारेमें कुछ नहीं। ल्यूकमें लिखा है कि एक चोरने तो उसे गालियाँ दीं, लेकिन दूसरे चोरने उसकी ओर देखा और दया की। ईसाने उस चोरसे कहा—" आज तू स्वर्गमें मेरा साथी होगा। "

उसने ऐसा क्यों कहा! क्योंकि चोरने उसपर दया की। ईश्वर छोटेसे छोटे दयाके फूलको भी अपने पैरों तले नहीं कुचल सकता, जिससे मानव-हृदय सुगंधित होता है।

यह चोर कौन था ? यह किस सम्प्रदायका था ? मैं नहीं जानता। उसके चोर होनेकी बातसे इस प्रश्नपर कोई प्रकाश नहीं पड़ता। वह कौन था ? उसका क्या विश्वास था ? मैं नहीं जानता। क्या वह पुराने-प्रवचनमें विश्वास करता था ? चमत्कारोंमें विश्वास करता था ? मैं नहीं जानता। क्या वह यह विश्वास करता था कि ईसा ईश्वर था ? मैं नहीं जानता। तो उसे यह वचन क्यों दिया गया कि वह स्वर्गमें ईसासे मिलेगा ? केवल इस लिये कि उसने फाँसीपर झूलनेवाली निरपराधितापर दया दिखाई थी।

ईश्वर किसी ऐसे आदमीको जो दूसरोंपर दया दिखा सकता है, रसातल नहीं भेज सकता।

४—जॉनका कथानक

दूसरे कथानकोंमें लिखा है कि ईश्वर दयालुओंके प्रति दया दिखायगा, क्षमावानोंके प्रति क्षमा दिखायगा, मेहरबानोंके प्रति मेहरबान होगा, प्रेम करनेवालोंको प्रेम करेगा, न्याय करनेवालोंके साथ न्याय करेगा और भलोंपर कृपा करेगा।

अब हम जॉनको लेते हैं। इसमें हमें दूसरा ही सिद्धान्त मिलता है। मुझे आप यह कहनेकी आज्ञा दीजिये कि जॉन दूसरोंके बहुत बाद तक नहीं लिखा गया था। जॉन अधिकतया पादरियोंकी रचना है।

ईसाने उत्तर दिया और कहा : "निश्चित रूपसे मैं तुम्हे कहता हूँ कि जब तक आदमीका दुबारा जन्म नहीं होता, वह ईश्वरीय साम्राज्यको नहीं देख सकता।"

उसने यह बात मैथ्यूसे क्यों नहीं कही ? उसने यह ल्यूकसे क्यों नहीं कही ? मार्कसे क्यों नहीं कही ? उन्होंने इसे कभी सुना नहीं, अथवा भूल गये अथवा विश्वास नहीं किया ?

"जो आदमी पानी और (प्रेत-) आत्मासे उत्पन्न हुआ है, एकमात्र वह ही ईश्वरके साम्राज्यमें प्रवेश पा सकता है।" क्यों ?

"जो मांससे पैदा हुआ है, वह मांस है, जो आत्मासे पैदा हुआ है वह आत्मा है। इस बातपर आश्चर्य्य मत करो जो मैंने तुम्हें कहा है कि तुम्हें

फिर जन्म लेना होगा।" "जो मांससे पैदा हुआ है, वह मांस है, जो आत्मासे पैदा हुआ है, वह आत्मा है," और यह भी क्यों नहीं कहा कि जो पानीसे पैदा हुआ है, वह पानी है?

"इस बातपर आश्चर्य्य मत करो जो मैंने तुम्हें कहा कि 'तुम्हें फिर पैदा होना होगा।'" आगे कारण दिया है। मैं स्वीकार करता हूँ कि जब तक मैंने इसे नहीं पढ़ा, मैं कारण नहीं समझ सका। जब तुम सुनोगे तब तुम इसे ठीक उसी तरह समझोगे जैसे मैंने समझा है। कारण इस प्रकार है :— "जहाँ हवा चलती है, वहाँ वह सुनाई देती है। तुम आवाज सुनते हो किन्तु यह नहीं बता सकते कि वह कहाँ जाती है और कहाँसे आती है।" इस प्रकार मैं देखता हूँ कि जॉनमें वास्तविक अस्तित्वका विचार विद्यमान् है।

"जिस प्रकार मूसाने बियाबानमे साँपको उठाया उसी प्रकार मानव-पुत्र भी उठाया जाना चाहिये।

"जो कोई भी उसमें विश्वास करे उसका विनाश नहीं होना चाहिये, किन्तु उसे अनन्त जीवन मिलना चाहिये।

"ईश्वर संसारको इतना प्यार करता था कि उसने अपना एक मात्र पुत्र दे दिया। जो कोई उसमें विश्वास करेगा उसका विनाश नहीं होना चाहिये, किन्तु उसे अनन्त जीवन मिलना चाहिये।

"क्योंकि ईश्वरने अपने पुत्रको संसारमें इस लिये नहीं भेजा कि वह संसारको रसातल भेज दे किन्तु इस लिये भेजा कि वह उसके माध्यमसे बच जाय।

"जो उसमें विश्वास करता है वह रसातल नहीं जाता, किन्तु जो विश्वास नहीं करता उसे रसातल गया ही समझो। क्योंकि उसने ईश्वरके एक मात्र पुत्रमें *विश्वास नहीं किया।*

"जो (ईश्वरके) पुत्रमे विश्वास करता है वह अनन्त जीवनको प्राप्त करता है, और जो पुत्रमें विश्वास नहीं करता उसे जीवन-दर्शन नहीं होगा। उसपर भगवान्का अभिशाप पड़ेगा।

"निश्चित तौरपर, निश्चित तौरपर, मैं तुम्हें कहता हूँ, जो मेरे वचनको सुनता है और जिसने मुझे भेजा है उसमें विश्वास करता है, उसके लिये अनन्त जीवन है। वह रसातल *नहीं जायगा, वह मृत्युसे जीवनमें प्रवेश करेगा।*

" निश्चित तौरपर मैं तुम्हें कहता हूँ कि वह घड़ी आ रही है जब मृत लोग ईश्वर-पुत्रकी वाणी सुनेंगे; और जो सुनेंगे वे जी खड़े होंगे।

" जिसने मुझे भेजा है उसकी यह इच्छा है कि जो कोई ईश्वर-पुत्रको देखेगा और उसमें विश्वास करेगा वह अनन्त-जीवनको प्राप्त होगा; और मैं उसे अन्तिम दिन खड़ा कर दूँगा।

" तब ईसाने उन्हें कहा, निश्चित रूपमें, निश्चित रूपमें मैं तुम्हें कहता हूँ कि बिना मानव-पुत्रका मांस खाये और बिना उसका रक्त पिये तुममें जीवन नहीं आ सकता।

" जो कोई भी मेरा मांस खायेगा और मेरा रक्त पियेगा वह अनन्त-जीवी होगा, और मैं उसे अन्तिम दिन खड़ा कर दूँगा।

" क्यों कि मेरा मांस निश्चय ही भोजन है, और मेरा रक्त निश्चय ही पेय है।

" जो मेरा मांस खाता है और मेरा रक्त पीता है, वह मुझमें रहता है और मैं उसमें रहता हूँ।

" जैसे मुझे जीवित पिताने भेजा है और मैं उसमें रहता हूँ; उसी प्रकार जो मुझे खायेगा वह मुझमें रहेगा।

" यह वह रोटी है जो स्वर्गसे आई है। यह वैसा भोजन-विशेष नहीं है, जिसे तुम्हारे पूर्वजोंने खाया और वे मृत हैं। जो इस रोटीको खायेगा वह सदा जीवित रहेगा।

" जो अपने जीवनसे प्रेम करता है वह इसे गँवायेगा और जो इस संसारमें अपने जीवनसे घृणा करता है, वह उसे अनन्त जीवनके लिये रखेगा।"

इस प्रकार मैं देखता हूँ कि जॉनके अनुसार ईश्वरके अभिशापसे बचनेके लिये न केवल हमें ईसामें विश्वास ही करना पड़ेगा किन्तु हमें ईसा-का मांस भी खाना पड़ेगा और उसका रक्त भी पीना पड़ेगा। यदि यह सिद्धान्त सच्चा है, तो कैथॉलिक सम्प्रदाय ठीक है। किन्तु यह सच्चा नहीं। मैं इसमें विश्वास नहीं करता। मैं विश्वास नहीं करता कि विश्वमें कोई ऐसा ईश्वर है जो किसीको अपना विचार विश्वास प्रकट करनेके लिये रसातल भेज देगा।

लोग पूछते हैं— " थोड़ी देरके लिये मान लो कि यह सब सच हो और अन्तिम दिन तुम देखो कि यही सब सच था। तब तुम क्या करोगे ? " मैं एक आदमीकी तरह सीधा चलूँगा और स्वीकार करूँगा कि मैं गलतीपर था।

" और मान लो कि ईश्वर तुम्हें दण्ड देने जा रहा है। तब तुम क्या कहोगे ? " मैं उससे कहूँगा—" दूसरोंके साथ वैसा ही वर्ताव करो, जैसा कि तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें। "

मुझे सिखाया जाता है कि मुझे बुराईका बदला भलाईसे चुकाना चाहिये। मुझे सिखाया जाता है कि यदि कोई मेरे एक गालपर थप्पड़ मारे, तो मुझे दूसरा गाल उसके सामने कर देना चाहिये। मुझे सिखाया जाता है कि मुझे बुराईको भलाईसे जीतना चाहिये। मुझे सिखाया जाता है कि मुझे अपने शत्रुओंसे प्रेम करना चाहिये। क्या उस ईश्वरके लिये जो मुझे कहता है कि मै अपने शत्रुओंसे प्रेम करूँ यह कोई अच्छी बात होगी कि वह अपने शत्रुको रसातल भेजे ? नहीं, यह नहीं हो सकता।

जॉनके इस कथानकमे ये सब सिद्धान्त हैं—यह मुर्दोंके जी उठनेका सिद्धान्त, यह ईसामें विश्वास करना आवश्यक होनेका सिद्धान्त, यह मुक्तिके निष्ठानिर्भर होनेका सिद्धान्त। और कहीं ये नहीं हैं।

मैथ्यु, मार्क और ल्यूकको पढो और तुम मुझसे इस बातमें सहमत होगे कि पहलेके तीनों कथानकोंकी शिक्षा है कि यदि हम अपने मानव-बन्धुओंके प्रति दयावान् और क्षमावान् होंगे, तो ईश्वर भी हमारे प्रति दयावान् और क्षमावान् होगा। जॉनमे हमें सिखाया गया है कि दूसरा आदमी हमारे प्रति भला भी हो सकता है, बुरा भी हो सकता है; किन्तु स्वर्ग जानेका एक ही रास्ता है और वह यह कि हम ऐसी बातमे विश्वास करें जिसे हम जानते हैं कि वह वैसी नहीं है।

यह ईसामें विश्वास करनेका सिद्धान्त, यह उसका रक्त पीनेका सिद्धान्त और यह उसका मास खानेका सिद्धान्त सब बादके विचार हैं। ये धर्म-ध्वजियोके कूट लेख हैं। कुछ वर्षोंमें लोग यह समझ लेंगे कि ये ईसाके वचन होनेके अयोग्य हैं।

५—कैथॉलिक

इन कथानकोंपर जिन्हें मैंने पढ़ा है ईसाइयतके सम्प्रदायोंने अपने अपने महल खड़े किये हैं। इन्हीं चीज़ोंपर, इन्हीं गलतियोंपर, इन्हीं प्रक्षिप्त अंशोंपर उनके सिद्धान्त आश्रित हैं। जिस सम्प्रदायने, जहाँ तक मेरी जानकारी है, सर्व प्रथम अपना सिद्धान्त गढ़ा, वह कैथॉलिक सम्प्रदाय है। यही सर्व प्रथम सम्प्रदाय है, जिसके हाथमें कुछ शक्ति आई। यही वह सम्प्रदाय है जिसने आज तक ये सब चमत्कार हमारे लिये सुरक्षित रखे हैं। यही वह सम्प्रदाय है जिसने हमारे लिये पाण्डु-लिपियोंको सुरक्षित रखा है। यही वह सम्प्रदाय है जिसे प्रोटेस्टैण्ट लोगोंने इतिहासकी अदालतमें अठारह सौ वर्ष पूर्व हुए चमत्कारोंके साक्षीके रूपमें ला खड़ा किया।

यही एकमात्र सम्प्रदाय ऐसा है जो अनेक मृत सन्तोंके माध्यमद्वारा स्वर्गसे निरन्तर सम्बन्ध बनाये हुए है। इस सम्प्रदायके ईश्वरका एक एजैण्ट पृथ्वीपर रहता है। वह एक आदमी है जो ईश्वरके स्थानपर खड़ा है। उस सम्प्रदायके हाथों कभी कोई गलती नहीं हो सकती। इस सम्प्रदायने अपनी शक्ति-भर अत्याचार किया है और आगे भी करेगा। स्पेनमें यह सम्प्रदाय सीधा खड़ा है और सरकश है। संयुक्त राज्यमे यह सम्प्रदाय रेंग कर चलता है। उद्देश्य दोनों देशोंमें एक ही है—मानसिक स्वतन्त्रताकी हत्या। इस सम्प्रदायकी शिक्षा है कि हम स्वयं दुर्खी बनकर ईश्वरको प्रसन्न कर सकते हैं। ईश्वरकी दृष्टिमें अपने बच्चेको गोद खिलानेवाली मातासे एक 'साध्वी' श्रेष्ठतर है, पितासे 'पादरी-पुरोहित' श्रेष्ठतर है, प्रेमकी उस आगकी अपेक्षा जिसने ससारके सारे सौन्दर्यको जन्म दिया है 'अविवाहित' रहना अच्छा है। यह सम्प्रदाय सोलह या अठारह वर्षकी बच्चीको, जिसकी आँखोंमें शबनम और प्रकाश है, जिसके सफेद गालोंमें स्वास्थ्यकी लाली है, कहता है—मृत्यु और रात्रिका बना हुआ बुर्का पहन लो, पत्थरोंपर घुटने टेको और तुम ईश्वरको प्रसन्न करोगी।

मैं कहता हूँ कि एक कानून होना चाहिये कि कोई लड़की इस प्रकार बुर्का पहन कर अपने आपको जीवनके आनन्द और सौन्दर्यसे वञ्चित न कर सके।

मैं इसके विरुद्ध हूँ कि इन मकड़ीके जाले बुननेवाले पादरी-पुरोहितोंको यह छूट मिली रहे कि वे संसार-भरकी सुन्दर लड़कियोंको उनमें फँसाते रहें। एक कानून होना चाहिए जिसके अनुसार ऐसे कमिश्नर नियुक्त हों जो वर्षमें दो बार ऐसी जगहोंपर जायँ और जो भी कोई 'मुक्त' होनेकी इच्छा व्यक्त करे, उसे 'मुक्त' कर दें। मैं ईश्वरके नामपर पड़े पड़े प्रायश्चित्त करते रहनेवालोंको रखनेमें विश्वास नहीं करता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे अपनेमें ईमानदार हैं। परन्तु प्रश्न यह नहीं है। ये अज्ञानपूर्ण मिथ्या विश्वास लाखों-करोड़ों लोगोंके जीवनको पीड़ा, वेदना और आसुओंसे भरे हुए हैं।

कुछ शताब्दियों तक विचार कर चुकनेके बाद इस सम्प्रदायने एक मत बनाया। वह मत ही इस कट्टर-मतका आधार है। मैं आपको पढ़कर सुनाता हूँ—

"जो भी (भगवान्के अभिशापसे) बचना चाहे, सबसे पहले यह आवश्यक है कि वह कैथॉलिक मतको स्वीकार करे। जो उसे सम्पूर्ण रूपसे, असन्दिग्ध रूपसे अनुल्लंघनीय नहीं स्वीकार करेगा, वह सर्वदाके लिये विनाशको प्राप्त होगा।" वह मत क्या है? "हम ईश्वरके तीन रूपोंको एकमें और एकको तीन रूपोंमे पूजते हैं।"

आप यह जानते ही हैं कि यह कैसे किया जाता है। मेरे लिये इसकी व्याख्या करना आवश्यक नहीं। "बिना व्यक्तियोंको गड़बड़ाये और बिना पदार्थका विभाजन किये।" बेचारे ईश्वरकी क्या दुरवस्था होगी यदि पदार्थका विभाजन कर दिया जाय?

"क्योंकि एक तो पिताका व्यक्तित्व है; दूसरा पुत्रका व्यक्तित्व है और तीसरा पवित्र आत्माका व्यक्तित्व है, किन्तु पिता, पुत्र और पवित्र आत्माका ईश्वरत्व एक है।" ईश्वरत्वके अर्थको आप समझते ही हैं।—"शानमें बराबर और वैभवमें समानरूपसे अनादि। जैसा पिता, वैसा पुत्र और वैसी ही पवित्र-आत्मा। पिता अनुत्पन्न, पुत्र अनुत्पन्न तथा पवित्र-आत्मा अनुत्पन्न। पिता अज्ञेय, पुत्र अज्ञेय तथा पवित्र-आत्मा अज्ञेय।" और यही कारण हैं कि हम उस पदार्थके बारेमें इतना जानते हैं। "पिता अनादि है, पुत्र अनादि है, पवित्र-आत्मा अनादि है, और तो भी तीन

अनादि नहीं हैं, अनादि एक ही है; जैसे न तीन अनुत्पन्न हैं, न तीन अज्ञेय है, केवल एक ही अनुत्पन्न है और एक ही अज्ञेय है।"

"इसी प्रकार पिता भी सर्व शक्तिमान् है, पुत्र भी सर्वशक्तिमान् है, पवित्र-आत्मा भी सर्वशक्तिमान् है। तो भी तीन सर्वशक्तिमान् नहीं है, केवल एक ही सर्वशक्तिमान् है। इस प्रकार पिता ईश्वर है, पुत्र ईश्वर है और पवित्र-आत्मा ईश्वर है, तो भी तीन ईश्वर नहीं हैं। इसी प्रकार पिता स्वामी है, पुत्र स्वामी है, पवित्र-आत्मा स्वामी है, तो भी तीन स्वामी नहीं है। जिस प्रकार ईसाई मत हमें हरएकको ईश्वर और स्वामी स्वीकार करनेके लिये मजबूर करता है; उसी प्रकार कैथॉलिक मत हमें यह नहीं कहने देता कि तीन ईश्वर हैं अथवा तीन स्वामी हैं। पिता किसीसे नहीं बना है, न निर्मित है और न उत्पन्न। पुत्र केवल पितासे है, न बनाया गया है, न निर्माण किया गया है, किन्तु उत्पन्न है। पवित्र-आत्मा पिता और पुत्रसे है, न बनाया गया है, न उत्पन्न है; किन्तु आगे बढ़ा हुआ है।"

इस 'आगे बढ़ा हुआ' का अर्थ आप जानते हैं।

"इस प्रकार एक पिता है, तीन पिता नहीं।" ऐसा हो ही क्यों, कि तीन पिता हों और पुत्र एक ही हो! एक पुत्र, तीन पुत्र नहीं; एक पवित्र-आत्मा, तीन पवित्र-आत्मायें नहीं; इस त्रिमूर्तिमें कोई आगे पीछे नहीं, कोई बड़ा छोटा नहीं, तीनों व्यक्तित्व एक दूसरेके साथ अनादि हैं, समान हैं। सभी बातोंमें एककी और एकमें तीनोंकी पूजा होनी चाहिये। जो बचना चाहें उन्हें इस त्रिमूर्तिका विचार करना चाहिये और शाश्वत मुक्तिके लिये यह भी आवश्यक है कि ईसा मसीहके अवतारमें पूरा पूरा विश्वास किया जाय। अब इस सारे कथनका सार यह है:—हम विश्वास करें और स्वीकार करें कि ईश्वरका पुत्र हमारा भगवान् ईसा मसीह ईश्वर भी है और आदमी भी है। वह उसी पदार्थका बना है जिस पदार्थका संसारके अस्तित्वमें आनेके पहले उसका पिता ईश्वर रहा।

वह अपनी माँसे भी कुछ समय पहलेसे था।

"और वह अपनी माँके पदार्थका है, इस संसारमें उत्पन्न, सम्पूर्ण ईश्वर और सम्पूर्ण मनुष्य, और मानवी मांसमें बुद्धिवादी-आत्मा, ईश्वरत्वमें

अपने पिताके समान, किन्तु मानवीपनके कारण उससे कुछ कम; जो कि ईश्वर और मानव दोनों होनेके कारण दो नहीं है, किन्तु एक है। ईश्वरके देहधारी होनेके कारण एक नहीं, किन्तु मानवीपनको ईश्वरके दर्जेपर ले जानेके कारण एक है।"

आप देखते हैं कि यह इसके विपरीत प्रयत्नकी अपेक्षा बहुत कुछ आसान है।

"सम्पूर्ण रूपसे एक, पदार्थकी गड़बड़ीके कारण नहीं, किन्तु व्यक्तित्वकी एकताके कारण। जैसे बुद्धिवादी-आत्मा और मांस एक व्यक्ति है, उसी प्रकार ईश्वर और आदमी एक ईसा है—जिसने हमारी मुक्तिके लिये यातनायें सहीं, जो नरकमें उतरा, जो तीसरे दिन मृतकोंमेंसे पुनः उठ खड़ा हुआ, जो स्वर्गमें गया और जो ईश्वरके दाहिने हाथपर बैठा है, उस सर्व शक्तिमान्‌के जो जीवितों और मृतोंपर निर्णय देगा।"

भगवान्‌के शापसे बचनेके लिये इन सब बातोंमें विश्वास करना आवश्यक है। यह कितना बड़ा सौभाग्य है कि इन्हे समझना आवश्यक नहीं! इस अनन्त बेहूदगीके सामने मानवकी बुद्धिके घुटने टिकवानेके लिये हजारों और लाखों आदमियोंने कष्ट भोगे हैं, लाखों आदमी जेल-खानों और आगमें जल-भुन मरे हैं; और यदि कैथॉलिक-मतकी बलि चढ़े हुए सभी लोगोंकी हड्डियाँ इकट्ठी की जायँ, तो मिस्रके सभी पिरामिडोंसे ऊँचा पर्वत खड़ा हो जाय, और उसके सामने पादरी तक रो पड़ें।

इस कैथॉलिक सम्प्रदायने यूरोपको गिर्जाघरों और जेलखानोंसे भर दिया। लोगोंकी आत्माके गहने लूट लिये। कैथॉलिक-सम्प्रदायने अज्ञानताके आगे घुटने टेके थे। इस कैथॉलिक मतका राजसिंहासनके अत्याचारियोंके साथ भाई-चारा था। इन दो गीधों—राजसिंहासन और वेदिका—के बीच मानव-हृदयकी बोटी बोटी नोच ली गई।

यह कहना अनावश्यक है और मैं प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता हूँ कि मुझे हजारों अच्छे कैथॉलिक मिले हैं; किन्तु कैथॉलिक-मत मानव-स्वतन्त्रताके विरुद्ध है। कैथॉलिक मतके अनुसार मुक्तिका आधार आस्था है। कैथॉलिक मत आदमीको सिखाता है कि वह अपनी बुद्धिको पाँवतले रौंध डाले। इसी लिये कैथॉलिक मत ग़लत है।

हजारों ग्रन्थ लिखकर कॅथॉलिक मतके अपराधोंका वर्णन नहीं किया जा सकता। उनमें उन लोगोंके नाम भी नहीं लिखे जा सकते जो कैथॉलिक मतके शिकार हुए हैं। तलवार और आग, हथकड़ी और बेडी, जेलखाना और चाबुक—इन्हीं सबसे उसने संसारको कैथॉलिक बनानेका प्रयत्न किया। दुर्बल रहनेपर भीख माँगना, शक्ति हथिया लेने पर डाके डालना, भीख माँगनेका मिट्टीका बर्तन अथवा तलवार, भिखमगा अथवा अत्याचारी!

६—एपिसकोपैलियन

दूसरा सम्प्रदाय जिसकी मैं चर्चा करना चाहता हूँ एपिसकोपैलियन है। वह स्वर्गीय हैनरी आठवेका स्थापित किया हुआ है। उसने महारानी कैथरीन और कैथॉलिक सम्प्रदायको एक साथ ही छोड़ दिया और रानी एनिबोलेन तथा एपिसकोपैलियन सम्प्रदायको एक साथ अपना लिया। इस सम्प्रदायमें यदि कुछ और धार्मिक क्रिया-कलाप होते तो यह कैथॉलिक होते, कुछ कम होते तो कुछ नहीं। हमारे अपने देशमे एपिसकोपैलियन सम्प्रदाय है। इसमें वह सभी कमियाँ हैं जो किसी गरीब रिश्तेदारमें होती हैं। यह अपने धनी सम्बन्धीको लेकर सदैव शेखी मारता रहता है। इंग्लैण्डमें सम्प्रदायका निर्णय भी कानूनद्वारा होता है, वैसे ही जैसे हम यहाँ नियम पास करते हैं। जब इंग्लैण्डमें कोई महाशय मरते हैं तो आकाशकी शक्तिको पार्लमेंटका विधान देखना पड़ता है ताकि वह निर्णय कर सके कि उन महाशयकी भगवान्के अभिशापसे रक्षा होनी चाहिये अथवा नहीं। यह कानूनी बारीकीका प्रश्न बन जाता है और कभी कभी एक आदमी बड़ी ही कानूनी बारीकीके हिसाबसे रसातलकी ओर धकेल दिया जाता है।

कुछ वर्ष हुए एक सज्जन जिनका नाम सीबैटी—सैमुअल सीबैटी था इङ्गलैण्ड भेजे गये ताकि वहाँसे ईसाके शिष्योंकी शिष्य-परम्पराको ला सके। इङ्गलैण्डके चर्चके बिशप-पादरियोंके लिये यह आवश्यक था कि वह उसके सिर-पर अपना हाथ रख दें। पर उन्होंने इनकार कर दिया। पार्लमेंटके विधानमें इसके लिये कोई गुंजायश नहीं थी। तब वह स्काटलैण्डके बिशप-पादरियोंके पास गया। यदि स्काटलैण्डके पादरियोंने भी इनकार कर दिया होता, तो

हमारे इस नये-संसारमें कभी कोई *शिष्य-परम्परा न स्थापित हुई होती।* आधी पृथ्वीपर ईश्वरके लिये कोई जगह न रहती। इस महाद्वीपमें सच्चे सम्प्रदायकी स्थापना ही न हो सकती। किन्तु स्काटलैण्डके पादरियोंने उसके सिरपर अपना हाथ रखा। अब सन्त पालसे लेकर पिछले विशप-पादरी तककी हमारे यहाँ हाथों और सिरोंकी अविच्छिन्न परम्परा विद्यमान है।

इस देशमें एपिसकोपैलियन सम्प्रदायके लोगोंने कुछ भलाई भी की है जिसके लिये मैं उन्हें धन्यवाद देना चाहता हूँ। दूसरोंकी अपेक्षा औसत-दर्जे कम धार्मिक होनेके कारण इन लोगोंने मानवताकी अधिक सेवा की है। इन लोगोंने कुछ मानवी गुणोंको सुरक्षित रखा है। इन लोगोंने सगीतसे घृणा नहीं की, इन लोगोंने चित्रकारीकी सर्वथा निन्दा नहीं की। कुछ लोग तो यहाँ तक आगे बढ़े कि उन्होंने कहा कि ताश खेलनेमें कोई हर्जा नहीं, ऐसे समय भगवान् या तो दूसरी ओर देखता है अथवा देखता ही नहीं! इन सब बातोंके लिये मैं उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

जब मैं छोटा था तब दूसरे सम्प्रदाय नाचनेको पवित्र-आत्माके प्रति अपवित्रतम अपराध मानते थे। वे सिखाते थे कि जब चार लड़के सूखी घासके ढेरमें खेलने लगते हैं तो ईश्वर उनका सिर काटकर उन्हें रसातल भेज देनेके लिये अपनी तलवार तेज करने लगता है।

एपिसकोपल सम्प्रदाय बहुत कुछ कैथॉलिक सम्प्रदायकी ही तरह है, कुछ और बेहूदगियोंके साथ। एपिसकोपलियन लोगोंका कहना है कि दीक्षित हो जानेपर पापकी क्षमामें कुछ सरलता हो जाती है। वे लोग मानो ऐसा सोचते हैं कि दीक्षित होते ही वह एक दूकानके हिस्सेदार हो जाते हैं, जहाँसे वह लागत-मूल्यपर बुराई खरीद सकते हैं। यह सम्प्रदाय स्वतन्त्र लोगोके लिये एकदम निकम्मा है। इसका शासन अत्याचार-पूर्ण, उपेक्षापूर्ण और निकम्मा है। विशप-पादरी लोग ऐसे बात करते हैं मानों उनके अधिकारमें जो आत्मायें हैं उनकी सारी जिम्मेदारी उनपर ही हो। वे एक तरहके कोट पहनते हैं जिनमें बटन एक ओर लगे होते हैं। इस सम्प्रदायके पादरियोंके लिये सबसे बड़ा गुण यह है कि उनकी आवाज अच्छी होनी चाहिये। एपिसकोपैलियन लोगोंने आयरलैण्डके लोगोंके साथ जो व्यवहार किया वह एक

अपराध था—तीनसौ वर्षों तक लगातार किया गया अपराध। इस सम्प्रदायने इङ्गलैण्डके प्योरिटन लोगों और स्काटलैण्डके प्रैसविटेरियन लोगोंपर अत्याचार किये। इँग्लैण्डमें वेदिका सदासे राजसिंहासनकी रानी रही है और इस रानीने सती स्त्रियोंको हमेशा घृणाकी दृष्टिसे देखा है।

७—मैथाडिस्ट

लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले जान वैजले और जार्ज व्हिट्फील्ड नामके दो आदमियोंने कहा:—"यदि हर कोई नरक जा रहा है, तो किसी न किसीको यह बात कहनी होगी।" एपिसकोपल पादरी बोल उठे:—"चुप रहो। अपने कपड़े आप मत फाड़ो।" वैजली और व्हिटफिल्डका कहना था कि—"इस भयानक सत्यकी घोषणा होनी चाहिये, हर घरकी छतसे, हर अवसरपर; हर रास्तेसे, जब जब मौका मिले।" वे सच्चे ईमानदार आदमी थे, वे अपने सिद्धान्तोंमें विश्वास करते थे। और उनका कहना था—"यदि एक नरक है और अज्ञानकी चट्टानपर आत्माओंका जल-प्रपात गिरता रहता है तो किसीको कुछ अवश्य कहना चाहिये।" वे सही थे। किसी न किसीको अवश्य बोलना चाहिये, यदि यह बात सच्ची हो। वैजली बाइबलमे विश्वास करता था। उसे ईश्वरकी वास्तविक विद्यमानतामें विश्वास था। ईश्वर उसके लिये चमत्कार किया करता था—उसकी मीटिंग होने देनेके लिये वर्षाको कई कई दिन रोके रखता था, उसके घोडेके लँगड़ेपनको अच्छा कर दिया करता था, और श्रीमान् वैजलीका सिर-दर्द दूर भगा दिया करता था।

और यह वैजली शैतानकी वास्तविक विद्यमानतामें भी विश्वास करता था। उसका विश्वास था कि शैतान आदमियोंके सिर आते हैं। जब शैतान लोगोंके सिर आते, तो वह उनसे बातचीत किया करता था और शैतान उसे बताता था कि वह अब उस आदमीको छोड़कर दूसरे आदमीके सिर चढ़ने जा रहा है। वह यह भी बताता था कि वह वहाँ निश्चित समयतक रहेगा। तब वैजली उस आदमीके पास पहुँचता और शैतान उसे ठीक समयपर मिल जाता। वह हर आदमीके अपने मैथाडिस्ट सम्प्रदायमें आनेको ईश्वर और शैतानके बीचका संघर्ष समझता जिसमे आदमीकी

आत्मापर अन्तमें ईश्वरका ही अधिकार हो जाता। वैजलीका मानवीय-स्वतन्त्रतामें विश्वास नहीं था। निस्सन्देह, वह ईमानदार था। वह उपनिवेशोंको स्वतन्त्र करनेके विरुद्ध था। वह ईमानदारीसे ऐसा मानता था। वैजलीने एक प्रवचन दिया जिसका शीर्षक था—"भूकम्प और उसका कारण।" उसका तर्क था कि भूकम्पोंका कारण आदमीके पाप हैं और भूकम्पोंको रोकनेका एकमात्र उपाय यही है कि लोग ईसा मसीहमें विश्वास करें। निस्सन्देह, वह एक ईमानदार आदमी था।

वैजली और व्हिट्फील्डका पहलेसे ही सब कुछ निश्चित होनेके सिद्धान्तपर मतभेद हो गया। वैजलीका आग्रह था कि ईश्वर हर किसीको नियंत्रित करता है। व्हिट्फील्डका कहना था कि जिनके बारेमें ईश्वर जानता है कि नहीं आयेंगे, वह उन्हें निमंत्रित नहीं करता। वैजलीका कहना था कि वह करता है। व्हिट्फील्डका कहना था—तो अच्छा, वह उनके सामने प्लेटें लाकर नहीं रखता। वैजलीका कहना था कि रखता है, ताकि जब वे नरकमें हों तो वह दिखा सकें कि उनके लिए जगह रखी गई थी। जिस संप्रदायकी स्थापना इन लोगोंने की, वह अब भी सजीव है। शायद संसारमें किसी दूसरे संप्रदायने इतना कम पैसा लेकर इतना अधिक प्रचार नहीं किया जितना मैथाडिस्ट लोगोंने। व्हिट्फील्ड गुलामीकी प्रथामें विश्वास करता था और उसने गुलामोंके व्यापारका समर्थन किया था।

कुछ समय पूर्व मैथाडिस्टोंकी एक सभा हुई थी। उसमें उन्होंने जो सख्यायें दीं उनसे मालूम हुआ कि उनका विश्वास है कि उन्होंने एक वर्षमें १३ लाख आदमियोंको अपने मतका बनाया। उनका कहना है कि इसके लिए उनके पास २६ हजार उपदेशक हैं, २ लाख २६ हजार रविवारी स्कूलोंमें पढ़नेवाले विद्यार्थी हैं और लगभग १० करोड़ पौंडकी संपत्ति। संसारके इतिहासपर नजर डालनेसे मैं देखता हूँ कि लगभग ४ या ५ करोड़ आदमी हर साल पैदा होते हैं। यदि प्रतिवर्ष १३ लाख आदमियोंकी ही रक्षा हो सकी तो इस सिद्धान्तको सारे संसारकी रक्षा करनेमें कितने वर्ष लगेंगे? ये अच्छे हैं, ईमानदार हैं; किन्तु बेचारे अज्ञ हैं।

पुराने समयमें मामला बड़ा सीधा-साधा था। गिरजे अनाजकी कोठियों

जैसे थे। वे दो हिस्सोंमें विभक्त रहते—पुरुष एक ओर और स्त्रियाँ दूसरी ओर। थोड़ी बर्बरता रहती। तबसे हमने कुछ प्रगति की है। अब हम अनुभवसे यह बात जान चुके हैं कि किन्हीं दो अपरिचित आदमियोंके बीच बैठकर आदमी जितनी भक्तिसे ईश्वर-प्रार्थना कर सकता है, वैसी ही भक्तिसे वह अपनी किसी प्रियाके पास बैठकर भी।

एक और बात है जो मैथाडिस्ट लोगोंको याद रखनी चाहिए, वह यह कि ऐपिसकोपेलियन लोग ही उनके सबसे बड़े शत्रु हुए हैं और उन्हें याद रखना चाहिए कि स्वतंत्र-विचारकोंने उनके साथ सदैव सद्व्यवहार किया है।

उत्तरके मैथाडिस्ट सम्प्रदायकी एक बात मुझे पसद है, लेकिन मै जानता हूँ कि मैथाडिस्ट सिद्धान्तको इसका श्रेय नहीं दिया जा सकता। मैं देखता हूँ कि दक्षिणका मैथाडिस्ट संप्रदाय स्वतंत्रताका उतना ही विरोधी है जितना कि उत्तरका। मैथाडिस्ट सम्प्रदाय स्वतंत्रताकी पक्षपाती है, इस प्रकार यह मैथाडिस्ट सिद्धान्त नहीं है जिसे स्वतंत्रता अथवा गुलामीका पक्षपाती कहा जासके। उनका मत दूसरोंसे थोड़ा भिन्न है। वे यह नहीं मानते कि ईश्वर सब कुछ करता है। उनका विश्वास है कि ईश्वर अपने हिस्सेका कर्तव्य करता है और शेष काम तुम्हें करना चाहिए। स्वर्गारोहण साझे परिणामका प्रयत्न है। मैथाडिस्ट-संप्रदायका नवीन देशोंसे मेल बैठता है। सामान्य रूपसे इसके पादरी अशिक्षित होते हैं। ज्ञानकी जगह भी उनमें उत्साह ही रहता है। वे शोर-शराबेके बलपर लोगोंको अपने मतका बनाते हैं। बादकी शांतिमें उनके बहुतसे अनुयायी खिसक जाते हैं। थोड़े समयमें अनेक कट्टरपथियों और उन थोड़ेसे लोगोंके बीचमें जिनकी संख्या बढ़ रही है, सघर्ष आरंभ होगा। चंद लोग निकाल बाहर किये जायेंगे और संप्रदायपर उन्हीं लोगोंका शासन चलेगा जो बिना समझे विश्वास करते हैं।

८—प्रेसबिटेरियन

दूसरा संप्रदाय प्रेसबिटेरियन है। जहाँतक मतकी बात है, यह संप्रदाय सबसे निकृष्ट है। इस संप्रदायका संस्थापक जॉन कॉल्विन था—एक हत्यारा। जॉन कॉल्विनके हाथमें जब जिनेवामें शक्ति आई तो उसने लोगोंपर अत्या-

चार आरंभ किया। वाल्तेयरने फ्रांससे मानव उत्पीडनका मूलोच्छेद किया। यदि ईसाई मजहब सत्य है तो जिस आदमीने मानव-उत्पीड़नका मूलोच्छेद किया उसे अब ईश्वर नरकमें यंत्रणा दे रहा है, और जिस आदमीने मानवोंको इतनी यंत्रणा दी वह अब स्वर्गमें एक श्रेष्ठ देवता बना बैठा है। ऐसा नहीं चल सकता।

जॉन नॉक्सने स्कॉटलैंडमें इस सप्रदायका आरभ किया। प्रेसबिटेरियन मतके बारेमें यह बात सबसे विचित्र है कि जहाँ दरिद्र धरती होती है वहीं यह सबसे अधिक फलता फूलता है। मैंने उस दिन जॉन नॉक्स और जॉन कॉल्विनकी आपसकी बातचीतका वृत्तांत पढा। कल्पना कीजिए, महामारी और अकालके बीच हुई बातचीतकी। कल्पना कीजिए एक ठूँठ और एक कुल्हाड़ीके बीच हुई बातचीतकी। जब मैं उनकी बातचीत पढता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि जॉन नॉक्स और जॉन कॉल्विन एक दूसरेके लिए बने थे; और वे एक दूसरेसे ऐसे फिट बैठते थे जैसे किसी जंगली पशुका ऊपर और नीचेका जबड़ा। उनका विश्वास था कि प्रसन्नता एक अपराध है; वे हँसनेको नास्तिकता समझते थे; और उन्होंने हर मानवीय भावनाको नष्ट करनेके लिए और दिमागमें अनन्त मृत्युका असीम अंधकार भरनेके लिए जो कुछ किया जा सकता था, किया। उन्होने यह सिखाया कि क्योंकि ईश्वरने हमें बनाया है; इसलिए उसे हमें रसातल भेजनेका अधिकार है। यही तो कारण है कि उसे हमें रसातल भेजनेका अधिकार नहीं। एक मुट्ठीभर मिट्टी है, अचेतन मिट्टी। ईश्वरको क्या अधिकार है कि वह उस अचेतन मिट्टीको मानवका रूप दे, जब कि वह जानता है कि मानव पाप करेगा; जब कि वह जानता है कि मानव अनन्त कष्ट भोगेगा? उसे अचेतन मिट्टी ही क्यों न रहने दिया जाय? एक अनन्त ईश्वरको मानवी पीड़ामें वृद्धि करनेका क्या अधिकार है? थोड़ी देरके लिए कल्पना करो कि मैं जानता हूँ कि मै उस सामानको एक जीवित प्राणीका, एक मानवका रूप दे सकता हूँ और मैं जानता हूँ कि वह प्राणी अनन्त कालके लिए असीम यंत्रणा भोगेगा। यदि मै वैसा करूँ तो मुझे एक शैतान मानना चाहिए। मैं उस प्राणीको अचेतन मिट्टीके रूपमें ही रहने दूँगा। और

तब कहा जाता है कि हम ऐसे सिद्धान्तमें विश्वास करें, अन्यथा हमें अनन्त काल तक नरकमें रहना होगा!

१८३९ में इस संप्रदायके दो दल हो गये। दोनों अदालतके पास यह निर्णय करानेके लिए पहुँचे कि दोनोंमें सच्चा ईश्वरीय संप्रदाय कौन-सा है। न्यायाधीशका निर्णय था कि नवीन संप्रदाय ईश्वरीय संप्रदाय है। तब फिर एक दूसरा मुकदमा शुरू हुआ और इस बारके न्यायाधीशने निर्णय दिया कि पुराना संप्रदाय ही ईश्वरीय संप्रदाय है! इस प्रकार इस मुकदमेका निर्णय हुआ।

उस दिन एक प्रेसबिटेरियन, जिसको बने अभी बहुत समय नहीं हुआ था, मेरे पास आया। उसने मुझे एक पुस्तिका दी और कहा कि मैं पूर्णतया प्रसन्न हूँ। मैंने पूछाः—" क्या तुम समझते हो कि बहुत सारे लोग नरक जा रहे हैं?"

" हाँ।'

" तब भी तुम पूर्णतया प्रसन्न हो?"

वह कुछ न कह सका, चुप रहा।

" यदि वे सब लोग स्वर्ग जाये, तो क्या तुम अधिक प्रसन्न नहीं होगे?"

" हाँ।"

" तो तुम पूर्णतया प्रसन्न नहीं हो?"

वह कुछ न कह सका, चुप रहा।

" जब तुम स्वर्ग पहुँचोगे तब तुम पूर्णतया प्रसन्न होगे?"

" हाँ।"

" अब जब हम केवल नरक ही जा रहे हैं तुम पूर्णतया प्रसन्न न हो; लेकिन जब हम नरकमें हों और तुम स्वर्गमें हो, तब तुम पूर्णतया प्रसन्न होगे? जब तुम स्वर्गलोकके देवता बन जाओगे तब तुम उतने भले न रहोगे जितने भले कि अब हो?"

" नहीं, नहीं, यह ठीक ऐसा ही नहीं है।"

" अच्छा, यदि तुम्हारी माँ नरकमें हो तो क्या तुम स्वर्गमें प्रसन्न रहोगे?"

" मै समझता हूँ कि ईश्वर जानता है कि माँके लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान कौन-सा होगा । "

उस समय मैंने मनमें सोचा यदि मैं स्त्री होता तो मैं चाहता कि मेरे पाँच या छः ऐसे बच्चे हों ।

स्वर्ग वहीं है जहाँ वे लोग हैं, जिन्हे हम प्यार करते हैं और जो हमें प्यार करते हैं । मैं किसी ऐसे संसारमे जाना नहीं चाहता जहाँ उन लोगोंका और मेरा साथ न रहे जो मुझे यहाँ प्रेम करते हैं ।

प्रेसबिटेरियन संप्रदायसे अधिक किसी दूसरे संप्रदायने संसारमे अंधकारका प्रसार नहीं किया । यह मत डरावना है, भयानक है, नारकीय है । प्रेसबिटेरियन ईश्वर राक्षसोका राक्षस है । वह एक अनन्त हत्यारा है, जेलर है । वह रसातलमे गये हुए लोगोंकी चीत्कारोका आनन्द लेगा, नरक प्रेसबिटेरियन ईश्वरका त्योहार है ।

९—बाइबली-संप्रदाय

मेरे पास बैपटिस्टोंके बारेमे कुछ कहनेके लिए समय नहीं है । इनके बारेमें जर्मी टेलरका कहना था कि इनकी जड़ खोदना उतना ही आवश्यक है जितना पृथ्वीपर किसी भी दूसरी महामारी अथवा बेहूदा बातकी । वह बैपटिस्टोंमें इतनी घृणा इसलिए करता था कि क्योंकि वे किसी मात्रामें विचारकी स्वतंत्रताके प्रतिनिधि थे ।

मेरे पास क्वेकरोंकी चर्चाके लिए भी समय नहीं है । वे सभी दूसरे संप्रदायोंसे अच्छे हैं और सभीने उनका दुरुपयोग किया है । मैं यह भी नहीं भूल सकता कि सन् १६४० में जॉन फॉक्सको लकड़ीके चौखटेमें जकड़ दिया गया था, एक नगरसे दूसरे नगर चाबुक मारते हुए ले जाया गया था, डराया गया था, कैदमें डाला गया था, पीटा गया था और पाँव तले रौंधा गया था । यह सब किसलिए ? यह सब केवल इसलिए कि वह यह प्रचार करता था कि बुराईका बदला बुराईसे नहीं दिया जाना चाहिए और तुम्हे अपने शत्रुओंसे भी प्यार करना चाहिए । जरा सोचो कि उस समय ईसाइयत

किस हीन अवस्थाको पहुँच गई होगी जब उसने ऐसी प्रेमकी मूर्तिका मास खरोंचा !

ओह ! लेकिन वे मुझे कहते हैं:—तुम ऐसी चीज़का विरोध कर रहे हो जो मर गई है। अब कोई इन बातोंमें विश्वास नहीं करता। उपदेशक जो कुछ वेदिकासे कहते हैं उसपर वे विश्वास नहीं करते। श्रोतागण भी जो उपदेश सुनते हैं, उनपर विश्वास नहीं करते और वे मुझसे कहते हैं:—तुम मरी हुई बातोंके पीछे पड़े हो। यह तो बाह्य शक्ल मात्र है। हम संसारसे दूर भागनेके सिद्धान्तमें विश्वास नहीं करते। हम हस्ताक्षर कर देते हैं, और शपथ खाकर कहते हैं कि हम विश्वास नहीं करते और हममेंसे कोई विश्वास नहीं करता। और जितने भी पादरी हैं वे सब प्राइवेटमें कहते हैं और स्वीकार करते हैं कि वे पूरा पूरा विश्वास नहीं करते।

मैं नहीं जानता कि यह ऐसा ही है अथवा नहीं। मैं तो यह मानकर चलता हूँ कि जिन बातोंका ये लोग उपदेश देते हैं उन्हें मानते भी हैं। मैं यह मानता हूँ कि जब ये लोग इकट्ठे होते हैं और गम्भीरतापूर्वक किसी सिद्धान्तको स्वीकार करते हैं, तो ईमानदारीसे उस सिद्धान्तको वास्तविक तौरपर मानते भी हैं। लेकिन तो भी हम देखें कि क्या मैं मरे हुओंके विचारोंका ही विरोध कर रहा हूँ ? क्या मैं श्मशानभूमिपर ही तो पत्थर नहीं फेंक रहा हूँ ?

तमाम कट्टर मतवादी लोगोंका संग्रह—बाइबली सम्प्रदाय—कुछ वर्ष हुए इकट्ठा हुआ। उनके सिद्धान्तोंका सार इस प्रकार है: —

“ वे इलहाममें विश्वास करते हैं, बाइबलके अन्तिम-वचन होनेमें विश्वास करते हैं, पवित्र धर्म-ग्रन्थोंके पर्याप्त होनेमें विश्वास करते हैं, धर्म-ग्रन्थोंका अर्थ लगानेके अधिकार और कर्तव्यमें विश्वास करते हैं, किन्तु यदि अर्थ लगानेमें गलती हो जाय तो रसातल जाना पड़ता है। वे ईश्वरत्वकी एकता और उसके त्रैतवादमें विश्वास करते हैं। वे मानव-प्रकृतिके सर्वथा भ्रष्ट होनेमें विश्वास करते हैं। ”

इन सिद्धान्तोंसे बढ़कर भ्रष्ट सिद्धान्तोंकी कल्पना नहीं की जा सकती। वे एक छोटे बच्चेको भ्रष्टाचारकी ढेरी समझते हैं। मैं उसे मानवताकी एक

कली सकता हूँ जो प्रेम और आनन्दकी हवा तथा प्रकाश पाकर वैभवपूर्ण शानदार जीवनके रूपमें खिल उठेगी।

यहाँ एक स्त्री है जिसका पति समुद्रकी भेंट चढ़ चुका है। समाचार आता है कि उसे समुद्रकी लहरें निगल गई हैं। वह प्रतीक्षा करती है। उसके दिलमें कोई एक चीज है जो उसे कहती है कि अब भी वह जीवित है। वह प्रतीक्षा करती है और वर्षों बाद जब वह अपने छोटेसे दरवाजेके बाहर झाँकती है, तो वह उसे देखती है। उसे समुद्रने लौटा दिया है। वह उसके आलिंगनके लिये दौड़ती है और उसके चेहरेको आँसुओं तथा चुम्बनोंसे ढक देती है। परन्तु यदि मानव-प्रकृतिकी सम्पूर्ण भ्रष्टताका सिद्धान्त ठीक है तो प्रत्येक आँसू एक अपराध है, प्रत्येक चुम्बन नास्तिकता।

वे और किस बातमें विश्वास करते हैं? भक्ति-मात्रसे पापीके उद्धारकी बातमें कर्म नहीं, केवल श्रद्धा, केवल भक्ति, केवल विश्वास। जिसे तुम समझ नहीं सकते, वैसी किसी बातमें विश्वास करना। निस्सन्देह ईश्वर किसी आदमीको किसी ऐसी बातमें विश्वास करनेके लिये पुरस्कृत नहीं कर सकता जो उसकी समझमें आती हो। ईश्वर किसी ऐसी बातमें विश्वास करनेको ही पुरस्कृत कर सकता है, जो समझमें न आती हो। यदि तुम किसी ऐसी बातमें विश्वास करते हो जो सम्भव प्रतीत नहीं होती, तो तुम ईसाई हो; और यदि किसी ऐसी बातमें विश्वास करते हो, जिसे तुम जानते हो कि एकदम असम्भव है, तो तुम महात्मा हो।

१०—तुम क्या चाहते हो?

तब वे मुझसे कहते हैं :—"तुम क्या चाहते हो? तुमने हमारी बातके तार तार कर दिये, अब तुम इसके स्थानमें क्या चाहते हो?" मैंने किसी भली बातकी चीर-फाड़ नहीं की है। मैंने केवल नरककी अज्ञानतापूर्ण निर्दय आगको पैरोंतले रौंधनेकी कोशिश की है। मैं इस पंक्तिपर हड़ताल नहीं फेर रहा हूँ कि "ईश्वर दयालुओंके प्रति दया दिखायेगा।" मैं इस वचनको नष्ट करने नहीं जा रहा हूँ कि "यदि तुम दूसरोंको क्षमा कर दोगे, तो ईश्वर तुम्हें क्षमा कर देगा।" मानव-निराशाके क्षितिजपर अथवा मानवीय

आशाके आकाशमें चमकनेवाले किसी मंदसे मंद तारेको भी मैं गुल न होने दूँगा, लेकिन मैं आदमीके हृदयमेंसे उस अनन्त मनहूस छायाको निकालनेके लिये जो कुछ भी कर सकता हूँ, अवश्य करूँगा।

" इसके स्थानमें तुम क्या चाहते हो ? "

" मैं सर्वप्रथम चाहता हूँ अच्छी मैत्री—चारों ओर अच्छे मित्र। हम क्या मानते हैं, क्या विश्वास करते हैं, इसकी कुछ परवाह नहीं, हमें सबके साथ हाथ मिलाने हैं। वह तुम्हारा विचार है; यह मेरा विचार है; आओ हम मित्र बनें। विज्ञान लोगोंको मित्र बनाता है और मजहब, मिथ्या विश्वास, शत्रु। वे कहते हैं कि यह महत्त्वकी बात है कि आदमी क्या मानता है। मैं कहता हूँ कि यह महत्त्वकी बात है कि आदमी क्या करता है। आदमीकी मान्यताओंकी ओर न देखो, उसके कार्योंकी ओर देखो। अच्छी मैत्री—अच्छे मित्र—ईमानदार स्त्री-पुरुष—परस्पर आदरकी भावनासे परस्पर सहनशीलता। हमने इस तरहके गम्भीर मनुष्य बहुत देखे हैं। जब मैं किसी अत्यधिक गम्भीर आदमीको देखता हूँ, तो मैं समझ जाता हूँ कि वह एकदम गधा है। जिस आदमीमें कुछ विनोद रहा है, उसने कभी किसी मजहबकी स्थापना नहीं की—कभी नहीं। तर्क पवित्र प्रकाश है; विनोद लालटैन है; और जिस आदमीमें विनोदकी तीक्ष्ण-मात्रा रहती है वह मिथ्या-विश्वासोंकी मूर्खताओंसे सुरक्षित रहता है। मुझे ऐसा आदमी पसन्द है जिसमें हर किसीके लिये अच्छी भावनायें हैं; अच्छी मैत्री। एक आदमीने दूसरेसे कहा :—

" क्या आप एक शराबका प्याला लेंगे ? "

" मैं पीता नहीं। "

" क्या आप एक सिगरेट लेंगे ? "

" मैं पीता नहीं। "

" क्या आप कुछ सुपारी आदि लेंगे ? "

" मैं चबाता नहीं। "

" तो हम दोनों कुछ घास खायें। "

" मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं घास नहीं खाता।"

" तो नमस्कार, आप न किसी आदमीके साथी बन सकते हैं और न किसी जानवरके।"

मैं प्रसन्न रहनेकी बातमे, भली प्रकृतिकी बातमें, अच्छे स्वास्थ्यकी बातमें विश्वास करता हूँ। हम अपने शरीरकी ओर ध्यान दें। यदि हम अपने शरीरकी सुध लें तो हमारी आत्मा अपनी सुध आप ले लेगी। मेरा विश्वास है कि एक समय आयेगा जब सार्वजनिक विचार इतना ऊँचा और महान् हो जायगा कि बीमारीको बढाना पाप माना जाने लगेगा। मेरा विश्वास है कि समय आयेगा जब आदमी भविष्यमे क्षय और पागलपनके रोगियोंके लिये कोई जगह न रहने देगा। मै विश्वास करता हूँ कि समय आयेगा जब हम अपना अध्ययन आप करेंगे और स्वास्थ्यके नियमोंको समझेंगे।

मैं अच्छी तरह जीनेमे विश्वास करता हूँ। तुम भूखे मरकर किसी देवताको प्रसन्न नहीं कर सकते। हमे अच्छा भोजन मिले, जो अच्छी तरह पका हुआ हो। संसारके किसी भी दार्शनिक सिद्धान्तकी जानकारी रखनेसे यह कहीं बढ़कर है कि आदमीको भोजन बनाना आए।

मै अच्छे कपड़े पहननेमे विश्वास करता हूँ। मैं अच्छे घरोंमे रहनेमें और पानी और साबुनके उपयोगमे विश्वास करता हूं। मै समझदारीमे, शिक्षामें विश्वास करता हूँ। विद्यालय मेरा मन्दिर है, विश्व मेरी बाइबल है। मै न्यायकी इस बातमे विश्वास करता हूँ कि जो कुछ हम बोयें वह काटे।

मैं उस क्षमामें विश्वास नहीं करता जिसका ईसाइयत प्रचार करती है। हमें ईश्वरकी क्षमाकी आवश्यकता नहीं, किन्तु एक दूसरेको क्षमा करनेकी आवश्यकता है और अपने आपको भी क्षमा करनेकी। यदि मै स्मिथको लूट लूँ और ईश्वर मुझे क्षमा कर दे, तो इससे स्मिथको क्या लाभ हुआ? यदि मैं किसी गरीब छोटी लड़कीको कलंकित कर दूँ और वह कुम्हलाये हुए फूलकी तरह बिखर जाए; और ईश्वर मुझे क्षमा कर दे, तो इससे उसे क्या लाभ हुआ? यदि कोई दूसरा संसार है तो हमें उन लोगोंके साथ अपना हिसाब-किताब साफ करना होगा जिन्हे हमने इस संसारमें हानि पहुँचाई है। वहाँ

कोई दिवालिया अदालत नहीं होनी चाहिये। हर पाईका हिसाब चुकता होना चाहिये।

तुम जो भी अपराध करो, तुम्हें अपने प्रति उत्तरदायी होना होगा और उसके प्रति भी जिसके विरुद्ध तुमने वह अपराध किया है। यदि तुमने कभी किसीको किसी प्रकारकी पीड़ा पहुँचाई है, तो तुम कभी उतने प्रसन्न नहीं होगे जितने तब यदि तुमने पीड़ा न पहुँचाई होती। देवता द्वारा कोई क्षमा नहीं। अनन्त, अपरिवर्तनीय न्याय ही है। जहाँ तक प्रकृतिका सम्बन्ध है तुम्हें अपने कर्मोका फल भुगतना चाहिये। यदि तुमसे किसीको हानि पहुँची हो और उसने तुम्हे क्षमा भी कर दिया हो, तो भी वह बात नही होगी जो तब होती यदि तुमने उसे हानि पहुँचाई ही न होती। मैं इसी बातको मानता हूँ। यदि यह बात मेरे अपने लिये थोड़ी कठोर हो, तो भी मैं इसे ही मानूँगा; मैं अपने तर्कके साथ रहूँगा; मैं एक आदमीकी तरह इसे सहन करूँगा।

और मैं स्वतन्त्रताकी बातमें भी विश्वास करता हूँ; दूसरोको वही चीज देनेकी बातमे जो हम अपने लिये चाहते हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि विचारके लिये सर्वत्र स्थान है, और जितनी ही स्वतन्त्रता तुम दूसरोको दोगे उतनी ही तुम्हें मिलेगी। स्वतन्त्रतामें फिजूलखर्ची ही मित-व्यय है। हम न्यायी बने। हम परस्पर उदार बने।

मै समझदारीकी बातमें विश्वास करता हूँ। यही वह यन्त्र है जो मानवताको ऊपर उठाता है। समझदारी ही मानवताकी रक्षा कर सकती है। मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है। कोई ईश्वर किसी ऐसे आदमीको दूसरे लोकमे नरकमे नहीं डाल सकता, जिसने इस लोकमे एक छोटा-सा स्वर्ग बसाया हो। ईश्वर किसी ऐसे आदमीको दुखी नहीं बना सकता, जिसने यहाँ किसीको सुखी बनाया हो। ईश्वर किसी ऐसे आदमीसे घृणा नहीं कर सकता, जो किसी भी दूसरे आदमीसे प्रेम कर सकता है। मानवता—इस एक शब्दमें सब कुछ आ जाता है।

वे कहते हैं, "तुम्हें विश्वास करना होगा।" मेरा कहना है—नहीं। मै जो स्वास्थ्यकी चर्चा करता हूँ वह जीवन लायगी। मेरी समझदारीकी

बात, मेरी अच्छे जीवनकी बात, मेरी अच्छी मैत्रीकी बात संसारको अच्छे घरोंसे ढँक देगी। मेरा सिद्धान्त तुम्हारे फर्शोंपर दरियाँ बिछा देगा। तुम्हारी दीवारोंपर तसवीरें टाँग देगा। मेरा सिद्धान्त तुम्हारी अलमारियोंको किताबोंसे भर देगा और तुम्हारे दिमागोंको विचारोंसे। मेरा सिद्धान्त अज्ञान और मिथ्या-विश्वाससे पैदा हुए भयानक राक्षसोंसे ससारको मुक्ति दिलायेगा। मेरी सिद्धान्त स्वास्थ्य, धन और प्रसन्नता देगा। यही है जो मैं चाहता हूँ। यही है जिसमें मैं विश्वास करता हूँ। हममें समझदारी आने दो। थोड़ी ही देरमे आदमी समझ जायगा कि वह बिना अपने आपको लूटे किसी दूसरेकी चोरी नहीं कर सकता। उसे पता लग जायगा कि वह बिना अपनी प्रसन्नताकी हत्या किये किसी दूसरेका वध नहीं कर सकता। वह जान जायगा कि हर अपराध एक गलती होता है। उसे पता लग जायगा कि गलती करनेवाला आदमी ही कष्ट भोगता है, और जो गलती नहीं करता वह उत्तरोत्तर उन्नति करता है। वह समझ जायगा कि यदि समझदारीके साथ केवल अपने आपको भी प्यार करना हो, तो उसका भी अर्थ यही होता है कि सारी मानवताका आलिङ्गन किया जाय।

वे कहते हैं, "तुम मानवकी अमरता छीन रहे हो।" पर मैं नहीं छीन रहा। यदि हम अमर हैं, तो यह एक प्राकृतिक सचाई है। इसके लिये न हम पादरियोंके ऋणी हैं और न बाइबलके। यह अमरता अविश्वाससे नष्ट नही हो सकती।

जब तक हम एक दूसरेको प्यार करते हैं, हमारी जीवित रहनेकी आशा बनी रहेगी। जब कभी हमारे किसी प्रेम-भाजनकी मृत्यु होगी, हम कहेगे ही—काश, हम फिर मिल सकते! हम मिलेंगे अथवा नहीं, इसमें धर्म कुछ नहीं कर सकता। यह एक प्राकृतिक सचाई होगी। मैं अपनी प्राण-रक्षाके लिये भी मानवी-आशाके किसी एक भी तारेको नष्ट करना नहीं चाहूँगा। मै तो चाहता हूँ कि जिस समय एक गरीब औरत अपने बच्चेको लोरी गा गा कर छोटेसे झूलेमें झुला रही हो, उस समय उसे यह विश्वास न करना पड़े कि वह सौमेंसे निन्नानवे हालतोंमें नरककी आगके लिये जलावन तैयार कर रही है।

मेरा सिद्धान्त है—एक समय एक ही संसार।

और थोड़ी देरके लिये मान लो कि मृत्यु हर चीज़का अन्त है। अनन्त प्रसन्नतासे दूसरे दर्जेपर, जिन्हें हम प्यार करते रहे हैं अथवा जो हमें प्यार करते रहे हैं उनके साथ सदैव बने रहनेके आनन्दसे दूसरे दर्जेपर, अनन्त शान्तिकी स्वप्नरहित चादरमे लिपट जाना है। अनन्त जीवनके बाद दूसरा दर्जा अनन्त निद्राका ही है। कष्टोंका समुद्र मृत्युके छायादार तटपर अपनी लहरें नहीं फेंकता। जिन आखोंपर अनन्त अन्धकारका पर्दा पड़ गया है, उनको अब गर्म-गर्म ऑसू कभी स्पर्श नहीं करेंगे। अनन्त मौतने जिन होंठोपर मोहर लगा दी है उनमे अब दुःखभरे टूटे फूटे शब्द कभी बाहर न होंगे। मिट्टीके दिल कभी टूटते-फूटते नहीं। मरे हुए कभी रोते नहीं।

जिन्हें मै प्यार करता रहा हूँ और जो अब मुझसे बिछुड़ गये हैं उनके बारेमे जरा भी यह सोचनेकी अपेक्षा कि उनकी नंगी आत्मायें किसी ईश्वरके चगुलमें फँस गई हैं, मैं यह सोचना पसंद करूँगा कि वे संसारके पृथ्वी, जल, वायु आदि तत्वोंका एक अंश बनकर इसी धरतीपर लौट आये हैं; मै यह सोचना पसन्द करूंगा कि वे अचेतन मिट्टी बन गये हैं; मैं यह सोचना पसन्द करूँगा कि वे पानीके स्रोतोंमे कल-कल कर रहे हैं, बादलोंमें तैर रहे हैं; पृथ्वीके चारों कोनोंको प्रकाशित करनेवाले प्रकाशकी झागमें सम्मिलित हैं; मै यह सोचना पसंद करूँगा कि वे भूली रातके भूले स्वप्न बन गये हैं। मैं अपने मृतोंको वहीं छोड दूंगा जहाँ प्रकृति उन्हें छोड़ देती है। मेरे हृदयमें जो भी आशाकी कली खिलती है, मैं उसे खिलने दूँगा; मैं उसे ठंडी-सांसकी हवा और आँसुओंकी वर्षासे तर रखूँगा। लेकिन मै यह विश्वास नहीं कर सकता कि इस विश्वमें कोई ऐसा है जिसने अनन्त-वेदनाके लिये किसी मानवीय-आत्माको पैदा किया हो। किसी एक भी आत्माके अनन्त-काल तक कष्ट भोगते रहनेकी अपेक्षा मै यह पसन्द करूँगा कि हर ईश्वर अपनी आत्म-हत्या कर ले, मैं यह पसन्द करूँगा कि हम सभी अनन्त गड़बड़ीके शिकार हो जाये—अँधेरी और तारोंरहित रात्रिके।

मैंने निश्चय कर लिया है—

कि यदि कोई ईश्वर है, तो वह दयालुओंके प्रति दयावान् होगा।

मैं इस चट्टानपर खड़ा हूँ:

कि वह क्षमाशीलोको यातना नहीं देगा।

मैं इस चट्टानपर खड़ा हूँ:

कि हर आदमीको अपने प्रति ईमानदार रहना चाहिए और कोई ऐसा संसार नहीं है, कोई ऐसा आकाश नहीं है, जहाँ ईमानदार बनना अपराध हो।

मैं इस चट्टानपर खड़ा हूँ:

ईमानदार पुरुष, सुशील स्त्री और प्रसन्न बच्चेको कहीं कोई भय नहीं है, न इस लोकमे और न किसी दूसरे लोकमें।

मैं इस चट्टानपर खड़ा हूँ।

पुरुषों, स्त्रियों और बच्चोंकी स्वतन्त्रता

मन और स्वतंत्रताका परस्पर वही संबंध है जो भौतिक तत्त्व और आकाशका।

अज्ञान ही एकमात्र गुलामी है। स्वतंत्रता बुद्धिकी संतान है।

आदमीका इतिहास केवल गुलामीका इतिहास है, अन्याय और अत्याचार-का; साथ ही उन साधनोंका भी जिनसे वह अतीतमें शनैः शनैः किन्तु बड़े बड़े कष्ट भोगकर आगे बढ़ा है। वह पादरी-पुरोहितों और राजाओंका शिकार रहा है और बना है मिथ्या विश्वास तथा निर्दयताका खाद्य। सिंहासनस्थ शक्तिने भयके द्वारा अज्ञानपर शासन किया है। ढोंग और अत्याचार--दोनों गीध--आदमीकी स्वतन्त्रताको नोच नोच कर खाते रहे हैं। इन सबसे मुक्ति पानेका केवल एक ही मार्ग रहा है और वह है—बुद्धिका विकास। उद्योगकी पीठपर चाबुक पड़ता रहा है। दिमाग मिथ्या-विश्वासकी बेड़ियोंसे जकड़ा रहा है। स्वतंत्रताके शत्रुओंने कोई कसर बाकी नहीं रखी। आदमीके अधिकारोंको नष्ट करनेके लिए सभी प्रकारके अत्याचार किये गये हैं। इस महान् संघर्षमें हर अपराधको पुरस्कार मिला है और हर शुभ कर्म दंडित किया गया है। पढ़ना, लिखना, विचार करना और खोज करना—यह सभी अपराध माने जाते रहे हैं।

प्रत्येक विज्ञान अछूत बना रहा है।

तमाम वेदिकायें और तमाम सिंहासन मानव जातिकी प्रगतिको रोकनेमें एकमत रहे हैं। राजाने कहा कि मानव जातिको अपने लिये काम नहीं करना चाहिये। पादरी-पुरोहित बोले, मानव जातिको अपने लिये सोचना नहीं चाहिये। एकने हाथोंमें हथकड़ियाँ डालीं, दूसरोंने दिमागको बंदिशमें बाँधा। इस दुष्ट शासनमें मानव-बुद्धिका बाज़ एक ढोंगका एक कमज़ोर साँप बना रहा।

मानव जाति कारागारमें डाल दी गई थी। जेलखानेके कुछ सीखचोंमेंसे प्रकाशकी चन्द किरणें संघर्ष करती हुई बाहर आई। इन सीखचोंके पीछेसे विज्ञानने झाँकनेका प्रयत्न किया। एकके बाद दूसरा सीखचा टूटा। कुछ महान् पुरुष निकल भागे। उन्होंने अपना जीवन अपने बन्धुओंकी मुक्तिमें लगा दिया।

कुछ ही वर्ष पूर्व आदमीके दिमागमें एक बड़ी जागृति पैदा हुई। उसने यह पूछना आरम्भ किया कि एक मुकुटधारी डाकूको क्या अधिकार है कि वह उन्हें अपने लिये काम करनेको मजबूर करे? जिस आदमीने यह प्रश्न पूछा उसे राजद्रोही कहा गया। दूसरोंने पूछा कि एक ढोंगी पादरीको क्या अधिकार है कि वह मेरे विचारोंपर शासन करे? ऐसे आदमी नास्तिक कहलाये। पादरी बोला और राजा भी बोला कि आखिर यह खोजकी प्रवृत्ति कहाँ जाकर रुकेगी? उन्होंने तब भी कहा और वे अब भी कहते हैं कि आदमीके लिये स्वतन्त्र होना खतरनाक है। मैं इसे अस्वीकार करता हूँ। बुद्धिके समुद्रमें हर नौकाके लिये काफी स्थान है। बुद्धिरूपी आकाशमें जो चाहे जितनी उड़ान भर सकता है।

जो आदमी अपने लिये नहीं सोचता वह एक गुलाम है और अपने तथा अपने मानव-बन्धुओंके प्रति द्रोह करता है।

हर आदमीको इस नीले-आकाश और तारोंके नीचे खड़ा होना चाहिये, इस प्रकृतिके अनन्त झण्डेके नीचे—अपने आपको हर दूसरे आदमीके बराबर मानते हुए। अज्ञानके सम्मुख खड़े हुए हर व्यक्तिको सोचनेका समान अधिकार है। सभीकी उत्पत्ति और विनाशके प्रश्नोंमें समान रुचि हैं। मैं जिस बातका दावा करता हूँ, मैं जिस बातकी वकालत करता हूँ वह केवल विचारने और अपने विचारोंको प्रकट करनेकी स्वतन्त्रता है। मैं इस बातका दावा नहीं करता कि मैं आपको 'पर सत्य' बात बता रहा हूँ। मैं जिसे सत्य समझता हूँ, वही बात कहता हूँ। मैं सारेका सारा सत्य बतानेका दावा भी नहीं करता।

मैं यह दावा नहीं करता कि मैं विचारोंके उच्चतम शिखर तक उड़ चुका

हूँ और मैं यह दावा भी नहीं करता कि मैं वस्तुओंकी गहराईको छू चुका हूँ। मैं इतना ही दावा करता हूँ कि मेरे जो विचार हैं उन्हें प्रकट करनेका मुझे अधिकार है और कोई भी आदमी जो मेरे इस अधिकारको अस्वीकार करता है वह दिमागी चोर है, दिमागी डाकू है।

आत्माकी इन ज़ंजीरोंको दूर करो। इन बेड़ियोंको काट डालो। यदि मुझे सोचनेका अधिकार नहीं है तो मेरे सिरमें दिमाग ही क्यों है? यदि मुझे यह अधिकार नहीं है, तो क्या उन तीन चार या अधिक आदमियोंको है, जो इकट्ठे होकर किन्हीं सिद्धान्तोंपर हस्ताक्षर कर दें, एक घर बना ले, उसमें एक शिखर निकाल दे और अन्दर एक घंटा रख दें? भले मर्द और भली औरतें विचारके क्षेत्रमें पड़नेवाली कोड़ोंकी मारसे तंग आ गये हैं। जंजीरों और बेड़ियोंकी यादसे उनके रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वे स्वयं स्वतन्त्र हैं और दूसरोंको स्वतन्त्रता देते हैं। जो कोई अपने लिये किसी ऐसे अधिकारको चाहता है जो वह दूसरोंको देनेके लिये तैयार नहीं, वह बे-ईमान है, दुष्ट है।

पुराने समयमें हमारे पूर्वज समझते थे कि वे लोगोंको जैसे चाहें वैसे विचारोंका बना सकते हैं। वे मानते थे कि जोर जबर्दस्तीसे किसीसे कोई भी बात मनवाई जा सकती है। आप अत्याचार अथवा सामाजिक बहिष्कार-द्वारा किसीके दिमागको नहीं बदल सकते। लेकिन मैं बताऊँगा कि आप इन उपायोंद्वारा क्या कर सकते हैं और आपने क्या किया है। आप लाखों करोड़ों आदमियोंको ढोंगी बना सकते हैं। एक आदमीसे यह कहलवा सकते हैं कि उसने अपने विचार बदल लिये हैं, किन्तु उसके विचार पूर्व-वत् रहते हैं। उसे बेड़ियोंसे जकड़ दो, उसके पैरोंको लोहेके बूटोंसे कुचल दो, चाहो तो उसे जला डालो, किन्तु उसकी राख उन्हीं विचारोंकी रहेगी।

अपने पूर्वजोंके बारेमें जो मैं सबसे अच्छी बात कह सकता हूँ वह यह है कि वे अब नहीं रहे। उन अच्छे दिनोंमें हमारे पूर्वज सोचते थे कि वे जैसा चाहें वैसा सोचनेके लिये लोगोंको मजबूर कर सकते हैं। यह विचार दुनिया-के बहुतसे हिस्सोंमें अब भी प्रचलित है—इस देशमें भी। हमारे जमानेमें भी

कुछ अत्यधिक धार्मिक आदमी कहते हैं: "हम उस आदमीके साथ व्यापार नहीं करेंगे; उसको अपना मत नहीं देंगे; उसे अपना वकील नहीं बनायेंगे, यदि वह डाकटर है, तो उसकी दवा खानेसे पहले मर जायेंगे; उसे सहभोजमें नहीं बुलायेंगे; उसका सामाजिक बहिष्कार करेंगे; उसे हमारे गिर्जेमें आना चाहिये; हमारे सिद्धान्तोंको मानना चाहिये; हमारे देवताकी पूजा करनी चाहिये; नहीं तो हम किसी भी तरह उसके भरण-पोषणमें सहायक नहीं होंगे।"

पुराने समयमे वे चाहते थे कि सब आदमी एकदम एक तरह सोचें। संसारकी सारी मशीनसम्बन्धी चातुरी दो घड़ियोंको एकदम एक तरहसे नहीं चला सकती। आप करोड़ों आदमियोंको जिनके दिमाग भिन्न हैं, प्रवृत्तियाँ भिन्न हैं, शिक्षा भिन्न है, आकाक्षायें भिन्न हैं, परिस्थितियाँ भिन्न हैं, जिनमेंसे हरेक जीवित रागात्मक चमड़ीकी वर्दी पहने है—एक तरह सोचने और महसूस करने पर कैसे मजबूर कर सकते हैं? यदि कोई अनन्त ईश्वर है जिसने हमें बनाया है और जो यह चाहता है कि हम एक ही तरह सोचें, तो उसने एक आदमीको तो चम्मच-भर दिमाग और दूसरेको शानदार दिमागी प्रतिभा क्यों दी है? यदि यही उद्देश्य था कि सभी लोग समान रूपसे सोचें और महसूस करे, तो लोगोंकी बुद्धिमें इतना अन्तर क्यों है?— धर्मोंकी कट्टरतासे लेकर प्रतिभा तक।

मैं पुस्तकोंमे पढ़ता था कि हमारे पूर्वजोंने मानवताको किस प्रकार त्रास दिया। मुझे यह कभी अच्छा नहीं लगा। मैंने यह सब पढ़ा, किन्तु इसने कभी मेरे भीतर प्रवेश नहीं किया। वास्तवमें मज़हबके नामपर किये गये अत्याचारोंको मैंने तब तक गम्भीरतापूर्वक नहीं लिया जब तक मेरे सामने ईसाइयो-द्वारा प्रयुक्त लौह-प्रमाण नहीं आये। मैंने अँगूठोंको दबानेवाले 'स्क्रयू' देखे। जब किसीने या तो बप्तिस्मेके सामर्थ्यसे इनकार किया, अथवा यही कहा कि मै यह नहीं मानता कि कभी किसी आदमीको डूबनेसे बचानेके लिये, मछली निगल गई, तो वे उसके अँगूठेको इन दोनों लोहेके 'स्क्रयू' के बीचमें रख देते थे और प्रेम तथा सार्वभौम क्षमाके नामपर उन्हें कसना आरम्भ करते थे। जब यह किया जाता

था तो अधिकांश आदमी कह उठते थे — मैं पश्चात्ताप करूँगा। शायद मैं भी यही कहता। मैं भी कह उठता—"बन्द करो। जो तुम चाहोगे मैं उसे स्वीकार कर लूँगा। मैं मान लूँगा कि एक ईश्वर है, अथवा दस लाख हैं, एक नरक है अथवा एक अरब नरक। पर इसे बन्द करो।"

लेकिन बीच बीचमें, कभी कभी, कोई एक ऐसा मर्द आ गया है, जो अपनी बातसे एक बाल-भर भी पीछे नहीं हटा। बीच बीचमें कभी कोई ऐसी ऊँची-आत्मा रही है जिसे अपनी मानताके लिये प्राणोंका भी मोह नहीं रहा है। यदि ऐसे आदमी न हुए होते तो आज हम सब जंगली अवस्थामें होते। यदि प्रत्येक युगमें ऐसी कुछ वीर-आत्मायें न हुई होतीं, तो हम अभीतक आदम-खोर अवस्थामें होते, हमारे शरीरपर जंगली जानवरोंके चित्र खुदे रहते और हम किसी मृत सर्पके गिर्द नाचते होते।

विरोध, घृणा और मृत्युके बावजूद जो लोग इस शानसे, इस अभिमानसे अपने विश्वासोंपर दृढ़ता-पूर्वक अड़े रहे, उनके प्रति हम कृतज्ञता व्यक्त करें।

हमारे उन पूर्वजोंके मनमें वीरता किसी प्रकारके आदरकी भावना उत्पन्न नहीं करती थी। जो आदमी पश्चात्ताप प्रदर्शित नहीं करता था वह क्षमा नहीं किया जाता था। वे वेदनाकी पराकाष्ठा तक उस 'स्क्रयू' को कसते थे; और बादमें उसे किसी अन्धेरे कारागारमें डाल देते थे जहाँ वह दिल दहला देनेवाली शान्तिके बीच तड़प तड़प कर मर जाता। यह प्रेमके नामपर किया जाता, दयाके नामपर किया जाता, दयालु ईसाके नामपर किया जाता।

मैंने वह चीज भी देखी है, जिसे यन्त्रणाका कालर कहा जाता है। एक लोहेके चक्रकी कल्पना कीजिये, जिसके अन्दरकी ओर सुईकी नोक जैसी तीखी लगभग एक सौ सुइयाँ लगी हो। यह लोहेका चक्र अभियुक्तके गलेमें बाँध दिया जाता था। तब वह इन सुइयोंसे बिना अपनी गर्दन छिदाये न चल सकता था, न बैठा रह सकता था और न हिल-डोल ही सकता था। थोड़ी देरमें गला सूज जाता और दम घुटनेसे उस आदमीकी वेदनाका अन्त हो जाता। इस आदमीने बहुत सम्भव है रोते हुए यह कहनेका अपराध किया हो कि "मै यह नहीं मानता कि हम सबका पिता परमात्मा अपने किसी भी बच्चेको अनन्त कालके लिये रसातल भेज देगा।"

मैंने एक दूसरा चक्र देखा है जिसे ‘ भंगीकी लड़की ’ कहा गया है। घास काटनेकी एक बडी कैंचीकी कल्पना कीजिये। उसके हत्थे न केवल ठीक जगह बल्कि कैंचीके सिरोपर भी रहते हैं। जिस जगह कैंचीके दोनों चाकू एक दूसरेपर रहते हैं, उस जगह लोहेका एक चक्कर रहता है। ऊपरके हत्थोंमें हाथ फँसा दिये जायेंगे, नीचेके हत्थेमें पाँव और लोहेके चक्करमें सिर धकेल दिया जायगा। फिर उसे मुँहके बल औंधा जमीनपर गिरा दिया जायगा। उसके स्नायुओंपर इतना अधिक जोर पड़ेगा कि वह पागल हो जायगा।

यह सब उन सज्जनोंद्वारा किया गया जिनका कहना था, “ जो तुम्हारे एक गालपर चपत लगाता है, उसके सामने दूसरा भी कर दो। ”

मैंने एक रैक देखा है। यह एक बक्सेकी तरह होता है। दोनो ओर दो चर्खीयाँ रहती हैं। उन चर्खियोपर जज़ीर कुछ अपराधीके घुटनोसे बाँध दी गई, कुछ उसकी कलाइयोंसे। और तब ये पादरी, ये सन्त, इन चर्खियोको घुमाना आरंभ करते और घुमाते रहते, घुमाते रहते, तब तक घुमाते रहते जब तक अपराधीके घुटने, घुटनोके जोड़, कमर, कन्धे, कोहनियाँ और कलाइयाँ—सब टूट टूट न जातीं। और वे अपने पास एक डाकटरको खडा रखते कि वह नब्ज़ देखता रहे। किस लिये? उसका जीवन बचानेके लिये? हॉ। दया करके? नहीं; केवल इस लिये कि वे एक बार फिर उस चर्खीको घुमा सके!

याद रहे, यह सब कुछ सभ्यताके नामपर, कानून और अमनके नामपर, दयाके नामपर, धर्मके नामपर किया गया है और किया गया है अत्यन्त दयालु ईसा-मसीहके नामपर।

कभी कभी जब मैं इन भयानक बातोंके बारेमें पढता और सोचता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि मैने ये सब यन्त्रणायें स्वयं भोगी हैं। मुझे कभी कभी ऐसा लगता है कि मानो मैं जलावतनीके तटपर खड़ा हूँ और ऑखोंमें आँसू भरकर अपनी जन्म-भूमिकी ओर देख रहा हूँ, मानो मेरी उँगलियोंपरसे नाखून उखाड़े गये हैं और उनमे सुइयाँ चुभोई गई हैं; मानो लोहेके बूटों-द्वारा मेरे पाँवका कचूमर निकाल दिया गया है; मानो मुझे कारागारमे लड

दिया गया है और मैं मरते समय अपनेको मुक्त करानेवाले पाँवोंकी आहट सुन रहा हूँ; मानो मैं फाँसीके तख्तेपर खड़ा हूँ और मेरी गर्दनपर चमकता हुआ कुल्हाड़ा पड़ने जा रहा है, मानो मुझे चर्खीसे कसा जा रहा है और ढोंगी पादरियोंके चेहरे मुझपर झुके हुए हैं; मानो मुझे अपने बीबी-बच्चोंसे दूर ले जाया जा रहा है, मुझे चौरस्तेपर ले जाकर जंजीरोंसे जकड़ दिया गया है; मानो मेरे चारों ओर लकड़ियाँ चुन दी गई हैं; मानो आगके शोलोंने मेरे अंग-प्रत्यंगपर चढ़कर मुझे अन्धा बना दिया है; और मानो घृणाके असंख्य हाथोंद्वारा मेरी राख हवामें उड़ा दी गई है। जब जब मुझे ऐसा लगता है, तब तब मैं शपथ खाता हूँ कि जब तक जीवित रहूँगा तब तक पुरुषों, स्त्रीयों और बच्चोंकी स्वतन्त्रता बनाये रखनेके लिये जो कुछ भी थोड़ा-बहुत मुझसे हो सकता है, करता रहूँगा।

यह प्रश्न है न्यायका, दयाका, ईमानदारीका और बौद्धिक-विकासका। यदि संसारमें कोई ऐसा आदमी है जो दूसरोंको ठीक वही अधिकार देनेके लिये तैयार नहीं जो वह अपने लिये चाहता है, तो वह उतनी ही मात्रामें मेरी अपेक्षा बर्बरताके अधिक समीप है। यह ईमानदारीका प्रश्न है। जो आदमी दूसरोंको वही बौद्धिक अधिकार देनेके लिये तैयार नहीं जो खुद अपने लिये चाहता है बेईमान है, स्वार्थी है, और अत्याचारी है।

जो किसी दूसरेको उसके ईमानदाराना विचारके लिये दोषी ठहराता है, उसका अपना दिमाग विकृत है। यह बौद्धिक-विकासका प्रश्न है।

कुछ समय पूर्व मैंने लगभग प्रत्येक मनुष्य-निर्मित चीज़के मॉडल देखे। मैंने सारे जल-शिल्पोंके मॉडल देखे—उस डोंगीसे लेकर आधुनिक जहाज़ तक। उस डोंगीमें जो लकड़ीमें खोद ली गई थी, हमारे पूर्वज—हमारे नंगे पूर्वज—बैठकर तैरते थे। हमारे वे पूर्वज जिनके दाँत दो दो इंचके थे और जिनकी खोपड़ीके पीछेका दिमाग केवल चम्मच-भर। मैंने आजके युद्ध-पोतोंके नमूने देखे जिनमें सैकड़ों तोपें और मीलों लम्बी पतवारें हैं। मैंने बड़े बड़े जहाज देखे जो न्यूयार्कके बन्दर-गाहसे सिर उठाते हैं और तीन तीन हजार मील तक प्रत्येक लहरकी गिनती करते हुए आगे बढ़ते हैं।

मैंने मनुष्य-निर्मित आयुधोंके नमूने देखे। एक लाठीसे लेकर आधुनिक तोपोंतकके। मैंने एक लाठी देखी जिसका उपयोग हमारा जंगली पूर्वज उस समय करता था जब वह गारमेंसे निकलकर अपने भोजनके लिये साँपका शिकार करता था। मैंने उस लाठीसे लेकर क्रुपद्वारा निर्मित तोपोंतकके नमूने देखे, जो अट्ठारह इंचके ठोस स्टीलमेंसे दो दो हजार पौंडके गोले फेंक सकती हैं।

मैंने कवच भी देखे। एक कछुवेकी खाल देखी जिसे हमारा वीर पूर्वज उस समय छातीपर बाँध लेता था जब अपने देशके लिये लड़ने जाता था। मैंने मध्यकालीन 'कवच' देखे जो तलवारकी नोक और बर्छीकी धारका मजाक उड़ाते थे। मैंने सिरसे पैर तक स्टील ओढ़े आधुनिक सैनिक देखे।

मैंने उसी समय उनके वाद्य-यन्त्र भी देखे; टॉम-टॉमसे लेकर आजके वाद्य-यन्त्र तक, जो हवाको स्वर-तालकी एकतासे खिला देते हैं।

मैंने उनके चित्र भी देखे; पीले गारेकी पोताईसे लेकर आजकी महान् कला कृतियों तक जो संसारके चित्रागारोंको सुशोभित करती हैं।

मैंने उनकी मूर्तियाँ भी देखी हैं; चार चार टाँगोवाले, आधे-दर्जन हाथों-वाले, कई कई नाकोंवाले, नाकोंकी दो दो तीन तीन पंक्तियोंवाले और एक छोटेसे घृणित दिमाग-विहीन सिरवाले भद्दे देवताओंसे लेकर आजकी संग-मरमरकी मूर्तियों तक, जिन्हे प्रतिभाने ऐसा व्यक्तित्व दे दिया है कि वे एकदम प्राणवान् प्रतीत होती हैं।

मैंने उनकी पुस्तकें देखीं; जगली पशुओंकी खालपर लिखी हुई, पत्तोंपर लिखी हुई, पेड़ोंकी छालोंपर लिखी हुई और आजकी बढ़िया पुस्तकें भी, जो हमारे पुस्तकालयोंको सजाती हैं। जब मैं पुस्तकालयोंकी चर्चा करता हूँ तो मुझे प्लैटोका कथन याद आता है, "जिस घरमें एक पुस्तकालय है, उसमे आत्माका निवास है।"

मैंने उनके खेतीके औजार देखे; एक टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ीसे लेकर जिसमें बँटे हुए घाससे बैलका सींग बँधा था आजके खेतीके औज़ारों तक, जिनसे कोई भी आदमी बिना 'गँवार' रहे भूमि जोत-बो सकता है।

इन सब चीजोको देख कर मुझे यह मानना पड़ा कि मानवने उसी मात्रामें प्रगति की है, जिस मात्रामें उसने विचार को श्रमके साथ मिलाया है, जिस मात्रामे प्राकृतिक शक्तियोंके साथ सहयोग किया है, जिस मात्रामें अपनी परिस्थितिसे लाभ उठाना सीखा है, जिस मात्रामें अपने आपको भयके बन्धनसे मुक्त किया है, जिस मात्रामें आत्म-निर्भर हुआ है और जिस मात्रामे उसने देवताओंपर विश्वास करना छोड़ा है।

मैंने मानव-खोपड़ियोंकी एक पंक्ति भी देखी—निम्नतम खोपड़ियों अर्थात् मध्य अफरीकाके, आस्ट्रेलियाके, प्रशान्त महासागरके सुदूर द्वीपोंके जंगली लोगोंकी खोपड़ियोंसे लेकर गत पीढ़ी तककी श्रेष्ठतम खोपड़ियाँ मैंने देखीं। उन खोपड़ियोंमें उतना ही अन्तर है जितना उन खोपड़ियोंसे उत्पन्न पदार्थोंमें। मैंने अपने आपसे कहा—आखिर यह मानसिक-विकासका सीधा सादा प्रश्न है। उन खोपड़ियोंमें, उन निम्नतम और श्रेष्ठतम खोपड़ियोंमें वही अन्तर था जो उस डोंगी तथा युद्ध-पोतमें, लाठी और क्रुपकी तोपमें, पीले-धब्बों और सुन्दर चित्रोंमें, टॉम टॉम और आधुनिक वाद्य-यन्त्रोंमें।

इस पंक्तिमें पहली और निम्नतक खोपड़ी वह अन्धेरी गुफा थी जिसमें मानवकी निम्नस्तरकी सहज कमीनी प्रवृत्तियाँ रेंगकर चलती थीं, और अन्तिम खोपड़ी वह मन्दिर जिसमें प्रसन्नता, स्वतन्त्रता और प्रेमका निवास था।

यह सारा प्रश्न दिमागका है, मानसिक-विकासका।

यदि हम अपने पूर्वजोंकी अपेक्षा अधिक स्वतन्त्र हैं, तो इसका कारण यही है कि आज हममेंसे हर सामान्य आदमीकी गर्दनपर अच्छा सिर है और उसमें अधिक अच्छा दिमाग है।

अब मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझसे ईमानदारीकी बात करें। मै क्या मानता हूँ अथवा मैं क्या सिद्ध करना चाहता हूँ, इससे आपका कुछ आता-जाता नहीं। आप अपने आपको, कमसे कम इस थोड़ेसे समयके लिये ही सही, धार्मिक पक्ष-पातसे मुक्त कर दें।

थोड़ी देरके लिए मान लीजिए यदि उस समय कोई राजा रहा होता और कोई पादरी-पुरोहित रहा होता, जिस समय यह महाशय अपनी डोंगीमें इधर उधर तैरते थे और उन्होंने कहा होता --इस डोंगीसे बढ़कर डोंगी आदमी कभी नहीं बना सकता, इसका नमूना आकाशसे उतरा है, तूफान और बाढ़के ईश्वरके यहाँसे; और कोई भी आदमी, जो कहता है कि वह इसमें एक मस्तूल और एक पाल बाँधकर सुधार कर सकता है, तो वह नास्तिक है और उसे वध-स्थानपर जला दिया जायगा। यदि ऐसा होता तो आपकी आदरणीय सम्मतिमें इसका पृथ्वीके गिर्द घूम सकनेपर क्या प्रभाव पड़ा होता?

थोड़ी देरके लिये मान लीजिए, यदि उस समय कोई राजा रहा होता और कोई पादरी-पुरोहित भी रहा होता; और मैं मानता हूँ कि रहा होगा क्योंकि वह अन्धकार युग था; और इस राजा तथा पुरोहितने कहा होता,— इस टॉम टॉमसे बढ़कर संगीतकी बात आदमी कभी सोच ही नहीं सकता; स्वर्गमें इसी तरहका संगीत है; स्वर्णिम सूर्यास्तके समय रजत-वर्ण बादलोंमें बैठी हुई एक देवी इस वाद्यको बजा रही थी और वह इसके संगीतमें इतनी अधिक आत्म-विभोर हो गई कि वह उसके हाथसे नीचे गिर पड़ा, और इस प्रकार हमें मिला। यदि कोई आदमी कहता है कि इसमें किसी तरहका सुधार हो सकता है, तो वह नास्तिक है और उसे मृत्यु-दण्ड भुगतना होता। यदि ऐसा होता तो इसका संगीतपर क्या प्रभाव पड़ा होता? यदि इस मार्गसे चला गया होता, तो आपकी सम्मतिमें, क्या आदमीके कानोंको कभी बीथोवनके दैवी संगीतका परिचय प्राप्त हो सकता?

थोड़ी देरके लिये मान लो कि उस राजा तथा पुरोहितने कहा होता:— यह टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ी सर्वश्रेष्ठ हल है। इससे बढ़कर हलका आविष्कार नहीं हो सकता। इस हलका नमूना एक धार्मिक स्वप्नमें एक भक्त किसानको प्राप्त हुआ था। उसमें जो बँटी हुई घास है, वह बँटी हुई चीजोंमें सर्वश्रेष्ठ है। जो कहता है कि इस हलमें कुछ सुधार किया जा सकता है, वह अनीश्वरवादी है। आपकी सम्मतिमें इसका कृषि-विज्ञानपर क्या प्रभाव पड़ा होता?

लेकिन लोगोंने कहा और उनके साथ राजा तथा पादरी-पुरोहित बोले— हम अपने ईसाई भाइयोंकी हत्या करनेके लिये श्रेष्ठतर शस्त्र चाहते हैं, श्रेष्ठतर

हल चाहते हैं, श्रेष्ठतर संगीत, श्रेष्ठतर चित्र; और जो कोई भी हमें बढ़िया शस्त्र, बढ़िया संगीत, रहनेको बढ़िया घर और बढ़िया वस्त्र देगा, हम उसे धन और सम्मानसे लाद देंगे। हर आदमीको इन चीज़ोंमें सुधार करनेके लिये हर तरहसे उत्साहित किया गया। यही कारण है कि लाठी तोप बन गई, डोंगी समुद्री-जहाजमें बदल गई, मिट्टीके धब्बोंके चित्र बन गये; पत्थरके ऊबड़-खाबड़ टूटे-फूटे टुकड़े अन्तमें सुन्दर मूर्तियाँ बन गये।

आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि उस डोंगीवाले महाशयका, उस टॉम टॉमके संगीतमें मस्त हो जानेवाले महाशयका और टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ीसे हल जोतनेवाले महाशयका भी अपना एक धर्म था। डोंगीवाला अपने धर्मका कट्टर अनुयायी था। उसे कभी किसी सदेहने हैरान नहीं किया। वह निश्चिन्त जिया और निश्चिन्त ही मर गया। वह नरकमें विश्वास करता था और मानता था कि स्वर्गमें जाकर बहुत प्रसन्न हो सकेगा।

यह बड़े खेद और अफ़सोसकी बात है कि इन महाशयने बहुतसे बुद्धिमान् उत्तराधिकारियोंको जन्म दिया। यह भी प्रकृतिका एक बुरा स्वभाव है कि बुद्धिमानोंकी अपेक्षा मूर्खोंकी सख्या अधिक तेजीसे बढ़ती है। यह डोंगीवाले एक शैतानमें विश्वास करते थे और यह शैतान यदि ईश्वरके बराबर शक्तिशाली नहीं तो उससे थोड़ा चालाक अवश्य था। और आप जानते हैं कि पिछले छः हजार वर्षमें इस शैतानकी शक्लमें कुछ भी तो सुधार नहीं हुआ।

डोंगीवालेका विश्वास था कि ईश्वर अत्याचारी है। यदि कोई किसी आदर्शके अनुसार अपना जीवन व्यतीत करनेकी कोशिश करेगा, तो वह उसे अनन्त कालके लिये रसातल भेज देगा। उसका विश्वास था कि पृथ्वी चपटी है। वह आग और गंधकके दहकते हुए नरकको अक्षरशः सत्य मानता था। राजनीतिके बारेमें भी उसका अपना विचार था। उसका सिद्धान्त था, जिसकी लाठी उसकी भैंस। कदाचित् इस सिद्धान्तको उलटकर विश्वास करनेमें और यह माननेमें कि जो उचित है, वही शक्तिमान् हैं, संसारको सहस्रों वर्ष लग जायेंगे।

मैं आपसे उन महाशयके धर्म और उनके वाद्य-यंत्रमें भी उसी प्रकार सुधार करनेका अधिकार चाहता हूँ, जैसा कि उनकी राजनीति और उनकी डोंगीमें। मैं चाहता हूँ कि आदमीको सभी दिशाओंमें यह स्वतंत्रता रहे। हम विचार करें, अपने विचारोंको प्रकट करे, खोज करनेवाले बनें, अनुयायी नहीं, रेंकनेवाले नहीं। यदि स्वर्गमें कोई अनन्त ईश्वर है, तो वह कायरों और ढोंगियोंकी पूजासे कभी प्रसन्न नहीं होगा। ईमानदाराना अविश्वास, ईमानदारीकी नास्तिकता, और ईमानदारीका अनीश्वरवाद स्वर्गको सुंगधिसे भर देगा जब कि पवित्र ढोंगसे—चाहे वह बाहरसे कितना ही धार्मिक क्यों न प्रतीत हो—सड़ाँध पैदा होगी।

जो अधिकार तुम अपने लिये चाहते हो वह सबको दो। अपने दिमागपर प्रकृतिका प्रभाव पड़ने दो। नये विचारोंका स्वागत करो। आओ, हम प्रगति करें।

आजका धार्मिक आदमी चाहता है कि उसके जीवनका जहाज कट्टरताके किनारेपर पड़ा रहे और धूपमें सूखता रहे। उसे पुराने मतोंके मस्तूलोंपर, पुरानी सम्मतियोंकी, पालोंके थपेड़ोंकी आवाज सुनते रहना अच्छा लगता है। उसे बार बार यह दोहराना अच्छा लगता है:—"मेरी सम्मतियोंको मत गड़बड़ाओ, मेरे दिमागको स्थिर रहने दो, यह अब बन चुका है। मैं नहीं चाहता कि इसमें किसी प्रकारकी नास्तिकताका प्रवेश हो। मुझे आगे जानेकी अपेक्षा पीछे जाना पसन्द है।"

जहाँतक मेरी बात है, मैं खुले समुद्रमें जाना चाहता हूँ। मैं वायु, लहरों और तारागणोंके साथ अपने भाग्यकी परीक्षा करना चाहता हूँ। मैं कट्टरताके किसी भी बन्दरगाहपर पड़े पड़े सड़ते रहनेकी अपेक्षा किसी भी तूफानकी शान और महानतामें विलीन हो जाना अधिक पसन्द करूँगा।

आखिर हम प्रत्येक-युगमें कुछ न कुछ उन्नति करते ही जाते हैं। इस समयके सबसे अधिक कट्टर लोग २०० वर्ष पहले नास्तिकताके अपराधमें जला दिये जाते। धर्मने भी ऐसा लगता है कि अपने बावजूद कुछ न कुछ उन्नति की ही है। यह विरोध और निंदा करता हुआ भी प्रगतिकी सेनाके पीछे पीछे

चला आ रहा है। यह अपना विरोध और निंदाका फासला बनाये रखनेके लिए मजबूर है। यदि धर्मने इतनी प्रगति न कर ली होती तो मैं आज अपने विचार न प्रकट कर सकता।

जो कुछ हो, आदमीने उसी मात्रामें प्रगति की है, जिस मात्रामें उसने अपने विचार और श्रमका सम्मिश्रण किया है। वायु और लहरोंपर अधिकार न होनेके कारण, समुद्रकी रहस्यमय गतिका न कुछके बराबर ज्ञान होनेके कारण पवित्र मिथ्याविश्वासी हैं। वही हाल खेतिहरका है, क्योंकि उसका वैभव एक ऐसी बातपर निर्भर करता है जो उसके अधिकारसे बाहर है। लेकिन जब मशीनका पहिया नहीं घूमता है तब कोई मिस्त्री अपने घुटने टेककर किसी दैवी शक्तिकी आशाके भरोसे बैठा नहीं रहता। वह जानता है कि इसका कुछ न कुछ कारण है। वह जानता है कि या तो कोई चीज बहुत बढ़ गई है, अथवा बहुत छोटी पड़ गई है; जिससे उसकी मशीनमें कुछ खराबी आ गई है। वह काममें जुट जाता है। यहाँ वहाँ किसी चीजको छोटा या बड़ा करता है और तबतक करता रहता है जबतक पहिया घूमने नहीं लगता। जिस मात्रामें मनुष्यने अपने आपको अपनी आसपासकी प्रकृतिकी गुलामीसे मुक्त किया है, जिस मात्रामें प्रकृतिकी बाधाओंपर अधिकार प्राप्त किया है, ठीक उसी मात्रामें उसने शारीरिक और मानसिक उन्नति की है। जब आदमी प्रगति करता है तो वह अपने अधिकारोंको अधिक महत्त्व देने लगता है। स्वतंत्रता एक बड़ी शानदार और महान् वस्तु बन जाती है। जब वह अपने अधिकारोंका मूल्य समझने लगता है, तब दूसरेके अधिकारोंका मूल्य समझना भी प्रारंभ करता है और जब सभी आदमी उन अधिकारोंको जिन्हें वह अपने लिए चाहते हैं दूसरोंको भी देने लगेंगे उस दिन यह संसार स्वर्ग हो जायगा।

कुछ वर्ष पहले लोगोंको राजाकी किसी बातपर आपत्ति करते डर लगता था, पादरी-पुरोहितकी किसी बातपर आपत्ति करते डर लगता था, किसी मतकी छान-बीन करते डर लगता था, किसी पुस्तकको अस्वीकार करते डर लगता था, मिथ्या सिद्धान्तकी निन्दा करते भी डर लगता था, तर्क करते डर लगता था, और विचार करते भी डर लगता था। धनके सामने वे जमीनपर रेंगने लग

जाते थे और पदवियोंके सामने एकदम कमीनेपनका व्यवहार करते थे। यह सब धीरे धीरे निश्चयात्मक रूपसे बदल रहा है। हम अब किसी आदमीके सामने केवल धनी होनेके कारण सिर नहीं झुकाते। हमारे पूर्वज सोनेके बछड़ेको पूजते थे। आजके अमरीका-वासीके बारेमें अधिकसे अधिक बुरी बात आप यह कह सकते हैं कि वह बछड़के सोनेकी पूजा करता है। बछड़ा तक इस भेदको देखने लग गया है।

अब किसी बड़े आदमीकी यह महत्त्वाकांक्षा नहीं होती कि वह राजा या महाराजा बने। अन्तिम नेपोलियन फ्रांसका सम्राट् होने मात्रसे संतुष्ट नहीं था। उसके सिरके गिर्द जो सोना लिपटा था उससे वह सतुष्ट नहीं था। वह चाहता था कि वह यह सिद्ध कर सके कि उसके सिरके भीतर भी कोई मूल्यवान् वस्तु है। इसलिये उसने ज्यूलियस सीज़रका जीवन-चरित्र लिखा, ताकि वह फ्रेंच एकैडमीका सदस्य बन सके। सम्राट्, राजा, और पोप अब अन्य लोगोंकी अपेक्षा ऊँचे नहीं प्रतीत होते। जरा सम्राट् विलियमको दार्श-निक हैकलके साथ खड़ा तो करो। राजा बड़े ऊँचे ऊँचे लोगोंद्वारा अभिषिक्त एक व्यक्ति होता है, जिसका सिर अधिकारके दैवी पेट्रौलसे अभिसिंचित किया जाता है। इस सम्राटकी हैकलसे तुलना करो जो कि इन मुकुटधारी बौने लोगोंके बीचमें बुद्धिके पर्वतकी तरह खड़ा है।

संसारने बुद्धि, प्रतिभा और हृदयकी पूजा करनी आरम कर दी है।
हमने प्रगति की है। हमने प्रत्येक दिव्य वीरतापूर्ण आत्मत्यागका, प्रत्येक शौर्य-पूर्ण कार्यका फल पाया है। हमें अपनी अगली पीढ़ीके हाथमें मशाल थमा देनेका प्रयत्न करना चाहिये, उसे थोड़ा और अधिक प्रज्वलित करके, उसे थोड़ा और अधिक प्रकाशित करके।

मुझे आश्चर्य होता है जब मैं सोचता हूँ कि हमारे पूर्वजोंने कितना कष्ट उठाया, जब मैं सोचता हूँ कि वे कितने अधिक समय तक गुलाम रहे, वे सिंहासनके सम्मुख और वेदिकाकी धूलमें कैसे रेंगते और लोटते रहे।

यह संसार कोई पिछले पचास वर्षमें ही आदमीके रहने योग्य नहीं बन गया है। १८०८ तक बर्तानियामें गुलामोंका व्यापार चलता रहा है। उस

समय तक न्यायके नामपर उसके न्यायाधीश और विश्वव्यापी प्रेमके नाम पर उसके पादरी-पुरोहित गुलामोंके व्यापारमें हिस्सा लेते रहे हैं। इसी वर्ष संयुक्तराज्य अमरीका और दूसरे उपनिवेशोंके बीच गुलामोंका व्यापार बन्द किया गया, किन्तु उसे भिन्न-भिन्न राज्योंके बीच सावधानी-पूर्वक चलता रहने दिया गया। १८३३ की २८ अगस्तको कहीं जाकर वर्तानियाने अपने उपनिवेशोंमें गुलामोंके व्यापारको बन्द किया, और १८६३ की पहली जनवरीको कहीं जाकर अब्राहम लिंकनने हमारी पताकाको उस आकाशकी तरह, जिसमें यह लहराती है, स्वच्छ बनाया।

मेरे विचारमें अब्राहम लिंकन सयुक्त राज्य अमरीकाके सभापतियोंमें सबसे बड़ा आदमी था। उसकी समाधिपर यह शब्द लिखे जाने चाहिए:—यहाँ मानव इतिहासका एक ऐसा आदमी सोता है जिसके हाथोंमे असीम अधिकार रहने पर भी, करुणाके पक्षके अतिरिक्त अपने अधिकारका जिसने कभी दुरुपयोग नही किया।

जरा सोचें कि हम कितने अधिक काल तक आदमियोंको गुलाम बनाकर रखनेकी प्रथासे चिपटे रहे, कितनी देर तक मजदूरको उसके श्रमके बदलेमें, उसकी पीठपर पड़नेवाले कोड़ोंके अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता रहा। जरा इस बातको भी सोचें कि इस देशकी धार्मिक वेदिका स्वेच्छासे और जान बूझकर लगभग सौ वर्ष तक ईसामसीहके क्रॉसको एक कोड़े लगानेका स्थान बनाये रही।

मैं अपने रक्तकी प्रत्येक बूँदसे हर प्रकारके अत्याचारको और हर प्रकारकी गुलामीको घृणाकी दृष्टिसे देखता हूँ। मुझे परतंत्रतासे घृणा है। मै स्वतन्त्रताको प्यार करता हूँ।

शारीरिक स्वतंत्रतासे मेरा मतलब है वह सब कुछ करनेका अधिकार जो किसी दूसरेके सुखमें बाधा नही पहुँचाता। मानसिक स्वतंत्रतासे मेरा मतलब है, सही तौरपर सोचनेका अधिकार और गलत तौरपर सोचनेका अधिकार। विचारद्वारा ही हम सत्यको प्राप्त कर सकते हैं। यदि हमे पहले ही सत्य प्राप्त, हो, तो हमे सोचनेकी आवश्यकता नहीं। एक ही चीजकी अपेक्षा की जा सकती

है और वह है ईमानदारी। आप किसी चीजके बारेमें मेरी सम्मति पूछते हैं। मैं ईमानदारीसे उसकी परीक्षा करता हूँ। जब मेरा निश्चित मत बन जाता है तब मुझे आपको क्या बताना चाहिए? मुझे क्या करना चाहिए? मेरे हाथमें एक किताब दी जाती है। मुझे बताया जाता है कि यह कुरान है और यह इलहामद्वारा लिखी गई है। मै इसे पढ़ता हूँ। मान लो, इसे समाप्त करनेपर मेरे दिल और दिमागको यह लगता है कि यह एकदम असत्य है। तब आप मुझसे पूछते हैं कि तुम क्या सोचते हो? अब मान लो कि मै तुर्किस्तानमे रहता हूँ और जब तक मैं कुरानका पक्ष न लूँ मुझे कहीं कोई नौकरी नहीं मिल सकती, तो मुझे क्या कहना चाहिए? क्या मुझे साफ साफ कह देना चाहिए कि मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं उसे नहीं मानता? तब यदि मेरे नगर-निवासी कहें कि यह आदमी बड़ा खतरनाक है, यह आदमी बड़ा बेईमान है, तो आप उनके बारेमें क्या सोचेंगे?

कल्पना कीजिये कि मैं बाइबल पढ़ना आरंभ करता हूँ। जब मैं इसे समाप्त करता हूँ तो मुझे पता लगता है कि यह आदमियोंकी लिखी हुई है। एक पादरी पूछता है—"क्या तुमने बाइबल पढी?" मैं उत्तर देता हूँ—"हाँ"। "क्या तुम समझते हो कि यह ईश्वर-वचन है?" मुझे क्या उत्तर देना चाहिये? क्या मुझे अपने मनमें यह सोचना चाहिये कि यदि मैं धर्म-ग्रन्थोंके ईश्वर वचन होनेसे इंकार करूँगा तो लोग मुझे कभी किसी पदपर प्रतिष्ठित न होने देंगे? मुझे क्या उत्तर देना चाहिये? क्या मुझे एक आदमीकी तरह यही नहीं कहना चाहिये कि मैंने इसे पढा है, मैं इसे नहीं मानता। क्या मुझे अपना वास्तविक विचार प्रकट नहीं करना चाहिये? अथवा मुझे एक ढोंगीकी तरह अपना विचार छिपाकर जो बात मुझे ठीक नहीं जँचती वह कहनी चाहिये; और बादमें ज़मीनपर रेंगनेवाले लोगोंमेसे एककी तरह व्यवहार करनेके कारण सदैव अपने आपसे घृणा करते रहना चाहिये? मैं तो यही चाहूँगा कि आदमी अपना ईमानदाराना विचार प्रकट कर दे और अपनी आदमीयतकी रक्षा करे। मैं एक नामर्द आस्तिक बननेकी अपेक्षा एक मर्द नास्तिक बनना हजार बार पसन्द करूँगा। और यदि कभी कहीं कोई न्याय-दिवस होगा, जिस दिन सभी लोग किसी ईश्वरके सम्मुख खड़े होंगे, तो मेरा विश्वास है कि मै उन लोगोंसे ऊँचा खड़ा हो सकूँगा

और अधिक सम्भावना यही है कि न्याय मेरे ही पक्षमें होगा, जो जीवन-भर रेंग कर चलते रहे हैं और जो झूठ-मूठ किसी बातमें विश्वास करनेकी बात कहते हैं।

मैंने अपना विचार प्रकट करनेका दृढ निश्चय कर लिया है। मैं नम्रतासे बोलूँगा, स्पष्टतासे बोलूँगा, किन्तु बोलूँगा अवश्य। मैं जानता हूँ कि हजारों ऐसे आदमी हैं जो बहुत कुछ मेरे ही जैसे विचार रखते हैं, किन्तु उनकी परिस्थिति उन्हें अपने विचार प्रकट करने नहीं देती। वे गरीब हैं, वे अपना पेट भरनेमे लगे है, और वे जानते हैं कि यदि वे अपने विचारोंको जैसाका तैसा प्रकट करेंगे तो लोग उन्हें किसी प्रकारका संरक्षण नहीं देंगे, उनके साथ किसी प्रकारका व्यापार नहीं करेंगे। वे अपने छोटे बच्चोके लिये भोजन चाहते हैं, उन्हें अपनी पत्नियोंकी चिन्ता है, वे अपनी घर-गृहस्थीका और जीवनका सुख चाहते हैं। प्रत्येक ऐसा आदमी जिस समाजमें वह रहता है, उस समाजके कमीनेपनका प्रमाण-पत्र है। यह सब होने पर भी मै इन लोगोंको अपना विचार प्रकट न कर सकनेके लिये दोषी नहीं ठहराता। मै उन्हें कहता हूँ; अपने विचार अपने मनमें रखो, जिन्हें तुम प्यार करते हो उन्हें खिलाओ, पहनाओ, मैं तुम्हारी ओरसे तुम्हारी बात करूँगा। पादरी-पुरोहित मुझे भूखा नहीं मार सकते, मुझे पीस नहीं सकते, मुझे रोक नहीं सकते। मै तुम्हारे विचारोंको प्रकट करूँगा।

अत्याचारके लिए एक बहानेबाजी कहो, अथवा गुलामीका औचित्य सिद्ध करनेका एक प्रयत्न कहो, पादरी-पुरोहितोंने यह सिखाया है कि आदमी स्वभावसे ही एकदम पापी है। इस सिद्धान्तकी सत्यताका एक मात्र प्रमाण शायद वे स्वयं हैं। सच्ची बात यह है कि हम भले भी हैं और बुरे भी हैं। जो हममें सबसे अधिक बुरे हैं वे भी कुछ अच्छे काम कर सकते हैं, और जो सर्वश्रेष्ठ हैं उनसे भी बुराई हो सकती है। नीच प्राणी भी ऊपर उठ सकता है, और ऊँचेसे ऊँचा नीचे गिर सकता है। यह एक सफेद झूठ है कि मनुष्य जाति दो बड़े वर्गोंमें बँट सकती है—पापियों और पुण्यात्माओंमें। भयानक आपत्तियोंके समय निराश स्त्रियोंके आवाहनपर पादरी-पुरोहितो-द्वारा, निन्दनीय घोषित किये गये आदमी मृत्युकी ओर ऐसे अग्रसर हुए हैं

जैसे किसी जीवन-पर्वकी ओर। इस तरहके आदमियोंके द्वारा ऐसे वीरतापूर्ण आत्म-बलिदानके कार्य होते हैं कि लाखो आदमी न केवल ' जय जयकार ' करते हैं, किन्तु आँसुओसे उनकी पूजा करते हैं। अन्तमें सब मतो और सब धर्मोंसे ऊँची वह दिव्य वस्तु है, जिसका नाम है मानवता।

ऐसे मतों, ऐसी पुस्तकों, ऐसे कानूनों और ऐसे धर्मोंको दूर फेंक दो, हमेशाके लिए दूर फेंक दो, जो आदमीसे उसकी स्वतंत्रता और बुद्धिका अपहरण करते हैं। विचारोंको खतरनाक समझनेके विचारको पैरोंके नीचे मसल डालो। आदमी आदमीका मालिक बन सकता है, इस दुष्ट सिद्धान्तको जमीनमे गाड दो। आओ, हम अपने दिमागोंपर प्रतिबन्ध लगानेके हर प्रयत्नका जोरसे विरोध करें। यदि कोई ईश्वर नहीं है, तो निश्चयसे उसके सामने झुकना और रेंगना नहीं चाहिए और यदि कही कोई ईश्वर है, तो कहीं कोई गुलाम नहीं रहना चाहिए।

स्त्रियोंकी स्वतंत्रता

स्त्रियाँ गुलामोंकी गुलाम रही हैं और मेरी सम्मतिमे निपट गुलामीकी अवस्थासे विवाहकी संस्थातक पहुँचनेमे लाखों वर्ष लगे होंगे। मैं विवाहको आदमियोंकी पवित्रतम संस्था मानता हूँ। बिना चूल्हेके मानव-प्रगति हो नहीं सकती, बिना पारिवारिक सम्बन्धोके कही कोई जीवन-सुख नहीं। अच्छे परिवारोंसे ही हर अच्छी सरकार बनती है। अच्छा परिवार ही किसी अच्छी सरकारकी मूल-भूत इकाई है, और कोई भी चीज़ जो परिवार-संस्थाको नष्ट करना चाहती है, वह एकदम शैतानकी कृति है। मैं विवाह-संस्थामें विश्वास करता हूँ, और मै उन लम्बे बालोंवाले पुरुषों तथा छोटे बालोंवाली स्त्रियोंकी सम्मतियोको घृणाकी दृष्टिसे देखता हूँ जो विवाहकी निन्दा करती हैं।

मेरी समझमे किसी भी आदमीकी बड़ीसे बड़ी महत्त्वाकांक्षा यही हो सकती है कि वह ऐसे रहे और अपने दिल और दिमागका ऐसा विकास करे कि किसी 'कल्याणी' के प्रेमका पात्र बन सके; और किसी लड़कीकी भी ऊँचीसे ऊँची आकांक्षा यही हो सकती है कि वह अपने आपको किसी शानके आदमीके प्रेम

और पूजाका पात्र बनाये। विवाह और प्रेमके बिना जीवनमें कहीं कुछ सफलता नहीं है। आप किसी एक कोमल हृदयके स्वामी बन जायँ और वह आपके हृदयकी स्वामिनी बन जाय, यह संसार-भरका राजा बननेसे कहीं अच्छा है। यदि एक पुरुषने किसी एक साध्वी स्त्रीके प्रेमको जीत लिया है, तो फिर मुझे इस बातकी चिन्ता नहीं कि वह एक भिखमंगेकी मौत मर जाता है। उसका जीवन सफल है।

मैं कह चुका हूँ कि निपट गुलामीकी अवस्थासे विवाहकी अवस्था तक पहुँचनेमें लाखों वर्ष लगे। देवियो, आप अपने बदनपर जो गहने पहने हैं वह आपकी माताओंके बन्धनोंकी यादगार हैं। आपकी गर्दनोंमें पड़ी हुई ज़ंजीरें और आपके बाजुओंपर बँधे हुए बाज़ूबन्द वे बन्धन हैं जिन्हे सभ्यताकी जादूकी छड़ीने लोहेसे चमकते हुए सोनेमें बदल दिया है।

लेकिन लगभग हर धर्मने दुनियाकी बुराईके लिये स्त्रीको ही दोषी ठहराया है। क्या शानकी बात है यह ! यदि यह सत्य हो, तो मै केवल पुरुषोंके साथ स्वर्गमें रहनेकी अपेक्षा इस दुःख-भरे संसारमें किसी ऐसी स्त्रीके साथ जिसे प्यार करता हूँ रहना अधिक पसन्द करूँगा।

मैं एक किताबमें पढ़ता हूँ—मैं उसके शब्द नहीं दोहरा सकता, किन्तु भावार्थ मुझे याद है—ईश्वरने संसार और एक पुरुष बनानेका विचार किया। उसने 'न कुछ' लिया और उससे ससार तथा एक पुरुष बनाया। इस पुरुषको उसने एक बागमें रखा। थोड़ी ही देरमे देखा गया कि उसे अकेलापन हैरान करने लगा; वह इस प्रकार इधरसे उधर चक्कर काटता था मानो किसी गाड़ीके लिये प्रतीक्षा कर रहा हो। उसके मनोरंजनका वहाँ कुछ सामान न था—समाचारपत्र तक नहीं। इस प्रकार वह उस बागमें भटकता रहा। अन्तमें ईश्वरने उसे एक साथी दिया।

जिस 'कुछ नहीं' से उसने संसार और एक पुरुष बनाया वह तो समाप्त हो चुकी थी, इस लिये उसने स्त्री बनानेके लिये पुरुषमेंसे कुछ हिस्सा लिया। उसने उस पुरुषको सुला दिया। जब वह सो गया तो उसने उसकी एक पसली ली और उससे एक स्त्री बनाई। जब मैं इस बातका विचार

करता हूँ कि ईश्वरने कितने थोड़े कच्चे सामानसे उसकी रचना की, तो मुझे यह एक सचमुच अत्यन्त अद्भुत रचना मालूम देती है। जब स्त्री तैयार हो गई, तो वह पुरुषके पास लाई गई। इस लिये नहीं कि वह देखे कि वह पुरुषको पसन्द करती है या नहीं, किन्तु इस लिये कि पुरुष देखे कि वह स्त्रीको पसन्द करता है या नहीं। उसे वह अच्छी लगी। दोनोंने घर बसाया, उन्हें कहा गया कि वे कुछ काम कर सकते हैं और एक काम करनेसे उन्हें मना किया गया। लेकिन वह उन्होंने किया ही। मै जानता हूँ कि मैं भी उसे पन्द्रह मिनटमें कर सकता था। उन्हें बागसे निकाल दिया गया और चौकीदारोंको आज्ञा हुई कि उन्हें फिर बागमें न घुसने दें।

दुःख-दर्दका आरंभ हुआ। चेचक, खाँसी और बुखारने आदमी तक पहुँचनेके लिए दौड़ लगानी शुरू की। लोगोंके दाँतोंमें दर्द होने लगा, गुलाबके फूलोंमें काँटे उगने लगे, साँपोंके दाँत विषैले हो गये। लोगोंमें धर्म और राजनीतिके झगड़े होने लगे; और उस दिनसे आजतक संसारमें दुःख ही दुःख चला आ रहा है।

संसारके लगभग सभी धर्म किसी ऐसी ही कथाके द्वारा दुःखकी व्याख्या करते हैं।

एक दूसरी किताबमें भी मै इसी परिवर्तनका हाल पढ़ता हूँ। यह पहली किताबसे लगभग चार हजार वर्ष पहले लिखी गई थी। जितने टीकाकार हैं सभीका कहना है कि जो किताब पीछे लिखी गई वही मूल है और जो पहले लिखी गई वह पीछे लिखी-गईकी नकल है! लेकिन मैं चाहूँगा कि आप इस चार पाँच हजार वर्षकी मामूली-सी बातसे अपने मतको गड़बड़ न होने दें। इस दूसरी कथाके अनुसार ब्रह्माने संसार, एक पुरुष और एक स्त्री बनानेका निश्चय किया। उसने संसारकी रचना की, और पुरुष और स्त्रीको बनाकर सिंहल द्वीपमें रख दिया। इस वर्णनके अनुसार यह द्वीप इतना सुदर था, जितने सुदरसे सुंदर द्वीपकी आदमी कल्पना कर सकता है। ऐसे पक्षी, ऐसे गीत, ऐसे फूल, और ऐसी हरियाली!

उन दोनोंको उस द्वीपमें रखकर ब्रह्मा बोला—"उन्हें कुछ समय तक इकट्ठा रहने दो। क्यो कि मै चाहता हूँ कि विवाहसे पहले सच्चा प्रेम स्थापित हो।"

जब मैंने इस कथाको पढ़ा तो मुझे यह दूसरीकी अपेक्षा इतनी अधिक सुदर और अच्छी लगी कि मैंने अपने आपको कहा कि यदि इन दोनों कहानियोंमेंसे कभी कोई एक सत्य सिद्ध हो, तो मैं चाहूँगा कि यही कथा हो।

वे इकट्ठे रहे—कोकिलके गानके बीच, चमकते हुए तारोंके बीच, और खिले हुए फूलोंके बीच। उनमें परस्पर प्रेम हो गया। उस सहजीवनकी कल्पना करो। वहाँ कोई यह कहनेवाला नहीं था कि युवक, तू उसका पालन-पोषण कैसे करेगा? इस तरहकी कोई भी बात नहीं। ब्रह्माने उनका विवाह कर दिया और उन्हें हमेशा उसी द्वीपमें रहनेकी आज्ञा दी। कुछ समयके बाद आदमने हौवासे कहा—(यही उन दोनोंके नाम थे) मैं सोचता हूँ कि जरा घूम फिरकर आऊँ। वह उत्तरकी ओर गया। वहाँ उसने देखा कि द्वीपकी पतली-सी गर्दन मुख्य भूमिसे जुड़ी हुई है। शैतानने जो सदा हमें धोखा देता रहा है—ऐसा दृश्य उपस्थित किया कि उसने लौट कर हौवासे कहा "मुख्य-भूमि इससे हजार गुणा अधिक सुन्दर है। आओ, हम वहाँ चलें।" उसने सभी स्त्रियोंकी तरह कहा—"हमें जो कुछ चाहिये, वह हमारे लिये यहाँ पर्याप्त है। हम यहीं रहें।" लेकिन वह बोला—"हम चलें।" हौवाने उसका अनुकरण किया। जब वे द्वीपकी पतली गर्दनपर पहुँचे, उसने हौवाको, एक सज्जन आदमीकी तरह अपनी पीठपर उठाया और उस पार ले गया। ज्यों ही वे उधर गये उन्हें एक आवाज सुनाई दी। पीछे मुड़कर देखा तो द्वीपकी पहली गर्दन समुद्रमें गिर पड़ी थी। ब्रह्मा उन दोनोंको शाप देनेको तैयार हुआ।

उस समय पुरुष बोला—"उसे मत दो, मुझे शाप दो। यह उसका नहीं, मेरा अपराध था।"

इसी तरहके पुरुषसे संसारका आरम्भ होना चाहिये था।

ब्रह्माने कहा—"मैं उसे क्षमा कर दूँगा, किन्तु तुम्हें नहीं।" तब वह प्रेमसे गद्गद् होकर बोली—"यदि तुम उसे क्षमा नहीं कर सकते, तो मैं भी क्षमा नहीं चाहती। मैं उसके बिना जीना नहीं चाहती। मैं उसे प्रेम करती हूँ।"

तब ब्रह्माने कहा—" मैं तुम दोनोंको अभय-दान देता हूँ। अबसे मैं तुम्हारी और तुम्हारे बच्चोंकी रक्षा करूँगा। "

तबसे मुझे यह ब्रह्मा बहुत अच्छा लगता है। क्या यह कथा पहली कथाकी अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ और शानदार नहीं है ?

और उसी पुस्तकसे मैं तुम्हें यह दिखाना चाहता हूँ कि इन दयनीय विधर्मियोंमेंसे—जिन्हें हम अपने धर्ममें लानेका प्रयत्न करते हैं—कुछके क्या विचार रहे हैं। हम वहाँ उन विधर्मियोंके धर्म-परिवर्तनके लिए धर्मप्रचारक भेजते हैं और यहाँके विधर्मियोंको मारनेके लिए सैनिक भेजते हैं। यदि हम विधर्मियोंका धर्म परिवर्तन कर सकते हैं तो उनका धर्म परिवर्तन क्यो न करें जो घरसे समीपतम हैं ? लेकिन मै तुम्हें उन विधर्मियोंके विचार दिखाने जा रहा था जिनका हम धर्म परिवर्तन करना चाहते हैं। इस पुस्तकमें कहा गया है—" पुरुष शक्ति है, स्त्री सौंदर्य है; पुरुष साहस है, स्त्री प्रेम है। जब पुरुष स्त्रीसे और स्त्री पुरुषसे प्रेम करती है तो देवता स्वर्ग छोड़कर उस घरमें आ बैठते हैं और आनन्दके गीत गाने लगते हैं। "

यह वे आदमी हैं जिनका हम धर्म परिवर्तन करना चाहते हैं। आप जरा इसपर विचार करें। मैं कहता हूँ कि जब मै ये बाते पढता हूँ तो मुझे लगता है कि प्रेम किसी देश-विशेषकी बपौती नहीं है; श्रेष्ठता किसी एक ही जातिमें सीमित नहीं रहती, और सभी युगोंमें प्रेम तथा दयामें खिलनेवाली कुछ महान् आत्मायें हुई हैं।

मेरे विचारमें औरतका दर्जा मर्दके बराबर है। उसके वे सभी अधिकार हैं जो मेरे हैं बल्कि एक अधिक, और वह है सुरक्षाका अधिकार। यही मेरा सिद्धान्त है। यदि तुम विवाहित हो, तो जिस औरतको तुम प्यार करते हो उसे सुखी रखनेका प्रयत्न करो। जो कोई अपने लिये विवाह करता है; और औरतको इतना प्यार करता है कि वह कहता है कि मैं उसे सुखी बनाऊँगा, तो कोई गलती नहीं करता। यही बात उस औरतकी है जो यह कहती है कि मैं उसे सुखी बनाऊँगी। सुखी बनानेका केवल एक ही तरीका है, और वह यह कि किसी दूसरेको सुखी बनाया जाय।

यदि मुझे किसी आदमीसे घृणा है तो वह उस आदमीसे जो कहता है कि मै परिवारका मुखिया हूँ, जो सोचता है कि मैं मालिक हूँ।

एक युवक और एक युवतीकी कल्पना करो। चन्द्रमाके प्रकाशमे साथ साथ चले जा रहे हैं। कोयल प्रेम और पीड़ाके गीत गा रही है, मानो उसके हृदयमें काँटा चुभा हो। कल्पना करो, उन दोनोंके उस चन्द्रमाकी छायामें, उन तारोंकी छायामें, उन गीतोंके बीच रुककर खड़े हो जानेकी और यह कहनेकी कि हम दोनों यहाँ यह फैसला कर लें कि मालिक कौन है। मैं कहता हूँ कि यह एक बदनाम शब्द है और यह एक अत्यन्त बुरी भावना है। मुझे उस आदमीसे घृणा है जो अपनेको मालिक समझता है, जो अपने परिवारपर शासन करना चाहता है, और जिसके बोलते समय सबको साँस रोककर चुपचाप बैठे रहना पड़ता है मानो उसके मुँहसे मोती झरनेवाले हों। मैं तुम्हें कहता हूँ कि मुझे ऐसे आदमीसे अकथनीय घृणा है।

मुझे सबसे अधिक एक मनहूस शकलवाले आदमीसे घृणा है। उसे दिनकी प्रसन्नताकी हत्या करनेका क्या अधिकार है? उसे जीवनके आनन्दको नष्ट करनेका क्या अधिकार है? जब तुम घर जाओ तो तुम्हें एक प्रकाशकी किरणकी तरह जाना चाहिए ताकि वह रात्रिके समय भी दरवाजों और खिड़कियोंसे निकलकर अँधेरेको प्रकाशमे परिणत कर दे। कुछ आदमी सोचते हैं कि वे दिनभर बहुत बडी बड़ी बातोंका विचार करते रहे हैं और इसलिए जब वे घर जाये तो हर किसीको उनके आरामकी चिन्ता करनी चाहिये। एक औरत जो पॉच या छह बच्चोंकी देख-भाल लालन-पालन करती रही है जिनमें एक-दो बीमार हैं, गा-गाकर उनका मन बहलाती रही है, एक गज कपड़ेसे दो गज कपड़ेका काम चलाती रही है और प्रसन्न वदन, इन महाशयके स्वागत और सेवा-शुश्रूषाके लिये भी तैयार है—और यह परिवारके मुखिया हैं मालिक हैं!

तुम दूसरी बात जानते हो? मैं एक कंजूस आदमीसे घृणा करता हूँ। यह बात मेरी समझमें नहीं आती कि एक ऐसे नगरमें जहाँ आदमीके सामने प्रतिदिन भिखारीका सूखा हाथ और अकाल पीड़ितके सफेद ओठ विद्यमान रहते हैं, कोई भी आदमी पाँच या दस करोड़ रुपये छोड़कर कैसे मर सकता

है ? मैं सोच नहीं सकता कि कोई भी आदमी यह सब कैसे सहन कर सकता है और अपने लालचकी मुट्ठीमें दो-चार करोड़ रुपयोंको कैसे बंद रख सकता है ? मेरी समझमे ही नहीं आता है कि वह यह सब कैसे कर सकता है। यह ऐसा ही है कि हजारों आदमी समुद्रमें डूब रहे हों और कोई एक आदमी लकड़ीके तख्तोंका बड़ा भारी ढेर लिए किनारेपर बैठा रहे।

क्या तुम जानते हो कि मैं कुछ ऐसे आदमियोंसे परिचित हूँ जो अपने दिल और सम्मानके बारेमें तो अपनी स्त्रियोंका विश्वास करेंगे किन्तु अपने बटुएके बारेमें नहीं। जब मैं किसी ऐसे आदमीको देखता हूँ तो मैं हमेशा सोचता हूँ कि यह आदमी जानता है कि इन चीजोंमें अधिक मूल्यवान् कौन है। जरा अपनी स्त्रीको एक भिखमंगिन बनानेकी बातपर विचार करो! जरा सोचो कि उसे तुमसे प्रतिदिन एक अठन्नी, एक या दो रुपये, माँगने पड़ते हैं। "पिछले सप्ताह जो एक रुपया मैंने तुम्हें दिया था उसका क्या किया ?" जरा ऐसी स्त्रीकी बात सोचो जो तुमसे डरती ही रहती है। यदि माँ ही भिखमगिन और कायर होगी, तो उससे तुम कैसे बच्चोंकी आशा कर सकते हो ? अरे, मैं कहता हूँ यदि तुम्हारे पास केवल एक ही रुपया हो और तुम्हें उसे खर्च करना हो तो उसे एक राजाकी भाँति खर्च करो, मानो वह एक सूखा पत्ता है और तुम असीम जंगलके स्वामी। उसे खर्च करनेका यही तरीका है। एक राजा होकर अपना पैसा एक भिखमगेकी तरह खर्च करनेकी अपेक्षा मैं यह पसंद करूँगा कि मै एक भिखमगा होऊँ और अपना पैसा एक राजाकी तरह खर्च करूँ। यदि पैसेको खर्च होना है तो उसे होने दो।

अपने परिवारके लिये जो कुछ तुम अधिकसे अधिक कर सकते हो करो। प्रयत्न करो कि तुम अधिकसे अधिक चुस्त दिखाई दो। जब विवाहसे पहले तुम दोनो मिलते थे तो तुम कितने फुर्तीले थे। तुम्हारी आँखोंमें चमक थी, तुम्हारे पैर फुर्तीसे उठते थे और तुम एक राजकुमार प्रतीत होते थे। क्या तुम जानते तो कि यह अहंमन्यताकी सीमा है कि तुम यह समझते रहो कि कोई औरत तुमसे हमेशा प्यार करती रहेगी, चाहे तुम कैसी ही मनहूस शकल बनाये रहो। जरा इस बातपर विचार करो। यदि तुम अपनी ओरसे कसर नहीं रखोगे तो पृथ्वीकी कोई भी औरत तुम्हारे प्रति सदैव ईमानदार रहेगी।

कुछ आदमी कहते हैं कि औरतों और ऐसी ही सब बातोंके संबंधमें तुम्हारा सिद्धान्त अमीरोंके लिए बहुत अच्छा है किन्तु गरीबोंके कामका नहीं। मैं आज आपको बताता हूँ कि अमीरोंके महलोकी अपेक्षा गरीबोंकी झोपड़ीमें अधिक प्रेम है। प्रेमभरी छोटीसे छोटी कुटिया वह महल है जो देवताओके निवास करनेके योग्य है और प्रेमरहित महल वह खोह है जिसमें जंगली पशु ही रह सकते हैं। यह है मेरा सिद्धान्त। तुम इतने गरीब हो ही नहीं सकते कि तुम किसीकी भी मदद न कर सको। अच्छे स्वभावसे बढकर संसारमें कोई दूसरा सस्ता पदार्थ नहीं; और प्रेम ही वह वस्तु है जिसके लेनेवालेको भी दस प्रतिशत लाभ होता है और देनेवालेको भी। मुझे यह मत बताओ कि तुम्हें अमीर बनना है। अमरीकामें बड़ाईका गलत मान-दंड स्थापित हो गया है। हम सोचते हैं कि एक आदमीको बड़ा होना चाहिये, उसे मशहूर होना चाहिये, उसे बहुत धनी होना चाहिये अथवा उसका नाम हर किसीकी जिह्वापर होना चाहिये। यह सब गलत बात है। प्रसन्न रहनेके लिए धनी होना, बड़ा बनना अथवा शक्तिशाली बनना आवश्यक नहीं। प्रसन्न आदमी ही सफल आदमी है।

प्रसन्नता आत्माका सिक्का है। प्रसन्नता धन है।

कुछ समय पूर्व मैं नेपोलियनकी कब्रके पास खड़ा था—किसी मृत देवताके योग्य वह सुनहरी और शानदार कब्र थी। मैं संगमरमरकी उस समाधिको देखता रहा जहाँ आखिरकार उस अशांत आदमीने मिट्टीमे शाति पाई। मैं उसपर झुक गया और आधुनिक युगके सबसे बड़े सैनिकके जीवनपर विचार करने लगा। मैंने उसे देखा, वह सीन नदीके तटपर टहल रहा है और आत्महत्या करनेकी बात सोच रहा है। मैंने उसे तुलानमें देखा—मैने उसे पैरिसके बाजारोंमें लोगोंकी भीड़को दबाते देखा—मैने उसे इटलीकी सेनाके नायकके रूपमें देखा—मैंने उसे हाथमें तिरंगा लिये लोदीका पुल पार करते देखा—मैंने उसे पाषाणस्तूप (पिरामिड) की छायामें मिस्रमें देखा, मैंने उसे आल्पसको जीतते हुए देखा। मैंने उसे मारेंगोमें देखा—उल्म और ऑस्टर लिट्जमें। मैंने उसे रशियामें देखा जहाँ बर्फकी पैदल सेनाने और ठण्डी हवाके झोंकोंके घुड़सवारोंने उसकी सेनाको शरदके सूखे पत्तोंकी

तरह बखेर दिया। मैंने उसे लिप्समें देखा—विजित और विपद्ग्रस्त—दस लाख बंदूकों द्वारा पेरिसकी ओर खदेड़े जाते हुए—एक जंगली पशुकी तरह घिरे हुए—एल्बामें निर्वासित। मैंने उसे देखा कि वह वहाँसे भाग निकला है और प्रतिभाके बलपर उसने फिर एक साम्राज्यको हथिया लिया है। मैंने उसे वाटरलूकी भयानक युद्धभूमिमें देखा जहाँ अवसर और भाग्यने मिलकर उसके सौभाग्यको चौपट कर दिया। और मैंने उसे सेंट हेलेनामें देखा जहाँ उसके हाथ पीठके पीछे बँधे हैं और वह समुद्रकी ओर हसरत-भरी निगाहोंसे देख रहा है।

मैंने उन अनाथों और विधवाओंका विचार किया जिनका कि वह कारण था। उन आँसुओंका विचार किया, जो उसकी शानकी रक्षाके लिये बहाये गये थे और उस एकमात्र औरतका विचार किया जिसने उसे प्यार किया था, किन्तु जिसे उसने महत्त्वाकाक्षाके ठण्डे हाथसे अपने दिलसे दूर कर दिया था। और मैंने कहा कि मैं एक किसान होना और लकड़ीकी खड़ाऊँ पहनना कहीं अधिक पसन्द करता। मुझे यह अच्छा लगता कि मैं एक गरीब किसान होता, मेरी प्यारी स्त्री मेरे पास बैठकर कुछ बुन रही होती और मेरे बच्चे मेरे गलेमें हाथ डाले हुए मेरे घुटनोंपर झुके होते। मुझे यह अच्छा लगता कि मैं ज़ोर-ज़बर्दस्ती और हत्याका अवतार—'महान् नैपोलियन' होनेकी अपेक्षा फ्रांसका वह सामान्य आदमी हुआ होता और भविष्यकी वाणी-विहीन शान्त धूलिमें एकाकार हो जाता।

प्रसन्न रहनेके लिये बड़ा बनना आवश्यक नहीं; उदाराशय और प्रेम-भरा हृदय रखनेके लिये धनी बनना आवश्यक नहीं। चाहे तुम धनी हो और चाहे गरीब हो, अपनी पत्नीसे ऐसा व्यवहार करो मानो वह एक सुन्दर पुष्प हो; और तब वह तुम्हारे जीवनको सुगंधि और आनन्दसे भर देगी।

और तुम जानते हो कि यह विचार कितना शानदार है कि जिस स्त्रीसे तुम प्रेम करते हो वह कभी बूढ़ी नहीं होगी। समयकी झुर्रियोंके बीच, वर्षोंके पर्दोंके बीच, यदि तुम वास्तवमें उसे प्यार करते हो तो तुम्हें उसका चेहरा हमेशा एक-जैसा ही दिखाई देता रहेगा और जो औरत किसी पुरुषको सच्चे हृदयसे प्यार करती है, उसके लिए भी वह पुरुष कभी बूढ़ा

नहीं होता, उसके अंग शिथिल नहीं होते, वह काँपता नहीं। उसे वह हमेशा जैसेका तैसा ही दिखाई देता रहता है। मुझे इस प्रकार विचार करना अच्छा लगता है, मुझे यह सोचना अच्छा लगता है कि प्रेम अविनाशी है। और इस प्रकार प्रेम करते हुए जीवनकी पहाड़ीसे एक साथ नीचे उतरना, और नीचे उतरते हुए, शायद अपने पोतों तथा पोतियोंके अट्टहासको सुनना, और उस समय सुनना जब कि आयुके वृक्षकी पत्तोंरहित शाखाओंपर आनन्द और प्रेमके पक्षी चहचहा रहे हों, अच्छा लगता है।

मै चूल्हेमे विश्वास रखता हूँ। मैं घरके तंत्रमें विश्वास रखता हूँ। मैं परिवारके प्रजा-तंत्रमें विश्वास रखता हूँ। मै स्वतंत्रता, समानता, और प्रेममें विश्वास रखता हूँ।

मानव-जातिने हजारों अपराध किये हैं; लेकिन मेरे पास उसके पक्षमें भी कुछ कहनेको है। देखा जाय, तो संसारकी बनावट ही कुछ ऐसी नहीं है कि इसमें बहुत अच्छे आदमी हो सके। पहली बात तो यह है कि यह सारीकी सारी ही अधिकतर पापी है। अच्छे आदमियोंको जन्म देनेकी अपेक्षा यह मछली-संस्कृतिको जन्म देनेके लिए कहीं अधिक योग्य है। जहाँ जहाँ स्थल है, उसका आठवाँ हिस्सा भी भूमि और जल-वायुकी दृष्टिसे इस योग्य नहीं कि महान् पुरुषो और स्त्रियोंको जन्म दे सके। जिस प्रकार तुम आर्कटिक-समुद्रके बर्फके खेतोंमें धान और गेहूँ नहीं उगा सकते, उसी प्रकार नावि उचित भूमि और जलवायुके प्रतिभावान् स्त्री-पुरुष भी पैदा नहीं कर सकते। तुम्हारे पास उचित सामग्री और परिस्थिति होनी चाहिये। आदमी एक उपज है; तुम्हारे पास भूमि और भोजन होना ही चाहिये। प्रकृतिद्वारा उपस्थित की गई बाधायें ऐसी नहीं होनी चाहिये कि कोई आदमी सामान्य श्रम और साहससे उन्हें जीत न सके। इस पृथ्वीपर भूमिकी एक तंग-पेटी है, जो साँपकी तरह टेढ़ी मेढ़ी पृथ्वीके चारो ओर चली गई है। बस उतने ही हिस्सेमें आप प्रतिभावान् पुरुष और स्त्रियाँ उत्पन्न कर सकते हैं। आदमीको जिस जल-वायुकी आवश्यकता रहती है, पृथ्वीके दक्षिण-गोलार्धमें वह नहीं है, वहाँ अधिकतर समुद्र है। परिणाम यह हुआ है कि हमारी पृथ्वीके दक्षिण गोलार्धने कभी कोई प्रतिभावान् स्त्री या पुरुष पैदा नहीं किया। ठेठ उत्तरमें

प्रतिभा नहीं है—यह अत्यधिक ठंडा है। ठेठ दक्षिणमें भी प्रतिभा नहीं है—यह अत्यधिक गर्म है। शीत ऋतु भी होनी चाहिये और ग्रीष्म ऋतु भी।

कुछ वर्ष पूर्व हम लोग सान्तो दोमिंगो प्रदेशको अपने साम्राज्यमें शामिल करनेकी बात कहते थे। उस समय मैं वाशिंगटनमें था, और इस बातका विरोधी था। मुझे बताया गया कि वहाँका जल-वायु सुखकर है और लगभग हर चीज़ पैदा होती है। मेरा उत्तर था—हमें नहीं चाहिये। यह वैसा देश नहीं है जहाँ अच्छे अमरीकी नागरिक पैदा हो सकें। ऐसा जलवायु हमे पतित बना देगा। आप वहाँ पाँच हजार पादरी-पुरोहितोंको ले जायँ, पाँच हज़ार शासकोंको ले जायँ, पाँच हजार कालेजके प्रोफेसरोंको ले जायँ और अपनी अपनी स्त्रियोके साथ बोसटनके पाँच हजार ठोस नौजवानोंको ले जायँ; और उन सबको सान्तो दोमिगोमें बसा दें। आप देखेंगे कि अगली ही पीढ़ीका ह्रास हो जायगा। जल-वायुका ऐसा ही प्रभाव होता है।

हाँ, विज्ञान शनैः शनैः उस क्षेत्रको विस्तृत करता जा रहा है जहाँ प्रतिभावान् आदमी पैदा हो सकते हैं। यदि हम दूसरे लोककी चिन्ता करनेकी बजाय इस लोककी चिन्ता करें, तो समय पाकर हम इस पृथ्वीको प्रतिभावान् स्त्री-पुरुषोंसे भर दे सकते हैं।

थोड़ेमें मैंने अपने ईमानदाराना विचार प्रकट कर दिये। निस्सन्देह अन्ध श्रद्धाकी अपेक्षा खोज करना अच्छा है। निस्सन्देह भयकी अपेक्षा तर्क अच्छा मार्ग-दर्शक है। इस संसारपर जीवितोंका शासन होना चाहिये, मृतोंका नहीं। किसीकी क़ब्र कोई सिंहासन नहीं है और किसीकी लाश कोई नरेश नहीं है। आदमीको मुर्दोंकी राखपर जीते रहनेकी कोशिश नहीं करनी चाहिये

आजके धर्म-शास्त्री जो कुछ जानते हैं, मरे हुए धर्म-शास्त्री भी उनसे विशेष नहीं जानते थे, इससे अधिक और कुछ नहीं कहा जा सकता। इस संसारके बारेमें जो कुछ ज्ञात है वह बहुत थोड़ा है, दूसरेके बारेमें तो बिलकुल नहीं।

हमारे पूर्वज मानसिक दास थे और उनके पूर्वज गुलाम थे। हमारे सिद्धान्तोंके निर्माता अज्ञ थे और अत्याचारी थे। हर धार्मिक-रूढ़िपर चाबुकका चिह्न है, जंजीरका जंग है और चिताकी राख है।

मिथ्या विश्वास गुलामीकी सन्तान है। स्वतन्त्र-चिन्तनसे सत्य पैदा होता है। जब हर किसीको अपने विचार प्रकट करनेका अधिकार होगा, तो हर कोई सभीको अपने चिन्तनका सर्वश्रेष्ठ परिणाम भेंट कर सकेगा।

जब तक स्त्री-पुरुष मठों और मन्दिरोंसे डरते रहेंगे, जब तक पादरी-पुरोहितोंसे भय लगता रहेगा, जब तक लोग किसी भी बातको केवल इस लिये मानते रहेंगे क्यों कि वे उसे समझते नहीं, जब तक अपना आत्म-सम्मान गँवाना सम्मानकी बात रहेगी, जब तक लोग एक किताबको पूजते रहेंगे, तब तक संसार दिमागी-दिवालियोंसे भरा रहेगा।

जब तक स्त्री बाइबलको अपने अधिकारोंका अधिकार-पत्र समझती रहेगी, वह पुरुषकी गुलाम रहेगी। बाइबल किसी स्त्रीने नहीं लिखी है। इसके ढक्कनके नीचे स्त्रीके लिये अपमानकी बातोंके अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं। वह पुरुषकी मिलकियत मानी गई है। उसे माता बननेके अपराधके लिये क्षमा माँगनी पड़ती है। वह अपने पतिसे उतनी ही नीचे है, जितना नीचा उसका पति ईसा मसीहसे है। उसे बोलनेकी आज्ञा है। बाइबल इतनी अधिक पवित्र है कि उसके गंदे होठोंसे उसका उच्चारण अनुचित है। स्त्रीको चुपचाप सीखना चाहिये।

सारी बाइबलमें एक भी सभ्य घरका वर्णन नहीं है। स्वतन्त्र माता, स्वतन्त्र और प्रेमल बच्चोंका घेरा, अपने पति—एक स्वतंत्र पुरुषद्वारा आदृत स्त्री, यह सब बाइबलके ऋषियोंको एकदम अज्ञात था। उन्हें प्रजातंत्रमें श्रद्धा नहीं थी, चूल्हेका जनतंत्र नहीं भाता था। ये ऋषि बच्चोंके अधिकारके बारेमें कुछ नहीं जानते थे और ज़बर्दस्ती करनेमें, कोड़ेके शासनमें विश्वास करते थे। उन्हें मानव-अधिकारोंका कुछ ज्ञान न था।

पृथ्वी-तलपर स्वतन्त्र पुरुषों और स्त्रियोंकी एक भी पीढ़ी पैदा नहीं हुई। अभी वह समय नहीं आया जब हम मानवके 'मत' को लिख सकें। जंजी-

रोंके टूटने तक प्रतीक्षा कीजिये। जब तक जेलखानोंको मन्दिर माना जाता है तब तक प्रतीक्षा कीजिये।

इस 'मत' में केवल एक ही शब्द लिखा जायगा—स्वतन्त्रता।

हे स्वतन्त्रते! उत्साही साहित्यिकों, परोपकारियों और कवियोंके कल्पना-लोकसे उतरकर मनुष्यके बच्चोंमें अपना घर बना।

मैं नहीं जानता कि भविष्यमें आदमीके दिमागसे कौनसे आविष्कार, कौनसे विचार उत्पन्न होंगे। मैं नहीं जानता कि भविष्य कितना शानदार होगा। मैं विचारके क्षेत्रमें होनेवाली विजयोंकी कल्पना नहीं कर सकता। लेकिन मैं इतना जानता हूँ कि भविष्यके अनन्त समुद्रमें कोई भी चीज इतनी-श्रेष्ठ, इतनी शानदार आकर काल के तटको स्पर्श नहीं करेगी जितनी-श्रेष्ठ और जितनी शानदार है पुरुषो, स्त्रियों और बच्चोंकी स्वतन्त्रता।

बच्चोंकी स्वतन्त्रता

यदि स्त्रियाँ गुलाम रही हैं, तो मैं बच्चोंके बारेमें क्या कहूँ?—तंग गलियों और अँधेरी कोठड़ियोंमें रहनेवाले बच्चे, पिताके पैरोंकी आवाज सुनकर पीले पड़ जानेवाले बच्चे, माँके द्वारा अपना नाम लिये जानेपर ही भाग जानेवाले बच्चे, दरिद्रताके बच्चे, अपराधोंके बच्चे, अत्याचारोंके बच्चे, जो कुछ भी वे हों, जीवनके समुद्रपर तैरनेवाले जहाजमेंसे फेंक दिये गये बच्चे, मेरा दिल उन सबमेंसे प्रत्येकके लिये तड़पता है।

मैं आपसे कहता हूँ कि बच्चोंके वही अधिकार हैं जो हमारे, और हमें उनके साथ उसी तरहका व्यवहार करना चाहिये। उनका लालन-पालन प्रेमसे होना चाहिये, दयासे होना चाहिये, कोमलतासे होना चाहिये। उनका लालन-पालन निर्दयतासे नहीं होना चाहिये।

जब तुम्हारा बच्चा कोई झूठ बोल दे, तो उसपर इस प्रकार मत टूट पड़ो मानो आकाश ही गिर पड़ा हो। उसके साथ ईमानदारीका व्यवहार करो। क्या तुम यह जानते हो कि अत्याचारी पिताके बच्चे हमेशा झूठ बोलनेवाले होंगे? झूठ एक ओर अत्याचारसे पैदा होता है और दूसरी ओर दुर्बलतासे। जब तुम एक गरीब छोटे बच्चेपर लाठी लेकर दौड़ोगे, तो वह झूठ बोलेगा ही।

मैं प्रकृति देवीका कृतज्ञ हूँ कि उसने बच्चेको इतना दिमाग दिया है कि यदि उसका अत्याचारी पिता उसपर आक्रमण करे, तो वह कुछ झूठ बोलकर अपनी आत्मारक्षा कर ले।

जब तुम्हारा बच्चा कोई झूठ बोले, तो उसे ईमानदारीसे बता दो कि तुमने स्वयं भी सैकड़ो झूठ बोले हैं। उसे बता दो कि यह ठीक रास्ता नहीं है और तुमने इसपर चलकर देखा है। एक आदमीने घर छोड़ते समय अपने लड़केसे कहा:—"बेटा, ईमानदारी सबसे अच्छी बात है, मैने बेइमानी भी करके देखी है।" उसके साथ ईमानदार बनो। थोड़ी देरके लिये मान लो कि तुम अपने पाँच सालके बच्चेसे जितने बड़े हो, तुमसे ठीक उतना ही बड़ा आदमी यदि हाथमें डण्डा लिये आये और गरजकर पूछे, वह प्लेट किसने तोड़ी? तो तुममेंसे एक भी ऐसा नहीं होगा, जो शपथ खाकर यह न कहे कि तुमने देखा नहीं अथवा तुम्हारे हाथमें आनेसे पहले ही वह टूटी हुई थी। इन बच्चोंके साथ ईमानदारीका व्यवहार क्यों न किया जाय? एक ऐसे आदमीकी कल्पना करो जो स्वयं सट्टा खेलता है लेकिन अपने बच्चेको झूठी गप्प उड़ानेके अपराधमें चाबुकसे पीटता है। एक वकीलकी कल्पना करो, जो अपने बच्चेको सत्य बात न कहनेके लिये पीटता है, जब कि उसकी अपनी आधी जीविका झूठपर चलती है। एक पादरीकी बात सोचो जो अपने बच्चेको अपने सब विचार प्रकट न करनेके लिए दण्ड देता है।

जब तुम्हारे बच्चेसे कुछ गलती हो जाय, तो उसे अपनी गोदमें ले लो, अपने दिलकी धड़कनको उसके दिलकी धड़कनसे मिला दो। बच्चेको यह मालूम होने दो कि तुम उसे वास्तवमें सच्चे हृदयसे और ईमानदारीसे प्यार करते हो। यह सब होनेपर भी कुछ लोग, भले लोग, जब बच्चेसे कोई गलती हो जाती है, तो उसे घरसे बाहर निकाल देते हैं और कहते हैं:—"अब फिर कभी इस घरको गन्दा न करना।" जरा इसपर विचार करो। और, फिर यही लोग परमात्मासे प्रार्थना करते हैं कि वह उस बच्चेकी देखभाल करे जिसे उन्होंने घरसे निकाल दिया है! जबतक अपने बच्चोंके लिये जो कुछ मैं कर सकता हू नहीं कर लूँगा, तबतक कभी परमात्मासे अपने बच्चोंकी देख-भाल करनेकी प्रार्थना नहीं करूँगा।

लेकिन मैं अपने बच्चोंसे क्या कहता हूँ—"तुम्हारी जहाँ इच्छा हो, जाओ, तुम जो अपराध कर सकते हो करो, तुम पतनके जिस गर्तमें गिर सकते हो गिरो, पर तुम कभी कोई ऐसा अपराध नहीं कर सकते कि मेरा द्वार, मेरे हाथ, अथवा मेरा हृदय तुम्हारे लिए बंद हो जाय। जबतक जीवित हूँ, तुम्हारा एक सच्चा मित्र बना रहूँगा।"

मैं चाबुकके शासनमें विश्वास नहीं करता। यदि तुम कभी अपने बच्चेको पीटनेके तैयार होते हो, तो मैं चाहूँगा कि पीटते समयका अपना एक फोटो ले लो, जब तुम्हारा चेहरा क्रोधसे लाल हो और छोटे बच्चेका चेहरा आँसुओंसे भीगा हुआ हो। यदि कहीं वह बच्चा मर जाय, तो मुझे इससे अच्छी कोई दूसरी बात नहीं मालूम देती कि उस बच्चेकी कब्रपर जाकर उस फोटोको देखा जाय। मैं कहता हूँ कि यह गलत है, यह बच्चोंके लालन-पालनका तरीका नहीं है। अपने घरको सुखी बनाओ। उनके साथ ईमानदारीका व्यवहार करो, हरएक चीजमें उन्हे उचित हिस्सा दो।

आप उन्हें थोडी स्वतत्रता दें, उनसे थोड़ा प्रेम करें और तब आप उन्हें घरसे नहीं निकाल सकेंगे। वे वहीं रहना चाहेंगे। घरको सुखी बनाओ। बच्चे जो खेल खेलना चाहें, उन्हें खेलने दो।

यदि आप बच्चोंको घरमें रखना चाहते हैं तो उन्हें खुले वातावरणमें रहने दें। बच्चे जब पालनेमें झूलते हैं, उसी समयसे यह मत करो, वह मत करो, चिल्लाना आरंभ न करें। बचपनसे २१ वर्षकी आयु होनेतक बच्चेको हर कदमपर 'यह मत करो, यह मत करो' ही सुनना पड़ता है। जब वह बड़ा होता है तब उसे दूसरे लोग भी 'यह मत करो' कहना आरभ करते हैं। उसका संप्रदाय उसे कहता है 'यह मत करो,' उसकी पार्टी उसे कहती है कि 'यह मत करो।'

मुझे इस प्रकारके जीवनसे घृणा है। आप मुझे नास्तिक कहें, अनीश्वरवादी कहें, जो इच्छा हो कहें, मैं अपने बच्चोंके साथ इस प्रकार व्यवहार करना चाहता हूँ कि वे मेरी कब्रपर आकर सचाईके साथ यह कह सकें—"यहाँ सोनेवालेने कभी हमें एक क्षणके लिये भी कष्ट नहीं दिया। उसके

होठोंसे, जो अब मिट्टी हो गये हैं, कभी एक भी निर्दयतापूर्ण शब्द नहीं निकला।"

लोग यह कहकर कि बच्चे स्वभावसे ही विकृत होते हैं उनपर हर तरहके अत्याचारका औचित्य सिद्ध करते हैं। युगोंसे चले आये अत्याचारके मूलमें यह बच्चोंके स्वभावसे ही विकृत होनेका दुष्ट सिद्धान्त काम करता है। मजहबकी दृष्टिमें बच्चा अपराधकी जीवित मूर्ति है, अनन्त शापका उत्तराधिकारी।

प्राचीन समयमें यह माना जाता था कि कुछ दिन इतने अधिक पवित्र होते हैं कि उन दिनोंमें बच्चे आनन्द मना ही नहीं सकते। जब मैं छोटा था तो इतवारका दिन ऐसा ही पवित्र माना जाता था। शनिवारकी संध्याको जब सूर्यास्त होता, तभीसे, उन दिनों रविवारका आरम्भ हो जाता। शनिवारकी संध्याको सूर्यास्तकी संध्याके साथ ही साथ रातके अँधेरेसे दस हजार गुना अंधकार घरपर छा जाता। किसीके मुँहसे एक सुखद वचन न निकलता, न कोई हँसता, न कोई मुसकराता। जो बच्चा जितना ही अधिक रोगी दिखाई देता वह उतना ही अधिक पवित्र समझा जाता। यदि तुम कहीं सुपारी जैसी कोई चीज चबाते हुए पकड़ लिये जाते, तो यह मानव-हृदयकी संपूर्ण विकृतिका दूसरा प्रमाण होता। यह अत्यंत गंभीर रात्रि होती। हर आदमी रोनी शक्ल लिये हुए रहता। मैंने जीवन-भर देखा है कि बहुतसे आदमियोंको जब अजीर्ण होता है तो उस समय वे समझते हैं कि उनका धर्म ज़ोरपर है। यदि अजीर्णकी कोई अचूक ओषधि हाथ लग जाय तो वह धर्मपर की गई कड़ी चोट सिद्ध हो सकती है।

रविवारके दिन प्रातःकाल गंभीरता अपनी सीमापर पहुँची रहती। उन दिनों चाहे कितनी ही सर्दी पड़ती हो किसी गिरजेमें आग न रहती। यह समझा जाता था कि परमात्माकी प्रार्थना करनेके समय शरीरको किसी भी तरहका आराम मिलना पाप है।

अन्तमें रविवारका दिन समाप्तिपर आता। सूर्यास्त होते ही हम पुनः स्वतंत्र हो जाते। तीन या चार बजेके बीच हम यह देखनेके लिये बाहर निकलते कि सूर्य किस प्रकार नीचे जा रहा है। कभी कभी मुझे ऐसा लगता कि यह

अपने कमीनेपनके कारण जहाँका तहाँ रुका हुआ है। अन्तमें सूर्यास्त होता ही। ज्यों ही सूर्यकी अंतिम किरण क्षितिजके नीचे जाती हमारी टोपियाँ ऊपर उछलतीं और हम एक बार पुनः स्वतंत्र हो जानेकी खुशीमें तालियाँ पीटते।

रविवारके पवित्र दिनमें एक बच्चेकी मुसकराहट पाप मानी जाती थी, जरा इसपर विचार तो करो!

एक बच्चेकी हँसी किसी भी पवित्रतम दिनको और भी अधिक पवित्र बना देगी। इतना सब होनेपर भी अनन्त दण्डके इस दुष्ट सिद्धान्तद्वारा बच्चोंके दिमाग खराब किये गये हैं। कोई भी भाषा इस सिद्धान्तकी दुष्टताकी पर्याप्त निन्दा नहीं कर सकती।

पुरुषों, स्त्रियों और बच्चोंके लिये यह अनन्त-दंडका सिद्धान्त कहाँसे आया? यह किसी दुष्ट पशुकी खोपड़ीकी उपज है। मैं इसे अपने रक्तकी प्रत्येक बूँदके साथ घृणा करता हूँ। क्या तुम यह कहना चाहते हो कि स्वर्गमें कोई ऐसा ईश्वर है जो अपने बच्चोंको ईमानदाराना विचार प्रकट करनेके लिये रसातल भेजेगा? संसारके तमाम जंगलोंमें जितने पत्ते हैं, उनसे दस हजार गुना आदमी तुम्हारे सिद्धान्तके हिसाबसे पापी भरे हैं। क्या तुम यह कहते हो कि यह सब आदमी नरकमें हैं? यह सब आदमी तड़प रहे हैं? यह सब बच्चे अनन्त पीड़ासे पीड़ित हैं? और यह सब इसी प्रकार सदैवके लिये दंडित होते रहेंगे? मैं इस सिद्धान्तको सबसे अधिक दुष्टतापूर्ण झूठ कहता हूँ। यदि कोई आदमी इस सिद्धान्तमें विश्वास करता है और पागल नहीं हो जाता, तो यह समझ लेना चाहिये कि उसका दिल एक साँपका है और उसकी अन्तरात्मा किसी दुष्ट पशुकी।

धर्मके नामपर, क्षमाके नामपर और असीम प्रेमके नामपर इस प्रकारके सिद्धान्त सिखाये और पढ़ाये गये हैं। मेरी प्रार्थना है कि आप ऐसी बातोंसे अपने बच्चोंके दिमाग खराब न करें। उन्हें अपने लिये स्वयं पढ़ने दें, उन्हें अपने लिये स्वयं सोचने दें।

अपने बच्चोंके साथ ऐसा व्यवहार न करें मानो वे सूखे बाँस हों और एक सीधी कतारमें गाड़ दिये जा सकते हैं। उन्हें ऐसे पौधे मानें जिन्हें प्रकाश

और हवाकी आवश्यकता है। उनके साथ ईमानदारीका व्यवहार करें। उन्हें एक मौका दें। यह समझें कि उनके और हमारे अधिकार बराबर हैं। अपने दिमागसे यह बात निकाल दें कि आपको उनपर शासन करना है और उन्हें आपकी आज्ञा माननी है। इस मालिक और गुलामके ख्यालको हमेशाके लिये दूर फेक दें।

पुराने समयमें जब बच्चोंको नींद नहीं लगती थी तब उन्हें सोनेपर मजबूर किया जाता था और जब वे सोते रहना चाहते थे तब जागनेपर। मैं कहता हूँ कि जब बच्चोंको नींद आये तब उन्हें सोने दो और जब उन्हें नींद न लगे तब उठ जाने दो।

आप कहते हैं कि ये सिद्धान्त अमीरोंके लिये तो ठीक हैं, किन्तु गरीबोंके लिये नहीं। मै कहता हूँ यदि गरीबोंको अपने बच्चोंको एकदम प्रातःकाल उठाना पड़ता हो तो उन्हे एक चपत मारकर उठानेकी बजाय वे एक चुंबनके साथ उतनी ही आसानीसे जगा सकते हैं। अपने बच्चोंको स्वतंत्रता दो। उन्हें अपने व्यक्तित्वकी रक्षा करने दो। अपने बच्चे जो अच्छी चीज खाना चाहें, खाने दो। यह उनका अपना काम है, तुम्हारा नहीं। वे जानते हैं कि वे क्या खाना चाहते हैं। यदि उन्हें आरंभसे ही स्वतंत्रता दी जाय, तो वे किसी भी डाक्टरकी अपेक्षा अपनी इच्छाको अधिक अच्छी तरह जान लेंगे। क्या आप जानते हैं कि चिकित्सा-शास्त्रमें जितनी उन्नति हुई है वह डाक्टरोंके कारण नहीं, किन्तु रोगियोंके दुस्साहसके कारण हुई है। हजारों वर्षतक डाक्टर किसी ज्वरग्रस्त आदमीको पानीकी एक बूँद नहीं पीने देते थे। पानीको वे रोगीके लिये विष समझते थे। लेकिन बीच-बीचमें जब कोई रोगी दुस्साहसी होकर कह उठा है कि मैं प्यासा रहनेकी अपेक्षा मर जाना पसन्द करूँगा, तब उसने एक साथ काफी पानी पी लिया है और वह अच्छा हो गया है। जब डाक्टरोंको यह बताया गया, तब उन्होंने उसकी काठीकी तारीफ की है। दुस्साहसी आदमीने पानी पीना जारी रखा है, वह एकदम अच्छा हो गया है और अन्तमें डाक्टर भी कहने लगे हैं कि ज्वरमें पानीसे बढ़कर कोई चीज नहीं। इसीलिये, इस प्रकारकी बातोंमें मैं डाक्टरी स्कूलोंके उपदेशोंपर विश्वास करनेकी अपेक्षा प्रकृतिकी आवाजपर विश्वास करना

अधिक पंसद करता हूँ। अपने बच्चोंको स्वतंत्रता दो, वे तुम्हारा अनुकरण करेंगे। वे बहुत कुछ वही करेंगे जो तुम करते हो। किन्तु यदि तुम जोर-जबरदस्ती करोगे, तो समझ लो कि मानव-हृदयमें कुछ ऐसी शानदार चीज है जो विद्रोह करती ही है। क्या तुम जानते हो कि यह संसारका सबसे बड़ा सौभाग्य है कि लोग इस प्रकार बने हैं। यदि आजसे पाँच सौ वर्ष पूर्व लोग अक्षरशः डाक्टरोंकी बात मानते, तो उनका क्या होता? वे सब मर गये होते। यदि किसी भी समय लोग ईसाई मतके उपदेशोंके अनुसार अक्षरशः चलना स्वीकार करते. तो उनका क्या होता? उनके दिमागोंमें गोबर भरा रहता। यह बहुत बड़ी बात है कि हमेशा कोई न कोई महान् आदमी पैदा होता रहता है जो किसीकी परवाह नहीं करता, और अपने लिये स्वतंत्रतापूर्वक सोचता है।

मैं बच्चोंको अपने लिये सोचने देनेमें विश्वास करता हूँ। मैं परिवारके जनतंत्रमें विश्वास करता हूँ। यदि इस ससारमें कोई बहुत ही अच्छी चीज है, तो वह घर है जिसमें सभी बराबर हैं।

पुरुष पेड़ हैं स्त्रियाँ लतायें हैं, और बच्चे फूल हैं।

कला और सदाचार

उच्चतम आत्माभिव्यक्तिका नाम कला है और उसका उद्देश्य भी आत्माभिव्यक्ति ही है। कलाके द्वारा ही विचार दृश्यरूप ग्रहण करते हैं। इन रूपोंकी पृष्ठभूमिमें हैं, इच्छाएँ, कामनायें, विचारमग्न रहनेवाली सहज प्रवृत्ति, मनकी कर्तृत्वशक्ति, वह राग जो रूपोंको रंग देता है और उन्हें रंगीन बनाता है।

यह कहना अनावश्यक है कि निरपेक्ष सौन्दर्य अथवा निरपेक्ष सदाचार जैसी कोई चीज नहीं। हम यह स्पष्ट रूपसे देखते हैं कि सौन्दर्य और सदाचार दोनों सापेक्ष हैं। हम इस सीमित ज्ञानसे बहुत आगे बढ़ गये हैं कि वस्तुका मूलाधार विचार है और प्लेटोके इस बेहूदा सिद्धान्तसे भी कि वस्तुओंसे बहुत पहलेसे विचारका अस्तित्व है। कमसे कम जहाँ तक आदमीका सम्बन्ध है, उसकी चारों ओरकी परिस्थितिने ही उसके विचारोंको जन्म दिया है, उसके दिमागपर चारों ओरकी चीजोंकी जो क्रिया और प्रतिक्रिया हुई है उसीसे उसके विचार बने हैं; और जहाँतक आदमीका सम्बन्ध है विचारोंसे पहले वस्तुओंका अस्तित्व रहा है। इन वस्तुओंका हमपर जो संस्कार पड़ता है, वही हमारा उन वस्तुओंका ज्ञान है। वस्तु-सामीग्र (जिसे हम विश्व कहते हैं) और उसका हमपर जो प्रभाव पड़ता है, उन दोनोंके आपसी सम्बन्धसे हमारा ज्ञान सीमित है।

हम किसी भी कार्यको अच्छा या बुरा अपने अनुभव और तर्कके परिणामके अनुसार कहते हैं। कुछ आकारोंका, उनके रंगोंका और प्रकटीकरणके ढंगका हमारे साथ जो सम्बन्ध है उसीके अनुसार चीजें सुन्दर कह-

लाती हैं। सुन्दरका जहाँ स्रोत-स्थान है वहाँ प्रसन्नता है, इन्द्रियोंकी सतुष्टि है, दिमागी खोजका आनन्द है, प्रशंसाका आश्चर्य और रोमांच है।

कला कल्पना-शक्तिको जाग्रत करती है और अन्तरतमको स्फूर्ति देती है। हम कल्पनाद्वारा ही अपने आपको किसी दूसरेके स्थानमें देखते हैं। जब कल्पना शक्तिके पर सिकुड़ जाते हैं, तो फिर मालिक अपने आपको गुलामकी जगह रखकर विचार नहीं कर सकता, अत्याचारी अपने अत्याचारके शिकार कैदीके हाथ जंजीरसे नहीं बाँध सकता। कल्पनाप्रधान मनुष्य जब भिखमंगेको कुछ देता है तो अपने आपको देता है। जिनके मनमें अत्याचारके विरुद्ध रोष जाग्रत होता है, वे कमसे-कम उस समय ऐसा अनुभव करते हैं, मानों उन्हींपर अत्याचार हो रहा है, और जब वे अत्याचारीपर आक्रमण करते हैं तो उन्हें ऐसा लगता है कि वे आत्म-रक्षा ही कर रहे हैं। प्रेम और करुणा दोनों ही कल्पना-शक्तिके मानस-पुत्र हैं।

हमारे पूर्वज मिल्टन आदिकी धार्मिक कवितायें बड़े ही संतोष और चावके, साथ पढते थे। इन धार्मिक कवियोंके लिखनेका यही उद्देश्य था कि आदमीका दिमाग रोगी है, दुर्बलताओंका घर है, और इसलिए मानव-जातिके नैतिक स्तरको स्वच्छ और सुदृढ़ बनानेके लिए यह आवश्यक है कि उसपर कवितारूपी पुल्टिस और प्लास्टर बाँधा जाय। सच्चे कलाकारके लिए। वास्तविक प्रतिभावान् व्यक्तिके लिए इस चिकित्सक दृष्टिकोणसे बढ़कर घृणित कुछ नहीं।

ऐसी कवितायें इस बातको सिद्ध करनेके लिए लिखी जाती थीं कि सदाचारी बनना परलोकके खातेमें पूँजी जमा करना है, और जो कोई भी इन गम्भीर, मनहूस तुकबन्दियोंके अनुसार अपना जीवन यापन करेगा, वह इस संसारमें चाहे कितना ही अधिक दुखी क्यों न रहे, दूसरे संसारमें निस्सन्देह पुरस्कृत होगा। इन कवियोंने यह मान लिया था कि तुकबन्दीका धर्मसे अनिवाय सम्बन्ध है और यह उनका कर्तव्य है कि वह संसारके सभी लोगोंको सुख-भोगके 'जाल' में पड़नेसे बचानेका प्रयत्न करे। उन्होंने सोद्देश्य लिखा है उनकी नजर स्पष्ट रूपसे सदाचारपर थी। उनकी अपनी योजना थी। वे धर्मोपदेशक थे। उनका उद्देश्य था कि वे संसारको बतायें कि संसार कितन खराब है और वे स्वय कितने अच्छे हैं।

उन्हें यह कल्पना नहीं हो सकती थी कि कोई भी आदमी इतना प्रसन्न हो सकता है कि प्रकृतिकी प्रत्येक वस्तु उसकी प्रसन्नतामें हिस्सा बँटाने लगे, उसके लिए पक्षी चहचहाने लगें, उसके आनन्दके कारण गाने लगें, उसके हृदयके आनन्दके प्रकाशमें प्रत्येक वस्तु चमकने लगे। वे इस भावको समझ नहीं सकते थे, वे यह सोच नहीं सकते थे कि हृदयका यह आनन्द कलाकारकी तूलिका और छेनीकी प्रेरक शक्ति है।

उन्हें यह नहीं लगता था कि ये कवितायें, ये चित्र, ये मूर्तियाँ उस दिमागकी उपज हैं जिसे समुद्र और आकाशने, फूलों और तारोंने, प्रेम और प्रकाशने जन्म दिया है। वे आनन्दसे आन्दोलित नहीं होते थे। वे निरन्तर कर्तव्यके भारसे दबे जाते थे। उन्हें दूसरोंको उपदेश देनेकी, दूसरोंके अपराध दिखाने और उन्हें बढ़ा चढ़ाकर बतानेकी इच्छा थी। वे अपने सद्‌गुणोंका बखान भी करना चाहते थे।

ये धार्मिक कवि अप्रिय सत्य सिखाते थे। ये जीवन-मार्गके हर खंभेपर दिशा-निर्देशक हाथद्वारा यह बताते थे कि यह रास्ता कब्रस्तानकी ओर जाता है। उन्हें रक्तवर्ण तरुणोंकी अपेक्षा पीतवर्ण तरुण अच्छे लगते थे। वे गम्भीर मुद्रामें उनसे बुढ़ापे और मृत्युकी ही चर्चा करते रहना चाहते थे। उन्होंने प्रेमकी आँखोंके सम्मुख मृत्युकी खोपड़ी ला रखी। उन्होंने फूलोंको अपने पैरों तले रौंध डाला और हर मस्तकके लिये काँटोंका ताज तैयार कर दिया।

इन कवियोंके अनुसार आनन्दका सदाचारसे विरोध है। इनके मतके अनुसार आदमीको अनन्त कृतज्ञताके भारसे सदा दबा रहना चाहिये। वे जमीनसे थोड़ा ऊपर उठकर चलते थे। वे पाठकको दबाते थे और उसे लांछित करते थे। उन्हें मानव-जीवनकी निस्सारता, मानव-जातिकी क्षुद्रता और किसी अज्ञात लोकके सुन्दर-सुन्दर चित्र बनाना अच्छा लगता था। उन्हें हृदयकी कुछ समझ न थी। वे नहीं जानते थे कि बिना अनुरागके सदाचार नहीं होता और वास्तविक अनुरागी ही सदाचारी होता है।

कलाको सदाचार अथवा दुराचारसे कुछ लेना-देना नहीं। यह अपने अस्तित्वका स्वयं अपनेमें पर्याप्त कारण है। यह अपने ही लिये है।

जो कलाकार उपदेश देनेका प्रयत्न करता है, वह उपदेशक बन जाता है, और जो कलाकार व्यञ्जना अथवा इशारेसे लोगोंको दुश्शीलताकी ओर बढ़ावा देता है वह लुच्चा बन जाता है।

'नग्न' और 'नंगे' में, प्रकृतिस्थ और वस्त्रविहीनमें जमीन-आसमानका अन्तर है। बालककी तरह पवित्र, सहज नग्नकी उपस्थितिमें उन शक्लोंसे बढ़कर घृणित कोई दूसरी चीज हो नहीं सकती जो निम्न-स्तरके सुझाव देती हैं और जो छिपानेकी असमर्थताके कारण प्रकट करनेका बहाना बनाती है। वस्त्र-विहीन गँवार है, भद्दा है; नग्न सभ्य है, पवित्र है।

पुरानी यूनानी मूर्तियाँ खुले तौरपर नग्न हैं। उनके स्वतन्त्र सम्पूर्ण अगों-पर कभी कपड़ा नहीं पड़ा है। वे निर्दोष हैं। वे पवित्र हैं। वे ओसकी बूँदमें पड़ी हुई प्रातःकालीन तारेकी प्रतिच्छायाकी तरह स्वच्छ हैं।

कार्य और परिस्थितिमें समन्वय स्थापित करनेका नाम ही सदाचार है। यह आचरणका सगीत है। एक सुन्दर मूर्ति अगोंके आपसी सम्बन्धका संगीत है। हर असाधारण चित्र आकार और रगका समन्वय है। किसी भी असाधारण मूर्तिको देखनेसे ऐसा नहीं लगता कि वह श्रमका परिणाम है, वह आनन्दकी कृति ही प्रतीत होती है। एक सुन्दर चित्रसे भी कभी श्रमका भास नहीं होता। जितना ही चित्र महान् होता है उतनी ही उसकी रचना सहज-स्वभावसे हुई प्रतीत होती है। उसमें मजबूरीकी भावना नहीं होती, कर्तृत्वकी भावना नहीं होती, जिम्मेवारीकी भावना नहीं होती। जो बात एक स्वस्थ आदमीके लिए आनन्दका विषय होनी चाहिये उसे यह कर्तव्यका विचार भार-रूप बना देता है।

जो कलाकार केवल दूसरोंको नैतिक बनानेके उद्देश्यसे श्रम करता है वह कलाकार न रहकर मजदूर बन जाता है। प्रतिभाकी स्वतन्त्रता समाप्त हो जाती है और कलाकार नागरिकमें विलीन हो जाता है। कोई भी यह कल्पना नहीं कर सकता कि जिन कलाकारोंने प्राचीन मूर्तियोंका निर्माण किया है वे यूनानके तरुणोंको माता-पिताका आज्ञाकारी बनाना चाहते थे।

जो उपन्यासकार लोगोंके गले ज़बर्दस्ती नीतिकी बातें उतारना चाहता

है, वह कलाकार नहीं रहता। उपन्यासकारोंके पात्र प्रायः दो तरहके होते हैं—विशेष प्रकारके लोग (टाइप) और उपहासके पात्र (कैरिकेचर)। पहली तरहके लोग कभी हुए नहीं, दूसरी तरहके होंगे नहीं। सच्चा कलाकार इनमेसे किसी भी तरहके पात्रकी रचना नहीं करता। उसके उपन्यासोंमें आपको सामान्य लोग, स्वाभाविक लोग, मिलेंगे, जिनके जीवनमे पारस्परिक विरोध और बेमेल बातें दिखाई देंगी—वे बाते जो मानवताका अविभाज्य अंग हैं। महान् कलाकार प्रकृतिके सम्मुख दर्पण उपस्थित करता है और उस दर्पणमे सब कुछ ठीक-ठीक दिखाई देता है। क्षुद्र उपन्यासकार और क्षुद्र कलाकार या तो असम्भव विषयोंको लेता है या अत्यन्त असाधारणको। प्रतिभावान् सर्वव्यापक विषयोंको लेकर आगे बढ़ता है। उसके शब्द और उसकी कृतियाँ वस्तुओंकी लहरो और बहावके साथ-साथ आन्दोलित होती हैं। वह सदैवके लिये और सभी जातियोके लिये लिखता और काम करता है।

हजारो सुधारकोंका यह उद्देश्य रहा है कि रागका समूल नाश हो जाय, इच्छाएँ विलीन हो जाएँ। यदि यह सम्भव हो जाय, तो जीवन एक भार हो जायगा और आदमीकी एक मात्र इच्छा रह जायगी—आत्मविनाशकी।

कला अपने उत्कृष्ट रूपमे अनुरागको बढ़ाती है, जीवनको उत्साह प्रदान करती है। अनुरागको बढ़ानेके साथ-साथ यह उसे स्वच्छ और बढ़िया बनाती जाती है। यह मानवके क्षितिजको बढाती है। जीवनकी केवल भौतिक आवश्यकताये जीवनको कालकोठरी बनाती हैं, एक कारागार बनाती हैं। कलाके प्रभावमें दीवारें बढ़ती हैं, छत ऊपर उठती है और जीवन एक मन्दिर बन जाता है।

कला कोई प्रवचन नहीं है और कलाकार कोई उपदेशक नहीं है। कला किसीको बिना कोई आदेश दिये अपना काम करती है। जो सुन्दर है, वह स्वच्छ बनता है। कलाकी सम्पूर्णता चरित्रकी सम्पूर्णताकी ओर निर्देश करती है।

संगीतमें स्वरोंका मेल जीवनमे मात्राके औचित्यकी शिक्षा देता है। पक्षीके गीतका कोई नैतिक उद्देश्य नहीं रहता; तो भी उसका मनपर प्रभाव पड़ता है। प्रकृतिमें जो सुन्दर है वह सौंदर्य और सहानुभूतिकी भावना जगाकर हमें

प्रभावित करता है। वह यदि सुन्दर है तो सुन्दर है। उसे तुम्हारी कोई परवाह नहीं। यदि गुलाबके लाल रंग और सुगन्धिके भीतर इस प्रकारके वाक्य लिखे रहें कि खराब लड़कोंको भालू खा जाते हैं और ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है, तो गुलाबके फूल असहनीय हो जायँगे।

कलाका काम है इस तरहका वायुमंडल पैदा कर देना जिसमें गुण अपने आप फलें फूलें। वर्षा बीजोंको कभी व्याख्यान नहीं देती। प्रकाश लताओं और फूलोंके लिये कभी नियम नहीं बनाता।

यह संसार मानव-मस्तिष्कका कोश है। जो प्रतिभावान् हैं वे वस्तुओंके इस कोशमेंसे उपमायें, समानतायें, विरोधोंमें अनुकूलतायें तथा भेदमें समान-रूपता खोज लेते हैं। भाषा केवल चित्रोंके समूहका नाम है। लगभग हर शब्द एक कलाकृति है, चित्र-विशेषका उच्चारण-विशेषद्वारा किया जानेवाला प्रतिनिधित्व है। यह चित्र हमारे सामने न केवल उच्चारण-विशेषको ला उपस्थित करता है, वरन् बाह्य संसारकी किसी वस्तुका चित्र और उसके साथ मनके भीतरकी चीजका चित्र भी। इन्हीं शब्दोंसे जो कि स्वयं किसी समय चित्र थे, दूसरे चित्र बनाये जाते हैं।

महानतम चित्र और महानतम मूर्तियोंकी रचना शब्दोंद्वारा ही हुई है। वे आज भी उतने ही ताजे हैं जितने कि मानवी ओठोंसे निकालनेके समय थे। सत्यके अतिरिक्त और सब चीजोंका ह्रास होता है और उन सबको आवरणकी आवश्यकता रहती है। क्षुद्र आत्माओंको प्रकृतिके सामने लज्जा लगती है। अतिसदाचारी लोग केवल उन भावनाओंको रखनेका झूठा नाटक करते हैं जिनकी किसीको अनुभूति भी न हो। नीतिपूर्ण कविता उस बँधी लहरकी तरह है जिसका पानी हमेशा अपने किनारोंके बाँधसे बँधा रहता है। इसमें कुछ ऐसे रास्ते रहते हैं जिनमेंसे भावनाओंकी तीव्रता चुपके-चुपके बहती रहती है। नीतिपूर्ण कला, चित्र अथवा मूर्तिके निर्माणमें पैरों, चेहरों और चीथड़ोंको ही बनाती है। शरीरके शेष अंग इसे अश्लील प्रतीत होते हैं जिसे यह पवित्रताके साथ प्रकट नहीं कर सकती, उसे ढँकनेका प्रयत्न करती है। आवश्यकताके कारण कलाका यह बौनापन सदाचार बन जाता है, जिसे निर्लज्जतापूर्वक एक गुण कहा जाता है। यह अज्ञानको

पवित्रताका आधार मानती है । इसका आग्रह है कि जो अन्धा है वही सदाचारी हो सकता है ।

कलाका काम है उत्पन्न करना, मिलाना और प्रकट करना। यह विचार, अनुराग, प्रेम और सहज ज्ञानकी उच्चतम अभिव्यक्ति है। यह हमें आवरण-रहित अन्तर्तमका दर्शन करने देती है—अनुरागकी तहतक पहुँचने देती है और प्रेमकी ऊँचाई तथा गहराईको समझनेका अवसर देती है।

ज्ञानप्रदाता होनेसे, विकासकी कारण होनेसे, शक्तिवर्धक होनेसे और उदाराशयताकी प्रेरक होनेसे कला सभ्य बनानेवाली है। इसका सम्बन्ध सौन्दर्यसे है, अनुरागसे है और आदर्शसे है। यह हृदय-प्रसून है। महान् होनेके लिये उसे मानवकी ओर देखना होगा। उसे अनुभवके अनुरूप, आशाओंके अनुरूप, भयके अनुरूप और मानवकी सम्भावनाओंके अनुरूप बनना होगा। कोई कभी महलका चित्र बनानेकी चिन्ता नहीं करता, क्योंकि उसमें हृदयको स्पर्श करनेवाली कोई चीज नहीं रहती। महल जिम्मेदारीका प्रतीक है, कारागारका प्रतीक है और है रूढ़ियोंका प्रतीक।

एक झोपड़ीका चित्र, जिसपर एक लता झूल रही है, जिसपर संतोषकी छत है, जहाँ स्वाभाविक धूप-छाँव है, जहाँके पेड़ फलोंसे लदे हैं, जहाँके बच्चे प्रसन्न वदन हैं और जहाँ शहदकी मक्खियाँ भिन-भिना रही हैं—एक कविता है, संसारके रेगिस्तानमें एक मुस्कराहट है।

मखमली कपड़ों और गहनोंसे लदी हुई श्रीमतीका चित्र बहुत ही दरिद्र होता है। उसके जीवनमें पर्याप्त स्वतन्त्रता नहीं है। वह चारों ओरसे घिरी हुई है। वह सुखकी सरलतासे अत्यधिक दूर है। उसके विचारोंमें हिसाब-किताबकी अत्यधिकता है। कला-मात्रमें स्वच्छदता अथवा स्वतन्त्रताका स्पर्श रहता है और हर कलाकारमें कुछ आवारापन रहता है अर्थात् प्रतिभा।

कलाके नग्नत्वने स्त्रीके सौन्दर्यको पवित्रता दी है। हर यूनानी मूर्ति माताओं और बहनोंकी वकालत करती है। इन्हीं संगमरमरकी मूर्तियोंसे संगीतकी धारा बहती है। उन्होंने मानव-हृदयको कोमलता और पूजाकी भावनासे भर दिया है। उन्होंने भक्ति, पूजा और प्रेमकी अग्नि प्रज्वलित की है। पंडितमानी

व्यक्ति कवि नहीं है; वह हिसाबी-किताबी है। प्रतिभा आत्म-त्यागमेंसे पैदा होती है, आनन्दमेंसे पैदा होती है, स्वातन्त्र्यमेंसे पैदा होती है। एक क्षणके लिए कार्य-कारणका सम्बन्ध विच्छिन्न हो गया प्रतीत होता है, मानव सर्वथा मुक्त है। वह अपने प्रति भी जिम्मेदार नहीं रहा। सीमाएँ समाप्तप्राय हैं। प्रकृति इच्छाके अधीन हो गई प्रतीत होती है। एकमात्र आदर्श अवशिष्ट है। विश्व संगीतरूप है।

हर मस्तिष्क एक कला-भवन है और हर व्यक्ति कम या अधिक मात्रामें एक कलाकार है। संसारकी दीवारो और ताकोको सुशोभित करनेवाले चित्र और मूर्तियाँ; और ससारके वाङ्मयके पृष्ठोको सुशोभित करनेवाले शब्द—सबके सब आरम्भमे मस्तिष्कके निजी कला-भवनको ही सुशोभित करते रहे हैं।

कलाकार अपने मस्तिष्कके चित्रोसे, जिन्होने अब दृश्यरूप धारण कर लिया है, तुलना करता है। यह चित्रोंके उन अंशोंको जो सम्पूर्णताके समीपतम हैं, चुनता है, उन्हे इकट्ठा करता है और उनसे फिर नये चित्र, नयी मूर्तियाँ बनाता है; और इस प्रकार वह आदर्शकी रचना करता है।

रूप और रंगके सहारेसे इच्छाओ, कामनाओ और आकाक्षाओको व्यक्त करना सगमर्मरके माध्यमसे प्रेम, आशा और वीरताको व्यक्त करना, शब्दोंका आधार लेकर स्वप्नों और संस्मरणोंके चित्र बनाना, गानके सहारे उषाकी पवित्रता, मध्याह्नकी कोमलता और रात्रिकी नीरवताको व्यक्त करना; अदृश्य-को दृश्य और स्पर्श करने योग्य बना देना और ससारकी सर्वसामान्य चीजोको मस्तिष्कके हीरे-मोतियोंसे सजा देना, यही कला है।

वॉल्तेयर

१ भूमिका

एक युगके नास्तिक दूसरे युगके दिव्य सन्त-पुरुष हुए हैं।

पुरातनके नष्टकर्ता नवीनके जन्म-दाता हुए हैं!

जैसे जैसे समय गुजरता है, पुरातन भी खिसकता जाता है, और उसका स्थान ग्रहण करनेवाला नवीन भी पुराना हो जाता है।

शरीरकी तरह मानसिक संसारमें भी ह्रास और विकास होता है और वृद्धावस्थाकी क़ब्रपर ही तरुणाई खड़ी दिखाई देती है।

नास्तिकोंका जीवन-चरित ही बुद्धिकी प्रगतिका इतिहास है।

राजद्रोहियोंने राजनीतिक अधिकारोंकी रक्षा की है और नास्तिकोंने मानसिक स्वतन्त्रताकी।

राज्याधिकारोंपर आक्रमण करना षड्यन्त्र कहा जाता रहा है और पुरोहितोंके अधिकारोंपर आक्रमण करना नास्तिकता।

शताब्दियोंतक खड्ग और क्रॉस परस्पर सहायक रहे हैं। दोनोंने मिलकर मानवके अधिकारोंपर आक्रमण किया है। दोनों परस्पर एक दूसरेका बचाव करते रहे हैं।

सिंहासन और वेदिका—दोनों जुड़वे बच्चे थे; एक ही अण्डेसे पैदा हुए दो गीध।

जेम्ज़ प्रथमने कहाः "यदि बिशप नहीं, तो राजा भी नहीं।" वह यह भी कह सकता थाः "यदि क्रॉस नहीं, तो ताज भी नहीं।" राजाका लोगोंके शरीरपर अधिकार था और पादरी-पुरोहितका आत्माओंपर। एक ज़ोर-जबर्दस्ती उगाहे गये करपर जीवित रहता था, दूसरा भयभीत बनाकर प्राप्त किये गये दानपर। दोनों डाकू, दोनों भिखमंगे।

ये डाकू और ये भिखमंगे दोनों लोकोंपर शासन करते थे। राजा कानूनोंकी रचना करता था, और पादरी-पुरोहित धार्मिक-मतोंकी। दोनों ईश्वरसे अधिकार प्राप्त करनेका दावा करते थे; दोनों अनन्तके एजेण्ट थे, भू-भारसे झुकी हुई कमरपर लोग एकका बोझा ढोते थे और आश्चर्यसे फूले हुए मुँहसे दूसरेके धार्मिक सिद्धान्त सुनते थे।

यदि लोग स्वतंत्र होनेकी आकांक्षा करते, तो वे राजाद्वारा कुचल दिये जाते और हर पादरी पुरोहित एक कस है जो दिमागी संतानकी हत्या करता रहता है।

राजा बलसे शासन करता था, पादरी-पुरोहित भयसे, और दोनोंसे।

राजाने लोगोंसे कहाः—"ईश्वरने तुम्हें किसान बनाया है और मुझे नरेश; उसने तुम्हे श्रम करनेके लिए पैदा किया है और मुझे मौज उड़ानेके लिए। उसने तुम्हारे लिए चीथडे पैदा किये हैं और मेरे लिए शानदार कपड़े तथा महल। उसने तुम्हे आज्ञा माननेके लिए पैदा किया है और मुझे आज्ञा देनेके लिए। यही ईश्वरीय न्याय है।

और पुरोहितने कहा—"ईश्वरने तुम्हे अज्ञानी और अपवित्र पैदा किया और मुझे बुद्धिमान् तथा पवित्र; तुम यहाँ मेरी आज्ञाका पालन नहीं करोगे तो ईश्वर तुम्हें यहाँ दंड देगा और बादमें दूसरे लोकमें हमेशाके लिए यंत्रणा देता रहेगा। यही ईश्वरीय करुणा है।"

"तुम्हें तर्क नहीं करना चाहिये। तर्क विद्रोह है। तुम्हें विरोध नहीं करना चाहिए—विरोधका जनक अहंकार है; तुम्हें विश्वास करना चाहिए। जिसे सुननेके लिए कान मिले हैं वह सुने।" स्वर्ग श्रवणेन्द्रियका विषय था।

यह हमारा सौभाग्य है कि दुनियामें अनेक धर्मद्रोही हुए, नास्तिक हुए, खोजी हुए, स्वतन्त्रताके प्रेमी हुए और ऐसे प्रतिभावान् मनीषी हुए, जिन्होंने अपने मानव-बंधुओंकी जीवन-परिस्थितिको सुधारनेके लिये अपने जीवनका बलिदान कर दिया।

यहाँ यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि वास्तवमें बड़ा कौन है?

महान् आदमी मानवीय ज्ञानकी पूँजीमें वृद्धि करता है, विचारके क्षितिज

विशालतर बनाता है, अज्ञात और रहस्यपूर्ण समुद्रको लाँघता है। महान् आदमी यशके पीछे नहीं भागता, सत्य खोजता है। वह प्रसन्नताके मार्गकी तलाशमें रहता है; और वह जिन निश्चयोंपर पहुँचता है उन्हें दूसरोंमें वितरित करता है। महान् आदमी सुअरोंके सामने मोती बखेर देता है और वे सुअर कभी कभी आदमी बन जाते हैं। यदि महान् आदमियोंने अपने मोती अपने ही पास रहने दिये होते, तो सारी जनता आज भी बर्बर अवस्थामें होती।

महान् आदमी अंधकारमें प्रकाश है, मिथ्या-विश्वासकी अँधेरी रात्रिमें एक मशाल है, एक प्रेरणा है और एक भविष्य-वाणी है।

महानता बहुमतका दान नहीं है, यह किसीपर लादी नहीं जा सकती, आदमी इसे एक दूसरेको दे नहीं सकते; वे पद और शक्ति दे सकते हैं, किन्तु महानता नहीं।

स्थान किसीको आदमी नहीं बनाता और न राजदण्ड राजा। महानता अंदरकी चीज है।

जिन वीरोंने आदमियोंको बंधनमुक्त किया, वे महान् हैं। जिन दार्शनिकोंने और चिंतकोंने आदमीके अध्यात्मको मुक्त किया वे महान् हैं। जिन कवियोंने साधारणको असाधारण रूप दे लाखों करोड़ो आदमियोंके जीवनको प्रेम और संगीतसे भर दिया, वे महान् हैं।

वीरोंकी इस सेनाके सेनापतिके रूपमें वॉल्तेयर हमारे सामने आ उपस्थित होता है। आज हम उसीकी स्मृतिमें श्रद्धांजलि अर्पण करने जा रहे हैं।

वॉल्तेयरका नाम सुनकर लोग प्रशंसा करते हैं और पादरी-पुरोहित निंदा। किसी पादरीकी उपस्थितिमें आप इस नामका उच्चारण कीजिये तो लगेगा कि आपने युद्धकी घोषणा कर दी है। यह नाम लीजिये और पादरी अपनी सारी शालीनताको भूलकर अपशब्दोंकी बौछार आरंभ कर देगा। यह सब होनेपर भी वॉल्तेयर अपनी शताब्दीका महान्तम व्यक्ति था। उसने मानव-जातिकी स्वतंत्रताके लिए सभी मानव-पुत्रोंसे अधिक कार्य किया।

रविवारके दिन, सन् १६९४ के नवम्बर मासकी २१ तारीखको, एक शिशुने जन्म लिया—एक शिशुने जो इतना कमजोर था कि साँस अटकी रहनेमें

झिझकती थी। माता-पिताका प्रयत्न था कि बच्चेका बपतिस्मा यथा-संभव शीघ्र हो जाय। वे बच्चेकी आत्माकी सुरक्षा चाहते थे। वे जानते थे कि यदि कहीं बपतिस्मा होनेके पहले ही मृत्यु आ गई तो बच्चेको अनन्त कालतक यंत्रणाकी पीड़ा सहनी होगी।

जब वॉल्तेयर मूर्खोंके इस महान् रंगमंचपर आया, उसका देश चौदह सौ वर्षतक ईसाई रह चुका था।—सभ्य नहीं। एक हजार वर्षतक इस शान्ति और सद्भावनाके धर्मका प्रधानता रही। ईसाई राजाओंने बुद्धिमान् और पवित्र आदमियोंद्वारा अनुमोदित कानून चालू किये थे।

ईमानदारीसे अपनी बात कहना, अपने मानव-बंधुओको शिक्षित बनाना, स्वयं खोज करना तथा सत्यका अन्वेषण करना—ये सब अपराध थे।

ईश्वरके विश्वासियोंने—प्रेमरूप ईश्वरके विश्वासियोंने—इस प्रकारके अपराधियोंको यत्रणा और मृत्युसे दंडित किया। संदिग्ध व्यक्तियोंसे अपराध स्वीकार करानेके लिये उन्हे तरह तरहसे पीड़ित किया।

१६९४ में सभी लेखकोंका जीवन राजा और पुरोहितोंकी दयापर निर्भर करता था। उनमेसे अधिकांश या तो जेलोमे थे, या जुर्माने करके दरिद्र बना दिये गये, या जलावतन कर दिये गये और मृत्युके घाट उतार दिये गये।

जल्लादोको जब कभी अपने कामसे कुछ छुट्टी मिलती तो उनके समयका सदुपयोग पुस्तके जलानेमे होता।

न्यायालय वे फंदे थे जिनमे भोले भाले लोग सरलतासे फँस जाते थे। न्यायाधीश उतने ही दुष्ट और निर्दय थे जितने कि विशप।

क्यों कि गवाहोको यत्रणा दी जा सकती थी, इसलिए वे प्रायः वैसी ही गवाही देते थे जैसी न्यायाधिश चाहते थे।

ससारमे पराप्राकृतिक और करिश्मोंका राज्य था। यद्यपि कोई बात समझमें नहीं आती थी, तो भी हर चीजकी व्याख्या की जाती थी। ईसाइयत सर्वोपरि थी। रोगी पादरियोंसे कागजके ताबीज खरीदते थे। लोग बीमार पड़नेपर डॉक्टरको न बुलाकर पादरी-पुरोहित बुलाते थे और ये लोग इन मरणशील रोगियोंके हाथ कागजके टुकड़े बेचते थे। इन कागजके टुकड़ोंको सभी बातोंके लिये अचूक कहा जाता था। यदि बच्चेके पालनेमे एक टुकड़ा

रख दिया जाय तो वह बच्चेको जादू टोनेसे बचाये रखे। यदि अनाजके ढोलमें डाल दिया जाय तो अनाजको चूहे न खायँ। यदि घरमें रख लिया जाय तो घर भूत-प्रेतोंसे सुरक्षित रहे। यदि खेतमें दफना दिया जाय, तो समयपर वर्षा हो और फसल खूब ही अच्छी हो।

उस समय न कहीं वास्तविक स्वतंत्रता थी, न वास्तविक शिक्षा, न वास्तविक दर्शनशास्त्र, न वास्तविक विज्ञान—अंधविश्वास और मिथ्याविश्वासके अतिरिक्त कुछ नहीं। संसार शैतान और ईसाइयतके अधिकारमें था।

जब वॉल्तेयरका जन्म हुआ, फ्रांसपर पादरियोंका राज्य था। यह लगभग सर्वव्यापी अनाचारका युग था। पादरी-पुरोहित प्रायः स्वच्छन्द थे, और न्यायाधीश निर्दय तथा रिश्वतखोर। राजाका महल वैश्या-गृह बना हुआ था। जन-साधारणके साथ पशुओंका-सा बर्ताव होता था। ईसाई पादरियोंको यह सुखद स्थिति लानेमें एक हजार वर्ष लगे।

अजानेमें ही हर राजपुरुष और पुरोहित द्वारा क्रांतिके बीज बोये जा रहे थे। लोगोंके दिलमें रक्तकी इच्छा पैदा हो गई थी। वे मजदूर—जो धूपसे काले पड़ गये थे; जिनकी कमरें परिश्रमसे झुक गई थीं, जिन्हें अभावने कुरूप बना दिया था—जब श्वेत-ग्रीवा स्त्रियोंको देखते थे तो उनकी इच्छा होती थी कि उनके सिर काट डालें।

किसी महान् आदमीका मूल्यांकन करनेके लिए हमें उसकी परिस्थितिका यथार्थ ज्ञान होना चाहिये। हमें उस नाटककी सीमाका ज्ञान होना चाहिये जिसमें वह पात्र बना और हमें उसके दर्शकोंका भी ज्ञान होना चाहिये।

इंग्लैंडमें लोगोंको देशभक्त बनानेके लिये राज्यकी ओरसे चाबुक बाँधनेकी रस्सी और कुल्हाड़ीका उपयोग होता था।

स्पेनमें धार्मिक अत्याचार अपने पूरे जोरपर था और यंत्रणाके सभी साधनोंका उपयोग कर दिमागके विकासको रोका जा रहा था।

पुर्तगालमें 'पवित्र दिन' पर मांस खानेके अपराधपर स्त्रियाँ और बच्चे जलाये जा रहे थे और यह होता था करुणामय भगवानकी प्रसन्नताके लिये।

इटलीमें सारी जाति पादरियोंके पैरोंतले रौंधी जा रही थी। प्रार्थनाके लिये

परस्पर जुड़नेवाले हाथ, उसी उत्साहसे चिताओंके लिये लकड़ियाँ इकट्ठी करते थे।

जर्मनीमें आदमीके शत्रुके साथ समझौता करनेका दोष लगाकर पुरुषों और स्त्रियोंको जलाया जा रहा था।

और हमारी अपनी सुरम्य भूमिमें दूसरे तटसे पुरुषों और स्त्रियोंको चुराया जाता था, बच्चोंको उनकी माताओंकी छातियोंसे छीन लिया जाता था और दासोंके श्रमकी कोड़ोंसे पूजा होती थी।

मिथ्या-विश्वास ही संसारका शासक था।

फ्रांसमें जनता राजाकी स्वच्छन्दताकी शिकार थी। हर कहीं बेस्टाइलकी मनहूस छाया थी। उससे न कहीं कोई खेत बचा था और न कोई घर।

२ तरुणाई

वॉल्तेयर सामान्य-परिवारमें पैदा हुआ था। उस समयकी भाषाके अनुसार उसके कोई 'पूर्वज' न थे। उसका वास्तविक नाम फ्रांसुवा मॅरी अरुत (Francois Marie Arouet) था। उसकी माँ मार ग्यूरिते दौमर्द (Mar Guerite D'aumard) थी। जब उसकी आयु सात वर्षकी थी, तभी इस माताका देहात हो गया। उसका एक बड़ा भाई था। नाम आर्मन (Arman) बड़ा भक्त, बड़ा धार्मिक, और एकदम बेमेल। यह भाई अपने भाईकी नास्तिकताके प्रायश्चित्तस्वरूप ईसाई पादरियोंको पूजा भेंट चढ़ाता रहता था। जहाँतक हम जानते हैं उसका कोई भी पूर्वज साहित्यिक नहीं था।

वॉल्तेयरका पिता चाहता था कि वॉल्तेयर एक वकील बने, किन्तु उसकी कानूनमें एकदम रुचि न थी। दस वर्षकी आयु होनेपर वह लुई ल ग्रा (Louis le grand) विद्यालयमें भरती हुआ। यहाँ वह १७ वर्षकी आयुतक अर्थात् ७ वर्ष पढ़ा। इसके अतिरिक्त वह और किसी विद्यालयमें नहीं गया। वॉल्तेयरने लिखा है कि उसने उस विद्यालयमें थोड़ी ग्रीक, पर्याप्त लैटिन और बहुत-सी बेहूदगियोंके अतिरिक्त और कुछ नहीं सीखा।

लुई ल ग्रा के विद्यालयमें भूगोल, इतिहास, गणित अथवा कोई दूसरा विज्ञान नहीं पढ़ाया जाता था। उन दिनों राज्य धर्मकी ही ढाल बनता था,

रक्षा करता था और उसे पोसता था। समस्त धर्मकी ओटमें बंदूकें थीं, कुल्हाड़ियाँ थीं, चितायें थीं, और यंत्रणा-गृह थे।

जिस समय वॉल्तेयर विद्यालयमें पढ़ रहा था, उस समय राजाके सिपाही प्रोटेस्टैंट लोगोंको खोज-खोजकर मैजिस्ट्रेटोंके सामने ला रहे थे ताकि वे उन्हें यन्त्रणा दें, फाँसीपर चढ़ायें अथवा जीते जी जला दें।

१० वर्षकी आयु होनेपर वॉल्तेयरने अपना जीवन साहित्यको समर्पित करनेका निश्चय किया। अपने दोनो पुत्रोंकी चर्चा करते हुए उनके पिताने कहा—"मेरे दोनों पुत्र मूर्ख हैं, एक पद्यमें, दूसरा गद्यमें।"

१७१३ में वॉल्तेयर एक-छोटा-मोटा कूटनीतिज्ञ बन गया। फ्रांसके मंत्रीके साथ लगकर वह हेग (Hague) गया। वहाँ वह प्रेमके चक्करमें पड़ गया। लड़कीकी माँने आपत्ति की। वॉल्तेयरने अपनी प्रेयसीके पास अपने कपड़े भेजे, ताकि वह उससे भेंट कर सके। सब कुछ पता लग गया। वह नौकरीसे हटा दिया गया। इस लड़कीकीको उसने एक पत्र लिखा, उससे वॉल्तेयरका जीवन-सूत्र समझमें आता है। उसने लिखा "अपनी माँके गुस्सेसे अपनी रक्षा करो। तुम जानती हो कि वह क्या कुछ कर सकती है। तुम्हें इसका पूरा अनुभव है। तुम्हारे लिये एक ही रास्ता है, ढोंग या ठगी। उसे कहो कि तुम मुझे भूल गई हो और मुझसे घृणा करती हो। उसे यह सब कहकर तुम मुझसे और भी अधिक प्रेम करो।"

इस घटनाके परिणामस्वरूप वॉल्तेयरके पिताने उसे अपनी संपत्तिके उत्तराधिकारसे वंचित कर दिया। पिता उसके लिये एक सरकारी आज्ञा ले आया, जिसके अनुसार वह जेल भी जा सकता था और समुद्रपार जलावतन भी हो सकता था। वॉल्तेयरने वकील बनना स्वीकार किया।

१४ वे लुईकी मृत्यु होनेपर राजकुमार अधिकाररूढ हुआ। उस समय कारागारोंके दरवाजे खोले गये। उसने सब कैदियोंकी सूची मँगवाई। उसे पता लगा कि अधिकांश कैदियोके बारेमें कोई यह भी नहीं जानता कि वह क्यों जेलमें डाले गये थे। उन्हें जेलमें डालकर भुला दिया गया था। बहुतसे कैदी अपने आपको पहचानते नहीं थे, और वह इस बातका अनुमान भी नहीं लगा सकते थे कि वे क्यों पकड़े गये। एक इटली-निवासी कैदी बिना

यह जाने कि वह क्यों पकड़ा गया ३३ वर्षतक जेलमें रहा। वह बूढ़ा हो गया था। जब उसे मुक्त करनेकी बात कही गई, तो उसने प्रार्थना की कि शेष जीवन भी उसे वहीं बिताने दिया जाय जहाँ वह अबतक रहा है। कैदियोंको क्षमा कर दिया गया। किन्तु शीघ्र ही उनका स्थान दूसरोंने ले लिया।

इस समय वॉल्तेयरको धर्म अथवा शासनका विशेष ज्ञान न था। वह कविता लिखनेमें लगा था।

उसपर कुछ चुभती हुई चीजें लिखनेका आरोप लगाया गया। उसे ३०० मील दूर तुले (Tulle) में निर्वासित कर दिया गया। यहाँसे उसने अपने निजी ढंगसे लिखा—" मैं यहाँ एक ग्राम-गृहमें हूँ। यदि मुझे यहाँ निर्वासित न किया होता तो यह स्थान मेरे लिए सबसे अधिक अनुकूल होता। यहाँ किसी भी चीजकी कमी नहीं है। यदि कमी है तो केवल इस स्थानको छोड़कर चले जानेकी स्वतंत्रताकी। यदि मुझे यहाँसे चले जानेकी छुट्टी होती, तो यहाँ रहनेमें बड़ा आनन्द था। "

उसका निर्वासन-काल समाप्त हुआ। उसे फिर पकड़ लिया गया। इस बार उसे बेस्टाइल भेजा गया जहाँ वह एक वर्ष रहा। जेलमें ही उसने अपना नाम फ्रासुवा मेरी अरुत बदलकर वॉल्तेयर कर लिया। तबसे वह इसी नामसे प्रसिद्ध हुआ।

वॉल्तेयर उसी प्रकार जीवन-शक्तिसे ओतप्रोत था, जैसे वसंत फूलोंसे। उसने राजकुमारों और राजाओंको चोट पहुँचाकर लगभग सभी विषयोंपर अपने विचार प्रकट किये हैं। उसे इंग्लैंड जलावतन कर दिया गया। वह ब्रिटेनके ऊँचेसे ऊँचे और श्रेष्ठसे श्रेष्ठ व्यक्तियोंसे परिचित रहा।

३ जीवनका उषाकाल

वॉल्तेयरने विचार करना, संदेह करना तथा खोज करना आरंभ किया। उसने ईसाई धर्म तथा मतके इतिहासका अध्ययन किया। उसे पता लगा कि उसके समयका धर्म धार्मिक ग्रन्थोंके इलहामी माने जानेपर निर्भर करता है, ईसाई मतके दोषमुक्त माने जानेपर निर्भर करता है, पागल तपस्वियोंके

स्वप्नोंपर निर्भर करता है, संतोंकी गलतियों और मिथ्या बातोंपर निर्भर करता है, पादरी पुरोहितोंकी ठग-विद्यापर निर्भर करता है, और निर्भर करता है लोगोंकी मूर्खतापर।

वॉल्तेयरको पता लगा कि पागलपनसे भरे इस मतने संसारको अत्याचार और भयसे भर दिया है। उसने देखा कि सदाचारकी अपेक्षा स्वार्थ अधिक पवित्र माना जाता है। आदमियोंके अधिकारों और जीवनकी अपेक्षा मूर्तियाँ, और क्रॉस—पुरानी हड्डियाँ और लकड़ीके छोटे छोटे टुकड़े—अधिक मूल्यवान् माने जाते हैं; और इन अवशेषोंके रखवाले मानव-जातिके शत्रु हैं।

अपने व्यक्तित्वकी समस्त शक्तिसे और अपने दिमागके हर गुणसे उसने इस विजयी पशुपर आक्रमण किया।

वॉल्तेयर सहज-बुद्धिका अवतार था। वह जानता था कि कोई भाषा प्रारंभिक अथवा प्रथम भाषा नहीं हो सकती, जिससे तमाम दूसरी भाषाएँ बनी हों। वह जानता था कि हर भाषा लोगोंकी परिस्थितिसे प्रभावित हुई है। वह यह भी जानता था कि भाषाके विषयमें कभी कोई करिश्मा नहीं हुआ। वह जानता था कि बाइबलके मीनारकी कथाका सत्य होना असंभव है। वह जानता था कि सारे संसारमें हर चीज प्राकृतिक है। वह भाषामें ही नहीं किन्तु विज्ञानमें भी कीमियागिरीका शत्रु था। उसकी एक पंक्ति इस विषयमें उसके दार्शनिक मतको व्यक्त करनेके लिये काफी है। वह कहता है:— "लोहेको सोना बनानेके लिये दो बातें आवश्यक हैं—पहली, लोहेको नष्ट करना; दूसरी, सोनेको पैदा करना।"

वॉल्तेयरने हमें इतिहासका दर्शन दिया।

वॉल्तेयर एक हँसमुख आदमी था, प्रसन्न वदन, मस्त रहनेवाला। जो लोग ईमानदार और प्रसन्न रहनेके लिये धर्मकी आवश्यकता समझते थे, वॉल्तेयरकी दृष्टिमें वे सब लोग दयाके पात्र थे। उसमें वर्तमानमें सुखी रहनेका साहस था और भविष्यको सहन कर लेनेकी शक्ति देनेवाला दर्शन। यह सब होनेपर भी सारा ईसाई संसार डेढ सौ वर्षतक इस आदमीसे लड़ता रहा और उसकी स्मृतिको कलंकित करता रहा।

वॉल्तेयरने अपने समयके मिथ्या विश्वासोंको नष्ट करनेका संकल्प कर लिया था।

जिस किसी भी शस्त्रको प्रतिभा आविष्कार कर सकती, अथवा उपयोगमें ला सकती थी, वॉल्तेयरने उन सभी शस्त्रोंसे युद्ध किया। वॉल्तेयर महानतम् विरूपक था और उसने निर्दय होकर इस शस्त्रसे प्रहार किया है। उस जैसी सूझ-बूझ और किसीकी न थी।

यह कहनेका एक फैशन हो गया है कि वॉल्तेयर गंभीर नहीं था। यह इसलिए है कि वह मूर्ख नहीं था। जहाँ कहीं उसे बेहूदगी दिखाई देती वह हँस पड़ता। लोग उसमें गम्भीरताकी कमी बताते। उसने कहा है कि भगवान एक पादरीको भी हमेशाके लिए रसातल नहीं भेजेगा। इसे नास्तिकता कहा जाता था। उसने ईसाइयोंको परस्पर एक दूसरेकी मारकाट करनेसे रोका और ईसाके शिष्योंको सभ्य बनानेके लिए जो कुछ भी वह कर सकता था, किया।

यदि उसने केवल अपने समयके मतको स्वीकार कर लिया होता; यदि उसने यह प्रतिपादन किया होता कि एक अनन्त शक्ति और असीम करुणा-वाले ईश्वरने अरबों-खरबों आदमियोंको अनन्तकालतक यातना सहन करनेके लिए पैदा किया है, और उसने एक चालाक और अत्याचारी पोपको अपना प्रतिनिधि बनाया है, तो आज ईसाई-जगत् उसे भी सत वॉल्तेयर कहकर याद करता।

अनेक वर्षतक उस अनथक आदमीने यूरोपको अपने दिमागकी उपजसे भरे रखा—निबन्धोंसे, चुभती हुई छोटी छोटी कविताओंसे, महाकाव्योंसे, सुखान्त तथा दुःखान्त नाटकोंसे, इतिहासोंसे, काव्योंसे और उपन्यासोंसे अर्थात् मानवी मस्तिष्कका प्रतिनिधित्व करनेवाले हर पहलू और हर गुणसे। उसी समय यह अपने कारोबारमें भी बझा रहा। उसने लखपति-करोड़पतिकी तरह अपने रुपया कमाया। राज-दरबारकी गप्पोंमें और पादरी पुरोहितोंकी निन्दनीय कथाओंमें पूरी दिलचस्पी ली। साथ साथ वह अपने समयके वैज्ञानिक आवि-ष्कारों और दार्शनिक मतोंकी पूरी जानकारी भी रखता था। हाँ, यह सब करते हुए मिथ्या-विश्वासके किलेपर आक्रमण करना वह एक क्षणके लिए भी न

भूरा । सोते-जागते हर समय वह ईसाई-पादरियोंसे घृणा व्यक्त करता था। साठ वर्ष तक उसने लगातार लड़ाई जारी रखी—कभी खुले मैदान आक्रमण किया, कभी मौकेकी झाड़ीकी ओटसे। वह हर समय सावधान था कि हर आदमी स्वतन्त्र रहे। वह 'सफल' शब्दके ऊँचेसे ऊँचे अर्थमें सफल आदमी था। वह एक राजाकी तरह रहा—यूरोपमें एक शक्ति बनकर। वॉल्तेयरके रूपमें प्रथम बार साहित्यके सिरपर ताज रखा गया।

ईसाई आलोचकोंका कहना है कि वॉल्तेयर विनम्र नहीं था। उसने पवित्र-तम चीजोंकी परीक्षा करते समय तनिक गाम्भीर्यसे काम नहीं लिया। इस संसारमें कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है जो इतनी अधिक पवित्र हो कि उसकी परीक्षा न की जा सके, उसे समझा न जा सके। दार्शनिक कभी किसी बातको छिपाता नहीं है। 'रहस्य' सत्यका मित्र नहीं है। किसी भी आदमीको अपनी बुद्धिका बलिदान कर विनम्र बननेकी आवश्यकता नहीं है। किसी भी चीजकी पूजा तब तक नहीं होनी चाहिये जब तक तर्कको यह विश्वास न हो जाय कि वह पूजनीय है।

तमाम करिश्मोंके विरुद्ध, तमाम पवित्र मिथ्याविश्वासोंके विरुद्ध, तमाम धार्मिक गलतियोंके विरुद्ध उसने उपहासके तीर चलाये।

कुछ लोगोंका कहना है कि श्रेष्ठतम तथा पवित्रम वस्तुका उपहास किया जा सकता है। वास्तविक बात यह है कि जो सत्यका उपहास करता है, वह स्वयं अपनेको उपहासका भाजन बनाता है। वह अपने उपहाससे स्वयं अपनी मूर्खता सिद्ध करता है।

आदमीके दिमागके अनेक पहलू हैं। सत्यको सभी ओरसे, सभी इंद्रियोंकी परीक्षामें उत्तीर्ण होना होगा।

लेकिन बहुत-सी बेहूदा बातोंका उपहासके अतिरिक्त और दूसरा उत्तर भी क्या हो सकता है? जिस धार्मिक आदमीका यह विश्वास है कि असीम करुणामय ईश्वरने दो भालू इस लिये भेजे ताकि वह उन तीस-चालीस बच्चोंको फाड़ खाये जो एक गंजे पैगम्बरको देखकर हँस पड़े थे, उसका उपहास ही तो किया जा सकता है।

वॉल्तेयरको मज़ाक उड़ानेवाला कहा गया है।

उसने किसका मज़ाक उडाया ? उसने मज़ाक उड़ाया उन राजाओंका जो अन्यायी थे, उन राजाओंका जो अपनी प्रजाके कष्टोंकी कुछ परवाह न करते थे। उसने अपने समयके पदवीधारी मूर्खोंका मज़ाक उड़ाया। उसने न्यायालयोंके भ्रष्टाचार तथा न्यायाधीशोंकी नीचता और अत्याचारका मज़ाक उड़ाया। उसने बेहूदा तथा अन्यायपूर्ण कानूनों और बर्बरता-पूर्ण रीति-रिवाजोंका मजाक उडाया। उसने उन इतिहास-लेखकोंका मजाक उड़ाया जिन्होंने अपनी पुस्तकोंको असत्योंसे भर दिया और उन दार्शनिकोंका जिन्होंने मिथ्या-विश्वासका समर्थन किया। उसने स्वतन्त्रतासे घृणा करनेवालोंका और अपने-बन्धुओंपर अत्याचार करनेवालोंका मज़ाक उडाया।

वॉल्तेयरको लोगोंने दोष दिया है कि उसने उपहासके शस्त्रका उपयोग किया।

ढोंगको हँसना बडा बुरा लगाता है और लगता रहेगा। वॉल्तेयर उपहासका आचार्य्य था। उसने धार्मिक अनुश्रुतियों और करिश्मोंका उपहास किया है। उसने सन्तोंकी मूर्खतापूर्ण जीवनियों और उनके असत्योंका उपहास किया है।

वॉल्तेयरमें एक तरहकी ऐसी सहज-बुद्धि थी कि वह सम्भव-असम्भवमे भेद कर सकता था। अरिस्टाटलने कहा कि स्त्रियोंके मुँहमें पुरुषोंकी अपेक्षा अधिक दाँत होते हैं। अठारहवीं शताब्दीतकके सभी ईसाई वैज्ञानिक इसे दोहराते रहे। वॉल्तेयरने स्त्रियोंके दाँत गिन कर देखे। शेष लोग 'वे कहते हैं' से ही संतुष्ट रहे।

चारों ओरसे आक्रान्त होनेपर भी वह हर ऐसे शस्त्रका उपयोग करता था, जिसे उसकी बुद्धि, तर्क, घृणा अथवा उपहास काममें ला सके। कभी कभी वह क्षमा भी माँग लेता था, किन्तु वह अपमानसे भी बुरी होती थी। उसने अनेक बार पश्चात्ताप भी व्यक्त किया है, किन्तु वह पश्चात्ताप उस कर्मसे भयानक रहा है, जिसके लिये पश्चात्ताप व्यक्त किया गया। उसने और अधिक चोट पहुँचा कर अपनी बातको वापिस लिया है। उसकी तारीफमें भी कभी कभी विष रहता था।

वह पादरी-पुरोहितोंको यह अवसर नहीं देना चाहता था कि वे उसे जलता हुआ अथवा कष्ट पाता हुआ देखकर प्रसन्न हों। इसी पश्चात्ताप करनेके बारेमें उसने लिखा है :—" वे कहते हैं कि मुझे अपनी गलती स्वीकार कर लेनी चाहिये। प्रसन्नतापूर्वक। मैं कहूँगा कि पैसकलका हर कथन ठीक है; और सन्त ल्यूक और सन्त मार्क जब परस्परविरोधी बातें कहते हैं तो यह ऐसी बातोंको समझनेका सामर्थ्य रखनेवाले लोगोंके लिये धर्मकी सचाईका एक और प्रमाण है; और धर्मकी सचाईका दूसरा सुन्दर प्रमाण यह है कि धर्म किसीकी समझमें नहीं आता। मैं यह भी स्वीकार कर लूँगा कि जितने पादरी पुरोहित हैं वे सब सज्जन और निःस्वार्थी हैं; जीसूइट ईमानदार हैं; ईसाई पादरी न तो अभिमानी हैं और न षड़यन्त्री हैं; उनकी सुगन्धि मनको प्रसन्न करनेवाली होती है; और लोगोंको जो पवित्र यातनायें दी गई हैं वे मानवता और सहनशीलताकी विजय-घोषणा हैं। एक शब्दमें वे जो कुछ मुझसे कहलाना चाहते हैं, मैं सब कह दूँगा; शर्त यही है कि वह मुझे शान्तिसे रहने दे और एक ऐसे आदमीको जिसने कभी किसीको कोई कष्ट नहीं दिया, यन्त्रणा न दे।"

उसने अपने जीवनका श्रेष्ठतम अंश दलितोंके उद्धारमें लगा दिया। वह असहायोंकी ढाल बना। उसने निर्दोष लोगोंको दण्डसे मुक्त कराया। उसने फ्रान्सके कानून बदलवाये। उसने यन्त्रणाओंका अन्त किया। उसने पादरी पुरोहितोंके दिलोंको कोमल बनाया। उसने न्यायाधीशोंको ज्ञान और राजाओंको शिक्षा दी। उसने लोगोंको सभ्य बनाया और उनके दिलसे लड़ने-झगड़नेकी कामनाको दूर किया।

हो सकता है, तुम यह सोचो कि मैंने बहुत अधिक कह दिया; और इस आदमीको बहुत ऊँचा चढ़ा दिया। जरा सुनो कि गैटे नामक महान् जर्मन दार्शनिक इसी आदमीके बारेमें क्या कहता है:-" यदि तुम्हे गहराई चाहिये, प्रतिभा चाहिये, कल्पना-शक्ति चाहिये, सुरुचि चाहिये, तर्क चाहिये, भावना चाहिये, दर्शन चाहिये, ऊँची उड़ान चाहिये, प्रकृति-प्रेम चाहिये, पैनी बुद्धि चाहिये, सूझ-बूझ चाहिये, चरित्रकी दृढ़ता चाहिये, सहज-भाव चाहिये, मृदुता चाहिये, नाप-तोल चाहिये, कला चाहिये, बाहुल्य चाहिये,

विविधता चाहिये, उपजाऊपन चाहिये, गर्मी चाहिये, जादू चाहिये, मोहनी चाहिये, सजावट चाहिये, ज़ोर चाहिये, कल्पनाकी बाज़ जैसी उड़ान चाहिये, व्यापक समझ चाहिये, शिक्षण-बहुलता चाहिये, श्रेष्ठ कथन-शैली चाहिये, शाइरीपन चाहिये, सौष्ठव चाहिये, नज़ाकत चाहिये, यथार्थता चाहिये, पवित्रता चाहिये, निर्मलता चाहिये, प्रवाह चाहिये, समन्वयकी भावना चाहिये, शीघ्र-गामिता चाहिये, प्रसन्नवदनता चाहिये, हृदयस्पर्शी भावना चाहिये, ऊँचाई चाहिये और सर्व-व्यापकता चाहिये अर्थात् सम्पूर्णता चाहिये, तो वॉल्तेयरकी ओर देखो।"

प्रत्येक आदमीका यह कर्तव्य है कि वह अपने समयके मिथ्या-विश्वासोंकी जड़ उखाड़नेका प्रयत्न करे। हजारों स्त्रीपुरुष और माता पिता ऐसे हैं जो अपने हृदयकी समस्त गहराईसे मिथ्या-विश्वासी मतोंको अस्वीकार करते हैं, तो भी वे अपनी सन्तानोंकी इन मिथ्या-विश्वासोंसे रक्षा नहीं करते।

एक अमगणशील गुलामकी अपेक्षा एक मणरशील स्वतन्त्र आदमी होना कहीं अधिक अच्छा है।

४—प्राकृतिक योजना

उस समयके ईश्वर-विश्वासी यह माननेका ढोंग करते थे कि ईश्वर अथवा प्रकृतिकी योजना निर्दयता-पूर्ण नहीं है। श्रेष्ठके लिये निम्नका बलिदान होता है। जीव जीवका भोजन है, एक प्राणी दूसरेको खाकर जीता है, किन्तु क्योंकि आदमी सब प्राणियोंमें श्रेष्ठ है, इसीलिये जो श्रेष्ठ है उसीके लिये निम्नका बलिदान होता है। निचले स्तरके प्राणियोंका बलिदान इसीलिये होता है कि ऊँचे स्तरके प्राणी जीवित रह सकें। यह तर्क बहुतसे लोगोंके लिये सतोषजनक था। तो भी हज़ारों आदमी ऐसे थे जो यह नहीं समझ सकते थे कि निम्नका बलिदान किस लिये अनिवार्य है और समस्त सुखकी उत्पत्ति दुःखमेंसे ही क्यों होती बताई जाती है? लेकिन जबसे अनुवीक्षण-यन्त्रका निर्माण हुआ जबसे आदमी अत्यन्त छोटी और बड़ीसे बड़ी चीज़ोंको देखनेमे समर्थ हुआ उसे पता लग गया कि हमारे पूर्वजोंकी यह मान्यता सर्वथा ग़लत थी कि श्रेष्ठके लिये ही निम्नका बलिदान होता है।

अब हम देखते हैं कि समस्त दृश्य प्राणियोंके जीवन अति निम्नस्तरके प्राणियों द्वारा नष्ट किये जा सकते हैं और संख्यातीत गणनामें नष्ट किये जाते हैं। हम देखते हैं कि लाखों आदमी पीले ज्वरके कीटाणुओंको सुरक्षित बनाये रखनेके लिये मर गये, और उस 'छोटे-पशु' के लिये जो हमें हैज़ा देता है, जातियोंकी जातियाँ विलीन हो गई। हमें यह भी पता लगा है कि ऐसे प्राणी हैं—उन्हें जो चाहो नाम दो—जो केवल हृत्-पिण्ड ही खाकर जीवित रहते हैं, कुछको फेंफड़े ही अच्छे लगते हैं; कुछ ऐसे नखरे-बाज़ हैं कि उन्हें आँखके अन्दरका तन्तु ही चाहिये और उनमें इतनी समझ भी है कि जब वे आँखपर हाथ साफ कर चुकते हैं तो नाककी दीवारको पार कर दूसरी आँखपर आक्रमण करने भी पहुँच जाते हैं। इस प्रकार हमें प्रकृतिकी योजनाका यह दूसरा पहलू भी दिखाई देता है।

पहले ऐसा लगता था कि श्रेष्ठके लिये निम्नका ही बलिदान होता है, किन्तु बारीकीसे देखनेपर निम्न-स्तरके लिये उच्चतमका बलिदान होता दिखाई देता है।

काफी समय तक वॉल्तेयर पोपके इस आशावादका विश्वासी था कि "बुराई कहीं कहीं, भलाई सब जगह।" भाग्यशालियोंके लिये यह बहुत ही सुन्दर दर्शन शास्त्र है। धनियोंके यह सर्वथा अनुकूल है। राजाओं और पुरोहितोंको यह विशेष रूपसे रुचिकर है। यह सुननेमें भी अच्छा लगता है। किसी भिख-मंगेका सिर फोड़नेके लिये यह बढ़िया पत्थर है। इसके सहारे तुम दूसरोंके दुःखको बड़ी शान्तिसे सहन कर सकते हो।

यह दुखियोंका दर्शन-शास्त्र नहीं, यह दरिद्र मजदूरोंका दर्शन-शास्त्र नहीं, यह अभाव-ग्रस्त ईमानदार आदमियोंका दर्शन-शास्त्र नहीं और यह समाजके घूरेपर फेंक दिये गये सदाचारियोंका भी दर्शन-शास्त्र नहीं।

यह धर्म-विशेषका दर्शन-शास्त्र है, यह चन्द सौभाग्यशालियोंका दर्शन-शास्त्र है; और यदि कभी उन्हें दुर्भाग्य आ घेरता है, तो उनका सारा दर्शन-शास्त्र काफूर हो जाता है।

१७५५ में लिज़बनमें भूकम्प आया। यह भयानक विपत्ति एक बड़ा प्रश्न चिह्न बन गई। ईश्वर-विश्वासीको मजबूर होकर पूछना पड़ा—"मेरा परमात्मा

बैठा क्या करता रहा है ? उसने अपने हज़ारों लाखों पुत्रोंको उस समय अंग-विहीन और विनष्ट क्यों हो जाने दिया जिस समय वे उसीकी प्रार्थनामें तल्लीन थे ? "

इस भयानक विपत्तिका क्या हो सकता था ? यदि भूकम्प होना ही था तो यह किसी जनविहीन प्रदेश अथवा खुले समुद्रमें ही क्यों नहीं हुआ ? इस भयानक घटनाने वॉल्तेयरके धार्मिक विश्वासको हिला दिया। उसका यह विश्वास हो गया कि हमारा संसार ही सर्वश्रेष्ठ संसार नहीं है। उसका विश्वास हो गया कि बुराई बुराई है; यहाँ, वहाँ, अब और सदैव।

ईश्वर-विश्वासी चुप था। भूकम्पने ईश्वरके अस्तित्वको असिद्ध कर दिया।

५—मानवता

तुलुस (Toulouse) एक विशेष नगर था, धार्मिक अवशेषोंसे परिपूर्ण। वहाँके लोग उतने ही जड थे जितनी जड़ लकड़ीकी मूर्तियाँ। उनके पास ईसाके सात प्रधान शिष्योंकी सूखी हड्डियाँ थीं, हेरोद् द्वारा मारे गये बहुतसे छोटे बच्चोंकी हड्डियाँ थीं, कुँवारी मेरीके वस्त्रका एक टुकडा था और 'सन्त' कहलानेवाले बहुतसे जड़-भरतोंकी खोपड़ियाँ थीं।

इस नगरके अधिवासी प्रति वर्ष दो उत्सव बड़े उत्साहसे मनाते थे—एक ह्यूजनार्टोका देशनिकाला; दूसरे सन्त बारथोलोमियोकी पवित्र हत्या। तुलुसके अधिवासियोंको ईसाइयतने ही शिक्षित किया था और उसीने सभ्य बनाया था।

कुछ प्रोटैस्टैण्ट थे, अल्पमतमें होनेके कारण शान्त और विनम्र। उन्हें इन गीदडों और चीतोंके बीच रहना पड़ता था।

इन प्रोटैस्टैण्ट लोगोंमेंसे एक था—जीन कैले। एक छोटा मोटा व्यापारी। चालीस वर्ष तक वह अपना कारोबार करता रहा। उसके चरित्रपर कहीं कोई धब्बा न था। वह ईमानदार, दयालु और मिलनसार था। उसकी पत्नी और छह बच्चे थे—चार लड़के और दो लड़कियाँ। लड़कोंमेंसे एकने कैथॉलिक मत अपना लिया। सबसे बड़े लड़के, मार्क एण्टोनीको पिताका कारोबार अच्छा नहीं लगता था; उसने क़ानूनका अध्ययन किया। वह तब तक वकालत नहीं कर सकता

था, जब तक कि अपने आपको कैथॉलिक न घोषित करे। उसने अपने प्रोटैस्टेण्ट होनेकी बात छिपा कर लाइसेंस प्राप्त करनेका प्रयत्न किया। इसका पता लग गया। वह खिन्न हुआ। अन्तमें वह इतना अधिक हतोत्साह हुआ कि उसने एक दिन शामको अपने पिताके ही भण्डार-गृहमें अपने गलेमें फाँसी लगाकर आत्म-हत्या कर ली।

तुलुसके धर्म-ध्वजियोंने कथा गढ़ी कि उसके माता-पिताने कैथॉलिक होनेसे बचानेके लिये उसकी हत्या कर डाली है!

इस भयानक दोषारोपणके परिणामस्वरूप पिता, माता, पुत्र, नौकरानी और घरपर आया हुआ एक अतिथि भी पकड़ लिया गया।

मृत-पुत्र शहीद माना गया। उसकी देह पादरियोंके अधिकारमें दे दी गई।

यह १७६१ में हुआ।

इसके बाद वह चीज भी हुई जिसे मुकदमेका नाम दिया गया। कोई गवाही नहीं, किञ्चित् मात्र नहीं। सभी बातें अभियुक्तके पक्षमें थीं।

ज़ीन कैलेको चर्खीपरकी यातना और मृत्यु बदी थी। यह ९ मार्च, सन् १७६२ की बात है। अगले ही दिन उसे मृत्यु-दण्ड मिलनेको था।

१० मार्चको पिताको यन्त्रणा-गृहमें ले जाया गया। जल्लाद और उसके सहकारीको कसम दिलाई गई कि वह अदालतके निर्णयके अनुसार अपराधीको दण्ड देंगे।

उन्होंने पत्थरकी दीवारमें चार फुट ऊँचे जड़े हुए लोहेके एक छल्लेसे उसकी कलाई बाँध दी और जमीनमें गड़े हुए एक दूसरे लोहेके छल्लेसे उसके पैर। तब उन्होंने रस्सियों और जंजीरोंको खींचना आरम्भ किया। परिणामस्वरूप उसके हाथों और पैरोंका जोड़ जोड़ उखड़ गया। तब उससे प्रश्न पूछा गया। उसका उत्तर था—मैं निरपराध हूँ। तब रस्सियोंको और छोटा किया गया, यहाँ तक कि उसके चीथड़े चीथड़े हुए शरीरमें जीवन तड़फड़ाने लगा।

तब भी वह दृढ़ ही रहा। यह सामान्य प्रश्न पूछना था।

मजिस्ट्रेटोंने उसपर फिर अपराध स्वीकार करनेके लिये दबाव डाला। उसका वही उत्तर था कि स्वीकार करनेके लिये कुछ है ही नहीं।

त ब असाधारण प्रश्न पूछनेकी बारी आई।

अभियुक्तके मुँहमें एक नलकी द्वारा लगभग चार गैलन पानी डाला गया। वेदनाकी कोई सीमा न थी। इतना होनेपर भी जीन दृढ रहा।

तब उसे एक मैलेकी गाड़ीमें फाँसीके तख्तेतक ले जाया गया। वहाँ उसके हाथ पैर बाँध दिये गये। जल्लादने लोहेकी मोटी शलाख लेकर उसके हाथ और पैर दो दो जगह तोड़ डाले। उसके बाद यदि वह मर सके तो उसे मरनेके लिए छोड़ दिया गया। वह दो घण्टे तक जिया। उन दो घण्टोंमें भी उसने अपनी निर्दोषताकी ही घोषणा की। वह जल्दी नहीं मर रहा था, इसलिए जल्लादको उसका गला घोट देना पड़ा। इसके बाद उसकी रक्तसे लथपथ देहको एक लकड़ीके खंभेसे बाँधकर जला दिया गया।

यह सब एक दृश्य था—एक त्यौहार—तुलुसके हब्शियोंके लिए।

लेकिन यहीं अन्त नहीं हुआ। घरकी सारी सम्पत्ति ज़ब्त कर ली गई। पुत्रको इस शर्तपर छोड़ा गया कि वह कैथॉलिक बने। नौकरानीको इस शर्त पर कि वह ईसाई-उपाश्रयमें भर्ती हो। दोनों लड़कियोंको भी एक ईसाई उपाश्रयमें ले लिया गया और उस अभागी विधवाको वह जहाँ चाहे वहाँ भटकनेके लिये छोड़ दिया गया।

वॉल्तेयरने इस मुकदमेका हाल सुना। उसके तन-बदनमें आग लग गई। उसने एक लड़केको अपने घरमें रखा। उसने सारे मुक़द्दमेका इतिहास लिखा, उसने राजाओंसे, पत्रव्यवहार किया। जहाँ रुपया खर्च करनेकी ज़रूरत थी, वहाँ रुपया खर्च किया। समस्त यूरोपमें बरसोंतक जीन कैलेकी दर्दभरी आवाज गूँजती रही। वह सफल हुआ। भयानक निर्णय बदला गया। जीन निरपराध सिद्ध हुआ। माँ और उस परिवारके पालन-पोषणके लिये हजारों डालर इकट्ठे हुए।

यह वॉल्तेयरका ही काम था। इस प्रकारकी अनेक कथायें हैं, लेकिन मैं आपको एक ही और सुनाऊँगा।

१७६५ में एबैविल् नामक नगरमें एक पुलपर लगा हुआ पुराना क्रॉस

ज़ख़मी कर दिया गया, चाकूसे छील दिया गया—एक भयानक अपराध किया गया। एक दूसरेपर जड़े हुए दो लकड़ीके टुकड़ोंकी पवित्रता मानवी रक्त और मांससे कहीं बढ़कर थी। दो तरुणोंपर सन्देह किया गया। एकका नाम था शेवालियर द ल बारे और दूसरेका देतालोंद। देतालोंद प्रशिया भाग गया और वहाँ जाकर एक सामान्य सैनिक बन गया।

ल बारे वहीं रहा और उसपर मुक़दमा चला।

बिना किसी प्रमाणके वह दोषी ठहराया गया और दोनोंको निम्नलिखित दण्ड दिये गये—

पहला—सामान्य तथा असामान्य यन्त्रणा सहन करना।

दूसरा—लोहेकी संडासीसे जबान खींच लेना।

तीसरा—गिर्जेके द्वारपर खड़ा करके दाहिने हाथ काट डालना।

चौथा—लकड़ीके खम्भोंके साथ बाँध कर धीमी आगसे जलाकर मारना।

"जिस प्रकार हम दूसरोंके अपराध क्षमा करते हैं, उसी प्रकार तू हमारे अपराधको क्षमा कर।" इस उपदेशको याद करके न्यायाधीशने दण्डमें कुछ कमी कर दी। उसका आदेश था—जलानेसे पहले सिर काट लिया जाय।

पैरिसमें इस मुक़द्दमेकी अपील की गई। पच्चीस विद्वान् न्यायाधीशोंके 'न्याय-मण्डल' ने विचार किया। पहले फैसलाका ही समर्थन किया गया। १७६६ की जुलाईकी पहली तारीखको अपराधीको दण्ड दिया गया।

वॉल्तेयरने न्यायके इस प्रकारके भ्रष्टाचारकी कथा सुनी, तो उसने फ्रांस छोड़ देनेका निश्चय किया। वह ऐसे देशको सदाके लिये नमस्कार कर लेना चाहता था, जहाँ ऐसे अत्याचार सम्भव हों।

उसने सारे मुकदमेका इतिहास देते हुए एक पुस्तिका लिखी।

उसने देतालोंदका पता लगाया। उसकी ओरसे प्रशियाके राजाको लिखा। उसे सेनासे मुक्त कराकर डेढ वर्ष तक अपने घरमें रखा। वाल्तेयरने देता-

स्नोंदको ड्राइंग, गणित और इंजीनियरीकी शिक्षा दिलवाई। उसे बड़ी प्रसन्नता हुई जब उसने एक दिन देतालोंदको 'फैड्रिक महान 'की सेनामें इंजीनियरोंके कप्तानके रूपमें देखा।

वॉल्तेयर ऐसा आदमी था।

वह दलितों और असहायोंका पक्ष लेकर लड़नेवाला था। वह कैसर था जिसके दरबारमें ईसाई धर्म तथा राज्यसे त्रस्त लोग अपील कर सकते थे। वह अपने युगमें दिमागकी श्रेष्ठता और दिलकी उदारताका अवतार था।

एक बड़ी ऊंची सतहसे उसने संसारका पर्यवेक्षण किया। उसका मानसिक क्षितिज बहुत विस्तृत था। उसमें कुछ दोष भी थे—प्रायः वे ही जो पादरी-पुरोहितोंमें भी होते हैं। उसके गुण अपने थे।

वह सर्वसामान्यको शिक्षित करने और दिमागको विकसित करनेका पक्षपाती था। ईसाई पादरी उससे घृणा करते थे।

वह चाहता था कि संसारका ज्ञान हर किसीके लिये सुलभ कर दिया जाय। प्रत्येक ईसाई पादरी उसका शत्रु था।

जहाँ तक सिद्धान्तोंकी बात है वॉल्तेयर अपने समयका सबसे बड़ा कानूनदाँ था। मेरे कहनेका यह मतलब नहीं कि उसे सब मुकद्दमोंके निर्णयोंका ज्ञान था, लेकिन वह न केवल यही साफ साफ समझता था कि कानून किस प्रकार लागू किया जाना चाहिये, बल्कि 'गवाहीकी फिलासफी' को भी समझता था और सन्देह तथा प्रमाणके भेदको पहचानता था। वह जानता था कि विश्वास किसे कहते हैं और ज्ञान किसे? उसने अपने समयके कानूनों और न्यायालयोंकी बुराइयोंको दूर करनेके लिये अकेले जितना कार्य्य किया उतना उसके समयके दूसरे सब वकीलों और राजनीतिज्ञोंने मिलकर भी नहीं किया।

उसका सिद्धान्त था—

"आदमी बराबर पैदा हुए हैं।"

"हमें गुणोंका आदर करना चाहिये।"

"हमें इस बातको अपने दिलमें अच्छी तरह बिठा लेना चाहिये कि सब आदमी एक बराबर पैदा हुए हैं।"

यह वॉल्तेयर ही था जिसने फ्रैंकलिन, जैफरसन और थामस पेनके दिल और दिमागमें स्वतन्त्रताके बीज बोये।

पुफैन्दार्फका पक्ष था कि गुलामीकी प्रथा आंशिक तौरपर दो पक्षोंके आपसी समझौतेपर निर्भर करती है।

वाल्तेयर बोला—"मुझे वह शर्त-नामा दिखाओ जिसपर गुलाम बननेवालोंने अपने हस्ताक्षर किये हों। मैं तुम्हारी बात मान लूँगा।"

वॉल्तेयर कोई सन्त नहीं था। उसे जीसूइट लोगोंके यहाँ शिक्षा मिली-थी। वह अपनी आत्माकी मुक्तिके लिये कभी चिन्तित नही होता था। धार्मिक सिद्धान्तोंके तमाम झगड़ोंपर वह हँसता था। वह एक संतसे बहुत अच्छा था।

उसके समयके अधिकांश ईसाई धर्मको नित्य-प्रति काममें लानेकी नहीं किन्तु आपत्तिके समय काममें आनेकी चीज मानते थे, वैसे ही जैसे कि तूफान आने पर प्राणोंकी रक्षाके लिये जहाज़ोंपर जीवन-नौकायें रहती हैं।

वॉल्तेयर मानवताके धर्ममें विश्वास करता था, भले और उदारता-पूर्ण कर्म करनेमें।

ईसाई पादरियोंने शताब्दियों तक सदाचारको ऐसे कुरूप, खट्टे और ठंडे रूपमें चित्रित किया कि उसकी तुलनामें दुराचार सुन्दर प्रतीत होने लगा। वॉल्तेयरने उपयोगी वस्तुओंके सौन्दर्य्यका तथा मिथ्या विश्वासोंके घृणित स्वरूपका प्रतिपादन किया।

वह अपने समयका सबसे बड़ा कवि अथवा नाटककार नहीं किन्तु सबसे बड़ा आदमी था, स्वतन्त्रताका सबसे बड़ा मित्र और मिथ्या विश्वासोंका सबसे बड़ा शत्रु।

धार्मिक शब्दके ऊँचेसे ऊँचे श्रेष्ठतम अर्थोंमें वह अपने समयका अति गम्भीर धार्मिक आदमी था।

६—वापिसी

पूरे २७ वर्ष तक बाहर रहनेके बाद वॉल्तेयर पैरिस वापिस आया। इस सारे समयमें वह सभ्य संसारमे प्रथम स्थानपर रहा। उसकी यात्रा विजय-

यात्रा थी। उसका एक विजयीकी तरह स्वागत हुआ। विद्वत्परिषद् (एकाडेमी) के लोग उसका स्वागत करनेके लिये आये। यह सौभाग्य कभी किसी राजाको भी नसीब नहीं हुआ था। उसका इरीन नामक नाटक खेला गया। थियेटरमें उसकी पूजा की गई—पत्तोंसे, फूलोंसे, सुगन्धिसे। वॉल्तेयर पूजाकी सुगन्धसे मस्त हो गया। अब वह फ्रांसके कवियोंमें अग्रणी था। संसारके साहित्यिकोंमें उसका पहला दर्जा था — प्रतिभाके दैवी-अधिकारसे बना हुआ राजा। उस समय फ्रांसमे तीन महान् शक्तियाँ थीं — राज्य, वेदिका और वॉल्तेयर। राजा वॉल्तेयरका शत्रु था। राजदरबार उससे किसी तरहका सरोकार न रख सकता था। दुखित और परेशान ईसाई-पादरी वॉल्तेयरसे बदला लेनेकी ताकमें लगे रहते थे। यह सब होनेपर भी इस आदमीकी इतनी ख्याति थी, इसका जनतापर इतना अधिकार था, कि वह राज्यासनके विरोधके बावजूद, धर्मासनके विरोधके बावजूद लोगोंके हृदयासनपर आसीन था।

उस समय वह चौरासी वर्षका बूढ़ा आदमी था। वह जीवनकी सुख-समृद्धिसे, आरामतलबीसे घिरा था—संसारका सबसे धनी लेखक। उसके अन्तिम वर्ष खुशामदकी—पूजाकी—शराब पीकर मस्तीके वर्ष थे। वह अपनी आयुके शिखरपर था।

पादरी-पुरोहित चिन्तित हुए। उन्हें डर लगा कि कार्य-बहुलतामे ईश्वर कहीं वॉल्तेयरको कड़ा दण्ड देना न भूल जाय।

१७७८ के मई महीनेमें यह काना-फूसी शुरू हुई कि वॉल्तेयरका अन्तिम समय समीप आ पहुँचा है। आशाको चहार-दीवारीपर मिथ्याविश्वासके गीध आ बैठे कि कब उन्हें उनका शिकार हाथ लगता है।

"उसका भतीजा कुछ पादरी-पुरोहितोंको ले आया, जिन्होंने पूछा कि क्या तुम ईसामसीहके ईश्वरके बेटा होनेमे विश्वास करते हो? वॉल्तेयरने दूसरी ओर मुँह फेर लिया और कहा—"मुझे शान्तिसे मरने दो।"

१७७८ के मई महीनेकी ३० तारीखको रातके सवा ग्यारह बजे वह पूर्ण शान्तिके साथ इस संसारसे विदा हुआ। अन्तिम साँस आनेसे कुछ ही क्षण पहले उसने मोरॉका हाथ अपने हाथमें लिया और उसे दबाकर कहा, "मोरॉं, विदा। मैं चला।" यही वॉल्तेयरके अन्तिम शब्द थे।

एक ऐसी नदीकी तरह, जिसके दोनों तटोंपर हरियाली और छाया थी, वह बिना किसी भी प्रकारकी हलचलके उस समुद्रमें जा विलीन हुआ, जहाँ जाकर जीवन विश्रांति पाता है।

उन दिनों दार्शनिकों—विचारकोंको—पवित्र भूमिमें नहीं दफनाया जाता था। लोग डरते थे कि उनके सिद्धान्तोंसे कहीं वह भूमि अपवित्र न हो जाय। दूसरा डर यह भी था कि पुनर्जीवनके भीड़-भड़क्केमें कहीं वह चुपकेसे स्वर्ग-की ओर न बढ़ जायँ। इस लिये कुछको जला दिया जाता था और उनकी राख बखेर दी जाती थी, कुछकी नग्न-देह गीधों आदिके लिये छोड़ दी जाती थी और कुछको अपवित्र-भूमिमें गाड़ दिया जाता था।

जो हो, मरनेके बाद हमारी देहका क्या होनेवाला है, इसमें हम सबकी दिलचस्पी रहती ही है। मृत्युके साथ एक विशेष प्रकारकी विनम्रता भी जुड़ी हुई है। इस विषयमें वॉल्तेयर बेहिसाब भावुक था। पवित्र-भूमिमें दफनाये जानेके लिये उसने पाप-स्वीकृति, शुद्धि और अन्तिम-पवित्रताका नाटक करना स्वीकार कर लिया। पादरी जानते थे कि वह यह सब गम्भीरता-पूर्वक कर रहा है और वह भी जानता था कि पादरी उसे पेरिसकी किसी भी श्मशान-भूमिमें दफनाने नहीं देंगे।

उसकी मृत्यु एक रहस्य बनाकर रखी गई। १७७८ के मईके अन्तिम दिन सन्ध्याके समय वॉल्तेयरके शरीरको गाऊन पहनाकर एक गाड़ीमें रखा गया। उसका रंग-ढंग ऐसा बनाया गया मानों वह कोई हिल-डुल न सकनेवाला रोगी हो। उसके पास एक नौकर बैठा था, जिसका काम था कि वह वॉल्तेयरके शरीरको यथोचित पोजीशनमें रखे रहे। उस गाड़ीको छह घोड़े जोते गये जिससे लोग समझें कि कोई बड़ा जमींदार अपनी जमींदारीमें जा रहा है। एक दूसरी गाड़ीमें वॉल्तेयरके दो सम्बन्धी थे। वे सारी रात चलते रहे और अगले दिन एक गिरजेके आँगनमें पहुँचे। आवश्यक कागज-पत्र दिखाये गये। वॉल्तेयरके शरीरकी उपस्थितिमें अन्तिम धार्मिक संस्कार हुआ। वॉल्तेयरको दो गज जगह मिली।

इसके बाद तुरन्त ही उस पादरीको जिसने दया करके थोड़ी-सी जगह दे दी थी, उसके बिशपका कठोर पत्र मिला, जिसमें वाल्तेयरके वहाँ दफनाये जानेका निषेध था।

किन्तु, अब देर हो चुकी थी।

दूसरी बार फिर पेरिस।

पूरे चार सौ वर्ष तक बेस्टाइलका कारागार अत्याचारका बाह्य प्रतीक था। इसकी चार दीवारीके भीतर श्रेष्ठतम विभूतियोंका बलिदान हुआ। यह स्थायी आतंक था। यह राजा और पुरोहितोंका बहुधा पहला, नहीं तो अन्तिम तर्क था। इसके गीले और अँधेरे तहखानोंसे, इसके बड़े मीनारोंसे, इसकी रहस्य-पूर्ण कोठड़ियोंसे और इसके नाना प्रकारके यन्त्रणाके साधनोंसे ईश्वरका निषेध होता था।

१७८९ की १४ जुलाईको जब अत्याचारसे पागल बने हुए लोगोंने तूफानकी तरह आक्रमण करके बैस्टाइलपर अपना अधिकार कर लिया, तो उस समय उनका युद्धका नारा था—वॉल्तेयर ज़िंदाबाद।

१७९१ मे वॉल्तेयरकी राखको उस भवनमे रखे जानेकी अनुज्ञा मिली, जहाँ फ्रांसके सब महापुरुषोंकी राखने स्थान पाया है। उसे पेरिससे ११० मीलकी दूरीपर चोरीसे दफनाया गया था। आज उसे एक जातिकी जाति वहाँसे हटाने जा रही थी। एक सौ मीलकी श्मशान-यात्राका जुलूस; हर गाँवमे बन्दनवार और झण्डियाँ; सभी लोग फ्रान्सके दार्शनिकके प्रति, मिथ्याविश्वासोंके विनाशकके प्रति, सम्मान प्रदर्शित करनेके लिये उत्सुक थे।

पेरिस पहुँचकर यह महान् जुलूस सन्त अन्तोनीकी गलीकी ओर मुडा, और वहाँ पहुँचकर रुक गया। रातभर वॉल्तेयरके अवशेषने बैस्टाइलाके भग्नावशेषोंपर विश्राम किया।

विशाल जनता श्रद्धा और प्रेमसे सिर झुकाये खड़ी थी। उसके कानमे किसी पादरीके यह शब्द सुनाई दिये—ईश्वरकी ओरसे बदला लिया जायगा।

ईसाई-पादरीका कथन भविष्यवाणी सिद्ध हुआ। लोग वॉल्तेयरकी समाधिमेंसे उसकी राख निकाल ले गये।

"समाधि खाली पडी रह गई।"

"ईश्वरकी ओरसे बदला ले लिया गया।"

"संसार वॉल्तेयरकी ख्यातिसे गूँज उठा।"

"आदमीकी विजय हुई।"

क्या समस्त फ्रांसमें किसी पादरीकी कोई ऐसी क़ब्र है जिसपर कोई भी स्वतन्त्रताका प्रेमी एक फूल या एक आँसू चढ़ायेगा? क्या कोई भी ऐसी क़ब्र है जिसमें किसी ईसाई संतकी राख हो और उससे एक भी प्रकाशकी किरण निकलनेकी आशा की जा सके?

सत्रह वर्षकी आयुमें वाल्तेयरने ओएडिपस् (Oedipus) लिखी और तिरासी वर्षकी आयुमे इरिन (Erene)। इन दो दुःखान्त कृतियोंके बीचमें हज़ारों जीवनोंकी सफलताओंका सार था।

उसका सिंहासन आल्पसके दामनमें था। उस सिंहासनपर बैठकर वॉल्तेयरने यूरोपके प्रत्येक ढोंगीकी ओर अपनी घृणाको अँगुली उठाई।

आधी शताब्दी तक, वह राज्यासन और धर्मासनके समस्त विरोधोंके बावजूद तर्ककी मशालको अपने वीरता-पूर्ण हाथोंमें पकड़े रहा, उस मशालको जिसके प्रकाशसे एक दिन संसार प्रकाशित होगा।

एक गृहस्थका प्रवचन *

इसलिये हमें अपने बच्चोंको सिखाना चाहिये कि अधिक धन एक महान् अभिशाप है। अधिक धन पापोंका जनक है। दूसरे सिरेपर है अतिदरिद्रता। आज रात आपसे जानना चाहता हूँ कि क्या जैसा अब है, वैसा ही सदैव रहेगा? मैं आशा करता हूँ कि नहीं। क्या करोड़ों आदमियोंके ओठ अकालके कारण सदैव सफेद ही बने रहेंगे? क्या सम्माननीय लोगोंके पाषाण-हृदयोंके सम्मुख गरीबोंका हाथ सदा फैला ही रहेगा? क्या हर आदमीको जो अच्छा भोजन करने बैठता है, हमेशा भूखोंकी याद आती ही रहेगी? क्या हर आदमीको जो अपने चूल्हेके पास बैठा आग ताप रहा है, सर्दीमें ठिठुरती हुई, अपने बच्चेको गले लगाये, किसी गरीब माताकी याद आती ही रहेगी? मैं आशा करता हूँ कि नहीं। क्या धनी और निर्धनका भेद—केवल भौतिक ही नहीं भावनाओंका भी भेद—सदैव बना रहेगा?—और यह भेद दिनप्रतिदिन बढ़ता ही रहेगा?

और एक चीज है जो धनी तथा निर्धनके बीचकी इस दरारको बढ़ाती ही जाती है। संयुक्त राज्यके प्रायः हर नगरमें तुम देखोगे कि एक हिस्सा धनियोंका है और दूसरा निर्धनोंका। निर्धन बाहरी ठाट-बाटके अतिरिक्त धनी वर्गका और कुछ नहीं देख पाते। जिस समय वे उनके महलोंके पाससे गुजरते हैं उस समय बेचारोंके हृदयोंमें ईर्ष्या नामका विषैला पौधा उग आता है। धनी-वर्ग भी गरीबोंके झोपड़ो, चीथड़ों और उनकी दरिद्रताके अतिरिक्त किसी चीजसे परिचित नहीं। वे कहते हैं कि ईश्वरको हजार धन्यवाद है कि हम वैसे नहीं हैं। उनके हृदय जुगुप्सा और घृणासे भरे हैं, और दूसरोंके हृदय ईर्ष्या और घृणासे। कोई ऐसा रास्ता निकलना चाहिये, जिससे धनी और गरीब दोनो परिचित हो सकें। गरीब नहीं जानते कि उनसे कितने सफेदपोश सहानुभूति

* 'एक गृहस्थका प्रवचन' शीर्षक लेखका आगेका भाग—जो पृ० ६२–६४ मे छपा है। ६४ वें पेजके बाद यह अंश छपना चाहिए था, जो भूलसे छूट गया।

रखते हैं और अमीर नहीं जानते कि इन चीथड़ोंके पीछे कैसे हृदय छिपे रहते हैं। यदि हम कभी प्रेमपूर्ण गरीबोंको सहानुभूतिपूर्ण अमीरोंसे परिचित करा दें, तो यह समस्या हल हो जायगी।

और भी सैकड़ों तरहसे वे आपसमें विभक्त हैं। यदि कोई चीज उनको एक दूसरेके पास ला सकती है तो वह है विश्वासकी समानता। रोमन कैथॉलिक देशोंमें धनी और निर्धनपर इस बातका अच्छा असर पड़ता है। उनका विश्वास एक ही है। इसी प्रकार इस्लामी देशोंमें वे एक ही मसजिदमें और एक ही खुदाके सामने नमाज पढ़ सकते हैं। लेकिन हमारा क्या हाल है? यहाँ गरीब आदमी आश्वस्ति अनुभव नहीं करता। इसका परिणाम यह होता है कि मजहब भी अमीरों गरीबोंको एक नहीं होने देता। मैं मजहबके विरुद्ध कुछ नहीं बोलता हूँ। वह मेरा विषय नहीं है; किन्तु मैं उस धर्मका आदर करूँगा जो सप्ताहमें एक ही दिन सही, और वर्षमें एक घण्टा ही सही, गरीबीसे हाथ मिलाये और एक क्षणके लिये भी वास्तविक मैत्रीका दृश्य उपस्थित कर दे।

पुराने समयमें, जब मानव सभ्य नहीं बना था, जीविका एक सरल काम था। थोड़ा शिकार कर लेना, थोड़ी मछली मार लेना, थोड़े फल गिरा लेना, थोड़े कन्द-मूल खोद लेना, सभी कुछ सरल था। सभी धन्धे लगभग समान स्तरके थे। उनमें असफलताके अवसर भी बहुत ही कम आते थे। शनैः शनैः जीविकार्जन एक बड़ा जटिल विषय बन गया। लगभग सभी गलियोंमें ऐसे आदमियोंकी भरमार हो गई जो एक ही चीज़की प्राप्तिके लिये संघर्ष कर रहे हैं।

यह जीवन-संघर्ष बहुत ही कठिन हो चला है। जिस मात्रामें हमारी जन-संख्यामें वृद्धि हुई है, ठीक उसी मात्रामें हमारी असफलताओंके प्रतिशतमें भी वृद्धि हुई है। अब ऐसा हो गया है कि जीविकोपार्जन हर आदमीके वशकी बात नहीं रही। कोई पर्य्याप्त चालाक नहीं, कोई पर्य्याप्त बुद्धिमान् नहीं, कोई पर्य्याप्त मजबूत नहीं, कोई अत्यधिक उदार है, कोई अत्यधिक लापरवाह है। कुछ आदमी अभागे होते हैं; अर्थात् कहीं कुछ भी गिरे उनके सिरपर गिरेगा; कहीं किसीका भी बुरा हो, उनका होगा।

एक और कठिनाई है। ज्यों ज्यों जीवन अधिक जटिल होता जा

रहा है, और जब कि हर कोई किसी न किसी उद्देश्य-विशेषको सिद्ध करना चाहता है, तो सारी दिमागी-शक्ति उस उद्देश्य तक छोटेसे छोटे रास्तेसे पहुँचनेमें खर्च हो रही है। परिणाम यह हुआ है कि वर्तमान युग आविष्कारोंका युग हो गया है। लाखों मशीनोंका आविष्कार हो चुका है। हर किसीका उद्देश है श्रमकी बचत करना। यदि ये मशीनें श्रमिकोंकी सहायक होतीं, तो यह कितना बड़ा वरदान बनतीं? लेकिन श्रम करनेवाला मशीनका मालिक नहीं है; मशीन ही उसकी मालिक है। यही बड़ी कठिनाई है।

पुराने समयमें, जब मैं छोटा था, छोटे छोटे नगरोंमें क्या होता था? एक या दो चमार होते, एकाध दर्जी होता, एकाध लोहार। उन दिनों मानवताका अंश एक पर्य्याप्त मात्रामें रहता था। हर कोई एक दूसरेका परिचित था। यदि बुरे दिन आते, तो बेचारे चमार पुराने जूतोंकी मरम्मत करके, उनमें एडी बिठाकर, उन्हें सीधा करके अपना पेट पाल लेते। दर्ज़ी और लोहारका भी यही हाल था। उन्हें उधार मिल जाता था। यदि वह वर्ष-भर भी कर्ज़ा न अदा कर सकते, तो उन्हें अगले वर्ष भी तंग नहीं किया जाता था। वे पर्य्याप्त सुखी थे।

अब कोई भी आदमी चमार नहीं है। एक बड़ी इमारत है। कई लाख डालरकी मशीनें और तीन या चार हजार आदमी। सारी इमारतमें एक भी मिस्त्री नहीं। एक फीते सीता है, दूसरा मशीनोंको तेल देता है, तीसरा जूतोंके तल्ले काटता है, चौथा धागोंमें मोम लगाता है। परिणाम क्या होना है? ज्यों ही मशीनें रुकती हैं, तीन हजार आदमी बेकार हो जाते हैं। तब अभाव और अकाल दर्शन देते हैं। और इस बीच यदि उनका एक बच्चा भी मर जाय, तो उसकी मिट्टीको ठिकाने लगानेके लिये उन्हें जितने पैसोंकी आवश्यकता होगी—उतने कमानेमें उन्हें न जाने कितना समय लगेगा!...इतना सब होनेपर भी हम इन मशीनोंद्वारा इतनी चीज़ें पैदा कर सकते हैं कि सारे बाजारोंको पाट दें। खेतीके औज़ारोंके आविष्कारद्वारा संसार-भरके प्राणियोंको अन्न पहुँचाया जा सकता है। कोई एक भी चीज़ ऐसी नहीं है जिसका आदमी इस्तेमाल करता हो और वह तुरन्त इतनी अधिक मात्रामें पैदा न की जा सकती हो कि उसकी कुछ कीमत ही न रहे। उत्पादनका इतना अधिक सामर्थ्य रहने पर भी, पैदा करनेकी इतनी अधिक ताकत रहने पर भी,

लाखों-करोड़ों आदमी नितान्त अभावकी अवस्थामें हैं। अनाजके गोदाम फटे जा रहे हैं और गरीबोंके दरवाजोंपर अकाल मुँह बाये खड़ा है। प्रत्येक वस्तु लाखों-करोड़ोंकी संख्यामें और फिर भी लाखों-करोड़ों आदमियोंको लगभग प्रत्येक वस्तुका अभाव और उनके पास एक प्रकारसे कुछ भी नहीं।

यह एक बड़ी भारी गड़बड़ी है। हम मशीन और मानवके संघर्षके मध्यमें आ खड़े हुए हैं। मैं आपसे कहता हूँ कि यह विषय विचारणीय है। कोई भी बात जिसका मानवके भविष्यपर असर पड़नेवाला हो, कोई भी बात जिसका हमारे और हमारे बच्चोंके सुखसे सम्बन्ध हो, हमारे विचार करनेकी ही है।

मेरी सहानुभूति गरीबों और मजदूरोंके साथ है। मुझे अच्छी तरह समझ लीजिये। मैं अराजकवादी नहीं हूँ। अराजकवादिता अत्याचारकी प्रतिक्रिया है। मैं समाजवादी भी नहीं हूँ। मैं साम्यवादी भी नहीं हूँ। मैं व्यक्तिवादी हूँ। मैं सरकारके अत्याचारमें विश्वास नहीं करता; लेकिन मैं मानव और मानवके बीच न्याय किये जानेमें विश्वास करता हूँ।

इलाज क्या है? हम इस विषयमें विचार कर सकते हैं।

किसी भी आदमीको जमीनके किसी ऐसे टुकड़ेपर अधिकार नहीं करने देना चाहिये जिसे वह स्वयं जोतता-बोता न हो। हर कोई इस बातको जानता है। मेरे पास बहुत-सी जमीन रही है, किन्तु जैसे मैं इस बातको जानता हूँ कि मैं जीवित हूँ, उसी तरह इस बातको भी जानता हूँ कि किसी भी आदमीके पास कोई जमीन नहीं होनी चाहिये, जब तक वह उसे स्वयं जोतता-बोता न हो। ऐसा क्यों? क्या तुम नहीं जानते कि यदि लोग हवाको बोतलोंमें बन्द करके रख सकें, तो वह उसे भी अवश्य रखेंगे? क्या तुम नहीं जानते कि तुरन्त एक अमरीकन 'हवा-बन्द एसोसिएशन' स्थापित हो जायगी? और क्या तुम यह नहीं जानते कि वे लोग लाखों करोड़ों आदमियोंको साँस लेनेकी हवाके अभावमें इस लिये मर जाने देंगे क्योंकि बेचारे उसका मूल्य नहीं चुका सकते? मैं किसीको दोष नहीं दे रहा हूँ। मैं केवल वस्तु-स्थितिका वर्णन कर रहा हूँ। भूमि प्रकृति-पुत्रोंकी है। प्रकृति हर उत्पन्न होनेवाले बच्चेको इस संसारमें आनेका निमन्त्रण देती है। और तुम मेरे बारेमें क्या सोचोगे! यदि तुममेंसे किसीने कभी कोई टिकट न लिया होता और तुम्हें यहाँ आनेका केवल निमन्त्रण मिला होता और यहाँ आनेपर तुम देखते कि

एक आदमी सौ कुर्सियोंको अपनी कहता है, दूसरा पचहत्तरको और तीसरा पचासको और इस कारण तुम्हें खड़े रहना पड़ रहा है, तो तुम मेरे निमंत्रणके बारेमें क्या सोचते ? मुझे ऐसा लगता है कि प्रकृतिके हर बच्चेका अपने हिस्सेकी भूमिपर अधिकार है। यदि कोई बच्चा उससे पहले पैदा हो गया है तो उसे कोई अधिकार नहीं कि वह दूसरेके हिस्सेकी भूमिको हथिया ले। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ ? क्यों कि यह हमारे हितमें नहीं है कि थोड़ेसे जमीन्दार हों और लाखों-करोड़ों किसान हों।

किरायेका घर विनम्रताका शत्रु है, सदाचारका शत्रु है, और देशभक्तिका शत्रु है। सद्गुणोंका विकास अपने घरमें होता है। मैं चाहूँगा कि एक ऐसा कानून हो जिसके अनुसार कोई भी घर कर्जेके कारण बेचा न जा सके और एक मीमातक किसी घरपर किसी प्रकारका टैक्स न लगे। ऐसा होनेसे ही हर आदमीका अपना घर हो सकता है और तभी हमारी जाति देश-भक्तोंकी जाति हो सकती है।

मैं धनी आदमियोंको धनी होनेके लिए दोष नहीं देता। मैं अधिकांशपर दया करता हूँ। मै यह पसंद करूँगा कि मैं गरीब आदमी होऊँ और मेरे दिलमें थोड़ी-सी सहानुभूति रहे। मैं पृथ्वी-भरकी उन सोनेकी खानोंकी तरहका जिनमें कोई फूल नहीं उगता ऐसा धनी आदमी होना पसद नहीं करूँगा, जिसके हृदयमें कहीं कुछ भी सहानुभूति न हो। मेरी समझमें नहीं आता कि एक आदमी किस प्रकार लाखों करोड़ों रखकर प्रतिदिन ऐसे लोगोंके पाससे गुजर सकता है जिनके पास खानेतकको पर्याप्त नहीं। मैं यह बात समझ ही नहीं सकता। मैं स्वयं भी ऐसा हो सकता हूँ। रुपयेमें कुछ ऐसी विशेषता है कि वह स्नेहस्रोतों-को सुखा डालती है। संभवत. यह इस तरह होता है; —ज्यों ही एक आदमीके पास रुपया आता है, त्यों ही इतने अधिक आदमी उससे रुपया लेनेके लिए प्रयत्नशील हो जाते हैं कि वह सारी मानव-जातिको अपना शत्रु समझने लगता है। प्रायः वह सोचता है कि दूसरे लोग भी उसकी तरह धनी हो सकते हैं, यदि वे उसीकी तरह अपने व्यापारको ओर ध्यान दें। अच्छी तरह समझ लीजिए। मैं इन लोगोंको दोषी नहीं ठहरा रहा हूँ। हम सबमें पर्याप्त मानवता है। तुम्हे उस आदमीकी कथा याद होगी जिसने समाज-वादियोंकी एक सभामें अपने भाषणके अन्तमें कहा—'ईश्वरको धन्यवाद है कि

मेरे पास किसी चीजका एकाधिकार नहीं है,' किन्तु जब वह अपनी जगहपर बैठने लगा तो उसके मुहसे निकला—'हे भगवन्, यदि मेरे पास एकाधिकार होता!' हमें याद रखना चाहिये कि लोग धनी स्वाभाविक ढंगसे बनते हैं। उन्हें दोष देनेकी आवश्यकता नहीं। वास्तवमें दोषी सामाजिक व्यवस्था है।

चंद लोगोंको सरकारद्वारा जो विशेषाधिकार दिये गये हैं, उनका उद्देश्य अधिकांश लोगोंकी भलाई ही है। पर जब उनसे अधिकांश लोगोंका भला न होता हो, तो उनसे वह अधिकार ले लेना चाहिये—जोर-जबरदस्तीसे नहीं किन्तु कानूनद्वारा मुआवजा देकर।

इसका उपाय क्या है? इस देशमें सबसे बड़ा शस्त्र मतपत्र है। प्रत्येक मतदाता एक स्वतंत्र जनतंत्र है। यहाँ निर्धनतम व्यक्ति भी सबसे बड़े धनीके बराबर है। उसके मतका ठीक वही मूल्य होगा, जो उस हाथद्वारा डाले गये मतका जिसके अधिकारमें लाखों करोड़ों हैं। देशमें गरीब लोगोंका ही बहुमत है। यदि कोई ऐसा कानून है जो उन्हें त्रास देता है, तो यह उनका अपना अपराध है। वे किसी न किसी पार्टीके पीछे चले हैं। उन्हें दूसरोंने पथ-भ्रष्ट किया है। किसी आदमीको कभी किसी भी पार्टीके पीछे नहीं चलना चाहिये चाहे उसमें आधा संसार हो, और चाहे उसमें सबसे अधिक बुद्धि-मान् हों। उसे किसी पार्टीका साथ तभी देना चाहिये जब वह पार्टी उसके रास्तेपर चले। किसी ईमानदार आदमीको किसी दल विशेषमें सम्मिलत होनेके लिए अपना मत नहीं बदलना चाहिए।

मत-पत्र एक शक्ति है। पूँजी और श्रमके ये बहुतसे झगड़े कानूनद्वारा तय होने चाहिए। लेकिन मैं सोचता हूँ कि सबसे अधिक भलाई 'संस्कृति' द्वारा हो सकती है, एक प्रकारकी न्यायकी भावनाके विकासद्वारा। मैं आज आपसे कहता हूँ कि एक वास्तविक संस्कृत आदमी किसी भी चीज़को कभी उसके वास्तविक मूल्यसे कमपर लेनेकी कोशिश नहीं करेगा; एक संस्कृत आदमी किसी भी चीज़को कभी उसके वास्तविक मूल्यसे अधिकपर बेचनेकी कोशिश नहीं करेगा। एक वास्तविक संस्कृत आदमी किसीको ठगनेकी अपेक्षा ठगा जाना अधिक पसन्द करेगा। यह सब होने पर भी, अमरीकामें, हम सब लोग भले तो हैं, किन्तु जब कोई चीज़ खरीदनी होती है तो हम उसके

वास्तविक मूल्यसे कुछ कम देना चाहते हैं और जब कोई चीज़ बेचनी होती है तो उसके वास्तविक मूल्यसे कुछ अधिक लेना चाहते हैं। इससे दोनों ओर सड़ाँध पैदा होती है। इसका ख़ात्मा होना चाहिए।

इस दिशामें हम एक क़दम उठायेंगे। हम कहेंगे कि मानव-परिश्रम, मात्र उत्पत्ति और माँगके नियमके अधीन नहीं होगा। यह निर्दयताकी पराकाष्ठा है। हर आदमीको दूसरेको अपने सामर्थ्यके अनुसार देना चाहिये, और इतना पर्याप्त देना चाहिये कि वह खा-पीकर कुछ बचा भी सके।

लंदन जाओ। वह संसारका सबसे बड़ा नगर है और सबसे अधिक धनिक। यह सब होनेपर भी वहाँ प्रति छह आदमियोंमेंसे एक आदमी या तो अस्पतालमें मरता है, या कार्य-गृहमें, या जेलखानेमें। क्या इससे अधिक श्रेष्ठ बात हमें कभी जाननेको नहीं मिलेगी? क्या सभ्यताकी यही पराकाष्ठा है? इसी नगरमे कपडे सीकर गुजारा करनेवाली औरतोंकी ओर देखो। जो चोगा पैंतालीस डालरमे विकता है, उसकी सिलाईके उन्हें पैंतालीस सेण्ट मिलते हैं!

मैं इसे 'सभ्यता' नहीं कह सकता। संसारमें कुछ इससे अधिक न्यायपूर्ण विभागी-करण होना चाहिये।

तुम हड़तालोंद्वारा इसे प्राप्त नहीं कर सकते। पहली हड़ताल, जो बहुत सफल होगी, वही आखिरी हड़ताल होगी। न्याय और शांतिमें विश्वास रखनेवाले लोग उसे दबा देंगे। हड़ताल करना कोई इलाज नहीं। बायकाट करना भी कोई इलाज नहीं। पशु-बल भी कोई इलाज नहीं। इन प्रश्नोंको तर्कसे, बुद्धिसे, विचारसे और सहानुभूतिसे हल करना होगा। जिस निर्णयकी नींवमे न्याय नहीं और जो मानव-बुद्धिके सम्पूर्ण विश्वासद्वारा सुरक्षित नहीं, वह कभी स्थायी निर्णय नहीं हो सकता।

इस देशमें अराजकताके लिये जगह नहीं, साम्यवादके लिये जगह नहीं; समाजवादके लिये जगह नहीं। क्यों कि इस देशमें राजनीतिक शक्ति समान रूपसे बँटी हुई है। और दूसरा क्या कारण है? वाणी स्वतन्त्र है। और क्या कारण है? प्रेस बन्धन-मुक्त है। और यही सब है जो हमें 'अधिकार' रूपसे

प्राप्त होना चाहिये—प्रेसकी स्वतन्त्रता, वाणीकी स्वतन्त्रता और व्यक्तिकी सुरक्षा। यह पर्य्याप्त है। इतना ही मैं चाहता हूँ। रूस जैसे देशमें जहाँ हर मुँह खोलनेवाला दण्डित होता है, कुछ दूसरे तरीकोंका समर्थन किया जा सकता है। जहाँ श्रेष्ठतम लोगोंको साइबेरिया भेजा जाता है, अराजकवादिता-का किसी हद तक समर्थन हो सकता है। ऐसे देशमें जहाँ कोई आदमी किसी तरहकी दरख्वास्त नहीं दे सकता, कुछ गुंजायश स्वीकार की जा सकती है, किन्तु यहाँ नहीं।

कुछ वर्ष पहले, जब हमने 'दासप्रथा' का विनाश नहीं किया था, नैतिक दृष्टिसे हम बड़े ही नीचे स्तरपर थे। लेकिन अब जब कि रिवाजके अतिरिक्त हम और किसी भी बेड़ीसे जकड़े नहीं हैं, यही संसारकी महान्तम सरकार है। आज अमरीकामें शायद ही कोई ऐसा महत्त्वपूर्ण आदमी होगा, जो दरिद्रताकी गोदमें नहीं पला और जिसकी बात कोई सुनना पसन्द करता है। धनियोंके बच्चोंकी ओर देखो। हे भगवान्, धनी होनेका कितना बड़ा दण्ड है!

कुछ लोगोंका कहना है, कि ये श्रम करनेवाले लोग बड़े खतरनाक हैं। मैं इससे इंकार करता हूँ। हम सब उनके हाथमें हैं। वे ही हमारी मोटर-गाड़ि-योंके चलानेवाले हैं। लगभग रोज ही हमारा जीवन उनके हाथका खिलौना बनता है। वे ही हम सबके घरोंमें काम करते हैं। वे ही ससार-भरका परिश्रम करते हैं। हम सबका जीवन उन्हींकी दयापर निर्भर है। तो भी अपनी संख्याके हिसाबसे वे धनियोंकी अपेक्षा अधिक अपराध नहीं करते। याद रखिये, मैं उनसे भयभीत नहीं हूँ। मैं एकाधिकार रखनेवालोंसे भी नहीं डरता। क्यों कि ज्यों ही ये लोग सार्वजनिक हितके प्रतिकूल पड़ते हैं, त्यों ही जनता एक सीमातक सह लेनेके बाद उनका खात्मा कर देती है— क्रोधके कारण नहीं, घृणाके कारण नहीं, किन्तु स्वतंत्रता और न्यायसे प्रेम करनेके कारण।

इस देशमें एक और भी वर्ग है, हम जिसे 'जरायम-पेशा' कहते हैं।

जरा उस बातको याद करो जो मैंने आरम्भमें ही कही थी, अर्थात् हर आदमी वही कुछ होता है, जो उसे होना चाहिये। हर अपराध एक आवश्यक परिणाम है। बीज बोया गया है, हल जोता गया है, पौधे अच्छी तरहसे सींचे गये हैं और पैदावार विधिवत् काटी गई है। हर अपराध मजबूरीमेंसे

पैदा होता है। यदि तुम चाहते हो कि अपराध कम हों, तो तुम्हें परिस्थितिमें परिवर्तन करना होगा। गरीबी अपराधोंकी जननी है। अभाव, चिथड़े, सूखी रोटीके टुकड़े, असफलतायें, दुर्भाग्य—ये सभी आदमीके अन्दरके पशुको जगा देते हैं और तब आदमी कानूनको अपने हाथमें लेकर अपराधी बन जाता है। और तुम उसके साथ क्या व्यवहार करते हो? तुम उसे दण्ड देते हो। पर तुम किसी ऐसे आदमीको जिसे तपेदिक हो गया हो दण्ड क्यों नहीं देते? समय आयेगा जब तुम इस बातको देख सकोगे कि किसी अपराधीको दण्ड देना भी वैसा ही असंगत है। तुम अपराधीका क्या करते हो? तुम उसे जेल-खाने भेज देते हो। क्या उसका सुधार होता है? नहीं, वह और भी बिगड़ जाता है। पहली बात जो तुम करते हो वह यह है कि उसका अपमान करके उसके मनुष्यत्वको पैरोंतले रौंधते हो। तुम उसे दागी बना देते हो। तुम उसे बंधनोंमें जकड़ देते हो। रातको तुम उसे अँधेरी कोठड़ीमें डाल देते हो। उसकी बदला लेनेकी भावनामें वृद्धि होती है। तुम उसे जंगली पशु बना देते हो। जब वह जेलसे बाहर आता है तो उसका शरीर और आत्मा दोनों कलङ्कित होते हैं। यदि वह सुधरना भी चाहता है, तो भी तुम उसे सुधरने नहीं देते। तुम उसे नीची नजरसे देखते हो, क्यों कि वह जेलमें रह आया है!—दूसरी बार जब आप किसी भी दण्डित व्यक्तिको घृणाकी दृष्टिसे देखने लगें, तो मेरी प्रार्थना है कि उस समय एक काम करें: आप उन सब अपराधोंकी याद करें जो आपने स्वयं करने चाहे हैं, आप उन सब अपराधोंकी याद करें जो आप कर बैठते यदि आपको कहीं अवसर मिल जाता; और तब अपनी छातीपर हाथ रखकर कहें कि क्या आप सचमुच एक दण्डित प्राणीकी ओर भी घृणाकी दृष्टिसे देख सकते हैं?

नीचतम प्राणीको भी दण्डित करनेका अधिकार केवल श्रेष्ठतम प्राणीको होना चाहिये।

समाजको कोई अधिकार नहीं कि वह बदला लेनेकी भावनासे किसी भी आदमीको दण्ड दे। उसके दण्ड देनेके मात्र दो उद्देश्य हो सकते हैं—एक तो अपराधकी रोक-थाम; दूसरे अपराधीका सुधार। तुम उसका सुधार कैसे कर सकते हो? करुणा ही वह सूर्य-किरण है, जिसके प्रकाशमें शीलका पौधा उगता है। इन आदमियोंको यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिये कि बदला लेनेकी कहीं कोई भावना नहीं है। उन्हें यह भी समझमें आ जाना चाहिये कि उनका सुधार हो सकता है।

कुछ ही समय हुआ मैंने एक तरुणकी करुण-कहानी पढ़ी है। वह जेलमें रहकर बाहर आया। उसने इस बातको छिपाकर रखा और एक किसानके यहाँ काम करने गया। उसका उस किसानकी लड़कीसे प्रेम हो गया और उसने उससे शादी करनी चाही। वह इतना नेक था कि उसने लड़कीके पिताको सच सच बता दिया कि वह जेलमें रह चुका है। पिता बोला:—"मैं तुम्हें अपनी लड़की नहीं दे सकता, क्योंकि इससे वह कलङ्कित हो जायगी।" लड़केका उत्तर था:—"अच्छा। वह कलङ्कित हो जायगी, तो मैं उससे शादी नहीं करूँगा।" वह बाहर चला गया। कुछ ही क्षणोंके बाद पिस्तौलकी आवाज सुनाई दी। लड़का मर चुका था। वह यह लिखकर छोड गया था: "मैं उस पार जा रहा हूँ। मेरे और अधिक जीते रहनेका कोई प्रयोजन नहीं, जब मैं अपने प्रेम-पात्रको ही कलङ्कित करता हूँ।"

फिर भी हम अपने समाजको 'सभ्य' समाज कहते हैं!

मैं चाहता हूँ कि इस प्रश्नपर विचार हो। मैं चाहता हूँ कि मेरे सभी नागरिक बन्धु इस प्रश्नपर विचार करे। मैं चाहता हूँ कि आप इस निर्दयताको समाप्त करने अथवा कम करनेके लिये जो कुछ भी कर सकें, करें।

सबसे पहले हमें परस्पर परिचित होना चाहिये। हर आदमी अपने पुत्रको, अपनी पुत्रीको, शिक्षा दे कि श्रम करना सम्मानकी बात है। हमे अपने बच्चोंको सिखाना चाहिये कि देखो, तुम कभी किसीपर भार न बनो। तुम्हारा पहला कर्तव्य है कि तुम अपनी सार-सँभाल आप रखो और यदि तुम्हारे पास कुछ अतिरिक्त सामर्थ्य हो तो अपने मानव-बन्धुओंकी सहायता करो। सर्व प्रथम अपने बच्चोको सिखाओ कि यह कर्तव्य है कि तुम किसीपर भार न बनो। अपने बच्चोंको सिखाओ कि यह न केवल उनका कर्तव्य है किन्तु बड़े ही आनन्दका विषय है। वे एक गृह-निर्माता बनें, गृह-स्वामी बनें। बच्चोंको सिखाओ कि संसारमें चूल्हा ही सबसे अधिक सुखका स्थान है। उन्हें सिखाओ कि जो कोई भी दूसरोंके परिश्रमपर जीता है, चाहे वह डाकू हो और चाहे राजा, वह एक असम्मानित व्यक्ति है। उन्हें सिखाओ कि कोई सभ्य आदमी बिना कुछ किये, कभी कुछ नहीं चाहता और कभी किसी भी चीज़का कम मूल्य नहीं चुकाना चाहता। हमें दूसरोंको अपनी मदद आप करनेमें मददगार होना चाहिये।

हम यह भी सिखा दें कि धनकी अधिकताका मतलब प्रसन्नताकी

अधिकता नहीं है। रुपयेसे कभी प्रेम नहीं खरीदा जा सकता। रुपयेने न कभी सम्मान खरीदा है और न वह खरीद सकेगा। रुपयेने न कभी सच्चा सुख खरीदा है और न वह खरीद सकेगा।

एक बात और है। प्रत्येक व्यक्तिको अपने प्रति ईमानदार होना चाहिये। उसकी जाति कुछ भी हो, उसकी परिस्थिति कुछ भी हो; उसे अपने विचार प्रकट करने चाहिये। उसकी जाति अथवा उसका वर्ग उसे रिश्वत न दे सके। यदि वह एक बैंकर है तो उसे बैंकरकी तरह ही नहीं बोलना चाहिये। यदि वह एक व्यापारी है तो उसे शेष व्यापारियोंकी तरह ही नहीं बोलना चाहिये। अपने छोटे व्यापारके प्रति वफादार होनेकी बजाय उसे सारी मानवताके प्रति ईमानदार होना चाहिये। अपने तात्कालिक ऊपरी स्वार्थके प्रति वफादार होनेकी बजाय अपने दिल और दिमागके आदर्शके प्रति ईमानदार होना चाहिये।

जहाँ तक मेरी बात है मैंने तय कर लिया है कि कोई भी संगटन—चाहे धार्मिक हो चाहे लौकिक हो—मेरा मालिक नहीं बन पायेगा। मैंने तय कर लिया है कि भोजन, घर अथवा अन्य किसी भी चीज़की आवश्यकता मेरे मुँहपर ताला नहीं लगा पायेगी। मैंने तय कर लिया है कि किसी प्रकारका यश, किसी प्रकारका सम्मान, किसी प्रकारका लाभ मुझे उस बातसे एक इंच न हटा सकेगा, जिसे मैं सत्य समझता हूँ; भले ही वैसा करनेसे मेरा तात्कालिक स्वार्थ सिद्ध होता हो। और जब तक मैं जीवित हूँ तब तक मैं अपने कम सौभाग्यशाली मानव-बन्धुओंकी सहायताके लिये जो कुछ मुझसे बन पड़ता है, करूँगा ही।

मैं उनकी ओरसे बोलूँगा और उन्हें अपना मत दूँगा।

मैं यथासामर्थ्य इस बातका प्रयत्न करूँगा कि लोगोंको यह बात समझा सकूँ कि सुख बहुत-सा धन संग्रह करनेमें नहीं है, किन्तु अपने और दूसरोंके कल्याणके लिये प्रयत्नशील रहनेमें है।

मैं यथासामर्थ्य इस बातका प्रयत्न करूँगा कि वह दिन जल्दीसे जल्दी आये जब पृथ्वीपर अनन्त घर हों और जब संसार-भरके परिवारोंके लोग अपने उन घरोंमें सुख और प्रसन्नतापूर्वक रहने लगें।